रायसेताबचंदनाहार बाहदुर ॥—

EXPOSITION.

OF THE NIGAMAS OR THAT PORTION OF HINDOO SHASTRAS, WHICH THE DUKSHINAS OR RIGHT HAND SECT FOLLOW AS THEIR BOOKS OF REVELATION.

i, e,

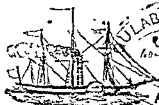
VEDAS, SOOTRAS, SMRITTIS, POORANAS &c.

FOR

THE USE OF REFORMERS IN INDIA.

BY

THE AUTHOR OF THE 'NIBANDHA SANGRAHA'



AHMEDABAD:

Printed at "United Printing and General Agency Company's Press" by Ranchorelal Gungaram,

Samvat 1930 A. D. 1874.

Price One Rupee & half.

INTRODUCTION.

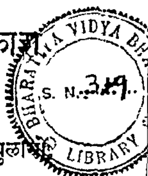
We dedicate the following pages to the thinking Public, who have curiosity to know the ancient mode of worship proclaimed by the revelation called Nigamas. The ancient practices of a nation are often buried in oblivion, but those of India are well preserved in its sacred literature. *It is necessary that Reformers, in order to be successful, ought to possess a knowledge of the ancient literature, which the people have, through habit, ignorance and Priest-craft learned to* venerate. The secrecy which is attached to the sacred literature of the Brahamans, principally arises from the ignorance of the language in which it is written and by its being to a great extent, out of vogue. The primeval sacrificial system, which is the basis of the ancient Vèdic Religion is cruel, uncouth, as well as opposed to the *ideas of the present age. It would not have been satisfactory to describe it without referring* to authorities on each point asserted and discussed. The book therefore is filled with authentic extracts from Vedic literature, which is considered as revelation from the Most High. It has been hitherto a special privilege of the Brahmans to recite it by rote and offer sacrifices in a manner handed down from generation to generation, without understanding their purport or condition of civilization in which they were ordained. *Various miraculous powers are attributed to the mantras and sacrificies and various stories, incul-*

cating the holiness of the Brahmans and power of their ritual are industriously circulated, in order to creat awe and respect among the ignorant masses. It becomes therefore necessary to unveil this ritual as far as the limits of a small book will admit and to place within the reach of the Reformers such portion of the ancient mode of worship as required notice. This it is hoped, may stimulate a further research, in those regions of antiquity, which appear to be utterly neglected in India by those, whom they concern most. The Religion of a nation greatly affects its destinies and progress. Adherence to the ancient prejudices combined with the thickly prevailing ignorance and a powerful priest-craft has produced baneful effects, such as early-marriages, miserable and forced widowhood, prevention of travelling to foreign countries, slavery of female sex, waste of money on useless objects, eleemosynary habits of one-tenth of the population, internal dissentions, want of fellow-feeling and patriotism and above all false worship of God. When reformers try to remove these effects, where do they stumble? At the religious difficulty.

TABLE OF CONTENTS.

सूची.

निगम प्रकाश



एटले

वैदिक धर्मनो खुलासो

"लो॰ हि॰ निबंध संग्रह" कर्ताए

धर्म सुधारणा इछिनारना उपयोग वास्ते

बनावी प्रसिद्ध कर्यो.

अमदावाद मध्ये

मामानी हवेलीमां युनाइटेड प्रिंटिंग अने ज. ए. कंपनी

"लिमिटेड"ना प्रेसमां रणछोडलाल हीराचंदे छाप्यो.

संवत १९३०. सने १८७४.

\

प्रस्तावना.

हिंदुधर्मना त्रण भागछे, कर्मकांड, ज्ञानकांड अने भक्तिकांड. जे अग्निहोत्रि श्रोती याज्ञिक अने वेदिया ब्राह्मणछे ते कर्मकांडि केहेवाय छे. संन्यासी परमहंस इत्यादि ज्ञानी केहेवायछे. गोसांवि माहाराज स्वामिनारायण इत्यादि भक्त केहेवायछे. आ ग्रंथ ऊपरथी एम जणाशे के कर्मकांडमा दयादिक ऊत्तमगुण नथी अने अत्यंत मूढ, विवेक शून्य, ओछी बुद्धिना लोक मात्र आ मार्गनो स्वीकार करेछे एम बिजा मार्गना लोक बोलेछे. अने कर्मवाळा एम कहेछे के—

यावत्वर्णविभागोस्तियावत्वेदप्रवर्तते अग्निहोत्रंचयज्ञंच तावत्कूर्यात्कलौयुगे ॥ हारितस्मृति.

कर्मकांडि कहेछे के ज्हां सुधि ज्ञातभेद अने वेदने मानो त्या सुधि यज्ञयाग करो. आ ग्रंथ उपरथी ज्ञान अने भक्तिमार्गनु ऊत्तमपणुं सिद्ध थशे एवी आशाछे. अने कर्मकांडनु लक्षण शुं ते पण ध्यानमा आवशे.

आ पुस्तक लखवानुं कारण एम छेके हिंदुस्तानमा हाल जे हिंदुधर्म चाले छे, अने तेना पेटामा अनेक प्रकारना संप्रदाय अने पंथ चाले छे, ते बधायनुं मुळ वेदमा छे, अने वेदनो आधार, *श्रावक लोक शिवाय, बधाय पंथवाळा माने छे. माटे वेदमा शुं छे, अने शा प्रकारनुं भजन छे, अने कीया कीया देव छे, ते जाणवा विशे घणा

* टीप. श्रावक, जैन, बौद्ध फकत ज्ञानकांडमा जे जे सारु होयछे ते ते माने छे- कर्मकांडने मानता नथी.

लोकोना मनमा आपेक्षा छे. वेदना पुस्तको प्राचीन माहासंस्कृत भाषामा लखेला छे, तेथी साधारण पुराणीक के शास्त्री पंडीतोथी तेनो अर्थ थतो नथी. सायनाचार्यादिक जे भाष्यकार थई गया तेमनो करेलो अर्थ जेने भाष्य कहेछे, ते ज्यारे हाथमा लेईए त्यारे वेदनो अर्थ थाय. वेदना प्रत्येक वाक्यने मंत्र एवी संज्ञाछे ते मंत्र ब्राह्मणो भणेछे पण तेनो अर्थ समजता नथी. घणा एक लोक नो एम कहे छेके, वेदनो अर्थ बहु गहन अने गुढ छे तेनो अर्थ थायज नहीं, अने घणा एक लोक एवुं कहे छे के, वेदनो मंत्र ब्राह्मण शीवाय कोईए भणवो नहीं, अने जे भणे तेने मोटी शिक्षा ठरावेली छे, वेदनो मंत्र कोई ब्राह्मण भणतो होय तो बीजी नातना लोकोए ते साभळवुं नहीं, अने बधा हिंदु एम माने छे के वेदना मंत्रमा बहु मोटी शक्ति छे, तेनुं वर्णन ऋग् विधान ईत्यादि ग्रंथोमा कर्युं छे केटलाएक मंत्र भणवाथी वरसाद आवे छे, अने केटलाएक मंत्र भणता अग्नि सळगी उठे छे, ए मंत्रवडे नाना प्रकारना अस्त्र थाय छे, जेथी वायु, पर्वत, वरसाद, अग्नि प्रबळ थईने नाश करी नाखे छे एवा अस्त्रना नाम ब्रह्मास्त्र, आग्नेयास्त्र, वायव्यास्त्र ईत्यादिक भारतादीक ग्रंथोमा वर्णन कर्या छे. अने ते एकेक मंत्र मेळववा वास्ते, राजा लोक ब्राह्मणोने घेर सेवा करता ए प्रमाणे अर्जुने पाशुपतास्त्र मेळव्युं, एवी कथा छे, तेथी ब्राह्मण लोक आ बधाय मंत्र पोतानी पुंजी समजीने गुप्त राखे छे, तेनो अक्षर कोईने बतावता नथी, तथा पुस्तक कोईने आपता नथी, ब्राह्मण शीवाय बीजी नातने वास्ते पुजा वीगेरे अनुष्टान करवुं होय तो पुराणीक श्लोक भणीने ते करे छे, ने वेदनो मंत्र बोलाय नहीं, कारण यजमान वेदनो अधिकारी न होय तो, तेना काममा

वेदनो उच्चार पुरोहित न करे, वेदनो अक्षर ए प्रमाणे घणा पवित्र गणेला छे,* ब्राह्मण होय तो, नाह्या विना मंत्रनो उच्चार न थाय, अने जम्या पछी पण न थाय; कदापि एम करे तो मंत्रनी शक्ति ओछी थाय छे. हालना ब्राह्मण एम समजे छे के जेवी जोइए तेवी चोखाइ न पळ्‌वाथी घणा एक मंत्रनुं सामर्थ जतुं रह्युं, केटलाएक कहे छे के, आ कळीयुगना पापथी मंत्रनुं अने मंत्रना अधिपती जे ब्राह्मण, ए बेनुं सामर्थ घटी गयुं छे.

वेदना पुस्तको घणा प्राचिन छे, एमा कोई पण संशय नथी; अने वेदना पूर्वे शुं हतुं ते मालुम पडतुं नथी. अने वेदना पछी जे जे ग्रंथ थया छे ते बधाय वेदना आधारथी थया छे. हाल जे ब्राह्मण वेद मुख पाठ करेछे, तेने वेदीया कहेछे, अने जे यज्ञ यागादीक कीधा जाणे छे तेने श्रौति कहे छे, अने जे ग्रहस्थने घेर उपनयन विवाह, इत्यादिक संस्कार करावे छे, तेने याज्ञीक अथवा शुकल कहे छे. जे पुराण वाचे छे तेने पुराणीक कहे छे, धर्म शास्त्र इत्यादीक एक शास्त्रनो अभ्यास जेने कर्यो होय, तेने शास्त्री कहे-छे अनेक शास्त्रनो जेने अभ्यास कर्यो होय तेने पंडित कहे छे. ज्योतिषनो अभ्यास करे छे, तेने जोशि कहे छे. अने वैद्य शास्त्रनो अभ्यास करे छे, तेने वैद्य कहे छे. ए प्रमाणे जुदा जुदा प्रकारना ब्राह्मण छे. जे श्रौताग्निनी सेवा करे छे, तेने अग्निहोत्री कहे छे. अने जेने यज्ञ कर्यो होय, ते दिक्षित एवो अडक धरावे छे. पूर्वे युगमा बधाय ब्राह्मण अने क्षत्री अग्निहोत्री हता, घणुं करीने एक कुळमा एक अग्निहोत्र राखता. हाल ते चाल तुटी गइ छे, हवे कोकज ब्राह्मण अग्निहोत्री होय छे. तोपण

*टिप--तोपण सरकारी निसाळना शास्त्री बद्धाय ज्ञातना लोकोने वेद भणावे छे.

हिंदुराजा, ज्या ज्या छे, त्या त्या अग्निहोत्रनी वृद्धि करावे छे. अने अग्निनी सेवा वीन हरकत चलाववा वास्ते, तेमणुको अने गाम पण आपे छे पूर्व युगमा स्त्रीयोने यज्ञो पवित धारण अने वेदाभ्यास करावता, पण हाल ते चाल छुटी गइ छे, कळीयुगमा स्त्रीओने उपनयनने ठेकाणे लग्न ठरावेलु छे अने स्त्रीओने शुद्र जेवी समजवी, तेथी हाल स्त्रीओने वेदाभ्यास अथवा गायत्री उपदेश करावता नथी.

वेदमा मुख्य धर्म, यज्ञनो बताव्यो छे. वेद मंत्रनो विनियोग यज्ञार्थ थाय छे. अने प्राचिन काळमा ब्राह्मण अने क्षत्री, अनेक प्रकारना यज्ञ, करता, तेथी अनेक देवताओ तृप्त थइने मनुष्यने जे जोइए ते आपता. गीतामा कह्युं छे के —

सहयज्ञाःप्रजाःसृष्ट्वापुरोवाचःप्रजापतिः
अनेनप्रसविष्यध्वमेषवोस्त्विष्टकामधुक् ॥
देवान्भावयतानेनतेदेवाभावयंतुवः ॥
परस्परंभावयंतःश्रेयःपरमावाप्स्यथ ॥
यज्ञाद्भवतिपर्जन्योयज्ञःकर्मसमुद्भवः ॥
कर्मब्रह्मोद्भवंविद्धिब्रह्माक्षरसमुद्भवं ॥
यज्ञशिष्टाशिनःसंतोमुच्यंतेसर्वकिल्बिषैः ॥

अर्थ —ब्रह्मदेवे, मनुष्य उत्पन्न कर्यो तेज वखत यज्ञ करवानी रीया बतावी, अने कह्यु के, ए रीया तमे करो तो तमने जे जोइए ते मळशे ने यज्ञ कर्याथी, देव तमारा उपर प्रसन्न थशे अने तमने जे जोइए ते आपशे यज्ञ कर्याथी वरसाद पडशे, अने यज्ञ शी रीते करवो

ने वेदमा बतावेलुं छे, माटे वेदनो अक्षर छे, ते सर्वथी मोटा छे, ए प्रमाणे मनुष्यने उपदेश कर्यो.

भागवतमा कह्युं छे के, प्राचीन बर्ही राजाए घणा यज्ञ कर्या, तेथी एने घणा जीवोंनी हिंसा करवी पडी. छेलीवारे नारदजीए उपदेश करीने यज्ञ बंध कर्या, प्राचीनकाळमा राजा भरत एणे बहु यज्ञ कर्या अने रामचंद्रजीए पण रावणना युद्धमा घणा जीव मरी गया ते पाप काहाडवाने वास्ते अश्वमेध कर्यो. ते कथा पुराणमा प्रसीद्धछे. तेज प्रमाणे पाडवोए अश्वमेध कर्यो. ते कथा भारतमा छे कळीयुगमा राजा जयसींगे जेपुरमा अश्वमेध कर्यो. एवी दंत कथा प्रसीद्ध छे. भरूचमा बळी राजाए दश अश्वमेध कर्या. ते ठेकाणे हाल लोक नहाय छे. तेने दशाश्वमेध क्षेत्र कहेवाय छे. एज प्रमाणे उत्कंठ महादेव पासे जाबाली रुषिए यज्ञ कर्यो ते ठेकाणे खैरनाथ, एवुं कहेवाय छे. ने त्याथी भस्म नीकळे छे. ए प्रमाणे हिंदुस्तानमा हजारो ठेकाणे यज्ञ थएला तेना दाखला मळी आवे छे. तेथी पूर्व काळमा घणा यज्ञ थता एम जणाय छे.

वैदिक यज्ञमा घणी हिंसा करवी पडेछे, ए वातमा कंइ पण संशय नथी. कळियुगना आरंभे बौध मत उत्पन्न *थयुं ते घणा लोके मा युं ते मत वेदना वीरुद्ध हतुं. हिंसाने लधे, बौधमत वाळाए वेदनी अने ब्राह्मणोनी घणी निंदा करी छे. अने अहिंसा, तप, सत्य, देहदंड, उपवास इत्यादी प्रतिपादन करी, लोकोने उपदेश कर्याथी वेदधर्म बातल पड्यो. पछी ब्राह्मणोए करी कमर बाधी, एक मत

टीप—ए प्रमाणे पुराणोमा इतिहास छे ते उपरथी लख्युं छे.

थयाने, वैदिक धर्मनुं स्थापन कर्युं. तोपण बोधधर्म बीलकुल रद थयो नथी. थोडो घणो चालेछे-अने बीजा प्रांत करतां मारवाड अने गुजरातमां बौधधर्मनुं जोर वधारेछे. तेथी ब्राह्मण दया धर्मथी चालेछे. अने यज्ञयागादिक क्रीया बिलकुल करता नथी. पण हिंदुस्तानना अन्य भागमां यज्ञ थाय छे. अने श्रोति ब्राह्मण पण घणा छे.

वेद मुळमा एक गणातो नहतो अनेक ऋषीओ पासे अनेक मंत्र नो संग्रह हतो. ते बधाए श्री व्यासजीए भेगा कर्या. अने तेनां चार नाम पाड्यां. जे छंदरूपी वाक्यो हता, ते जुदा काहाड्यां तेमां अनेक देवोनी प्रार्थना छे. तेनु नाम ऋग्वेद एवुं पाड्युं, अने ए भाग बधाय करता प्राचीन जणाय छे. एमां जे देवोनुं वर्णन कर्युं छे ते राम कृष्णादिक पुराणना देव, हाल जे प्रसीद्ध छे, तेथी वेदना देव जुदाछे. अग्नि, वायु, सुर्य, रुद्र, विष्णु, इंद्र, वरूण, सोम, नक, पूषा, इत्यादि वेदमा देव गणेला छे. अने तेमनी प्रार्थना वेद मंत्रमा करेली छे. जे गायन करवाना मंत्र हता तेनुं नाम, सामवेद पाड्युं अने जेमा यज्ञ क्रीया बतावी छे. तेनुं नाम यजुर्वेद पाड्युं. यजमान एटले यज्ञ करनार अने, पुरोहित एटले मददतगार. अने चोथो वेद, अथर्वण, एमा अरीष्टशांति इत्यादि लखेली छे. पण सौथी ए वेद नूतन जणायछे. ए चारे वेद एटले संहिता अने ब्राह्मण ए अनादि छे. एवुं मानेलुं छे कोइ केहेछे के चारे वेद ब्रह्माना मुखमाथी प्रगट थया, कोई, केहेछे के, ब्रह्मानुं मुख एटले ब्राह्मण तेमाथी निकळ्या. वेदने जोडेला बीजा नाहाना नाहाना पुस्तको छे, तेने उपनिषद कहेछे. तेमा केटलाएक खराछे ने केटलाएक नूतनछे वैदिक कर्मनी, ए ग्रंथमा नि-

दा करेली छे. अने बीजा बधा देव मुकीने, एकपर ब्रह्ममात्र मानेलु छे. अने घणुं करीने निवृत्ति मार्गनी प्रशंसा करीछे. आ ग्रंथमार्थी वेदात शास्त्र उत्तर मीमांसा निकळ्युं. अने बीजा वैदिक ग्रंथमार्थी पूर्व मीमासशास्त्र निकळ्युं छे. ए बे मत एक बीजाने विरुद्धछे अग्निहोत्री याज्ञिक, इत्यादी कर्म कांडी, ब्राह्मणं पूर्व मीमांस शास्त्रनो आधार लेछे. अने संन्यासी परमहंस इत्यादी, त्यागी, ब्राह्मण उत्तर मीमास एटले वेदात शास्त्रनो आधार लेछे. अने बधाय कर्म मुकीने फक्त ब्रह्मनुं ध्यान करेछे. बीजा कोई देवने मानता नथी. ए मार्गने ज्ञान मार्ग पण कहेछे. आ बे शिवाय त्रीजो मार्ग भक्ति मार्ग करीने साप्रत चालेछे. तेमा चार संप्रदायना ग्रहस्थ त्यागी, वैरागी साधु ईत्यादिक गणाय छे. हरदास, पुराणिक, रामदासि, वारकरी, आ बद्धाय भक्ति मार्गवाळाछे. एने उपासना मार्ग पण कहेछे. उपासनाना पेटामा बे छे एक वाम मार्ग अने एक दक्षण मार्ग तेमा वाम मार्ग ए देवीनुं कहेवाय छे.अने दक्षण ए शिव, विष्णु इत्यादीकनुं कहेवाय छे. तेमा स्मार्त, शैव, वैष्णव, समर्पणी, सत्संगी, इत्यादिक गणाय छे. ए मार्गमा वैष्णव मात्र अहिंसाव्रत पाळेछे अने वाम मार्ग जे आगम अने तंत्रनो आधार लेछे तेमा ए व्रत पाळता नथी. अने जे वेदनो आधार लेछे ते पण अहिंसा व्रत पाळता नथी अनेक शास्त्रमा कोई ठेकाणे ज्ञाननी प्रशंसा करीछे. कोइ ठेकाणे भक्तीनी प्रशंसा करीछे. कोई ठेकाणे कर्मकांडनी प्रशंसा करीछे. अने दरेक मार्गना ग्रंथ घणाछे. माटे कीयो मार्ग सारो तेनो निश्चय करवाने घणो मुषकेल पडेछे. एटलुं खरु के कर्मकांड ए बहु प्राचिन छे. अने यज्ञयागना विधी केवळ, हिंदुस्तानमा चालता हता, एम नथी पण बीजा देशमा पण प्राचीन काळमा यज्ञयाग करता हता.

प्राचिन कालमा, जे ब्राह्मण हता, तेमने ऋषि एवुं कहेता. केटला एकने महर्षि, एवुं नाम छे. केटलाएकने, देवर्षि, केटलाएकने राजर्षि, छंदर्षि, एवा जुदा जुदा नाम छे. पण ऋषि ए शब्दनो अर्थ, ग्रंथ कर्ता एवो थाय छे. पण हालना ब्राह्मण एम कहेछे के ऋषीनुं ज्ञान अद्भूत हतुं तेथी तेमने "अदृष्टार्थद्रष्टा" कहेछे. एटले जे कोइने मालम पडवानुं नहीं ते एमने मालम पडतुं हतुं. तेथी एमणे जे ग्रंथ बा-ध्याछे, ते वेद तूल्य गणायछे. अने ऋषी गया पछी जे ग्रंथ थया ते, पौरुष ग्रंथ कहेवायछे. ऋषीना ग्रंथने, आर्ष एवुं कहेवायछे. अने वेद ना ग्रंथने छांदस एवुं कहेवाय छे. ए बधाय ऋषी अनेक प्रकारना जनावरोनुं मांस खाता हता, एवुं एमना ग्रंथ उपरथी जणायछे. हाल म्लेछ, यवन, इत्यादिक मांस आहारीछे. पण एमना करतां आ बधाय ऋषीओ वधारे हता. कारण, हाल फ्रान्स देशमा घोडानुं मांस खावा-नो प्रचार पड्योछे. पण अश्वमेध ऋषिओ हजारो वर्षथी करता आ-व्या छे' तेथी एवुं मालम पडेछे के घोडो खावानो प्रचार ऋषि मं-डळमा घणो हतो. पछी बौध अवतार थयो त्यारे, घणीक हिंसा बंध पडी, अने दयानो विस्तार थयो, अने सात्विक मार्ग वध्यो, अने बधा लोक निवृत्ति मार्गने वळगी पड्या. त्यारे कर्मकांडी ब्राह्मण, वहु ओ-शीयाळा थइ पड्या, अने पोतानुं कर्म टाकवा वास्ते केटलीक मीथ्या वातो चलावी ते एवीके कोइ कहेछे, के,

॥ वैदिकीहिंसाहिंसानभवति ॥

एटले वेदमांनी हिंसा छे तेने हिंसा न गणवी,

यावेदविहिताहिंसानसाहिंसाप्रकीर्तिता ॥ भागवत टिका
१२ स्कंद अ ५ श्लो. १२

यतूघ्राणभक्षोविहितःसुरायास्तथापशोरालभनंनहिंसा
भागवत ११-५-१३

देवतोद्देशेनयत्पशुंहननंतदालंभनं ॥ टीका

बीजा कहेछेके,पूर्वेना,ऋषी जनावरो मारता,पण फरी जीवंत करवानु तेमने सामर्थ्य हतुं,ते आपणे नथी माटे आपणे न करवी.बीजा कहे छे के, वेदमा हिंसा नथी अने जे हिंसानो अर्थ कहाडेछे, ते भूलछे. बीजा कहे छे के, मनुष्यने मास खावानी इछा होय, ते तृप करवाने वास्ते यज्ञ विधि बताव्यो छे माटे ए विधि नथी, पण संकोच छे. बीजा केटलाएक, कहे छे के, कोइ कामनी सिद्धि करवी होय त्यारे हिंसा करवी पडे पण आपणे काम्य कर्म मुकी देइए तो, हिंसानी जरूर नथी. अने केटलाएक कहे छे के, वेदमा जे हिंसा लखी छे, ते पूर्व युगने वास्ते हती, पण कळीयुगने वास्ते नही. खरी रीते ए बधी तकरार तपाशीए तो, एमानी एक पण खरी नथी, कारण जनावरोने मारीने ऋषिओ फरी जीवंत करता हता, ए वातनो दाखलो कोइ ठेकाणे मळतो नथी. अने बीजुं एम के जे युगमा घणी हिंसा चालती ते युगने कळी कहेवुं, अथवा जे युगमा दयानो विस्तार वधारे थयो, तेने कळी कहेवुं, आ एक मोटो संशय छे. अने वेद वाक्यनो नीषेध पुराण वाक्यथी थाय नही. माटे ए तकरार पण बरोबर नथी. अने जे कहे छे के वेदना वाक्य संकोचार्थ छे. ते पण खरु नथी कारण अनुस्तरणी इत्यादीक ठेकाणे मास खावानुं नथी त्यारे हिंसा शावास्ते लखी छे. एनुं कारण जणातुं नथी, संकोच होय तो एवी हिंसा लखे नही, माटे ए कल्पना पण मिथ्या छे. अने वेदमां हिंसा नथी, एवुं

जे कहे छे, तेमने विशे एटलुंज कहेवाय के ते लोको वेदोधर्मा भ्रमण छे. खरी वात एटलीज के बौधे दया धर्म चलाव्यो ते दहाडाथी ब्राह्मण लोकोए हिंसा शास्त्र संताडवाने वास्ते, अनेक योजना करी. ब्राह्मण अने क्षत्री ए बेउ जणाए पोतानो धर्म मुकी दीधो, अने लोभी थइने द्रव्यार्थे, गमे ते वातने मान्य करे छे. अने आ वात सत्य छे के असत्य छे ए विशे विचार करता नथी. ए प्रमाणे हालना ब्राह्मणोनी स्थीती छे. तेज प्रमाणे क्षत्री लोकोए पोतानो धर्म मुकी दीधो, एमनो धर्म एवो हतो के, पोताना देशनुं रक्षण करवुं, ते वात जइने पेटने अर्थे जे रोटलो आपे एनी नोकरी बजावावी, ते कहे के, भाइने के, बापने मारो; तोपण मारे. ए प्रमाणे स्थीती पाम्यायी बधो देश खराब थई गयो, अने सत्य अने देशाभीमान नाबुद थयो.

जे वखत दयाधर्म प्रगट थयो तारे हिंसानी बंधी थइ. पण केटला एक प्रातमां ए चाले छे. ने कटलाएक प्रातमा नथी चालतो. सारस्वत, मैथील, कान्यकुब्ज, गौड, उत्कल, ए पांचे गौड ब्राह्मण कहेवाय छे अने तेमनी वस्ती कराची, लाहोरथी कलकत्ते सुधी, आखा हिंदुस्तानमा छे. ते बधाय मच्छ मासनो अहार नित्य करे छे. अने द्राविड, तैलंग, कर्णाटक, महाराष्ट्र, ए चार प्रातमा, यज्ञ करती वखत मात्र, मास खाय छे, नित्य खाता नथी. अने गुजरातमा कोइ कारणथी पण मास खाता नथी. ए प्रमाणे आज वहीवट छे. दक्षणना जे वैष्णव संपदाइ ब्राह्मण छे ते लोटनो बकरो करीने तेनो यज्ञ करीने खाय छे. तेने पीष्ट पशु कहे छे. पण बीजा घणा ब्राह्मण प्रत्यक्ष पशुनो यज्ञ करे छे. ए प्रमाणे घणा ब्राह्मणोए, बडोदरामा अने करनाळी क्षेत्रमा यज्ञ कर्या छे. पुना, सतारा, काशी इत्यादि क्षेत्रमां घणा यज्ञ थाय छे

तेमा कोइमा चार कोइमा आठ कोइमा पचीस एटला पशु होमें छे. अने ए जनावरो शस्त्रथी मारता नथी कारण तेनुं रुधीर बहार पडवुं न जोइए. माटे गळु दाबीने मारे छे. ए काम बहु निर्दयपणानुं छे पण वेदाज्ञा समजीने करे छे. जे ठेकाणे श्रावक गुजराती के मारवाडी जे गाममा होय छे. ते ठेकाणे कोइ अग्निहोत्री यज्ञ करवा लागे त्यारे कोइए एने माल धीरवो नहीं के वेचवो नहीं एवो वाधो घाले छे. तेथी घणी हरकत पडे छे. तेथी अहंमदनगर जील्लामा घणा एक गाममां श्रावकोनी वस्ती मोटी छे. ते ठेकाणे यज्ञ थतो नथी तेज प्रमाणे मुंबइमा पण गुजराती श्रावक ने वैष्णवोनी वस्ती वधारे छे, माटे ते ठेकाणे पण आज सुधी यज्ञ थयो नथी. पण ज्याहा ब्राह्मणोनो जथो मोटो छे ते ठेकाणे यज्ञ थाय छे गया माहा महीनामा पुनामा वाजपेय यज्ञ थयो तेमा चोवीस बकरा होम्या अने मोटा मोटा नामांकित गृहस्थो अने वेदीया ब्राह्मण शास्त्री पंडितो भेगा थया हता. एवुं वर्तमान पत्रथी खबर प्रसिद्ध थइ छे.

धर्मना आधार बे जणाय छे. एक तर्क, अने बीजो, कथा, ज्ञानी लोक छे, ते तर्कथी, ईश्वरने समजे छे. अने अज्ञानीछे तेमने वास्ते, रोचनार्थ, अनेक प्रकारनी कथा रचेली छे वाचीने ते प्रमाणे भजन करेछे. तर्कने फक्त बुद्धिनो आधार छे अने कथाने आधार पुस्तकनो. पछी पुस्तक लखनारनी जेवी आबरु ते प्रमाणे ते पुस्तकनी मान्यता थाय. जगतमा पुस्तक लखनार घणा थयाछे अने ते एकेक देशमा एकेक ज्ञातिमा एकेक संप्रदायमां मानीताछे. ब्राह्मण कहेछे के ऋषिना करेला पुस्तक ते बधाय करता मोटा कारण के परमेश्वर ऋषिमा प्रेरणा करता हता, ते प्रमाणे ऋषि लखता. श्रावक कहेछे

के, तिर्थंकरना पुस्तको मोटा, मुसलमानो कहेछे के पेगंबरना पुस्तको मोटा. आ बधा पुस्तको मेळवतां एकबीजाने मळतां नथी. त्यारे धर्म कोने कहेवो अने पाखंड कोने कहेवो एनो निर्णय करतां बहुज कठण छे. धर्म छे ते बे प्रकारना छे. एक. स्वभाविक, अने सांकेतिक, स्वभाविक धर्म छे ते स्वतःप्रमाण छे. अने बद्धाय पुस्तकोमां ते मळे छे. अने, सांकेतिक, धर्म मात्र मळतो नथी. स्वभाविक धर्म एटले सत्य, दया, न्याय, शम, दम, तितीक्षा, इत्यादि, ने कोइ पण ना पाडतुं नथी. अने, सांकेतिक धर्ममां घणीए तकरारो छे. हिंदु कहेछे के श्रावण मासमां उपवास करवा ने मुसलमान कहेछे के रमजानमां करवा, ए प्रमाणे देश देशना, सांकेतिक धर्म, अने आचार जुदाछे. आ बधायनुं तत्व जे ज्ञानी अने विवेकी छे, ते मात्र जाणेछे, अने जे लोक अज्ञानी होयछे, ते एक बीजानी साथे अभिमानथी, लढीमरेछे. अने एकबीजानी निंदा, अने द्वेष, करेछे, अने सार, असारनुं विचार करता नथी.

हालना ब्राह्मण घणा अज्ञानी यथार्थी पोताना शास्त्रमां शुं छे ते जाणता नथी अने पोतानुं ज्ञान वधारता नथीं तेथी त्रण हजार वरस उपर हिंदुस्तानमां जेटलुं ज्ञान हतुं, तेटलुंज, कायम रह्युंछे. तेनुं कारण जे आगळ ऋषियो लखी गया, तेमां कांइ भूल नथी, तेथी काइ वधारवानुं रह्युं नहीं, एवी समजण पड्याथी लोको आगळ डगलां भरता नथी.

धर्मशास्त्रमां एवुं कह्युं छे के, यज्ञ कर्याथी देश अने भुमि पवित्र थाय छे. अने कीया देशमां यज्ञ करवा अने कीया देशमा न करवा एनी विगत लखी छे. तेमां गंगा यमुनानो कांठो ए सौथी श्रेष्ठ गणाय

छे ते ठेकाणे, पूर्व युगमा घणा यज्ञ थएला, तेथी ते देशने पुण्य भूमि कहे छे. हाल केटला एक लोक एम कहे छे, के यज्ञ करवो नहीं अने जे कर्ममा हिंसा आवे छे, ते कर्म न करवुं, पण जे ऋषिना बांधेला ग्रंथ छे ते आधारथी ब्राह्मणने ब्राह्मणपणुं मळे छे. अन्न प्राशन मौंजिबंधन, लग्न, अंत्येष्टि, आ बधाय संस्कार श्राद्धतर्पण श्रावणी इत्यादिक कर्म खरा अने, बाकीना यज्ञादिक कर्म, मिथ्या ए केम थशे. एकज ऋषिना ग्रथमानो एक अध्याय खरो ने एक अध्याय खोटो, ए केम कहेवाशे, अने कदापि एम होय तो तेनो पाठ पारायण करवामा पुण्य छे के नहीं! ज्यारे वर परणवा सारु घेर आवे छे त्यारे मधुपर्क करवानी चाल अद्यापि चाले छे. ने उत्सर्जन पक्ष लेइने गौदान करे छे. तेज प्रमाणे शूलगवने ठेकाणे वृषोत्सर्ग करे छे. अने श्राद्धमा, मासने ठेकाणे, माष एटले, अडद ले छे. पण कर्मनो त्याग करता नथी वह्राय पृथ्वी उपर भरतखंडने कर्म भूमि कहे छे, तेनुं कारण, आ देश शिवाय, बीजे ठेकाणे यज्ञ याग थता नथी तेथी ते देश पवित्र थएला नहीं, माटे ब्राह्मणोने, बीजा देशमा जवानी पण मनाइ छे.

शास्त्रमा एवु गणेलु छे के बार मासनुं एक वर्ष थाय छे अने एवा केटलाएक वर्ष जाय, त्यारे एक युग कहेवाय, अने चार युगनो महा युग अने एवा बोहोतेर महायुग जाय, त्यारे एक मन्मन्तर थाय छे अने चौद मन्मन्तर जाय त्यारे, एक कल्प कहेवाय. कल्प, एटले ब्रह्मदेवनो एक दीवस केटलाएक ब्राह्मण एम कहे छे के, कोई शास्त्र आ कल्पमा चालवानुं, अने कोई शास्त्र बीजा कल्पमा चालवानुं, एवो कल्पभेद बतावे छे. पण ए वात खरी जणाती नथी केवळ अनुवाद टाळवाने वास्ते ए कल्पना करेली छे वेदनो एक भाग एक कल्पमा,

अने त्रीजो भाग बीजा कल्पमां,चालवानो,एवुं कहीएतो, वेदनो कोइभाग रहेवानो नथी. अने वेदमां यज्ञ विधी वीना कोइ भाग पण छेज नही. कोइ कहेशे के ज्ञानकांड तो उपनिषद भाग छे, तेमां यज्ञनो विधी बतावेलो नही. पण यज्ञनी निंदा करेली नथी, वळी एम कहेलुं छे के यज्ञ कर्याथी देहनी, ने चित्तनी शुद्धि थाय छे. अने ते कर्या पछी सन्यास लेवो माटे घणा एक लोक यज्ञ संपादन करीने, पछी संन्यास ले छे.

यज्ञोदानंतपश्चैवपावनानिमनीषिणां ॥ गीता ॥

शतयज्ञ जे माणस करे, तेने इंद्रपद मळे छे. एटले ते माणस स्वर्गनो राजा थाय छे. अने जे यज्ञ करे तेने स्वर्ग मळे छे. एवी कथा पुराणोमां घणे ठेकाणे लखी छे. अने केटलाएक राजा, शतयज्ञ करवा लाग्या, त्यारे इंद्रने बीक लागी, के आपणुं राज्य जशे, तेथी ते आडो पड्यो, एवी पण कथा छे. पण हाल जे लोक यज्ञ करे छे, ते फलाणे दीवसे स्वर्गे जशे एवुं कांइ जणातुं नथी. कारण कोई यज्ञ कर्या पछी दश वर्ष जीवे छे, वीस वर्ष जीवे छे, ने कोई पचास वर्ष जीवे छे, पछी शी ववत जता हशे ते कोण जाणे.

आ कळीयुगमां जेम जेम ब्राह्मण उतरता गया, तेम तेम स्त्रीओनो अधीकार ओछो करता गया. प्रथम लग्न कर्या विना ब्रह्मवादी स्त्रीओ रहेती हती; एवां उदाहरणो पण घणां छे. गर्गी, मैत्रेयी, वडवा, आ ऋषि कन्याकुमारी हती शास्त्रमां लख्युं छे के.

द्विविधाःस्त्रियोः । ब्रह्मवादिन्यः । सद्योवध्वश्च ।

नत्रब्रह्मवादिनीनामुपनयनमग्नींधनंवेदाध्ययनंस्वगृहेभि

क्षाचयेंति । सद्योवधूनांमुपस्थितेविवाहेकथंचिदुपनय नमात्रकृत्वाविवाहःकार्यः । हरितस्मृति ।

पुराकल्पेषुनारीणांमौंजीबंधनमीष्यते ॥
अध्यापनंचवेदानांसावित्रीवचनंतथा ॥
वर्जयेदजिनंचीरंजटावल्कलमेवच ॥ यमस्मृति ।

ते बंध करीने, सर्व स्त्रीओने परणाववी अने तेमने शुद्र प्रमाणे दास समजवी, एवुं ठराव्युं. अने धणी मरे त्यारे एमने वाळ उतरावववा के धणीना मडदा साथे बळी मरवुं, जनावरनी अनुसरणी करता, ते स्त्रीनीज करवा लाग्या तेथी जुलम, अने अन्याय, बहु वधी गयो.

अथर्वण वेदमां संहितानुं कांड नव अनुवाक त्रण अने प्रपाटक वीसमा पुनर्विवाह करे तें पंचौदन होम करे एवुं लख्युं छे ते मंत्र निचे लख्या छे.

यापूर्वपतिंवित्वाथान्यंविंन्दतेपरं ॥
पंचौदनंचतावजंददातोनवियोपतः ॥ २७ ॥
समानलोकाभवतिपुनर्भुवापरःपतिः ॥
यारेजंपंचौदनंदक्षिणाज्योतिपंददाति ॥ २८ ॥.

अथर्वसंहिता

प्राचीनकाळमां लग्न करवानुं महुरत कहाडता नहोता एवुं आश्वलायन अने बोधायन सूत्र उपरथी मालम पडे छे.

सार्वकालमेकेविवाहम् आश्वलायन·

सर्वेमासाविवाहस्य बौधायन

अने नहानी छोडीनुं लग्न पण करता नहता एवुं मनुंना वचनथी मालम पडे छे.

आज्ञातपतिमर्यादामज्ञातपतिसेवनाम्

नोद्वाहयेत्पितावालामज्ञाताधर्मशासनम् ॥

हिरण्यकेशी सूत्रमा एम लख्युं छे के लग्न थया पछी चोथे दिवसे चतुर्थी कर्म एटले गर्भाधान करवुं एवो विधी लख्यो छे तेथी एम मालम पडे छे के कन्यानी उमर लग्ननी वखत गर्भाधान लायक जोइए नहींतो चतुर्थि कर्म शी रीते थशे.

प्राचीनकाळमा त्रीवर्णमा कन्या आपवा लेवानो अने अरसपरस जमवानो चाल हतो भृगुऋषिनो पुत्र शुक तेनो दीकरी देव यानी एय याती राजाने आपी हती एटले ब्राह्मणनी कन्या क्षत्रीने आपी अने घणा स्मृतियोमा ए विशे घणुं लखेलु छे. पछी आ बधी बाबतनो संकोच थयो अने स्त्रीओने दास्यत्वमा लाववा विशे घणोज प्रयत्न थयो अने जे स्त्रीओने पहेलो अधिकार हतो ते सर्व हरण करी लीधो अने स्त्रीओने शुद्र समान ठराव्युं.

अतःपरंप्रवक्ष्यामीस्त्रीशूद्रपतनानिच॥ जपस्तपःस्तिर्थयात्राप्रव्रजामंत्रसाधनं॥देवताराधनेचैवस्त्रीशूद्रपतनानिषड्॥

अत्रिस्मृती १३४

आ देशमा प्रथम कीरात अने निषाद एटले भील कोळी इत्यादि लोक रहेता तेने केटलेक ठेकाणे दस्यु राक्षस ए पण नाम आप्या छे. जेम जेम आर्य लोकोनी वसी थइ तेम तेम जुना लोको हठता गया

अने जे वधारे केळवणी पामेला अने बुद्धिवाळा हता ते आगळ पडता गया अने जे आर्य लोकोमा जे जे रुढी हती ते रुढीनो विधी थइ गयो. जे प्रमाणे बोलवामा जे रुढी चाले छे ते रुढी लेइने व्याकरण शास्त्रना नियम बंधाय छे कह्युं छे के.

प्रयोगशरणाःवैयाकरणाः

एज प्रमाणे जे रुढी चालती होय अने जे रुढी लोकोने मान्य छे ते रुढी लेइने धर्मशास्त्रवाळा विधी ठरावे छे कह्युं छे के

शास्त्रात्रुढीर्वलियसी ॥

हरेक शाखानुं सूत्र जोता जेटलुं सूत्रमा कर्म लख्युं छे तेटलुं कोई करतुं नथी केटलाएक अनुष्टानो बीजी रीते करे छे केटलाएक लांबा थया छे ने केटलाएक टुंका थया छे ते विशे एम कहे छे के

अकरणात्मंदकरणंश्रेयं ॥

कर्मकाडने मूळ आधार वेद अने सुत्र ए बे छे पण ए बेनो अर्थ कोई करतो नथी अने घणुं करीने रुढी मार्ग प्रमाणे चाले छे.

मनुष्यने प्रथम अज्ञानकाळ होय छे, पछी पराक्रम काळ आवेछे, तेमा मोटा मोटा वीर पराक्रमी राजा थईने देशनुं नाम वधारी दे छे त्यार पछी लोक विचार काळमा आवे छे, अने विचार करता करता, जराकाळ आवे छे तेमा अवळा विचारमा पडीने देशनो नाश थई जाय छे. हाल हिंदुस्ताननां लोक चोथी स्थितीमा छे हाल कोई जाणतो नथी के आ देशमा पूर्वे शी शी विद्या हती अने शो शो सुधारो हतो अने वेदशास्त्रमा शु छे ते कोई जाणतो नथी जुना उदाहर्णो जोईने एम बोले छे.

कृष्णद्वैपायनस्यगृहीतनैष्ठिकब्रह्मचर्यस्यविचित्रवीर्यदारे
ष्वपत्योत्पादनप्रसंगः
युधिष्टिरस्यकनीयानिर्जितभ्रातृजायापरिणयनं
वासुदेवार्जुनयोर्निषिद्धमातुलदुहितृरुक्मिणीसुभद्रापरिण
यनं ॥ इतिधर्मव्यतिक्रमः ॥ तेजसानांनदोषः ॥
ख्यातःशक्रोभगांकोविधुरतिमलिनोमाधवोगोपिजारः ॥
वैश्यापुत्रोवसिष्टःसरुजदयमःसर्वभक्षोहुतांशः ॥
व्यासोमत्स्योदरीयःसलवणजलधिपांडवाजारजातः ॥
रुद्रप्रेतास्थिधारीत्रिजगतिवसतीकस्यदोषोनजातः ॥

तेजस एटले जबरजस्त तेने रूढी तोडतां दोष नथी पण आज. तेजस माणसनो आभाव थयो छे अने लोक असत्य बोलनारा कपटी अने आपसमा लढनारा बहु थया छे तेनु कारण विद्वानोनो घटारो बहु थयो कह्यूं छे के.

शास्त्रेणहीनाःकवयोभवंतिकवित्वहीनाश्चपुराणभट्टाः॥
पुराणहीनाःकृपिमाचरंतिकृपित्वहीनाश्चभवंतिसंताः ॥

आ कारणथी अज्ञान बहु उत्पन्न थयुं अने विवेक बिलकुल जतो रह्यो जे मूर्ख माणस छे ते डाह्यो गणाय छे अने दुराचारी छे ते सदाचारी गणाय छे अपथो ज्ञानी अभिमान वध्यो अने वेदनो अर्थ शुं छे ते कोई जाणतुं नथी सूत्रनी कोईने खबर नथी शुं सूत्र थाय छे ते मात्र जाणे छे धर्मशास्त्र कोई समजतो नथी ब्राह्मणोयु भणतर

पोपट जेवुं भणे छे अने लोकोने फनडवानी इछा राखे छे तेथी अ- दावतो घणी उत्पन्न थइ प्रत्येक मनुष्यने एवी इछा छे के बीजा लो- कोए आपणा कबजामा रहेवुं अने ते लोकोए आपणो हुकम मानवो एज कारणथी सासु वहुनी लढाईओ थाय छे. गोर जजमाननी थाय छे, राजा ने रईयतनी थाय छे आवा कारणथी कळीयुगमा घणीक रीतो बगडती गई विधवाए वपन करवुं ए विषे कोई ठेकाणे शास्त्र आधार वेदमा के स्मृतिमा जणातो नथी तेत्तीर्य अरण्यकमा बे अध्या- यमा पितृमेध एटले अंत्येष्ठिनी पद्धती लखी छे, पण तेमा वपननो अने सतिनो कोई ठेकाणे दाखलो नथी तोपण ए रुढी चालो का- रण विना काई पण रुढी चालती नथी एम कह्युं छे के.

अकारणमनुद्दिश्यनहिमंदोपिप्रवर्तते ।।

अर्थ.

कारण विना मूर्ख पण नियम करतो नथी.

त्यारे आवा नियम करवानुं कारण शुं हशे ते केहेवाने घणु मुष- केल छे वपन विषे एक वाक्य निर्णय सिंधुमा लख्युं छे. -

विधवाकवरीबंधंभर्तृबधायजायते ।।
शिरसोवपनंतस्मात्कार्यंविधवयासदा ।।

पण ए वचन काहानुं छे, तेनो पतो नथी अने, क्षेपक, अने क- ल्पित छे एम जणाय छे, अने घणे ठेकाणे ए मान्य नथी मनू अने याज्ञवल्क्ये ए विषे काई लख्युं नथी कदाचीत यवन मुसल्मान हिंदु- स्तानमा संचार करवा लाग्या त्यारे ए जबरदस्तीथी स्त्रीओने पकडी ने लेई जता एवु देवल स्मृतिथी मालम पडे छे कारण ए ऋषी सिं-

धुं नदीने काठे रहेता अने तेना ग्रंथमां आवी स्त्रीयोने शी रीते शुद्ध करवी ए विचार लखो छे तेथी एम लागे छे के ते वखतमां कंई पण मोटुं संकट उत्पंन्न थयु हशे तेथी आवो ठराव थयो छे.

कलौनान्यगतिस्त्रिणांसहानुगमनादृत ॥ ऋग्वेद

वादात्साध्वीस्त्रीनभवेदात्म ।। घातिनी ॥ निर्णयसिंधु ॥

बीजे ठेकाणे एवुं लख्युं छे के

सहानुगमनंशस्तंवैधव्यस्याथपालनम् ॥

अमेरिकामां, जे वखत जमीदार लोकोए, गुलाम वेचाथी राख्या त्यारे एवो कायदो करवो पड्यो के गुलामोनी फरीयाद के साक्षी कोइ कोर्टमां सांभळवी नहीं अने गुलामनी कमाइ ते धणीनी कमाइ, अने गुलाम नासे तो, सरकार पकडीने धणीने आपे, तेज प्रमाणे धर्मशास्त्रमां स्त्रीयोनो अधिकार कहाडी लीधो अने तेमने दासत्व आप्युं त्यारे तेमने बंधन करवा वास्ते विधवा धर्म लखवा पड्या ते नीचे प्रमाणे.

एकाहारोसदाकार्यःनद्वितीयोकदाचन ॥

पर्यंकशायिनीनारीविधवापातयेत्पतिं ॥

नैवांगोद्वर्तनंकार्यंस्त्रियांविधवयाक्वचित् ॥

नाधिरोहेदनड्वाहंप्राणैःकंठगतैरपि ॥

कंचुकंनपरीदध्यात्वासोनविकृतंवसेत् ॥

तांबुलाभ्यंजनंचैवकांस्यपात्रेचभोजनं ॥

यतिश्चब्रह्मचारिश्चविधवाचविवर्जयेत् ॥

बीजु वृत बंधनने ठेकाणे लग्न ठराव्युं तेथी वृत बंधननो काळनो अति देश लेइने लग्ननो काळ टुंको कर्यो तेथी एवो ठराव कर्यो के

अष्टवर्षाभवेत्कंन्यानववर्षातुरोहिणी ॥
दशवर्षाभवेत्गौरीअतउर्ध्वारजश्वला ॥
अष्टमेवर्पेब्राह्मणोउपनयेत् ॥

सर्व शास्त्रनुं आदीकारण, अनुभव, अने तर्क ए बे छे आ बेथी शास्त्र बंधाय छे वैद्यशास्त्र, ज्योतिशशास्त्र, धर्मशास्त्र इत्यादिकनुं मूळ एज छे. पण लोभी के स्वार्थी मनुष्य ज्यारे शास्त्र उभु करवामा सामेल थाय छे त्यारे अनुभव अने तर्क बाजुए मुकीने स्वार्थी अने लोकहित ना शक कानुं, शास्त्रमा घाली दे छे तेथी लोकोनो बिगाड थाय छे आ देशने चार काळ थया प्रथम अज्ञानकाळ हतो तेमा श्रद्धा वधारे पण विचार ओछो तेथी हिंसा कर्याथी देव तृप्त थाय छे अने जे देव नहीं तेने देव केहेता अने ते देव एवा के मनुष्य पासेथी खावा मागे छे एवु ते काळमा धारेलुं, पछी पराक्रम काळ आव्यो तेमा रामचंद्र युधिष्टर अने विक्रम जेवा पराक्रमी राजा थया तेमणे आर्य लोकोने बहु सुख अने मोटापणुं आप्युं त्यारपछी षट् दर्शन वाळा निकळ्या ते वखतमा विचार काळ प्राप्त थयो ते वखतमा कर्मकान्ड उपरनी श्रद्धा. निकळी गइ अने मानसिक शास्त्र बहु वधी गयुं तप, देहदंड, उपवास, इत्यादिक धर्ममा पेठापछी जराकाळ आव्यो तेमा विचार उंधो पड्यो अने पराक्रम नष्ट थयुं हवे जेमना हाथमा कायदा करवाना हता तेमने स्वार्थ बुद्धिथी के पोताना अज्ञानथी एवा कायदा कर्या के लोकोनुं सर्व द्रव्य हरण कर्युं अने लोको आपणा भक्ष छे एम समजीने

नाना तरेहथी लोकोने खाइ गया अने हजारो कायदा एवा कर्या के लोकोमानो संप उठी गयो अने अदावतो वधी अने भारे बेडीओ लोकोना पगमा एवी सज्जड करी मुकी छे के तेथी लोकोनी हाल चाल अने विचार बंध पड्यो छे अने पोताने वास्ते जे खोराक करी मुक्यो हतो ते अने पेंडे पारका लोकोनो भक्ष थया, ए स्थितीमा आ देश हाल पड्योछे. पृथ्वी उपर घणा देश छे पण हिंदुस्तान जेवा हजारो वरसथी परतंत्र थएलो देश जणातो नथी अने कदाचीत आ देशने स्वतंत्रता मळवानो वखत आवेतो अहींआनालोक पोतानां स्वतंत्रना रक्षण करशे एवुं पण लागतुं नथी.

जे बेडीओ ऊपर लखी छे तेमानी थोडि हेठे बतावीछे.

१ द्विजस्याब्धौतुनौयातुशोधितःस्याप्यसंग्रहः ॥

२ शिरसोवपनंतस्मात्कार्याविधवयासदा ॥

३ स्त्रीशूद्रसमानधर्माः ॥

४ दत्ताकन्यानदीयते ॥

५ क्वचित्गाणीपतिव्रता ॥

अर्थ.

१. ब्राह्मण, क्षत्री, वाणीए नावमा बेसवुं नही. २ विधवाए वाळ राखवा नहीं. ३. स्त्री अने शुद्र ए बंने बराबर छे. ४ कन्याने पुनर विवाह न करवो. ५. जे स्त्री गायन करे ते पतिव्रता रहेवे नहीं इत्यादि नियम बाध्याथी हिंदुलोकोनुं पराक्रम जतुं रह्युं, १ हिंदुस्तानना त्रण तरफ दरियोछेअने उत्तर तरफ हिमालयछे माटे वहाणमा बेठा सिवाय परदेशमां जवाय नहीं अने परदेशमा गया विना ज्ञान के वेपार

नथवानो नथी, आ प्रमाणे नियम अंग्रेज लोकोए कर्यो होत, तो आ देशमा वहाण शिवाय शी रीते आवे अने आ देशमा मोटुं राज्य मेळ-व्यायी एमने जे अपरमित सुख मळ्युं छे, ते शी रीते मळत, माटे दरीयामा जवुं नहीं एवो नियम जे माणसे ठराव्यो ते माणस अत्यंत मूर्ख हशे एवुं जणायछे. हवे ए खरुं के हजारो लोक वाहाणमा बेशीने फरेछे अने मस्कत वगेरे ठेकाणे पण वेपार करेछे पोरबंदरना तथा कछमाडवीना वाणीया आफ्रीका खंडमा घणा छे, मारीचबेटमा हिंदु घणाछे तेज प्रमाणे काबुल, कंदहारमा, अने इरानमा पण घणा हिंदुओ वसेछे तेथी सदरहु नियम कोइ पाळ्तुं नथी ए खरुं छे तो-पण केटलेक प्रसंगे स्वार्थी ब्राह्मण कोइने छळ करवानो धारे तो सदरहु वचन तेमने टेको आपेछे, अने घणाखरा लोक अज्ञानीछे तेथी खरुं शुं अने खोटुं शुं एनो विचार यतो नथी, लोकोनो गाडरीयो प्रवाहछे. माटे महीपतराम रूपराम जेवा विलायत जइ आव्या ते काम मोटुं धैर्यनुं अने साहसनुं कर्युं अने एवुं काम करनारा घणाज थोडा हशे ते बाबत तेमनी तारीफ करवानी तो बाजुपर रही अने आज चौद वरस सुधी न्यातना लोक लढ्याज करेछे अने सदरहु वचन काढीने एकबीजाने टेको आपेछे, पण ए विशे कोइ विचार के विवेक करता नथी आवा लोक ज्ञानशुन्य थया छे.

२. बीजो नियम विधवाना केश काढवा विशे छे ते पण केटलाएक लोक मानता नथी. उत्तरहिंदुस्तान, गुजरात, द्रविड देशमां अने दक्षणमा पण मानता नथी.

३. त्रीजो नियमथी स्त्रीयोने शुद्र बराबर ठराव्या तेथी उपनयन गयुं ने बधाय स्त्रीनुं विवाह करवो एम थयुं तेथी बाळलग्न उत्पन्न•

थयुं अने लोक अल्पायु अने निर्बळ थया तेथी आखा देशनुं सत्यानाश थयुं जेने कन्या होय ते फिकरमां पडेछे अने वर सोधवा लागेछे पछी बीजवर मळे के केवळ नानुं बाळक मळे के वृद्ध मळे तो तेनो विचार न करता परणावेछे

४. चोथो नियम बांध्यो के, जे रांडे तेने फरी परणाववी नहीं, एवुं ठराव्याथी पाप बहु वध्युं अने बाळहत्या अने गर्भपात अपरमित थया छे, शास्त्रमां ए विशे अनेक मत छे ते वधाय स्मृत्यर्थ सारमां एकठा कर्या छे ते नीचे प्रमाणेः—

मृतेन्यस्मैप्रदातव्यामृतेसत्पपदांखुग ॥

पुरापुरुषसंयोगान्मृतेदेयेतिकेचन ॥

ऋतावदृष्टेकन्यैवपुनर्देयेतिकेचन ॥

आगर्भधारणात्कन्यापुनर्देयेतिचापरे ॥

आवा एनेक मत थयाथी निश्चय शो ते ठराववाने मुश्केल पडेछे प्राचीनकाळमां आठ प्रकारना विवाह हता तेना नाम -

१ ब्राह्म २ दैव ३ आर्ष ४ प्राजापत्य ५ आसुर ६ गांधर्व ७ राक्षस ८ पैशाच ॥

अने तेर प्रकारना पुत्र हता तेना नाम.

१ औरस २ पुत्रिकासुत ३ क्षेत्रज ४ गुढज ५ कानिन ६ पौनर्भव ७ दत्तक ८ क्रीत ९ कृत्रिम १० स्वयंदत्त ११ सहोढ १२ सोपविद्ध १३ द्व्यामुष्यायन

आमांथी बे गणाय छे ने बीजा बधा काढी नाख्या छे.

वेदमा घणे ठेकाणे पुनर्विवाहनी आज्ञा छे अने भारथमां दमयंतिनुं आख्यान प्रसीद्द छे तेज प्रमाणे—

पद्मपुराणमा अध्या ८४मा दिव्या देवीनी कथाछे ते हेठे लखीछे

उज्वलउवाच॥ प्लक्षद्वीपेमाहाराजआसीत्पुण्यमतिःसदा॥ दिवोदासेतिविख्यातःसत्यधर्मपरायणः॥१॥तस्यापत्यंसमुत्पंनंनारीणांमुत्तमंतदा॥ दिव्यादेवीतिविख्यातारूपेणाप्रतिमाभुवी॥२॥ पित्राविलोकितासातुरूपलावण्यसंयुता॥कस्मैदेयामयाकंन्यासुवरायमहात्मने॥३॥ इतिचिंतापरोभूत्वासमालोच्यनृपोत्तमः॥रूपदेशस्यराजानंसमाहुयनृपोत्तमं॥४॥ कन्याददौमाहात्मासौचित्रसेनायधीमते॥ तस्याविवाहकालस्यसंप्राप्तेसमयेनृप॥५॥ मृतौसौचित्रसेनस्तुकालधर्मेणवैकीलं॥दिवोदासस्तुधर्मात्माचिंतयामासभूपतिः॥६॥ब्राह्मणान्ससमाहुयपपृछनृपनंदनः॥ अस्याविवाहकालेतुचित्रसेनोदिवंगतः॥७॥ अस्यास्तुकीदृशंकर्मभविष्यंतब्रुवंतुमे॥ब्राह्मणाउचुः॥ विवाहोजायतेराजन्कंन्यायास्तेविधानतः॥८॥पतिर्मृत्युप्रयात्यस्यानोचेत्संगकरोतिच॥ महाव्याध्यभिभूतश्चत्यागंकृत्वाप्रयातिच॥९॥ प्रव्राजितोभवत् राजन्धर्मशास्त्रेपुदृश्यते॥ नस्याद्व्रजस्वलायावदन्येप्वपिविधीयते॥१०॥ विवाहेतुविधानेनपिताकुर्यान्नसं

शय: ।। एवंराजासमादिष्टोधर्मशास्त्रेषुकोविदै: ।।११।।
विवाहार्थंसमायातइंद्रप्रस्थेद्विजोत्तमै: ।। पुनर्दत्तातदातेन
रूपसेनायभूभुजे ।।१२।। यदायदामहाभागोदिव्यादेव्या
श्चभूमिप:।। चक्रेविवाहंतद्भर्त्ताम्रियतेलग्नकालत: ।।१३।।
एकविंशतिभर्त्तार: कालेकालेमृतास्तदा ।। तस्यास्तुरू
पसंश्रुत्यराजानोमृत्युनोदिता: ।।१४।।सग्राममंचक्रिरेंमुढा:
स्तेमृता:समरंगणे ।।

अर्थ—दिवोदास करीने एक राजा हतो तेनी कन्या दिव्या देवी करीने हती तेने चित्रसेनना राज पुत्र साथे परणावी एटलामा वर मरी गयो त्यारे ब्राह्मणोनी सभा करी राजाए पुछ्यु के हवे शी रीते करवुं, त्यारे ब्राह्मण बोल्या के, कन्या वरनेघेर वळावी नहीं त्या सुधी काई पण विघ्न आवेतो पुनर्विवाह थाय, ते सांभळीने राजाए पोतानी कन्याने चित्रसेन कुंवरने फरी आपी, पण ते वर तरतज मरी गयो, ए प्रमाणे ए कन्याना एकवीस वार लग्न थयां.

कन्याने ग्रह अनिष्ट होयतो लग्न पहेला कुंभ विवाह करवो एवुं लख्युं छे ते कुंभ फोडेथी एक धणी मरी गयो एम समजायछे ए प्रमाणे लोक करेछेपण कुंभ विवाह पछी जे लग्न थाय छे ते पुनर्विवाह केम न कहेवाय.

९ प्राचीन काळम। स्रीयोने नृत्य गायन शीखावता ते चाल हाल बंध पड्योछे अर्जुन विराटराजाने घेर ब्रहनटा थईनेरह्यो हतो ते जनानखानामां गायन शीखवा वास्ते रह्यो हतो, एज प्रमाणे बार व-

रस सुधी ब्रह्मचर्य पाळीने विद्याभ्यास करवानी चाल हती ते पण बंध थईछे. जनोई देना पेटेला विवाह करी मुकेछे, अने ब्रह्मचर्य बीलकुल पाळताज नथी,-कन्यानी जनोई मुदल काढी नांखी, अने भायडानी राखीछे ते अमसती नामनी राखीछे,पण विद्याभ्यास करवानो जे मुळ हेतु, तेनु कशुंए ठेकाणुं नथी. मनुस्मृतिमां लख्यु छेके त्रीस वरसनी उमरनो पुरुष होय त्यारे बार वर्षनी कन्या परणाववी.

त्रिंशद्वर्षोवहेत्कन्यांहृद्यांद्वादशवार्षिकीं॥

आ शिवाय त्रीवर्णमां कन्या अने अन्न व्यवहार हतो, ते हाल बंध पडयो छे, एटलुज नहीं पण ब्राह्मण ब्राह्मणमांज वांधा पडया छे, ते एक बीजानु जमता नथी ने कन्या आपता नथी, तेथी घणी अडचणो पडीछे,कोई नातमां कन्यानी छतछे ने कोई नातमां अछतछे, अने ए वाधाने लीधे गायकवाड जेवो मोटो राजा होय तेने पण भीखारी कन्या सोधवी पडेछे, कारण के सिंधीया के होलकरनी कन्या एना कामनी नथी, तेथी भीखारीनी कन्या ज्यारे परणे त्यारे ते कन्यानो मान पण रहेतो नथी अने धणी वगर परणेली राडो राखे तो तेमना टोळामा राणीने पण हींडवु पडे, अने दासी करता दासी थईने रहेवू पडे. अने मोटाना घरमा नाहानो आदमी आवी कन्यानी हीमायतथी मोटु पद पामेछे, तेथी बहु बगाड थाय छे, तेथी सुभाषितकार लखे छेके,

शालकोग्रहनाशाय वित्तनाशायकुंजरः॥

बरोबरीनी पदवीना ग्रहस्थोनी सगाई थाय तो मोटो उपयोग थाय छे. हाल हिंदुस्तानना माहाराणीनो दिकरो रुसना बादशाहनी,

कन्या परण्यो अने आवी प्रकारनां कन्यानुं अपमान थाय नहीं, अने कदाचित नातनी अडचणने लीधे ए राणीनो दीकरो कोइ सोजरनी कन्या परणत तो ते कन्यानुं मान रहेत नहीं अने तेनो बापभाइ घरमां पेसीने कन्याना हीमायतथी, राज्यनो बीगाड करत, अने बराबरीनी कन्या परण्याथी बंने राज्य मजबुत थइ गयां माटे ए विचारपण ध्यानमा राखवां लायक छे.

ब्राह्मणोनी उपजीविका कर्म उपर छे कोइ माणस शांतिक,पौष्टिक, इष्टापूर्त, यजन, याजन, कर्म करे तो ब्राह्मणोने पैसा मळे, जे वखत बौधधर्म चाल्यो, ते वखत ब्राह्मणो सामा थया तेनुं कारण एज के, तेमनी उपजीविका बंध पडी, तेथी ब्राह्मणोने बहु क्रोध आव्यो, गमे ते मार्ग चाले अने तेमनी उपजीविकाने काइ धक्को न लागतो होय तो ते सामा थता नथी प्राचिनकाळमा ज्यारे ज्ञानमार्ग निकळ्यो, त्यारे लोक सन्यासी थवा लाग्या, त्यारे एवी गोठवण हती के, बधाए कर्म करीने वृद्ध थाय त्यारे वानप्रस्थ अने संन्यास ग्रहण करता, तेथी ज्ञानमार्गवाळानो अने ब्राह्मणोनो झाझो वांधो पड्यो नहीं, पछी भक्ति, मार्गवाळाये एवुं ठराव्युं के भजन शिवाय बीजुं काई कर्म करवानी जरुर नथी, अने कर्मकान्डीनो मोक्ष स्वर्गमा हतो ते ज्ञानमार्गीए एवुं ठराव्युं के, स्वर्ग तो थोडा दिवस चालवानुं छे, माटे एवुं नश्वरफळ विशे प्रयत्न करवो नहीं, ज्ञानमार्गीवाळानो मोक्षने सायुज्य मुक्ति कहे छे एटले आत्मा अने ब्रह्म एक थई जाय अने ज्योतिमा ज्योती मळे त्यारे जुदुपणु काईज रहे नहीं अने पाणीमा मीठुं पडे अने एक थई जाय छे ते प्रमाणे ज्ञानमार्गीवाळाए मुक्ती मानी छे, पछी भक्तिमार्गवाळाए एवुं ठराव्युं के स्वर्ग अने सायुज्यता, ए बे

कामना नथी, अने मोक्ष तेनुं नाम छे के ज्या भगवाननुं सानिध्य अने सेवानुं लाभ मळे अने जे ठेकाणे गयाथी फरी मृत्यु लोकमा, न अवतरीए तेनु नाम मोक्ष,

तुकाराम कहेछे.

हेचिदानदेगादेवा॥तुझाविसरनव्हावा॥नलगेमुक्तिधनसंपदा॥संतसंगदेईसदा॥गुणगायीनआवडि॥हेचिमाझीसवेजोडि॥तुकाह्मणेगर्भवासी॥सुखेघालावेआह्मांसी ॥१॥

यद्गत्वाननिवर्ततेतद्धामपरमंमम ॥ गीता॥ अ०१५

एवुं स्थान प्राप्त थवाने वास्ते भक्ति शिवाय बीजुं साधन नथी ए लोक तो कर्मने निर्दयपणुं गणे छे अने ज्ञानने लुखु गणे छे§ भक्त लोक कर्मने के वर्णने गणता नथी जे मोटा मोटा भक्त थई गया तेमा अनेक जातीना लोक हता विदुरजी ए शुद्र हतो, अजामेळ ए पापी ब्राह्मण हतो, नाभाजी ढेड हतो, तेने भक्तमाळ ग्रंथ रच्यो छे, रोहीदास चामडीओ हतो, चोखामेळ ए भंगी हतो, नामदेव दरजी हतो, कबीर ताई हतो, एकनाथ अने नरसींह मेहेतो, ए ब्राह्मण हता तुकाराम वाणीयो हतो आ रधाए धर्म मुकीने भक्त थया हता एमाना केटलाएक परोपकारार्थ ग्रंथ रच्या छे त्यारे ब्राह्मण केहेवा लाग्या के आवा प्राकृत ग्रंथ करशो त्यारे अमारी वृति डुबी जशे, पछी अमने कोण पुछशे एम समजीने भक्तो साथे ब्राह्मणनु वेर चालतु ने चालतुं आवे छे, तुकाराममनी जोडे रामेश्वरभट बहु लड्यो अने तुकाराममना कवित्ता पुस्तक भीमा नदीमा नाखी दीधां, तेज प्र-

§ तुकाराम कहेछे —आत्मानकोमेराजान ॥ अभिमानिकहोजन

माणे गीतानां टीकाकार ज्ञानेश्वरना जोडे ब्राह्मणोये बहु वेर बांध्युं, अने एकनाथने पैठणना ब्राह्मणोए घणी वार न्यात बाहार मुक्यो ए बधी कथा भक्तिवीजय ग्रंथमा लखी छे तेथी एम जणाय छे के, भक्तनुं अने ब्राह्मणनुं मोटुं वेर छे तेनुं कारण एटलुंज के कर्म उपर भक्त श्रद्धा राखता नथी हालमा ब्राह्मणनी वृत्ति बहु दुटी गई छे तोपण केटलाक लोक एमने हजी माने छे, ब्राह्मण लोक जमवाना बहु लोभीया छे, कंई पण जमवानुं होय तो २० गाउथी दोडतो आवे, ने कोईना घरमा माणस मरी गयुं होय तो तेनुं बारमुं तो पहेला दीवसथी गणतो रहे, के फलाणा दीवसे बारमु आवे छे, बीजुं काई मोटुं काम होय तेनो विचार करवो होय ते वेळे बोलाव्यो होय तो कोई पण ना आवे, दक्षणा के काई जमवानुं होय तो वगर तेडे पण जाय, ब्राह्मण शीवायना जे बीजा लोको छे तेमने पण आ ब्राह्मणनो गुण लाग्यो छे तेपण काई मोटुं सार्वजनीक काम होय तो बोलावता पण ना आवे अने जमवानुं होय के लग्नकार्यनो वरघोडो होय तो वाणीया कणबी पण जरूर आवे आवा प्रसंगे भेगा थवानुं ए पोतानो धर्म जाणे छे, बीजुं काई काम होय तो ते भूली जाय ने ध्यानमा रहुं नहीं अमारे शुं काम छे एम कहीने जाय नहीं. कबीर साहेब कहे छे के

ब्राह्मणभंगीरावळाचवथाकाहियेकाग ॥
कहेकबीरएचारोजणनोमुरदाउपरलाग ॥

ब्राह्मण लोकोए पोताने वास्ते मोटु राज उभु कर्युछे ज्याजाय त्यां एमनु सनमान, वगर पराक्रमे वगर गुणे थायछे, ज्यां सुधी यज्ञयाग चालता हता, त्यां सुधी ए वावन घणा मोटा ग्रंथ लख्या छे. केटला

एक कहेछेके अमे घनान्त वेद भण्या छीए कोई कहेछे के अमे सोमान्तश्रौत भण्या छीए एवु कर्मकान्डनो विस्तार कर्यो छे.—

ज्यारे कर्मकान्ड बेठुं त्यारे एमणे बीजी युक्ति सोधी कहाडी ते एवीके नदिओ अने गाम अने तळाव ईत्यादिक जे वेदमां नहि तेनो माहात्म लखवा लाग्या अने ते कथा जेम जेम जुनी थई तेम तेम पक्व थईने फळ आपवा लागी ए प्रमाणे काशी, प्रयाग, गया, गोदा, रेवा, पुष्कर, जगन्नाथ श्री नाथ ईत्यादिकना हजारो माहात्म लख्या अने ए टंकशाल हजी जारीछे पंढरी माहात्म पचास वर्ष उपर लखी गयुं छे, डाकोरनु माहात्म चार वरस उपर लखी गयुंछे पावकाचळ माहात्म एटले पावागढनी जात्रानु माहात्म श्रीस्थळ माहात्म एटले सीतपुरनु माहात्म थोडा वरस उपर लखी गयुंछे एज प्रमाणे ज्ञाती ज्ञातीना माहात्म लख्याछे. जेवां के नागरखंड,औदिच्य प्रकाश, राइक पुराण, ईत्यादिक हजारो माहात्म प्रसिद्ध छे ए ग्रंथोमा लखनाराओए घणी धूर्तता करी छे.*

---

*ज्यांहा त्यांहा कळि आव्यो छे अने लोकोनी श्रद्धा ब्राह्मणना लेख उपरथि उठी जशे माटे बढाय लोकोए गफलतमां रहेवुं नाहि अने श्रद्धा छोडवी नहीं छोडशो तो नर्कमा जशो एवी वातो घणे ठेकाणे लखी छे. कळि बुद्धि बगाडेछे अने नर्कमा नाखे छे माटे हुंशियारीथी रहेवुं. जे भाग्यवान हशे तेज ब्राह्मणना लेख उपर विश्वास राखशे पापी जीव हशे ते मान राखे नहीं एवि धमकावणी पाने पाने लखीछे.

नविश्वासंकरिष्यंति देवपुत्राह्मणेषुच ॥

माणे गीताना टीकाकार ज्ञानेश्वरना जोडे ब्राह्मणोये बहु वैर बांध्युं, अने एकनाथने पैठणना ब्राह्मणोए घणी वार नात बाहार मुक्यो ए बधी कथा भक्तिविजय ग्रंथमा लखी छे तेथी एम जणाय छे के, भक्तनुं अने ब्राह्मणनुं मोटुं वैर छे तेनुं कारण एटलुंज के कर्म उपर भक्त श्रद्धा राखता नथी. हालमा ब्राह्मणनी वृत्ति बहु टुटी गई छे तोपण केटलाक लोक एमने हजी माने छे, ब्राह्मण लोक जमवाना बहु लोभीया छे, कंई पण जमवानुं होय तो २० गाउथी दोडतो आवे, ने कोईना घरमा माणस मरी गयुं होय तो तेनुं बारमुं तो पहेला दीवसथी गणतो रहे, के फलाणा दीवसे बारमु आवे छे, बीजुं काई मोटुं काम होय तेनो विचार करवो होय ते वेरो बोलाव्यो होय तो कोई पण ना आवे, दक्षणा के काई जमवानुं होय तो वगर तेडे पण जाय, ब्राह्मण शीवायना जे बीजा लोको छे तेमने पण आ ब्राह्मणनो गुण लाग्यो छे तेपण काई मोटुं सार्वजनीक काम होय तो बोलावता पण ना आवे अने जमवानुं होय के लग्नकार्यनो वरघोडो होय तो वाणीया कणबी पण जरूर आवे आवा प्रसंगे भेगा थवानुं ए पोतानो धर्म जाणे छे, बीजुं काई काम होय तो ते भूली जाय ने ध्यानमा रहुं नहीं अमारुं शुं काम छे एम कहीने जाय नही. कबीर साहेब कहे छे के

ब्राह्मणभंगीरावळाचवथाकाहियेकाग ॥
कहेकबीरएचारोजणनोमुरदाउपरलाग ॥

ब्राह्मण लोकोए पोताने वास्ते मोटु राज उभु कर्युछे ज्याजाय त्या एमनु सनमान, वगर पराक्रमे वगर गुणे थायछे, ज्यां सुधी यज्ञयाग चालता हता, त्या सुधी ए बाबत घणा मोटा ग्रंथ लख्या छे, केटला

एक कहेछेके अमे घनान्त वेद भण्या छीए कोई कहेछे के अमे सोमान्तश्रौत भण्या छीए एवु कर्मकान्डनो विस्तार कर्यो छे.—

ज्यारे कर्मकान्ड बेठुं त्यारे एमणे बीजी युक्ति सोधी कहाडी ते एवीके नदिओ अने गाम अने तळाव ईत्यादिक जे वेदमां नहि तेनो माहात्म लखवा लाग्या अने ते कथा जेम जेम जुनी थई तेम तेम पक्व थईने फळ आपवा लागी ए प्रमाणे काशी, प्रयाग, गया, गोदा, रेवा, पुष्कर, जगन्नाथ श्री नाथ ईत्यादिकना हजारो माहात्म लख्या अने ए टंकशाल हजी जारीछे पंढरी माहात्म पचास वर्ष उपर लखी गयुं छे, डाकोरनु माहात्म चार वरस ऊपर लखी गयुछे पावकाचळ माहात्म एटले पावागढनी जात्रानु माहात्म श्रीस्थळ माहात्म एटले सीतपुरनु माहात्म थोडा वरस उपर लखी गयुंछे एज प्रमाणे ज्ञाती ज्ञातीना माहात्म लख्याछे. जेवा के नागरखंड,औदिच्य प्रकाश, राइक पुराण, ईत्यादिक हजारो माहात्म प्रसिद्ध छे ए ग्रंथोमा लखनाराओए घणी धूर्तता करी छे.*

---

*ज्यांहा त्याहा कळि आव्यो छे अने लोकोनि श्रद्धा ब्राह्मणना लेख उपरथि उठी जशे माटे वद्धाय लोकोए गफलतमा रहेवुं नाहि अने श्रद्धा छोडवी नहीं छोडशो तो नर्कमा जशो एवी वातो घणे ठेकाणे लखी छे. कळि बुद्धि बगाडेछे अने नर्कमा नाखे छे माटे हुंशियारीथी रहेवुं. जे भाग्यवान हशे तेज ब्राह्मणना लेख उपर विश्वास राखशे पापी जीव हशे ते मात्र राखे नहीं एवि धमकावणी पाने पाने लखीछे.

नविश्वासंकरिष्यंति देवेषुब्राह्मणेषुच ॥

तेज प्रमाणे केटलाएक मास तिथि योगवार इत्यादिकनुं माहात्म लख्युं छे तेने व्रत पर्वणी कहे छे व्यतीपात सोमवार पुर्षोत्तममास कपिलाषष्टि महोदय विगरे ते जेम जेम जुना थता जायछे तेम तेम वधारे मानवामां आवे छे करोडो रुपीआ खरचीने लोक काशी यात्रा करेछे पर्वणी अने व्रत उपर दान पुण्य करेछे, तेथी माहात्म लखनारनो प्रयत्न व्यर्थ गयो नथी एतो उघाडुं छे अमेरिकामां गुलाम उपर घणी कमाइ करता पण ते काळ गयो. पण आ वधायनी अवधी एवी जणाय छे के ज्यां सुधी लोक अज्ञानी छे त्यां सुधी एमने एम चालशे ए वात ब्राह्मणोना मनमां सारी रीते वसेछे माटे जेटलो प्रकाश थाय अने विचार वधे ते वात तेमने सारी गमती नथी. पण हालना काळमां ए बाबतमां प्रतिकार थाय एवुं नथी.

ब्राह्मणोने शौको घणो थई छे, ब्राह्मण जमाडवाने ठेकाणे आखाडाना बावा अने मंदिरना साधु जमाडे छे ब्राह्मणोने ए वात सारी लागती नथी. ब्राह्मणोना मनमां आ वर्णसंकर साधु क्याहाथी आव्या हमारी परंपरा प्राप्त मोटाई घणा ग्रंथमां वर्णन करेली ते जती रही. के शुं पण लोक कहेछे के ब्राह्मणमां तपतेज नथी संसारी अने

कर्मभ्रष्टाभविष्यंति चतुर्वर्णाकलौयुगे ।।
राजानोधर्महीनाश्च पीडयिष्यंतितंप्रजाः ।।
अधर्मवल्लभोलोको धर्मद्वेषीचमत्सरी ॥
भविष्यंतिकलौविप्राआचारश्रुतिवर्जिताः ।।
द्यूतमद्यरतानित्यंसर्वव्यसनिनःसदा ॥
जैमिनीअश्वमेधेकालिधर्मप्रकरणे ।।

लोभीयाने जमाडवामां शुं पुण्य? ते करतां तीर्थवासी,त्यागी,तपोनीधी, बावा जमाडीये तो शुं खोटुं. एवा घणा बाधा पड्या छे. साधु जे थया छे ते ईश्वर अलौकिक कामो भक्तने वास्ते करे छे एवुं माने छे.

ज्ञानीनुं ब्रह्म निर्गुण छे ते काई ए करतुं नथी. पोत पोताना कर्म प्रमाणे फळ थायछे. ज्ञाननुं फळ सायुज्यता छे एम समजीने ज्ञान मार्गवाळा कोइनी प्रार्थना के भक्ति करता नथी-भक्तिवाळा परमेश्वरने कर्ता अने सगुण समजे छे अने परमेश्वर भक्तनुं हित करे छे एम समजे छे. तुकाराम नामनो प्रख्यात साधु दक्षणमा थयो तेना वचनो दक्षणी भाषामा छे ते निचे लख्या छे

पडताजडभारी ॥ दासेंआठवावाहरि ॥
मगतोहोउनेदिशीण ॥ आडघालिसुदर्शन ॥
कोठेंनदिसेपाहाता ॥ उडिघालिअवचिता ॥
हरिच्यादासाचिंता ॥ हेंतोअघटितवार्ता ॥
आह्माघालिपाठीकडे ॥पुढेकळिकाळाभिडे ॥
हाकेसरशिउडि ॥ घालोनीयास्तंभफोडि ॥
ऐसाकृपावंतकोण ॥ एकभगवंतावाचून ॥
तुकाह्मणेकृपानिधी ॥ आह्माउतरीनावेमधी ॥१॥
वेदाचातोअर्थआह्मासिचठावा ॥ येरानीवाहावा भारमाथा ॥१॥
संध्याकर्मध्यान ॥ जपतपअनुष्ठान ॥

काळ ठरावीने लाखो रुपिया ते उपर हजारो वरसथी कमावे छे. काइ पण युक्ति भूल्या नथी. कोइनो बाप मरी जाय तो, तेनो छोकरो सज्जा लोटो विगरे ब्राह्मणने आपे तो स्वर्गमा मरनारने तेटलुं मळशे एवुं ठराव्युं तेथी मरनारने पछवाडे हजारो दान करेछे. परमेश्वरना आडतिया ब्राह्मण थयाछे अहिंया आप्यूं के स्वर्गमा भलामण पोहोंचे छे अने तरत जमा खर्च पडेछे. आ वातनु सार एटलुंज के जे वखत एक बाजु बहु धूर्त ज्ञानी अने जबरदस्त होयछे अने बिजी बाजु अशक्त अज्ञान अने कमजोर होयछे ते वखत पोतानो स्वार्थ थाय तेटलो करी लेवाने कोई भूलतो नथी ए साधारण अने स्वभाविक वात छे, पोतानो स्वार्थ भूलनारो एवो परमेश्वर भक्त कोकज हशे, घणा एवा नथी तोपण हमे एवा छिये एवुं पाखंड करनारा घणा होयछे.

भागवतमा ऋषभदेवनि कथा छे ते उपरथी एम जणायछे के अहिंसा विषे उपदेश करवामा प्रथम वैष्णव हता. नारदजी वैष्णवमा गणायछे, ए पण यज्ञ न करवानो उपदेश करता, पछि इश्वरने माननार अने नास्तिक ए बे पंथ थया पछि जे ग्रंथ थया ते पोत पोताना जुदा थया. ए मानवाने आधार छे जैमिनि अश्वमेध ए ग्रंथ कोई वैष्णवनो लखेलो छे तेमा लखे छे के अश्वने भिमसेने मार्यो ते वखत कपूरनो ढगलो थयो अने लहु निकळयुं नहीं पण दूधनी धारा चालि पछि व्यासजी कपूर होम करवा लाग्या ते वखत इंद्र देव आविने उभो रह्यो. तेथी एम मालूम पडेछे के ए क्रूर विधी छपाववानी मतलबथी लख्युं हशे. वेद अने सूत्रमा एवो प्रयत्न करेलो नथी तेथी सूत्र सूधि हिंसा बाबत तकरार नहोति एम जणाय छे. ऋषभदेव, बौध विष्णुना अवतार गणेला छे. वैष्णव धर्मनुं मूळ दया धर्ममा छे

एम लागेछे हिंसानी तकरार उभि रह्या पछिना ग्रंथनु रूपज जुदुछे.

हिंदुस्ताननी पंडित विद्वज्जन केहेवाय छे पण एमनि विद्या लोकोना काममा आवती नथी, उद्यम, धंधा वधारवामा ए विद्या मदद करती नथी उलटी धधा भागवामा मदद करेछे माटे विद्वज्जन ए पद ब्राह्मणोने घटे छे के नहि ए मोटो विचार छे खरी उपयोगनी विद्या कहिये तो शिल्प, नाविक शिल्प, सैन्यविभुकल्प, भूगोळ इत्यादिकनो ठेकाणोज नथी. राजा लोक विद्वज्जनोनो संग्रह बहु करेछे पण जेम जेम आ संग्रह वधेछे तेम ते राजानो सत्यानास जाय छे एनुं शुं कारण हशे?

मूळ दया धर्म प्रतिपादन करनारा वैष्णव हता तेमा जे नास्तिक थया तेमणे जगतनुं कारण कर्म स्विकार्युं तेमनुं केहवुं एम छे.

ब्राह्मायेनकुलालवन्नियमितोब्रह्मांडभांडोदरे ॥ विष्णुर्येन दशावतारगहनेक्षिप्तोमहासंकटे ॥ रुद्रोयेनकपालपाणि पुटकेभिक्षाटणंकारिता ॥ सूर्योभ्राम्यतिनित्यमेवगगनं तस्मैनमःकर्मणे ॥१॥

प्राचीन काळमा पाच कर्म चालता हता ते कळीमा न करवा विशे नीचे लख्या प्रमाणे वचन पराशर ऋषिनुं छे

आग्निहोत्रंगवालंभं संन्यासंपलपैतृकं ॥
देवराच्चसुतोत्पत्तिकलौपंचविवर्जयेत् ॥

अर्थ.

अग्निहोत्र, गायनी हिसा, संन्यास, ने श्राधमा मासनु भक्षण, अने दीयर साथे परणावनु

अवघेघडेनाम ।। उच्चारिता ॥१॥

जैसाबोलेतैसाचाले ॥ त्याचिवंदावीपाउलें ॥१॥

मायबापकेवळकाशि ।। तेणेनजावेतिर्थाशी ॥१॥

आलितिर्थपर्वणि ।। न्हाव्याभठाव्यालिधणि ॥१॥

अवघ्यापापेघडलायेक ॥ उपासकशक्तिचा ॥१।

भावेगावेगीत ॥ शुद्धकरूनियाचित्त ॥

नामघेतावाटचालि ॥ यज्ञपाउलापाउलिं ॥१॥

सांडोनियारामराम॥ब्राह्मणह्मणतिदोमदोम॥१॥

दयातिचेनाव ॥भूताचेपाळण ।।आणिनिर्दळण ॥

कंटकाचे ॥१॥

धन्यतेचिप्राणी ।। क्षमादयाज्याचेआंगी ॥

यमधर्मसांगेदूता ।। तुह्मानाहींतेथेसत्ता ॥

गदाचक्रघेउनीहरि ॥ उभाअसेत्याचेद्वारी ।।

जेथेदयाक्षमाशांति ।। तेथेदेवाचिवसति ।।

तुकाह्मणेत्रिविधताप ।। मगजातिंआपोआप ॥१॥

ज्ञानेश्वरनीवाणि.

योगयागविधी ।। येणेनोहेसिद्धि ॥ वायाचिउपाधी ॥.

दंभधर्म॥ वेदशास्त्रप्रमाण ॥ श्रुतिचेवचन ।। एकनारा

यण ॥ सारजपा ॥ जपतपकर्म ॥ क्रियानेमधर्मे ॥ वाउगाचिश्रम ॥ व्यर्थजाय ॥ हरीपाठ

एवा भक्तोना वाक्यो बहु छे ते लखता पार आवे नहीं. हासिल एटलु चके प्राचिनकाळनुं माहात्म उपर हालना ब्राह्मणोए अभिमान राखवो नहीं प्राचिन अभिमान उपर लक्ष राखीने बद्दा क्षत्रि राजा नाश पाम्या अने हजि खराब थायछे तेज प्रमाणे प्राचीन मोटापणुं बतावीने ब्राह्मण मोटा थवा चाहे छे पण ए कशा कामनुं नथी. प्राचीनकाळमा अज्ञान बहु हतुं ते हाल गयुं माटे अज्ञानना आधारे मोटापणुं मेळवेलुं ते प्रकाशमा रहेवानुं नथी. आजना काळप्रमाणे जे सुधारो अवश्य छे ते चलावामा ब्राह्मण लोके मदद करवी. उत्तमगुण अने विद्या संपादन करवाने वास्ते लोकोने सदुपदेश करवो, देशमा संपनुं रक्षण करवुं. ए प्रकारे चालशे तोज एमनु महत्व कायम रेहेशे. इंग्रेज लोक राज्य रीतिमा अने कायदा विगेरे करवामा महाधूर्त कहेवाय छे कारण के हरेक ठेकाणे बार आना पोतानी नातनो स्वार्थ अने चार आणा देशि लोकोनो स्वार्थ राखे छे एम केहेवाय छे पण ब्राह्मणोना कायदा तपासिये तो पोताना स्वार्थ पंदर आना अने बिजानो स्वार्थ एक आनो राख्यो छे एम स्पष्ट जणाय छे. ज्या त्या कथामा ब्राह्मणोना शापथि हजारो राजा बळि गया मरी गया परमेश्वरने पण ब्राह्मणोनि बिहिक अने परमेश्वर विष्णुने ब्राह्मणोए लात मारी तो पण परमेश्वर एमने पगे लाग्या. एवि कथा प्रसिद्ध करिने पोतानुं महात्म अपरीमित वधार्युं पण ते वात थई गइ. आज तेवो काळ नथी ए नक्की समजवुं जोईए.

ब्राह्मणोने ग्रहण गणवानि रीत मालुम पडि ते उपरथी ते पर्व-

पराशर ऋषि वैष्णव हता ए ऋषिए जे स्मृति करी छे तेमां हिंसानो निषेध बहु कर्यो छे विष्णुपुराण ए ऋषिनुं करेलुं छे अने भागवत पंथमां ए ऋषि मुख्य गणाय छे.

प्रल्हादनारदपराशरपुंडरीकव्यासांबरीषशुकशौनकभीष्मदाल्भ्यां ॥रुक्मांगदार्जुनवसिष्ठविभीषणादीपुण्यानिमांपरमभागवतंस्मरामि॥

अग्निहोत्र बंध कर्युं तेनुं कारण हिंसा बंध करवानुं हशे एम जणाय छे कारण अग्निहोत्र उत्पन्न कर्यां पछी पशुयाग प्राप्त थायछे माटे हिंसा बंध करवाना मनलबथी हिंसानुं मूळ काढी नाख्युं एम जणाय छे केटलाएक लोक कहे छे के मंत्र संरक्षण करवाने वास्ते यज्ञ करवो जोईए अने जे वैष्णव लोक पिष्ट पशु करे छे ते पण एम कहे छे के हिंसा न करवी पण यज्ञ करवो कारण यज्ञ कर्याथी मंत्रनुं रक्षण थायछे. आवी फीकर शा वास्ते राखवी पडे छे ते समजतुं नथी, कारण युगना आरंभे ब्रह्मदेव ऋषियोने मंत्र आपे छे एवुं पण लख्युं छे.

युगांतेंतर्हितान्वेदान्सेतिहासान्महर्षयः ॥
लेभिरेतपसापूर्वमनुज्ञाताःस्वयंभुवः ॥

एम छतां पण मंत्र रक्षणने वास्ते अध्यायन पारायण, यज्ञ इत्यादिक कर्म चाले छे.*

---

*जुनागढना दिवान गोकुलजी जालाए सांख्यायनी ऋग्वेदि ब्राह्मण छे ते हाल अग्निहोत्रि थया छे. अमदावादनो सदरअमीन

गोपाळराव मैराळ ए ग्रहस्थ-बडोदरामा प्रसीद्ध हता, तेमनो भत्रीजो नारायणराव पाडुरंग एमने नर्मदाने काठे वेळु करीने गाम छे, ते गाममा सात यज्ञ कर्या, अने तेमा लाखो रुपीया खरच कर्या एवी कीर्ती छे अने ए प्रमाणे घणा लोक आज करे छे. ते विशे गुजरात शिवाय बीजा देशमा वाधो लेता नथी क्षत्री राजा नथी माटे अश्वमेध करता नथी एम कहेवायछे. जे ब्राह्मणना कुळमा त्रण पुरुष सुधी यज्ञ न थयो होय तेने दुर्ब्राह्मण कहेछे, अने ते बाबत प्रायश्चित करवुं पडे छे

गवालंभ एटले गायनी हिंसा ए वेदमा घणी लखी छे भागवतमा आलंभन शब्दनो अर्थ देवार्पण समजवो हिंसानो न समजवो एवु लख्युं छे मनु अने याज्ञवल्क्य स्मृति सुधी गवालंभ कायम राख्युं छे, त्यार पछी पुराणमा अने नाटक ग्रंथमा पण ए विधी लखेलो छे तेथी ए निषेध कर्याने बहु वर्ष थया नथी एम जणाय छे, तैतिर्य ब्राह्मणमां अने शतपथ ब्राह्मणमा नीचे लखेलो मंत्र मळे छे.

गव्यान्पशूनुत्तमेहन्नालभते।। आर्यग्रंथनु पृष्ट २६-२०

ए वेदार्थी मधुपर्क विधी उत्पन्न थयो राजा घेर आवे के वर घेर आवे तो, उत्तमज दहाडो कहेवाय, तेवा प्रसंगे गो पशु विधान लख्युं छे, ते मनु अने याज्ञवल्क्य सुधी कायम रह्युं, पछी तेनो निषेध पड्यो ते कळीना कारणथी पड्यो कळी एटले बौध धर्मनी तकरार

भाउ मैराळे पण अग्निहोत्र लिधू छे कुलाबाना बाबाजी दिवानजीना दिकरा धुंडी राजविनायक उर्फे भाउ साहेब बिवलकर ए वर्सोवरस एक वे यज्ञ करीने घणा रुपेया खर्चे छे ए सांप्रतकाळनो प्राचीन वार्हछे, एने नारद कोण मळशे ते कोण जाणे ?

तोपण उत्सर्ग विधी चाले छे, ब्राह्मण लोको तेनी सरत भुली जता नथी अने विधी न थाय तो न थाय, पण तेनी सरत राखवामा अने ते विधीना पुस्तको भणवामा पुण्य जाणे छे

मधुपर्क करवानी रीति ब्राह्मणमा हती एमज नहि पण अन्य देशमा प्राचिनकाळमा ए प्रमाणेज हतुं एवुं बायबलनो पेहलो ग्रंथ "जीनीसीस" एटले ऊत्पत्ती प्रकरण तेना अध्याय अढारमानो सातमो श्लोक एमा इब्राहिम पेंगबरे एज प्रमाणे अर्ध्य, मधुपर्क कर्यानो दाखलो लख्योछे

आश्वलायन सूत्रमा अने बीजा सूत्रमा मधुपर्कनी विधी वाचीए तो गवालंभ मात्र लख्युं छे, बीजो काइपण विधी जणातो नथी.

३ कळीमा संन्यास लेवो नहीं एवुं लख्युंछे तेनुं कारण एवुं जणायछे के आ काळमा लोको संन्यास लेइने तोफान अने पाखंड करशे तेज प्रमाणे थयुं छे घणाक संन्यासी वाममार्गी होय छे अने घणा एक ढोंगी होयछे त्यागीनो धर्म बीलकुल साचवता नथी अने उलटा लोभी थायछे, अने लोकोने बहु पीडा करे छे शंकराचार्य स्वामीए ब्राह्मणने संन्यासी कर्या एटलुंज नहीं, पण शुद्र सुधी चार वर्णमा संन्यासी कर्या ते गोसावी कहेवाय छे तेज प्रमाणे वैष्णव लोकोमा वैरागी त्यागी कहेवाय छे अने भजन शिवाय बीजुं काइ कर्म करता नथी एमनी कर्मनी पटल पद्धती जुदी छे कोइ मरे त्यारे भंडारो करे छे बीजुं काइ कर्म करता नथी एमनो गायत्री पण जुदी छे अने केटलाक घरबारी कहेवाय छे ते घर धंधा पण माडे छे

४ "पलपैत्रीक" एटले श्राधमा पितृ निमित्य मास खावानुं. ए विषे पण एम जणाय छे के प्राचीन काळमा बधाय लोक हिंसक हता

अने मृगया करीने जीवता जे जनावरो मारीने लावता तेने देवने अर्थे होमीने वार्को खाता एवी वैदिक काळमा चाल हती एम जणाय छे. त्यारपछी स्मृतिना वखतमा ए चालनो अपकर्ष थयो ते एटले सुधी के जे विधी नियमीत थया हता, ते सीवाय कोइए मास खावुं नही स्मृतिओमा एवो निबंध करेलो जणाय छे. पछी पुराण थया तेमा पण विधीमा मास खावानी छुट छे, माटे वैश्णव लोक आवा पुराणने तामसी गणे, छे अने जे पुराणमा दया धर्म प्रतिपादन कर्यो छे तेने सात्विक पुराण कहे छे. वैश्णव लोको सात्विक धर्मने भागवत धर्म पण कहे छे श्रीमदभागवतमा सात्विक धर्मनुं प्रतिपादन वधारे कर्युं छे माटे वैश्णव लोकोने ए पुराण बहु पसंद पड्युं छे, कारण हालनी रीतभातथी ते बहु मळनुं आवे छे श्राद्ध विशे निर्णयसिंधुमा वचन लख्यूं छे ते नीचे प्रमाणे,

यत्रमातुलजोद्वाहीयत्रवैवृपलीपतिः ॥
श्राद्धंनगछेतद्विप्राकृतंयत्रानिरामिपं ॥

अर्थ.

मामानी कन्या परणी होय ते के शुद्रनी कन्या परणी होय एवा माणसने घेर श्राद्ध खावा जवुं नहीं अने जे श्राद्धमा मांस नहीं ते श्राद्धमा कोइ ब्राह्मणे जमवा जवुं नहीं श्राद्ध विशे भागवतमा लख्यु छे के.

नदद्यादामिपंश्राधंनचोद्यात्धर्मतत्त्ववित् ॥
मुन्यन्नेस्यापराप्रीतीयथानपशुहिंसया ॥

भागवतस्कं० ७

अर्थ.

श्राद्धमां मास ववरावबुं नहीं कोदरा बाग्टाथी श्राद्ध करवुं सारुं पण पशु हिंसा करीने श्राद्ध करवा वाले कोइ धर्म जाणनारो कहेतो नथी माटे अन्नथी पितृनी तृप्ति थाय छे तेवी पशु हिंसाथी थती नथी.

पण श्राद्धमा मास आपवा विशे बहु वचनो छे तेनुं कारण जे वखत मासनो नित्य अहार करता ते वखत श्राद्धमां पण खाता रामचंद्रजीए रामायणमा कह्युं छे के

वयंयदन्नापितरस्तदंन्नाः

अध्यात्मरामायण

अर्थ.

जे आपणे अन्न खाइए ते पितृने आपीए मूळमा मरण क्रियानो मतलब एटलो छे के जे माणस मरी गयो तेने खावाने कोण आपशे एवी कल्पनाथी एना सगा वहाला तेने पाणी अने पिंड आपता हता, अने एम जाणता हता के तेथी तेनी भूख, तरश जशे. अने मरनार सुखी थशे, ते उपर ब्राह्मणोए मोटुं विधान रच्युं अने तेनो त्रयोदशा मासिक, सवत्सरी इत्यादी श्राद्ध कल्पना करी तेमा अनेक दान दाखल कर्यां, केटलाएक जंगली प्रदेशमा कोइ मरी जाय छे, आर तेना वारस तेना छेडामां जार बांधे छे, ने तेमां पैसो घाले छे, अने पछी दाटे छे, अने त्यांहां आगळ एक माटलुं पाणीनुं मुके छे. जंगली अज्ञानी लोक एवी रीते उत्तर कार्य करे छे, ते प्रमाणे हिंदुलोकोनी असलमा चाल हती तेनो सुधारो करीने अंतेष्ठि कर्म लख्युं, मूळ आश्वलायन सूत्रमा जोता ए विधी टुंको छे. अने सुतक सुद्दल नथी.

हालमां देवरोत्पत्तिनो एटले क्षेत्रज पत्र नीयोग विधीथी उत्पन्न

करवानो निषेध कर्यो छे ते निषेध गोत्रनुं निषेध थयुं ते वखत आ निषेध थएलो जणाय छे. अने विधवाए ब्रह्मचारीने पेठे रहेवुं ए ठराव तेना अंते करवो पड्यो. ऋग्वेद संहितामां सातमा अष्टकमां आठमा अध्यायमां अढारमां वर्गमां देवरोत्पत्तिनो लेख छे ते मंत्र नीचे लख्यो छे.

कोवाशयुत्राविधवेवदेवरंमर्यंनयोषाकृणुतेसधस्थआ ।।

निरुक्त.

देवरःकस्मा । द्वितियोवरउच्ते ॥

अैतरेय ब्राह्मणमा लख्युं छे के.

नैकस्याबहवःसहपतयः

भाष्य

सहेतियुगपद्वहुपतित्वनिषेधोविहितोनतुसमयभेदेन ॥

अर्थ.

एक स्त्रीए एककाळे एकथी वधारे धणी करवा नहीं पण एक मरी गयो होय तो बीजो करवाने हरकत नथी.

नीयोग एटले जे स्त्रीने संतान थतुं न होय तेने बीजा पुरुषने घेर मोकलवी अने त्यां संतति थया पछी धणीने घेर आवे ते पुत्रनुं नाम "क्षेत्रज" ए प्रमाणे पांडव क्षेत्रज पुत्र हता एवुं भारथमा लख्युं छे मनु स्मृतिमा द्वादश पुत्रना नाम बताव्या छे ते

औरसःक्षेत्रजःश्वैवदत्तःकृत्रिमएवच ॥

गुढोत्पंनापविद्धश्चदायदाबांधवाश्चषट् ॥

कानीनश्चसहोढश्चक्रीतपौनर्भवस्तथा ॥
स्वयंदत्तश्चशौद्रश्चपडदायादबांधवः ॥
मनु अ० ९ श्लोक १५९

रामानुज ब्राह्मण द्रविड देशमा छे तेमा बे पंथ छे "तिंगळे" अने "वडघळे" तेमां तिंगळे ब्राह्मण जे छे तेमने वैदिक आचार मुकी दीधो छे यज्ञमां पशुनो वध करता नथी, अने वडघळे छे ते करे छे, तेज प्रमाणे गुजराती ब्राह्मण पण यज्ञ करता नथी विधवानु वपन करवा विषे श्रुती स्मृतिमा वचन नथी गोसावीजी आपस्तंभ सवी तैलंग ब्राह्मण छे तेमना कुळमा वपननी चाल नथी हिंदुस्तान अने दक्षणमा ए चाल थोडी छे. स्त्रीना वाळ न उतरावबा ते विषे शास्त्र नीचे प्रमाणे.

विद्वद्भिर्नृपः स्त्रीणांनेष्यतेकेशवापनं ॥ मयूख
सर्वान्केशान्समुधृत्यछेदयेदंगुलद्वयं ॥ एवंनारीकुमारी
णांशिरसोमुंडणंस्मृतं ॥

यम, पराशर, आपस्तबं,

स्त्रीयोनुं स्वातंत्र काढी लेईने तेमने दास कर्या त्यारे नीचे लख्या प्रमाणे ठराव थयो.

नस्त्रीस्वातंत्र्यमर्हति ॥ नस्वातंत्र्यंक्वचित्स्त्रियः॥

अर्थ.

बईरीओने कांइ प्रकारनी पण मुखतीआरी नथी तेमने सर्वकाळ परतंत्र रहेवं.

वेदमूळमा काइ एक वखते थएलो ग्रंथ जणातो नथी जुदा जुदा काळमा जुदा जुदा ऋषीना जुदा जुदा मंत्र छे ते एक पुस्तकमा संहितारूपे जोवामा आवेछे. वेद ए शब्द बीजा ग्रंथने पण लगाडवानो चाल छे जेमके गाधर्ववेद, धनुर्वेद, आयुर्वेद, अने भारथ पण पाचमो वेद कहेवायछे. वेदना अक्षरने मंत्र कहेवाय.छे तेनो सार जोता तेमा प्रार्थनाछे ते परमेश्वरनी होय के बीजा देवनी होय कटलाएक देवना मंत्र कर्मना बोधक छे ते मंत्रने विधि कहेछे विधि एटले लखेली रुढी अने रुढी एटले जेने वेदादिकनो आधार नथी. तेने. केवळ रुढी केहेछे, मूळ जे ऋषि हता ते क्षत्रीने घेर यज्ञादिक कर्म करता तेथी ते धर्माध्यक्ष थया, पछी तेमने लोकोना मनमा एम ठसाव्युं के सर्व देव अमारा कबजामा छे अने मंत्रथी जे देवनु आवाहन करीए ते हाजर थाय अने जेनुं वीसरजन करीए ते विदाय थाय अने जे अमे च्हाहिए ते ते करशे, ए सिद्ध करवाने वास्ते हजारो ग्रंथ लखी गयाछे, सूर्य उगेछे ते, ब्राह्मण संध्या करेछे माटे उगेछे, एवुं भारतमा कह्युं छे, ए समजुत जेम जेम मजबुत थती गइ तेम तेम धर्माध्यक्षनो अमल बहु जबरदस्त थइ गयो, भागवतमा कह्युं छे के, भगवान श्री कृष्ण बोल्या के अग्नि, सूर्य, ईत्यादिकनो कोप थयो तो हुं बीतो नथी पण ब्राह्मणनो कोप थाय तो मने बहु बीक लागेछे, ते विशे वचन.

नाग्न्यर्कसोमानिलवित्तपाख्यात् ॥
शंकेभृशंब्रह्मकुलावमानात् ॥

भागवत.

ऋषि ए शब्दनो अर्थ. गानारो के फरनारो एम थाय छे पण रुढीमां अर्थ ग्रंथ करता थाय छे अने प्राचिनकाळमा बधा देशनां धर्माध्यक्ष पाखंडी अने ढोंगी हतां अने ते राजाने पण गुलाम करीने राखतां हतां, अने क्रिस्चयन् धर्मनो धर्माध्यक्ष पोप करीने छे तेना पाशमांथी यूरोप खंड हजी छुट्युं नथी, ए लोकने पापनी माफी आपे छे, स्वर्गे चढवानो दाखलो आपे छे, अने नर्के जवानो पण दाखलो आपे छे तेथी घणा भोळा लोक, मरती वखते एनो आशिर्वाद लेवाने वास्ते हजारो रुपीआ आपे छे बधा लोकोने ए पहोंची शके नहीं माटे केटलाएक मुखत्यार फरवा मोकले छे, ए न्यात बहार मुके तो कोइथी एनो संग्रह न थाय मोटो बादशाह लाख फोजनो धणी होय तो एना आगळ हाथ जोडीने उभो रहे, जेवो धर्माध्यक्षनो जुलम अन्य देशमां छे तेज प्रमाणे आ देशमां पण छे तेनुं कारण एम छे के ज्यां धर्माध्यक्षनो अधिकार वधे छे त्यां एमना तरफथी एवो बंदोबस्त थाय छे के बीजो कोइ भणे नही लोक जेटला अभण रहे तटलो एमनो फायदो माटे बधी विद्या गुप्त राखवानी तजविज करे छे.

ब्राह्मण क्षत्री अने वैश ए त्रण जणाने द्विज एवी संज्ञा छे, आ त्रण जणानो अधिकार समान छे.

ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्याःस्त्रयोवर्णाद्विजातयः॥
चतुर्थाएकजातिस्तुशूद्रोनास्तितुपंचमः ॥ मनु.

केटलीक म्लेच्छजाति मूळमां क्षत्री हता एम लख्युं छे.

शकायवनकांबोजातास्ताक्षत्रियजातयः ॥
वृपलत्वंपरिगतःब्राह्मणानामदर्शनात् ॥ भारत

पौड्रकाःश्चौद्रद्रविडाःकांबोजायवनाःशका ॥
पारदापल्हवाश्चीनाःकिरातादरदाखशाः ॥
शनकैस्तुक्रियालोपाइमाक्षत्रियजातयः॥
वृषलत्वंगतालोकेब्राह्मणादर्शनेनच ॥

मनु.

अर्थः—शक, यवन, अने कामभोज, ए क्षत्री जातना छे, पण ब्राह्मणनुं एमना उपरनो अमल उठी गयो, तेथी ए भ्रष्ट थया छे पछी पुन्ड्रक, अंध, द्रविड, कामभोज, यवन, शक, पारद, पलव, चीन, किरात, दरद, खस, ए बधाओ क्षत्री जातीना छतां ब्राह्मणनो अने एमनो मेळाप न रह्यार्थी भ्रष्ट थया छे शत पथ ब्राह्मणमा क्षत्रीओनुं श्रेष्टपणुं वर्णन कर्युं छे ते निचे प्रमाणे.

एतानिदेवताक्षत्राणिईंद्रोवरूणःसोमोरूद्रः
तस्मात्क्षत्रंपरंनास्तितस्माद्ब्राह्मणःक्षत्रियान्
अधस्ताउपास्तेराजसूये

शतपथ ब्राह्मण

अर्थ

इंद्र, वरूण, सोम, रुद्र, ए बधा देव क्षत्री छे, माटे क्षत्री श्रेष्ट छे, राजसूय यज्ञमां क्षत्री उपर बेसे छे अने ब्राह्मणने निचे बेसवुं पडे छे. उपरना मंत्रमां केटलाएक देव क्षत्री कह्या छे पण लिंग पुराणमा लख्युं छे के.

ब्राह्मणोभगवानरुद्रोक्षत्रियःपरमोहरिः॥

वैश्यः पितामहश्चैवइंद्र. शूद्रश्चजायते ॥

क्षत्रिय न्यातमा दारु पीवानी चाल हती एवुं वेद उपरथी मालम पडे छे, ऐतरेय ब्राह्मणमा क्षत्रीने राज्याभिषेक करवानो विधी आठमी पंचीकाना वीसमाखंडमा लख्यो छे ते ठेकाणे निचे प्रमाणे मंत्रछे.

इत्यथास्मैसुराकंसंहस्तंआदधाति स्वादि
ष्टया०तांपिबेत् ऐ०८-२०

अर्थ

राजाना हाथमा दारुनो लोटो आपवो अने स्वादीष्ट या मंत्र भणीने ते पीवो.

आ प्रमाणे अनेक राजाने राज्याभिषेक थया छे तेमना नाम, अने तेमना गोरना नाम वेदमा लख्या छे तेमा परिक्षीतीनो पुत्र जन्मेजयने राज्याभिषेक थयो ते वात पण निचे मुजब लखी छे.

तुरःकावपयोजनमेजयंपारिक्षितंमभिषेच
ऋग्वेदब्रा०८-२१

ए उपरथी एम मालम पडे छे के जन्मेजय राजा थया पछी ए वेद लखा गयो हशे, एवी कल्पना थाय छे आ लोक एवुं कहे छे के वेदनो केटलोएक भाग आसुरी अने राक्षसी लोकोने वास्ते छे, पण ए कल्पना केवळ अज्ञानी लोकोनी छे एने कशो आधार नथी केटलाएक कहे छे के गतगोष्टिनुं वर्णन जे लख्युं छे ते भविष्यनुं छे, अने ए प्रकारे करीने वेदने अनादित्व अने नित्यत्व प्रतिपादन करेछे पण ते बरोबर नेसतुं नथी प्राचिनकाळमा ब्राह्मण लोकोमां एवो अभिमान हतो के जे कोई वात करवा आवे तेने आ कहेशे नाहि, तेज

प्रमाणे क्षत्रीनो अभिमान एवो हतो के युद्धने वास्ते जे बोलावे तेने ना कहेवी नहीं आ अभिमान आज रह्यो नथी. पूर्वे शंकराचार्य वल-भाचार्य इत्यादि मोटा आचार्य थया, तेमने दिग् विजय कर्यो ते ए प्रमाणे वाद करवाने ब्राह्मण गामे गाम ऊभा रहेता माटे थएलो, पण आज कोई दिग विजय करवा निकळे तो तेने कोई गाममा जवाब मलशे नहीं त्यारे दिग विजय शानो थाय एनुं कारण ब्राह्मणो बधाय जड, मूढ थया कोई पासे विद्या नथी अने अभिमान पण नथी अने कोई राजा उत्तेजन आपे एवो नथी, कपट वधी गयुं ने मूर्ख छता प्रतिष्टा मेळववानी आशा ते शी रीते मळे धर्म सभा के पर्षद कोई ठेकाणे रही नथी शिक्षा के शाळा रहि नथी ओशिआळपणुं बहु वधी गयुं,, ने स्वतंत्रपणुं डुबी गयुं तेने लीधे ब्राह्मण न्यातिमा काइ जीव के उमेद रही नथी.

ब्राह्मणोने प्राचीनकाळथी पिशाच्योनी बहु बीक हती कोई पण कर्म करवुं होय तो प्रथम पिशाच्य नसाडवानो उपाय करवो पडेछे. संध्यामा मंत्र भणे छे ते नीचे प्रमाणे.

अपक्रामंतुभूतानिपिशाचाःसर्वतोदिशं

श्राद्धमा वेद मंत्र भणे छे ते

पिशंगभृष्टिमंभृणंपिशाचमिंद्रसंभृणा ॥ सर्वंरक्षोनि वर्हया ॥ ऋग्वेद

वेदशास्त्रमां मंत्र कामना बोधक अने कर्म बोधक आवे छे तेनो नमुनो नीचे प्रमाणे

।भियंदधानाहृदयेषुशत्रवःपराजितासोअपनिलयंतां ॥

ऋग्वेद.

द्विपंतंमह्यंरन्धयन्मोअहंद्विपतेरधं ॥

अर्थ.

हे सूर्य मारा शत्रुनो नाश कर.

अहि १ श्चसर्वान्जंभयंन्सर्वाश्चयातुधान्यः

यजुर्वेद रुद्री.

अर्थ

हे रुद्र सर्प अने पिशाच्च एनो नाश कर.

हृद्रोगंममसूर्यहरिमाणंचनाशय ॥ ऋग्वेद.

अर्थ—हे सूर्य मारो कमळानो रोग नाश कर.

उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योमुक्षीयमामृतात् ऋग्वेद

अर्थ—हे त्र्यंबक मने मृत्युथी उगार.

पुराणमा केटलीएक कथाओ छे अने ठेकाणे ठेकाणे प्रार्थना छे ते नीचे लख्या प्रमाणे.

चोरान्मारयमारयममशत्रूनुच्चाटय

उच्चटय । कुठारेणाभिभित्राणैःसंताडय

खट्वांगेणविपोथय ॥ शिवकवच । स्कंदपुराण.

वेदमा विरुद्ध वचन आवे छे तेना उदाहरण नीचे लख्या छे.

गृत्समदऋषिःऋग्वेदसंहिता

अष्टक २ अ० ६ वर्ग २४ ऋ ६

दासायनवतिंचनवेंद्रःपुरोव्यैरछंबरस्य ॥

गृत्समदऋषिःऋग्वेदसं २-६-१३

अध्वर्यवोयःशतंशंबरस्यपुरोबिभेदाश्मनेवपूर्वीः ॥

परुछेपोदैवोदासिऋषिः

ऋग्वे० २-१-१९

भिनत्पुरोनवतिमिंद्रपूरवेदिवोदासायमहिदाशुषेनृतो वज्रेणदाशुषेनृतो ॥ अतिथिग्वायशंबरंगिरेरुग्रोअवाभरत् ॥

अर्थ.

इंद्र नामनो राजा हतो तेनो मित्र दीवोदास हतो तेना तरफथी शंबर नामनो दैत्य हतो तेनी जोडे इंद्र घणी वार लड्यो ते विशे कथा वेदमां घणे ठेकाणे आवे छे केटलेएक ठेकाणे इंद्र छे ते परजन्याधिपति देव छे एम पण कहेलुं छे शंबरासुर दैत्यनां नवाणुं गाम इंद्रे उजड कर्यां एवुं एक मंत्रमां छे बीजा मंत्रमां सो गाम उजड कर्यांनी वात छे अने त्रीजा मंत्रमां नेवुं गाम उजड कर्यांनी कथा छे.

इंद्रनुं पराक्रम नीचे लखेला मंत्रमां घणुं वर्णन कर्युं छे तेनुं पहेलुं वचन लख्युं छे तेमां एवुं लख्युं छे के इंद्रने मद्य बहु भावे छे माटे ते अग्निमां रेडो.

गृत्समदऋषिः

अ० २ अ० ६ वर्ग १३

अध्वर्यवोभरतेंद्रायसोममामत्रेभिःसिंचतामद्यमंधः॥

ए इंद्रत्रीक द्रुक पात्रमां मद्य बहु पीधुं अने तेना मदमां सर्प मारी नाख्यो एवुं एक मंत्रमां छे ते नीचे प्रमाणे.

त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्यास्यमदेअहिमिंद्रोजघान ।।

गृत्समद २-६-१५-१

नीजे ठेकाणे सापने अने वींछीने पथराथी मारी नाखवा विशे वेदमा लख्युं छे आ मन्त्रमां सापनुं अने वींछीनुं वीष उतारे छे.

इयतकःकुषुंभकस्तकंभिनद्म्यश्मना

अगस्ति २-१-१६-१५

अश्विन देवनी प्रार्थना कुतरानो नाश करवाने वास्ते छे ते नीचे प्रमाणे.

अगस्तिऋषि.

ऋग्वेद २-८-२९-२४

जंभयतमभितोरायतःशुनोहतंमृधोविदथुस्तान्यश्विना

गीतामा कह्यूं छे केः—

यज्ञोदानंतपःश्चैवपावनानिमनीषिणां

यज्ञ एटले इश्वर भजन, दान एटले परोपकार, तप एटले इंद्रिय दमन, ए मुख्य अर्थ छे पण पक्षपात मताभिमान थाय छे त्यारे नवां नवा अने अनुकूळ पडे एवो अर्थ करे छे. मूळ कर्मनो अर्थ देवतानुं पूजन. तेनो परिणाम निर्दयपणा उपर गयो. तेज प्रमाणे ज्ञान एटले अनेक देवोने मुकी एक इश्वर जाणवो अने भूत दयाथी सम दृष्टि राखवी. तेनो अपभ्रंश थइने अघोरी कौल वाम इत्यादि मार्ग ज्ञान मार्गमा निकळ्या. अने ए मार्ग मूळ हेतुथी भ्रष्ट थयो. तेमज भक्ति एटले इश्वरनी उपासना ते ठेकाणे हजारो कल्पित देव उत्पन्न थया तप

एटले इंद्रिय निग्रह ने ठेकाणे उर्ध्वबाहु थाइसरी पंचाग्नी तापनार ए निकळ्या अने तपनो हेतु भ्रष्ट थयो कह्युं छे के

अनाचारेणमालिन्यंअत्याचारेणमुर्खता ॥
विचाराचारयोर्योगःसदाचारःसउच्यते ॥

विचार नष्ट थयाथि अने लोक मनस्वी अने निरंकुश थयाथि दया मैत्र्यादि न्याय जतो रह्यो लोक स्वछंदि थया ब्राह्मण, लोकोने सन्मार्ग न बतावता उपद्रव करवा लाग्या तेथी लोक अ संतोषि थइने केटला एक ब्राह्मणनु गोरपदु काढवाने यत्न करे छे नडियादमा सुतार लोके सरावनुं नहीं एवो ठराव कर्यो छे कारण पाच रुपीया आपता गोर छुटको करे नही तेज प्रमाणे पुनामा जोति गोविंदराव लोकोनी संमति मेळवे छेके ब्राह्मण पासेथी काइ,पण कर्म करवुं नहीं, आ बधाए तोफानो ब्राह्मणोना उन्मादथी थाय छे. जेम जेम ज्ञान वधशे तेम तेम बराबर ओळखाशे.

वेदना मंत्र भाग क्रूर छे पण उपनिषद भाग सात्विक छे अने ते त्यागी अने संन्यासीनुं शास्त्र छे एम कहेवाय छे तेना उदाहरणो निचे लख्या प्रमाणें.

सत्यंवद । धर्मंचर । स्वाध्यायान्माप्रमदः ।
अन्नंबहुकुर्वीत । कुशलान्नप्रमदितव्यं ।
तैतीर्यअरण्यक प्रपाठक ७

अर्थ.

सत्य बोल, धर्म रीते चाल, भणवा विषे गफलत न कर. अन्ननी वृद्धि कर, कुशलनो त्याग न कर.

दैवीवागनुवदतिस्तनयित्नुर्दददइति । दाम्यतद त्तदयध्वमिति । तदेतत्त्रयं शिक्षेदमंदानंदया मिति ॥ बृहदारण्यक १४-५-२

अर्थ.

देव, मनुष्य, अने असुर, आ त्रण जणाए पोताना गुरु प्रजापतिने प्रश्न कर्यो के अमारो धर्म शो ते उपरथी प्रजापतिए त्रण वखत द, द, द, एवुं बोल्यो अने पुछयुं के तमे आ त्रण दनो अर्थ समज्या त्यारे तेमणे कह्युं के अमे समज्याके दम दान अने दया त्यारे प्रजापति बोल्या के आज प्रमाणे चालो आज तमारो धर्म ते वखत आकाश वाणी ते प्रमाणे थइ यजुरवेदनुं शत पथ ब्राह्मण चौद कांडनुं छे तेनुं छेलुं कांड "बृहदारण्यक" कहेवाय छे तेना पांचमा अध्यायमां बीजा ब्राह्मणमां ए कथा छे श्रावकना कल्पसुत्रमां ए कथा दाखल करी छे.

ओषधिभ्योअन्नं तैतिरीयआरण्यक प्र० ८

अर्थ,

औषधी एटले वनस्पति ए मनुष्यनुं अन्न छे.

तस्यैवंविदुषोयज्ञस्यात्मायजमानः श्रद्धापत्निशरीरमिध्महृदयंयूपःकामआज्यंमन्युःपशुःस्तपोग्निर्दमः शमयीता ॥

नारायणउपनिषद

अर्थ,

ज्ञानीनो यज्ञ शी रीते थाय छे तेनी विगत. आत्मा छे ते यज्ञ

करनारो छे हृदय छे ते यूप, एटले जनावर बांधवानो खीलो अने आपणी श्रद्धा छे तेज पत्नि छे, होमवाने वास्ते घी जोइए ते आपणी वासना छे, मारवाने वास्ते जनावर जोइए ते आपणो क्रोध छे, अग्नि जोइए ते आपणुं तप अने जनावरने मारनारो जोइए ते आपणो दम एटले विवेक छे.

ए उपनिषदमा उपर लख्या मुजब घणी लांबी विगत लखी छे अने तप रूपी यज्ञ बताव्यो, आ उपनिषदनुं नाम प्राणाग्निहोत्र छे.

सदरहु प्रमाणे वेदनां वाक्यो छे, अने स्मृतिओमां पण केटलाएक वाक्यो सारां छे तेनां उदाहरणो.

शतेषुजायतेशूरोसहस्रेषुचपंडितः ॥
लक्षेषुजायतेवक्तादाताभवतिवानवा ॥
नरणेनिर्जितेशूरोविद्ययाचनपंडितः ॥
नवक्तावाक्यदक्षेनदातादानकद्भवेत् ॥
इंद्रियाणांजयेशूरोधर्मंचरातिपंडितः ॥
सत्यवादिभवेत्वक्तादाताभूतहितेरतः ॥

व्यासस्मृति.

अर्थ.

सोमां एक शूरो, हजारमां एक पंडित, लक्षमां एक भाषण कर-नार अने दाता तो विरलाज होय छे, रणमांथी जीते ते शूरो नही, अने बहु भण्यो ते पंडित नहीं, अने बहु भाषण करे ते वक्ता नहीं, अने बहु दान करे छे ते दाता नहीं. इंद्रियो जीते ते शूरो कहेवाय,

अने रीते चाले छे ते पंडित कहेवाय, अने सत्य बोले ते वक्ता कहे-
वाय, अने सर्व जीवनी दया जेना मनमा छे ते दाता कहेवाय.

द्वाविमौपुरुषोलोकेसूर्यमंडलभेदिनौ ॥
परिव्राट्योगयुक्तश्चरणेचाभिमुखोहतः ॥
यत्रयत्रहतेःशूरःशत्रुभिपरिवेष्टितः ॥
अक्षयानूलभतेलोकान्यदिक्लीबन्नभाषते ॥
जितेचलभतेलक्ष्मी, मृतेचापिसुरांगनां ॥
क्षणविध्वंसिनीकायाकांचितामरणेरणे ॥

पराशरस्मृति.

अर्थ.

सन्यासी अने रणमा जे शुरा मरे, ते बे जणा सूर्य लोकमा जाय
छे, शत्रुना हुमलामा जे सुरो बीक राखतो नथी, ते रणमा मरे तो
मुक्ति पामे छे, आ शरीर छे ते गमे ते प्रकारे पण नाश पामशे, माटे
सुरा पुरुषे विचार करवो के, आपणे जीतीशुं तो मृत्युलोकनुं सुख म-
ळशे, अने मरीशुं तो स्वर्गनुं सुख मळशे, माटे मरणनी चिंता रा-
खवी नहीं.

मयुखमा बृहस्पतिनुं वचन लख्युं छे ते नीचे प्रमाणे

केवलंशास्त्रमुद्दिश्यनकर्तव्योहिनिर्णयः ॥
युक्तिहीनेविचारेतुधर्महानिःप्रजायते ॥

अर्थ

केवळ शास्त्र जोईने निर्णय करवो नहीं युक्तिथी तपासवुं अने

युक्ति मुकशो तो धर्म डुबशे.

यथैवात्मापरस्तद्वद्द्रष्टव्यःसुखमिछता: ॥

सुखदुःखानितुल्यानीयथात्मनितथापरे ॥

दक्षस्मृति

अर्थ.

जेवो पोतानो आत्मा सुख मागे छे तेज प्रमाणे पारकानो आत्मा सुखनी ईछा राखेछे पोताने सुख दुख थाय छे तेज प्रमाणे पारकाने पण थाय छे एम समजवुं.

आत्मौपम्येनसर्वत्रसमंपश्यतियोर्जुन ॥

सुखंवायदिवादुःखंसयोगीपरमोमतः ॥

गीता अ० ६

अर्थ.

पोताना प्रमाणे पारकाने समजवुं पोताने सुख ते पारकाने सुख ने पोताने दुःख ते पारकाने दुःख ए प्रमाणे समजशे तेने योगी कहेवो.

वृद्धौचमातापितरौसाध्वीभार्यासुतःशिशुः ॥

अप्यकार्यशतंकृत्वाभर्तव्यामनुरब्रवीत् ॥ गौतमस्मृति

अर्थ.

माता अने पीता वृद्ध होय तो, स्त्री सुशील होय तो, अने पूत्र नाहानो होय तो, सो धंधा करीने तेमनुं रक्षण करवुं.

भरणंपोष्यवर्गस्यप्रशस्तंस्वर्गसाधनं ॥ दक्ष ॥

अर्थ

आपणा उपर जे निर्वाहने वास्ते वळगेला छे तेमनुं पोषण करवुं ए स्वर्गनुं साधन छे.

सदरहु उदाहरणोथी एम मालम पडशे के शास्त्रमा केटलाएक वाक्यो सारा छे प्राचीन ग्रंथोनो घणो भाग निरुपयोगी छे पण प्राचीन काळमा लोकनी शी स्थीती हत्ती ते जणाववाने वास्ते वेदनो घणो उपयोग छे अने वेदनुं संरक्षण ब्राह्मण लोकोए कर्युं ते विशे आपणे एमनो पाड मानवो जोईए वेदनी हजारो शाखा अने करोडो बीजा ग्रंथ छे ते हाल काइ उपयोग पडे एवा नथी हिंदुलोकोने घणा काळ सुधी फुरसद, अने निर्भय, अने खावा पीवानी समृद्धी हत्ती, तेना अंदर अनेक ग्रंथ उत्पन्न थया ते तपासता एवुं मालम पडेछे के वेरुळ, अजंठा, घारापुरी, कनेरी, कारला, अने शीवनेरी ईत्यादि ठेकाणे मोटा मोटा डुंगर कोरीने माहाल बनाव्याछे ते उपर करोडो रुपीआ खरच कर्या हशे, पण ते विहारनो कोईने उपयोग नथी, माटे जोनारने आश्चर्य लागेछे के, आ पर्वतमा गुफाओ शु करवा करी हशे, ते प्रमाणे आ संस्कृत ग्रंथ जोता एवुं आश्चर्य लागेछे के आ ग्रंथ शा वास्ते बनाव्या छे, जे काळे ए बनाव्या ते वखत ए ग्रंथनो उपयोग घणो हशे, एम धारवुज जोइए, नहीं तो ग्रंथ बनाववानी मेहेनत कोण करे, माटे जे वखत ए ग्रंथ बनाव्या ते वखत ए ग्रंथ बनावनार, देवोनी पेठे, पुजाया हशे, अने ए बनावनार अने तेमनी संततीए लाखो रुपीआ ए ग्रंथ उपर रळ्या हशे एमा संशय नथी, घणा वरससुधी ए ग्रंथ उपर लोकोनो आधार रह्यो नदीयोना अने गामना माहातमो लखवानो धधो घणा वर्ष सुधी चाल्यो पिंड करवा

गे लोटना करवा के भातना करवा डाभ डाभी बाजुए मुकवा इत्यादि निरुपयोगी तकरारोमां घणो काळ गयो छेली वारे भक्तिमार्ग निकळ्यो तेमां कर्मकांडनी घणी नींदा थइ अने ठराव्युं के—

तपःपरंकृतयुगेत्रेतायांज्ञानमुच्यते ॥

द्वापरेयज्ञमेवाहुर्दानमेकंकलौयुगे ॥

अर्थ.

कृतायुगमां तप करता हता त्रेतायुगमां ज्ञानी थया, द्वापरयुगमां यज्ञ करता लाग्या अने कळिमां दान करवुं एज मुख्य छे.

यस्मिन्नृभिःप्रहुतंश्रद्धयाऽहमश्नामिकामंनतथाऽग्निहोत्रे॥

भागवत स्कंद ५ अ० ५ श्लोक १३

अर्थ.

भक्तिथी पुजा करे छे तेथी परमेश्वर तृप्त थाय छे अग्निहोत्रथी थतो नथी.

यथातरोर्मूलनिषेचनेनतृप्यंतितत्स्कंधभूजोपशाखाः ॥

प्राणोपहाराच्चयथेंद्रियाणांतथैवसर्वार्हणमच्युतेज्या ॥

अर्थ.

एक अच्युत परमेश्वरनुं भजन कर्याथी सर्व देवनी तृप्ति थाय छे उदाहरण जेमके वृक्षने मूळमां पाणी रेडता सर्व शाखा तृप्त थाय छे पेटमां अन्न घालता सर्व इंद्रियनी तृप्ति थाय छे ते प्रमाणे.

कृतेतुध्यायतेविष्णुंत्रेतायांयजतोमखैः ॥

द्वापरेपरिचर्यायांकलौतद्धरिकीर्तनात् ॥ भागवत

रामनाम्नैवमुक्तिस्यात्कलौनान्येनकेनचित् ॥

विप्राद्दिपट्गुणयुतादरविंदनाभपादार ॥

विंदविमुखाःश्वपचंवरिष्ठं ॥ भागवत ॥

अर्थ

कळियुगमा भगवाननुं भजन कर्या विना बीजो धर्म नथी विद्वान ब्राह्मण अने धेड भक्त होयतो, भक्त मोटो समजवो.

प्राचीन काळमा ब्राह्मण उत्तर कुरुमा एटले हिमालयनी पेली तरफ रहेता एवुं वेद उपरथी जणाय छे

येकेचपरेणहिमवंतंजनपदाउत्तरकुरवउत्तरमद्राइति॥

ऐ० ८-२४

यदाब्राह्मणोत्तरकुरूनजयेमथ ॥

ऐतरेयब्राह्मण पं० ८ खं २३

घणा एक शास्त्रमा मामानी कन्या न करवी एवुं लख्युं छे ने मामानी कन्या अने भाइनी कन्या एमा काइ शाशुं अंतर नथी पण वेदमां लख्युं छे.

तृत्पांजुहुर्मातुलस्येवयोपांभगस्तेपैतृष्वसेयीवपामिव ॥

ऋग्वेद

सदरहु मंत्रना आधारे मामानी कन्या करवानो वहीवट चाले छे, आज सुधी लोक अज्ञान हता, तेथी बधाय लोकोनो मत एवो बंधाइ गयो हतो के, कोइ बातपर शंका के प्रश्न करवो नही जे रुढी चालती हशे ते प्रमाणे चालवुं तेमा वांधो के संशय कीइए लेवो नही

पछी तेमां सारुं होय के नरतुं होय, पृथ्वी उपर जुलम बे प्रकारना छे, एक धर्माध्यक्षनो अने एक राजानो, ए प्रमाणे जुलम जे माणस उपर थाय, ते माणसनी मदद बधाय लोकोए करवी जोइए कोइ माणसना मंदिरना अधिकारी जोडे तकरार पडे छे त्यारे मंदिरना अधिकारी तेने दर्शन बंध करे छे. आवा प्रसंगे जे माणसनुं दर्शन बंध थाय छे, ते अन्यायथी थयुं होय तो बीजा बधाए कहेवुं जोइए के ज्यां सुधी आ माणसनो छुटको नहीं थाय, त्यां सुधी अमे कोइ दर्शन करवाना नथी, तो मंदिरना अधिकारी पगे लागीने ए माणसनो छुटको करशे, पण लोकोमां आटली, भूत दया अने परोपकार बुद्धी अने न्यायनो अभिमान नथी, तेथी गमे तेवी रीतनो जुलम करे तो नभे छे, अने एज प्रमाणे केटलाएकने, महाजन बहार करे छे, केटलाएकने ज्ञाती बहार करे छे, केटलाएकने चोराशी बहार करे छे, ते वखतमां आवा माणसना जोडे कोइ उभो रहेतो नथी, अने बधाय एम जाणे छे के, लोभथी के लुचाइथी आ जुलम थयो छे, अने पांच पचास रुपीआ आपे तो तेनो छुटको थाय छे, तोपण ते माणसने छोडाववाने वास्ते कोइ उभो रहेतो नथी, तेथी जुलमनो प्रवाह चाले जाय छे, लोकोए एम समजवुं जोइए के, जे माणस रुढी वीरुद्ध चालतो हशे तेमां छेक अनिती न होयतो, तेनी बाजु लोकोए पकडवी जोइए, अने एम थाय तो जुलम बहु ओछो थशे. पण लोकोमां ए बुद्धी नथी, तेथी पचास भेंसो मोटी बळवान होय, अने भरवाडनो छोकरो आठ वर्षनो होय तो लाकडी लेइने एमने हांकी जाय छे, अने भेंसोने खबर पडती नथी के हमारुं बळ केटलुं अने आ छोकरानुं बळ केटलुं, ए अज्ञानथी, छोकरानी लाकडीनी बीक सम-

धर्म बगडवानो त्यारपछी राज्य बगडवानो ए पण साधारण नियम छे तेज प्रमाणे जे वखत सुधारो थशे तेनो पण नियम एमज छे के प्रथम धर्म सुधरशे ने पछी राज्य सुधरशे एनुं कारण, धर्मनी सुधारणाथी राज्यनी सुधारणा करवी मुशकेल छे कारण राजा बळवान छे अने धर्माध्यक्ष निर्बळ होय छे माटे जे लोक धर्म सुधारणा करवाने तैयार नथी तेमनाथी राज्य सुधारणा कदापी थाय नही.

अढार पुराण छे अने तेटलाज उप पुराण छे तेमानुं एक कालीका पुराण करीने छे तेमानो छासटमो अध्याय बलिदान विषय छे तेमाना केटलाएक श्लोक नीचे लख्या छे. आ पुराण आगममा समजवुं तेनो नीश्चय थतो नथी, तोपण उप पुराण छे अने ए बधो अध्याय भगवाननुं वचन छे एम लख्युं छे माटे अहींया दाखल कर्यो छे ते उपरथी घणी हींसानुं प्रतिपादन थएलुं मालम पडशे. माणसनो बळी पण लख्यो छे हरएक किलामां आगळ माणस बळी आपेला तेनी जगाओ आज सुधी पुजाय छे. वेदमां नरमेध लख्यो छे तेमा डोसियो अने भाणेज पण लख्यो छे.

तैतिरीयब्राह्मणे ३ कांन्डे
४ प्रपाठके १९ अनुवाके

आशायैजामिम् प्रतिक्षायैकुमारिम्
प्रमुदेकुमारीपुत्रम् आराध्यैदिधिषूपतिं

भाष्य.

आशायैजामिं । निवृत्तरजस्कांभोगायोग्यांस्त्रियं ।

प्रतिक्षायै । कुमारीं । अनूढाम्कन्यामालभते । प्रमुदे । दुहितुःपुत्रं । आराध्यै । दिधिषूपतिं । द्विर्विवाहंकृतवतीस्त्रीतस्याःपतिं ।

एवा अनेक प्रकारना मनुष्यनो यज्ञ वेदमा आवे छे.

राजस्थानमा केटलाएक मंत्र शास्त्री ढोंगी लोक कार्य सिद्धिने वास्ते हत्या करे छे एवु साभळवामा आवे छे तेनुं मूळ शास्त्रमा मळे छे खातमुहूर्त करवामा शेष अनंत वराह देवोनी पूजा करे छे तेमा बली दान लख्युं छे. ए सर्व अज्ञान मूलक छे. एमा संशय नथी एवा हत्या चाहनारा देव खोटा अने तेमना भक्त पण पाखंडी छे एवो निश्चय थायछे

॥ रुधिराध्याय ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ पक्षिणः कच्छपाग्राह्यामत्स्यानवविधामृगाः॥ महिषोगोधिकागावश्छागोवभ्रश्चशूकराः॥ खरश्चकृष्णसारश्चगोधिकाशरभोहरिः॥शार्दूलश्च नरश्चैवस्वगात्ररुधिरस्तथा ॥ चंडिकाभैरवादीनांव लयंपरिकीर्तिताः ॥ बलिभिःसाध्यतेमुक्तिर्बलिभिः साध्यतेदिवं ॥ बलिदानेनसततंजयेच्छत्रूनृपान्नृपः॥ कालितंत्रमितिप्रोक्तधर्मकामार्थसाधनं ॥ पूजनादन्निरादेवीसर्वान्कामांददातिच ॥ मत्स्यानांकच्छपानांतुरु

धिरैःसततंशिवा ॥ मासैकंतृप्तिमाप्नोतिग्राहैर्मासास्तुत्री
नथा ॥ कृष्णसारस्वरुधिरैःशूकरस्यचशोणितै ॥
आप्नोतिसततंदेवीतृप्तिंद्वादशवार्षिकी ॥ अजाविकाना
रुधिरैःपंचविंशतिवार्षिकी ॥ महिषाणांचखड्गाणांरुधि
रैःशतवार्षिकी ॥सिंहस्यशरभस्याथसगात्रस्यचशो
णितैः॥ देवीतृप्तिमवाप्नोतिसहस्रंपरिवत्सरान् ॥ कृ
ष्णसारस्यमांसेनतथाखड्गेणचंडिका ॥ वर्षान्यंचश
तान्येवतृप्तिमाप्नोतिकेवलां ॥ नरेणबलिनादेवीसहस्रं
परिवत्सरान् ॥ मंत्रपूतंशोणितंतुपीयूषंजायतेसदा ॥
तस्मात्तुपूजनेदद्याद्बलेःशीर्षसलोहितं ॥ यज्ञार्थेपशवः
सृष्टास्वयमेवस्वयंभुवा ॥ अतस्त्वंघातयिष्यामितस्माद्य
ज्ञेवधोवधः॥ पात्रंरुधिरदानायकर्तव्यंविभवावधी ॥
घातयेच्चंद्रहासेनतेनमंत्रेणसंस्कृतं ॥ काणंपंगुंचापिवृद्धं
रोगिणंचगलद्व्रणं ॥ क्लीबंहीनांगमथवाविद्धलिंगकुलक्ष
णं ॥ स्त्रियंनदद्याच्चांडालिंदत्वानरकमाप्नुयात् ॥ न
ब्राह्मणबलिंदद्याच्चांडालमपिपार्थिवः ॥ राजपुत्रस्तथा
मात्यःसचिवःसौरिकादयः ॥ दद्युर्नरबलिंभूपःसंप
त्प्राविभवायच ॥ महिषस्यशिरःछिन्नंसप्रदीपंशिवाः

पुरः ॥ हस्ताभ्यांयः समादायअहोरात्रंतुतिष्ठति ॥ साचिरायुः पुनर्मूर्तिरिहभुक्त्वाममनोरमान् ॥ नरस्यशी र्षमादायसाधकोदक्षिणेकरे ॥ वामेसरुधिरंपात्रंगृहि त्वानिशिजाग्रतः ॥ यावद्रात्रंस्थितोमर्त्योराजाभवति चैवही ॥ मृतेममपुरंप्राप्यगणानामधिपोभवेत् ॥ क्षण मात्रंवलिर्नायःशिरोरक्तंकरद्वये ॥ गृहित्वाचिंतयेद्दे वींपुरस्तिष्ठतिमानवः ॥ सकामानिहसंप्राप्यदेवीलोके महीयते ॥ शिरश्छित्वाबलिंदद्याकृत्वाचम्यनुमंत्रितः ॥ रक्तमाल्यधरंकृत्वारक्तवस्त्रधरंतथा ॥ तेनोत्तरशिर स्कंतंकृत्वाखड्गेणछेदयेत् ॥ बलिदानाच्चतुर्वर्गफलमां प्नोत्यसंशयं ॥ कथितोरुधिराध्यायउपचारान्शृणुष्व मे ॥ इतिकालिकापुराणेबलिदानेषट्षष्टितमोध्यायः॥ आमिषंपरमान्नंचदधिसर्पिःसशर्करं॥महादेव्यैनिवेद्याथ बलिमेधफलंलभेत् ॥ देवीलोकेचिरंस्थित्वाराजाक्षिति तलेभवेत् ॥ दीर्घायुर्बहुभोगीचपुत्रपौत्रसमन्वितः ॥

कालिका पुराण॰

सदरहु उपरथी एक प्रश्न नीकळे छे ते एवो के पृथ्वी उपर अ- नेक शास्त्र छे ने देश देशना लोक पकडी रह्याछे तेमांथी सत्य कयुं

एनो निश्चय बुद्धि विना कोण करशे अने कदापी एम कहीए के बी-जा देशना शास्त्रनी आपणे शी जरुर छे आपणा देशमा जे शास्त्र छे तेज खरु एम कहीए तो ब्राम्हण लोकोए लखेला शास्त्र तपाशीए तो तेमा केटलाएक नठारा छे अने केटलाएक साराछे त्यारे तेमा कीया मान्य करवा ते बुद्धीने आधारे रहेलुं छे तेथी धर्मनो आधार बुद्धी छे एम जणाय छे शास्त्र अनेक प्रकारना छे अने एक बीजाने वीरुध छे एकमा दारु पीवो ने मास खावुं एम लख्यु छे ने बीजामा एनो निषेध कर्यो छे त्यारे एवा शास्त्रनो आधार थाय नहीं माटे यु-क्ति थकी सार असार विचार करीने जे योग्य मालम पडशे तेज लेवुं एवो निश्चय थाय छे पवित्र मन अने सात्विक बुद्धि अने निर्मळ अत करणथी जे इश्वरी ज्ञान प्राप्त थाय छे तेज धर्मनी मर्यादा छे.

मनुष्य मात्र अशक्त प्राणी छे तेथी आपणे साथे इश्वर छे ए मान्या विना चालतुं नथी अने इश्वर भक्तिनी प्रेरणा मनुष्यनी बुद्धिने स्वभाविक छे अने मनुष्य मात्रनी निती अने न्याय संरक्षण थवाने वास्ते इश्वरनी बीक अने इश्वरनी भक्ती अवश्य छे माटे जगतमा बधाय लोक इश्वर छे ए वात कबुल करे छे श्रावक, बौध, इत्यादिक लोक इश्वरने मानता नथी तोपण केटलाएक माहा पुरुषो केवळ गती पाम्या छे एम समजीने तेमनेज प्रभु करे छे अने तेमनीज उ-पासना करे छे

तर्कने कथाना आधारथी अनेक देवोनी कल्पना करी छे केटलाएक कहे छे के रामकृष्ण, हनुमान इत्यादिक देव छे केटलाएक पच-महाभुतादिक एटले पाणी, अग्नि, सूर्य, वायु, इत्यादिकने देव कहे छे ए बधाय देव उपकार बुद्धिथी कल्प्या हशे पण सर्वशास्त्रनुं संघात ए•

मज छे के परमेश्वर एकज छे, अने एने कोई सहीयारी नथी, अने जोडीदार नथी. उपनीषदादिक जे सारशास्त्र छे तेमा ए प्रमाणे निश्चय छे अनेक देवने तो अल्प बुद्धि लोक माने छे, अने मूर्ति करवी ए पण अल्प बुद्धिनुं काम छे.

अग्नौक्रियावतांदेवोदिविदेवेमनीषिणां ॥
प्रतिमास्वल्पबुद्धिनांसर्वत्रसमदर्शीनां ॥१॥

मूर्त्तिनी कल्पना करी एटले तेमा अनेकत्व आवे छे एके भायडानी कल्पना करी तो एके बायडिनी करी एक अष्टभुजानी करे तो एक चारभुजानी करे एम करता करता अनेक देवनी धारणा थायछे गामोगाम ने रानोरान ने नातोनात जुदा जुदा देव थया छे माटे अनेक देवोनी कल्पना मिथ्या जणाय छे.

कर्मकांडमा जेटलुं देह संरक्षणार्थ कर्म छे तेटलु अवश्य छे गीतामा कह्युं छे के,

शारीरंकेवलंकर्मकुर्वन्नाप्नोतीकील्विषं ॥

केवल शरीर कर्म छे ते बंधन करतुं नथी अने बाकी बधुं छे ते मोक्षनुं प्रतीबंधक छे माटे करवानी जरूर नथी अने गीतामा ब्राह्मणना नव प्रकारना धर्म कह्या छे तेमा मानसीक धर्म बधाय कह्या छे ते एवा के.

शमोदमःस्तपःशौचंक्षांतिरार्जवमेवच ॥
ज्ञानंविज्ञानमास्तिक्यंब्रह्मकर्मस्वभावजं ॥

एथी एम जणाय छे के यज्ञादिकनी अवश्यकता नथी.

न्याय अने भूत दया मनुष्यना स्वभावमां अवश्य छे ज्ञातिभेद ए व्यवहारीक छे परमार्थमा ज्ञातिथी कंई पण फायदो थतो नथी विद्या, वैभव, पराक्रम, सद्गुण, अने सत्कर्मथी मात्र उंच नीचनो भेद पडेछे ते मात्र खरो बाकी बधो काल्पित छे असलमा चार ज्ञाती हती तेनी चारसो थई तेनो आधार जोता कशो नथी अने ते स्वार्थ बुद्धीथी वंश परंपरा थइ गइ ज्ञातीनो निर्णय गीतामा कर्यो छे के.

चातुर्वर्ण्यंमयासृष्टंगुणकर्मविभागशः॥

गुण कर्म प्रमाणे ज्ञाती समजवी एज अभिप्राय खरो हाल लोकोमा अज्ञान बहु वधी गयुं तेथी मेहेनत करीने जे पैसा रळे छे ते बद्धो वरा अने लगनमा खरचे छे अने जे छोकराना लगनमा हजार रुपीया खरचे छे तेम पांच रुपीया तेने विद्या भणावामा खरचता नथी तेथी निरुपयोगी माणस घणा पेदा थाय छे एवा अनेक नठारा रुढी मार्गथी लक्ष्मी, विद्या, ने शक्ति त्रणे गया तेथी आगळ जे लोक कहेता के हिंदुस्तानमा देव रहेता पण आज जोता देव तो रह्या नथी पण पिशाच रह्या छे.

देव बे प्रकारना छे एक मंत्रोक्त अने बीजा लिंगोक्त ए बधाय देव कल्पनीक छे माटे सर्व कर्मना अंते तूर्य तत्वनो उच्चार करेछे.

"तत्सब्रह्मार्पणमस्तु"

एम बोले छे. मंत्रनो अर्थ देवनी प्रार्थना एज मुख्य छे. यज्ञमा त्रण प्रकार छे १ प्रशंसा २ यजन ३ गायन ए त्रण त्रण वेदथी थाय छे ते ए प्रमाणे । ऋग्भि शंसति । यजुभिर्यजति । सामेन गीयते । शूद्र ज्यारे मोटा थया त्यारे शूद्र कमलाकर विगेरे ग्रंथ ब्राह्म..

णोए लख्या अने तेने आधारे शुद्रनुं गोरपदु करवा लाग्या. म्लेछ मोटा थया त्यारे तेमनुं गोरपदु करवानी आशा करी. व्रतराज ग्रंथमा लख्युं छे यवन म्लेछ इत्यादिक व्रत करे तो तेमने अधिकार छे.

क्वचिन्म्लेंछानामप्यधिंकारोंहेमाद्रौदेविपुराणे ।। वैश्यैःशूद्रैर्भक्तियुक्तैर्म्लेछैःरन्यैश्चमानवैः ।। स्त्रिभिश्च कुरुशार्दुलतद्दिधानमिदंशृणु ।।

यवन चंद्रिका करीने बीजो ग्रंथ छे तेमा यवन लोकोए जे कर्म करवुं ते लख्युं छे. पण हाल म्लेछ लोकोमा क्रिस्तियन अने मुसलमानी धर्मनी वृद्धि थयाथी ते लोक मूर्ति पूजक अने तेत्रिसकोटि देवने पुजनारा हिंदु लोकोने मानता नथी तेथी ब्राह्मणोनो उपाय नथी.

श्रावक धर्ममा स्त्रियोने संन्यासी करे छे अने पारशियोमा स्त्रियोने जनोइ दे छे. आ अधिकार ब्राह्मण लोकोए काढी नाख्यो अने स्त्रि जाति उपर घणो जुलम कर्यो तेथी स्त्रि जे रत्न कहेवाय छे ते जारना दाणानी किंमते वेचाय छे औदिच्य ब्राह्मण विगेरे ज्ञातमा एथी वधारे कंन्यानी किंमत नथी, लोकोने शिखाववानी बंधी करी अने परदेशमा जवानी बंधी कर्याथी अज्ञान बहु वध्युं तेथी हजारो वरसथी मुसलमानी धर्मना आरब मोगल तुर्क अफगान इत्यादि लोक अने क्रिस्तिअन धर्मना युरोपियन लोक करोडो आव्या पण हिंदु लोक ए आव्या पहेला हता तेवाज हजी छे एमने कशी खबर नथी हिंदु लोक स्वभावथी शान्त छे क्रूर नथी पण अज्ञानथी घणो अन्याय करेछे सति एज बाळता कंन्याएज मारता नर वळी एज करता एमने ठेकाणे लाववाने वास्ते इंग्रेज सरकार निर्माण थयु छे तेथी घणो सुधारो थतो जाय,

छे पण हाल देशी राजा छे तेमा एक पण एमनी बराबरी अद्यापि करी शकता नथी बधाय देशी राजा मूर्ख गणाय छे, एमने सुशिक्षा लागतीज नथी एवो कर्मनो योग छे.

वेदमा केटलाएक मंत्रना ऋषी क्षत्रिय अने शूद्र छे कक्षिवत् अने विश्वामित्र ए क्षत्रि हता कवष ऐलुष ए शूद्रदासी पुत्र हतो एनि कथा ऐतरेय ब्राह्मणमा छे.

केटलाएक प्राचिन आचार नरमेध, गोमेध, अश्वमेध, अनुस्तरणी, नियोग, शूलगव, दियरवटु, द्वादश पुत्र, पलपैतृक, माहाव्रत, मधुपर्क, इत्यादि अनुष्ठानो बंध थया छे तोपण ते अनुष्ठानना मंत्र पठण अने पारायण करवामा लोक पुण्य समजे छे. मूळ विधि न थाय तो तेनो प्रत्याम्नाय करे छे बाळवामा मासना पिंडने ठेकाणे लोटनो पिंड करे छे. त्यारे जे कर्म करवु नही ते कर्मनी कथा अने मंत्र वाचवामा अने तेनो पर्याय करवामा पुण्य छे के नही ए विशे घणो संशय छे अने यज्ञमा पशु बहुज क्रुरपणाथी मारवा अने तेना मासनो होम करवो, अने भक्षण करवु ए केटलाएक लोकोने गमतु नथी तेज प्रमाणे गोमुत्र, छाण, दुध, अने घी, एकत्र मेळवीने पीता, देह शुद्ध थाय छे ए पण समजवाने मुष्केल छे. तेज प्रमाणे तांत्रीक मत, अति विपरीत छे, ते छानी रीते काशी इत्यादि शेहेरोमा बहु चाले छे अने शीवनी पुजाओ लिंग रुपे थायछे. ते वात वैष्णव लोको मान्य करता नथी अने लिंगनु दर्शन के तिर्थ प्रसाद लेता नथी, काशीए जाय तो विश्वेश्वरनु दर्शन करता नथी अने हींगळाज माता छे त्या गोसावि लोक दर्शन करवा जाय छे पण चारे संप्रदायना वैष्णव लोको जता नथी, तेनु कारण एम बतावे छे के ए माता आगळ हींसा थाय छे

माटे अमे दर्शन करता नथी एम कहे छे सहेजानंदस्वामीए शीक्षा-पत्रीमां, एम लख्युं छे के जे देवने मद्य मासनुं निवेदन थाय छे, ते देवनुं दर्शन सत्संगीए करवुं नहीं, पुष्टीक मार्गवाळा मरजादी अने समर्पणीए अनन्य भक्ति करे छे. अने शिवलिंगनो तीर्थ प्रसाद लेता नथी, मध्व संप्रदाइ छे ते शिवनी मूर्ति होय तो दर्शन करे छे, अने लिंग अपूज्य गणे छे होम हवन करवानो कुंड करे तो तेना उपर योनी चिन्ह करे छे ए पण तान्त्रीक विषय छे तेज प्रमाण चंडीपाठमां मद्य मासनुं प्रतिपादन कर्युं छे, तोपण तेनो पाठ हवन चाले छे. तेपण वैष्णव लोको मान्य करता नथी. पशुने ठेकाणे कोळुं नारळ कापे छे, अने मंत्र जनावरनो भणे छे. निंगले रामानुज विधवानुं वपन करता नथी गुजराती मारवाडी ब्राह्मण यज्ञ करता नथी आ प्रमाणे केटलीए सुधारणा थती आवी छे अने केटली एक थवानी छे ते उपर आज लोको लक्ष देवा लाग्या छे. कामाक्षी देवी ए योनी भाग छे एम कहेवाय छे. पुराणमां एवी कथा छे के दक्ष प्रजापतिए पार्वतीनो बळी मुआ त्यारे तेना ककडा करीने पृथ्वि उपर फेकी दीधा ते कोइ ठेकाणे हाथ कोइ ठेकाणे पग, कोइ ठेकाणे मुख, कोइ ठेकाणे नाभी पड्याथीने ते ठेकाणे उप पीठ थयुं, तेमां कामाक्षी मिनाक्षी मातापुर तुळजापुर कलकता विंध्या वासीनी इत्यादि उपपीठ गणाय छे. जेम शिवना ज्योतिर्लिंग तेवा ए देवीना पीठ गणाय छे, पण ए जत्रायमां मद्य मास खप नथी गे-वासी गोसाइ कानफटा नाथ-पंथी वाममार्गी. कौलीक, अघोरी एमना ए मोटा धाम छे. वैष्णव लोको त्यांहां जता नथी. हाल परमार्थ प्रतिपादक शास्त्रथी लोकोने समार्गे वळगाडवुं एमां जेनी बुद्धि होय अने जेओ पाखंड अने दंभनो

नाश थाय, एवी जेनी इछा हशे एने भूतदया, देशाभिमान, न्याया-भिमान, स्थापन करवाने वास्ते जे चाह छे तेमणे आ ग्रंथनो काइ पण उपयोग पडशे तो आ ग्रंथ करवामा जे श्रम लीधा छे तेनुं सार्थक थशे.

आ ग्रंथमा मूळ ग्रंथना वाक्यो लख्या छे ते कलकत्तामा अने बनारसमा जे ग्रंथ पंडितोए शुद्ध करीने छाप्या छे, ते उपरथी लीधा छे, तेनुं कारण के, तेनो मतलब लखीए, तो असलमा ते प्रमाणे छे के नहीं, एवो संशय आवे, माटे असल ग्रंथना वाक्यो दाखल कर्यां छे तेथी ए संशय रहेशे नहीं, अने आज कळीयुग समजवुं के न समजवुं ए विशे. शास्त्रमा अंदेशो छे, पण कोई कहे के हाल कलीयुगज छे, तो बीजो प्रश्न उत्पन्न थाय छे के, कलीयुग थई रहेशे, त्यारे आ ग्रंथमा बतावेला बधाय कर्म पुनरपी चालता करशो, अने करीशुं, एम कहेशो तो आयुगने कळीयुग कहेवुं के, पेला युगने कहेवुं ए मोटो सवाल छे, एनो जवाब सत्य रीते कोई देशे एवी आशा छे.

आ शिवाय बीजा केटलाएक प्रश्न छे ते "आगम प्रकाश" नामनो ग्रंथ प्रगट थशे तेमा लखवामा आवशे.



निगम प्रकाश ग्रंथनी अनुक्रमणीका.

। कृष्ण यजुर्वेदांतर्गततैतिरीय ।
ब्राह्मण एने आपस्तंभ शाखानुं ब्राह्मण कहेछे तेमांना वाक्यो.

प्रकरण	विषय	पृष्ठ.

शतपथ ब्राह्मण.

अथर्वणवेदनुं.

प्रकरण	विषय	पृष्ठ.

शंकर विजय.



निगमप्रकाश ग्रंथना परिशिष्टनी अनुक्रमणिका.

सामवेद.

अथर्ववेद.

ऋग्वेद.

सामवेद.

निगमप्रकाशनी प्रस्तावनानी अनुक्रमणिका.

नीगम प्रकाश.



वैदीक कर्मकान्ड.

हिदुस्तानमा प्राचीनकाळथी वेदमा लखेलो धर्म चाल्यो आव्यो छे. अने वेदना अभीमानी अने धर्माध्यक्ष जे ब्राह्मण वेदने घणुंज मान आपेछे अने केटलाएक वेदनुं पारायण करावीने साभळेछे, ने केटलाएक मरती वखते वेदनो घोष करावेछे, अने ब्राह्मणनुं मान पण वेद भण्याथीज छे. भगवान श्रीकृष्ण एम बोल्या छे के:—

देवाधीनंजगत्सर्वंमंत्राधीनंचदैवतं
तेमंत्रब्राह्मणाःधीनांब्राह्मणोममदैवतं

वेदना अधीकारी ब्राह्मण बीजा कोइ वर्णने वेद भणवानो अधीकारी नथी कारण मनु कहेछे के:—

अविद्वांश्चैवविद्वाश्चब्राह्मणोदैवतंमहत्
प्रणीतश्चाप्रणीतश्चयथाग्निर्दैवतंमहत् ॥

मनु. अध्या ९ श्लोक ३१७

बीजे ठेकाणे एवुं लख्युं छे के:—

पृथिव्यांयानितीर्थानितानिसर्वानिसागरे
सागरेसर्वतीर्थानिपदेविप्रस्यदक्षिणे

आ आधारथी केटलाएक धर्म नीष्टलोक ब्राह्मणनी जमणा प-.

नीगम प्रकाश.



वैदीक कर्मकान्ड.

हिंदुस्तानमां प्राचीनकाळथी वेदमां लखेलो धर्म चाल्यो आव्यो छे. अने वेदना अभीमानी अने धर्माध्यक्ष जे ब्राह्मण वेदने घणुंज मान आपेछे अने केटलाएक वेदनुं पारायण करावीने सांभळेछे, ने केटलाएक मरती वखते वेदनो घोष करावेछे, अने ब्राह्मणनुं मान पण वेद भण्याथीज छे. भगवान श्रीकृष्ण एम बोल्या छे केः—

देवाधीनंजगत्सर्वंमंत्राधीनंचदैवतं
तेमंत्रब्राह्मणाःधीनांब्राह्मणोममदैवतं

वेदना अधीकारी ब्राह्मण बीजा कोइ वर्णने वेद भणवानो अधीकारी नथी कारण मनु कहेछे केः—

अविद्वांश्चैवविद्वाश्चब्राह्मणोदैवतंमहत्
प्रणीतश्चाप्रणीतश्चयथाग्निर्दैवतंमहत् ॥

मनु. अध्या ९ श्लोक ३१७

बीजे ठेकाणे एवुं लख्युं छे केः—

पृथिव्यांयानितीर्थानितानिसर्वानिसागरे
सागरेसर्वतीर्थानिपदेविप्रस्यदक्षिणे

आ आधारथी केटलाएक धर्म नीष्टलोक ब्राह्मणना जमणा प-

गनो अंगुठो पाणीथी धोइने ते पाणी पीएछे. ते वखत जे श्लोक बोलेछे ते नीचे मुजब —

आधिव्याधीहरंनृणांमृत्युदारिद्रनाशनं
श्रीपुष्टिकीर्तिदंवंदेविप्रश्रीपादपंकजं ॥१॥
विप्रौघदर्शनाक्षिप्रंक्षियंतेपापराशयः
वंदनात्मंगलावाप्तिर्दर्चनाअच्युतंपदं ॥२॥
समस्तसंपत्समवाप्तिहेतवेसमुत्थिताप:
कुलधूमकेतवः॥ अपारसंसारसमुद्रसेतवः
पुनंतुमांब्राह्मणपादपांसवः ॥३॥
आपन्नध्वांतसहस्त्रभानवःसमीहितार्थार्पण
कामधेनवः॥ समस्ततीर्थांबुपवित्र
मूर्तयोरक्षंतुमाब्रांह्मणपादपांसवः ॥४॥

ब्राह्मणनुं शील गुण केवा छे ते जोवानी जरूर नथी कारण —

दुःशीलोपिद्विजःपूज्योनतुशुद्रोजितेंद्रियः
कःपरित्यज्यगांदुष्टांदुहेच्छीलवतींखरीं ॥

पाराशर धर्मशास्त्र अ० ८ श्लोक २५

ब्राह्मणने भोजन आपवानुं पुण्य शास्त्रमां बहु मोटुं वर्णन कर्युंछे

ब्राह्मणस्यमुखंक्षेत्रंनिरूपरमकंटकं

वापयेत्सर्वबीजानीसाऋपीःसार्वकामिकी

पाराशर०अ०१ श्लोक ५५

वेदमा ब्राह्मणनुं माहात्म हेठळ लख्या प्रमाणे वर्णन करेलुंछे.

यावतीर्वैदेवतास्ताःसर्वावेदविदिब्राह्मणेवसं
न्तितस्माद्ब्राह्मणेभ्योवेदविद्भ्योदिवेदिवेनमस्कुर्या
न्नाश्लीलंकीर्तयेदेताएवदेवताःप्रीणाति ॥

तैत्तिरीये आरण्यके २ प्रपाटक १५ अनुवाक ९ मंत्र

अर्थ—सर्वदेव ब्राह्मणना शरीरमा रहेछे, माटे नीत्य ब्राह्मणनो सनमान करवो. ने तेनी नींदा न करवी. तेथी तेने आगे रहेला देव बधा प्रसंन थायछे. बीजे ठेकाणे वळी एम लखेछे के—

ब्राह्मणोस्यमुखमासित्

तै०आ०३ प्रपाठक १२ अनुवाक १३ मंत्र.

एटले ब्राह्मण छे, ते परमेश्वरना मुखमाथी उत्पन् थया छे.
ब्राह्मणनुं कर्म अेवुं लख्युं छे के:—

वेदोदितंस्वकंकर्मनित्यंकूर्यादतंद्रितः
तद्धिकुर्वन्यथाशक्तिप्राप्नोतिपरमांगतिं

मनु०४--१४

वेदमेवसदाभ्यस्येस्तपस्तद्विजोतमः
वेदाभ्यासोहिविप्रस्यतपःपरमिहोच्यते

मनु०२--१६६

अर्थ—वेदमां लखेलुं कर्म हमेशां करवुं तेथी ब्राह्मणनी सदगती थायछे. वेद भणवो एज ब्राह्मणनुं मुख्य तप छे.

बीजे ठेकाणे एवुं लख्युं छे केः—

सत्यंसत्यंपुनसत्यंमुधृत्यभुजमुच्यते

वेदाच्छास्त्रपरंनास्तिनदेवःकेशवात्परं

अर्थ—वेदथी बीजुं शास्त्र नथी अने वीष्णु शीवाय बीजो मोटो देव नहीं ए प्रीवार व्यासजी कहेछे.

वेदनी जे नींदा करेछे तेमने नास्तीक गण्याछे. वेदना नाम घणांछे. १. वेद २. श्रुती. ३. छंद. ४. ब्रंह्म. ५. आमनाय. ६. मंत्र. ७. त्रीवीध्या. ८. निगम. ईत्यादी. ओ ग्रंथ मुख्य गणायछे. तेथी उतरता सुत्र अने संहीता आ बेने स्मृतीयो कहेछे. ए ग्रंथमां बे धर्मछे. एक प्रवृती अने नीवृती. प्रवृतीनुं बीजुं नाम कर्म कान्ड. अने नीवृतीनुं बीजुं नाम ज्ञान कान्ड ए बीशे शास्त्रमां अभीप्राय नीचे लख्या मुजबछेः—

नमांसभक्षणेदोषोनमद्येनचमैथुने

प्रवृत्तिलक्षणोधर्मेनिवृत्तिस्तुमहाफला ॥ मनु.

लोकेव्यवायामिषमद्यसेवाजंतोस्तिनित्या

नहितत्रचोदना ।।व्यवस्थितिःस्तत्राविवाह

यज्ञसुराग्रहेरासुनिवृत्तिरिष्टा ।। भागवत ।।

सन्यासाःत्कर्मयोगश्चनिःश्रेयसकराउभौ

तयोस्तुकर्मसन्यासात्कर्मयोगोविशिष्यते ॥ गीता ॥ ४-२

यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यंकार्यमेवतत् ॥ गीता ॥ १८-४

ए प्रमाणे केटलाक शास्त्रमां निवृत्तिने वरीष्ट कहीछे, ने केटलाक शास्त्रमां प्रवृत्तिने वरीष्ट कहीछे. सर्व ग्रंथमां श्रुतीनु प्रमाण मोटुं गणायछे. कारणः—

श्रुतिस्मृतिपुराणांनांविरोधोयत्रजायते
तत्रश्रौतंप्रमाणंतुद्वयोर्द्वैधेस्मृतिर्वरा ॥
पुराणश्चखल्विदंनशक्नोतिश्रुतिंस्मृतिश्चबाधितुम् ॥
श्रुति० ॥ इत्यादिव्यासस्मरणात् ॥

गोभिलियसूत्र १ प्र. ४ कांड.

जुदा जुदा युगना जुदा जुदा धर्मछे. एम समजीने कर्म कान्डने ठेकाणे उपासना कान्ड उत्पन्न कर्योछे तेमां बे तडछे अेक दक्षण अने बीजु वाम. ते उपरथी केटलाएक कर्मने पुर्व युगनां कर्म कहेछे. पण कळीयुगना ३६००० वर्ष सुधी पुर्वयुगनो संध्यांश गणायछे. एमानां ४९७३वर्ष गयांछे माटे बाकीनां रह्यां ते वीत्या सुधी पुर्व युगनां धर्म चालवाना तेनुं प्रमाणः—

कृतंत्रेताद्वापरंचकलिश्चेतिचतुर्युगं
दिव्यैर्द्वादशभिर्वर्षैःसावधानंनिरूपितं
चत्वारीत्रीणीद्वेचैकंकृतादिपुयथाक्रमं
संख्यातानिसहस्त्राणीद्विगुणानिशता
निच ॥ सध्यांशयोरंतरेणयःकालःशतसं

ख्ययोः॥ तमेवाहुर्युगंतज्ज्ञायत्रधर्मोविधीयते॥

भागवत ३ स्कंध.

श्रीधरीव्याख्या.

युगस्यादौसंध्याअंतेसंध्याशः उक्तानिशतानीसंख्या-
गवालंभादिधर्मविशेषोयत्रविधीयतइत्यर्थः ॥

विजयध्वजी व्याख्या.

शतसंख्ययोःसंध्यासंध्याशयोरंतस्थोयःकालःतत्र
तत्तद्युगधर्मोविधियते

सहस्रमेकंवर्षाणांततःकलियुगंस्मृतं
तस्यवर्षशतंसंधिःसंध्यांशश्चततःपरम् ॥ भारत-वनपर्व.

ए प्रमाणे अन्य पुराणमा पण अेज वात लखीछे माटे कर्मकांड
तें शु अे वीषे विचार उत्पन थायछे

हरेक कर्मने आरंभे संकल्प थायछे तेमा—

श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं

आ मुजब बोलायछे अने अंते

तत्सत्ब्रह्मार्पणमस्तु

ए प्रमाणे ब्रह्मार्पण बोलेछे श्रुती एटले—

मंत्रब्राह्मणयोर्वेदा

होता ए बे, तेमां सुत्र एतो वेद तुल्य गणायछे तेथी उतरती स्मृतीयो तेमा मनुस्मृती मुख्य गणायछे. कारण श्रूतीमा मनुनुं वर्णन कर्युं छे ते ए प्रमाणेः—

मनुर्वैयत्किंचिदवदतद्भेपजंताया ।। छांदोग्यब्राह्मणे ॥
मनूवर्थविपरितातुयास्मृतिःसानशस्यते ।। बृहस्पतिः

वेदना मंत्रवडे करीने ब्राह्मणोने श्राप अने आशीर्वाद आपवानुं बहु मोटुं सामर्थ हतुं एवुं पुराणोमा लख्युंछे. जेमके ब्राह्मणना श्रापथी सगरराजानो वंश बळी गयो; दुर्वासना श्रापथी विष्णुने अवतार लेवा पड्या; दक्षना श्रापथी शीवनो यज्ञभाग बंध थयो; गौतमना श्रापथी इंद्र दुःख पाम्यो; मान्डव्य ऋषीना श्रापथी यमने त्रास पड्यो; अगस्तीथी समुद्र सुकाइ गयो; जन्हु ऋषीए भागीरथीने पगमा घाली; परीक्षतराजाने एक ब्राह्मणनो श्राप थयो तेथी ते सात दीवसमा मरी गयो; दशरथने श्राप थयो तेथी रामनो जन्म थयो; यादवकुळने एक ब्राह्मणनो श्राप थयो तेथी तेओ बधा मरी गया; जमदग्नीना श्रापथी सहस्त्रार्जुन मरी गयो; वामनना श्रापथी बळी पाताळे गयो; नहुपराजा सर्प थयो; अने वेनराजा श्रापथी दग्ध थयो. आ प्रमाणे हजारो कथा अने ब्राह्मणनुं महात्म श्रुती, स्मृती, पुराणमा लख्युं छे. ब्राह्मणनो द्वेप न करवोः—

ब्रह्मद्वेपो कुलक्षयः

ब्राह्मणनी हत्या करवी ए महापातकमा गण्युंछे. ब्राह्मणनो मीलकत कोइ राजा कींवा चोरे लेवी नहीं. बधाए ब्राह्मणनी सेवा करी सनमान करवुं. दान करवुं ते पण ब्राह्मणने करवुं. ब्राह्मणनुं प्रतीपालन

करवुं ए राजानो धर्म; पृथ्वी उपर ब्राह्मण देव गणायछे तेथी तेमने भूदेव कहेछे.

ब्राह्मणनो देह सोळ संस्कारथकी पवीत्र थायछे. अने ए संस्कार थया पछी तेने द्वीज कहेछे. द्वीज एटले फरी अवतार थएलो; पेहेला जन्मना उत्पन्न करता माता पीता अने गायत्री तथा गुरू बीजा जन्मना उत्पन्न करता; ए द्वीज थया पछी ब्राह्मणने श्रुत्युक्त कर्म एटले वेदमां कहेला कर्मनो अधीकार मळेछे. प्रथम ऋगवेदनो ऐतरेय ब्राह्मण लेइने तेमां स्वर्ग प्राप्त्यर्थ जे वीधी लखी छे तेनु नाम यज्ञ. बधा यज्ञनी प्रकृती अग्नीष्टोम अने ए प्रकृती उपरथी वीकृती घणी थायछे तेना नामोः—

सप्तसंस्था.

१ सोळशी २ अतिरात्र ३ वाजपेय
४ अत्यग्नीष्टोम ५ अप्तुर्याम ६ उक्थ ७ ज्योतिष्टोम

उत्तर क्रतु.

१ सत्र २ राजसूय ३ सर्वतोमुख ४ पौंडरीक

इत्यादि.

दाकतर हौ साहेबे. ऐतरेय ब्राह्मण शुद्ध करीने छाप्युंछे, ते केळवणी खातामां चालेछे. तेमां यज्ञमंडपनो नकशो बतावेलोछे तेमां अग्नीनु स्थापन, ऋत्विजनु वर्णन एटले नेमणुको शी रीते थायछे ते बताव्युंछेः—ते आ प्रमाणे.

अग्नी	पुरोहित	पात्रे वस्याने	अनुष्टाने
१ आहवनी	१ अध्वर्यु	१ इध्मा	१ दीक्षणीयईष्टि

२ गार्हपत्य
३ दक्षीणाग्नी
४ शामित्राग्नि

२ प्रतिप्रस्थाता
३ आग्नीध्र
४ उन्नेता
५ होता
६ मैत्रावरुण
७ ब्राह्मणाछंसी
८ नेष्टा
९ पोता
१० आछावक
११ उद्गाता
१२ प्रस्तोता
१३ प्रतिहर्ता
१४ सुब्रह्मण्य
१५ ग्रावस्तोता
१६ ब्रह्मा
१७ सदस्य
१८ शमिता
१९ सोमक्रयी

२ बर्ही
३ धृष्णी
४ स्रुचा
५ चमस
६ ग्रावण
७ स्वरु
८ उपरव
९ द्रोणकलश
१० वायव्यकलश
११ ग्रह
१२ इडसुनु
१३ स्वधीति
१४ पुरोडाश
१५ पुतभृता

१ यज्ञशाला
२ महावेदि
३ बहिर्वेदी
४ अंतर्वेदी
५ शामित्रशाला
६ चात्वाल
७ संचार
८ प्राग्वंश
९ सद
१० मार्जालिय

२ प्रायणीयइष्टि
३ आतिथ्यइष्टि
४ घर्म
५ अग्नेषोमिया
६ पशु
७ सुत्या
८ प्रातःसवन
९ माध्यानसवन
१० तृतीयसवन
११ सोमपान
१२ आश्विनपशु
१३ ऐंद्राग्नपशु
१४ अवभृत
१५ वरुणेष्टि
१६ वपायाग
१७ पशुउपाकरण
१८ पश्वालंभनं

११ आग्निधीयागार

१२ पत्नीशाला

१३ द्वार

१४ प्रतिग्वर

१५ यूप

१६ हविर्धान

१७ शालामुखी

१८ घर्म

ए प्रमाणे यज्ञनी क्रीया अने सामग्री बतावीछे. द्वीतीयपंचीकाने आरंभे एवुं लख्युं छेके:—

१ यज्ञेनवैदेवाऊर्ध्वाःस्वर्गलोकमायंस्ते
त्रिभयुरिमन्नोदृष्ट्वामनुष्याश्चऋष
यश्चानुप्रज्ञास्यंतीति

द्वितीय पंचिका प्रथम खंड

मतलबः—देवयज्ञ करीने स्वर्ग गया तेथी मनुष्य अने ऋषीए यज्ञ करवो अने युप स्थापन करवो. युप एटले यज्ञार्थ जे पशु आण्यो होय तेने बांधवानो थांभलो. पछी ते पशुने शमन करवानी आज्ञा लखीछे:—

२ दैव्याःशमितारआरभध्वमुतमनुष्याइत्याह॰
उदीचीनांअस्यपदोनिधत्तात्सूर्यंचक्षुर्गमयता
द्वातंप्राणमन्ववःसृजतांदंतरिक्षमसुंदिशः

श्रोत्रंपृथिवींशरीर०

अन्वेनमातामन्यतामनुपितानुभ्राता

सगर्भ्योऽनुसखासयुथ्यइतिजनित्रैरे

वैनतत्समनुमतमालभंत. ६ खंड

ए प्रमाणे आ वेद मन्त्रथी पशुना मावाप पासेथी आ पशु अमने आपो एवी प्रार्थना करे छे त्यार पछी अध्वर्यु जे मुख्य पुरोहित तेनी आज्ञाथी पशुने शामित्र शालामा लेइ जइने उत्तर तरफ एना पग राखीने शमीता एने मुष्टी वडे एनो जीव ले छे, त्यार पछी स्वधीती एटले सुरी अने इडा सुनु एटले लाकडाना ढीमचा उपर ते पशुने लेइ तेने फाडी तेनु मास कहाडे छे एनो होम करीने जे बाकी रहे तेनी वधा पुरोहीतमा वहेंचण करे छे ते निचे प्रमाणे.

३ अथातःपशोर्विभक्तिस्तस्यविभागं

वक्ष्यामो.हनुसजिव्हेप्रस्तोतुः०७पंचिका१खंड

यज्ञ पशुने देवताओ स्वर्गमा लेइ जाय छे. ते विशे एवुं लख्युं छे के

४ तंदेवाअब्रुवन्नेहिस्वर्गंवै.त्वा

लोकंगमयिष्वामइति २ पं ६ खंड

पशुने फाडीने एना अंग कहाडवा विशे एवुं लख्यु छे के

५ वपामुत्खिदतादंतरेवोष्माणंवारय

ध्वादिति ० श्येनमस्यवक्षः कृणुता

तूप्रशसा बाहुशलादोपणीकश्यपे

वासाऽछिद्रेश्रोणीकवषोरुस्रेकपर्णा
ऽष्ठीवंतापडविंशतिरस्यवंक्रयस्ताअ
नुष्ठ्योच्यावयतादगात्रंगात्रमस्यानुनं ६ खंड

अर्थ —छातीमाथी कबुतर जेवो गोळो काढवो अने कोहोवाडी जेवो पाछळना पगमाथी बे ककडा कहाडवा अने आगळना पगमाथी बे तीर जेवा कहाडवा, अने बे खभामाथी काचबा जेवा बे कहाडवा, अने केहेड आखी कहाडवी, अने ढीचणमाथी बे ढाल जेवा कहाडवा, अने आ पाशळीओमाथी अनुक्रमे २६ वीस ककडा कहाडवा अने ते बधा आखा थवा जोइए अने जे काइ मळमुत्र इत्यादीक पदार्थ निकळशे ते भोंयमा दाटवाने वीशे लख्युछे के.

६ उवध्यगोहंपार्थिवं ६ खंड

होतार हेठळ लख्या प्रमाणे बोलेछे.

७ अध्रिगोशमीध्वंसुशमीशमिध्वंशमीध्वमध्रिगा३उ
इतित्रिर्ब्रूयात् खंड ७

अर्थ—सारीपेठे मारो बाकी राखशो नहीं ए प्रमाणेछे रक्त राक्षसने आपवानु कह्यु छे.

८ यदस्नारक्षःसंसृजतादित्याह. खंड ७

पछी वपाहोम आ प्रमाणे लख्यो छे.

९ तस्यवपामुत्खिद्याहरंति
वामध्वर्युःस्रुवेणाभिधारन्नाह खंड १२

आ आख्यान जाणवानुं फळ एज छे के आयुष्य वृद्धि थाय छे.

१० सर्वमायुरेतियएवंवेद २ पं० ७ खंड

वपायागनुं फळ नीचे लख्या प्रमाणे लख्युं छे —

११ वपायामेवहुतायांस्वर्गोलोकः

प्राख्यायतः २ पं खंड १३

१२ सोऽग्नेर्देवयोन्यांआहुतिभ्यः

संभूयहिरण्यशरीरऊर्ध्वःस्वर्गलोकमेति

२—१४ खंड

पशुनो वीभाग करवो ते लख्या प्रमाणे ३६ वीभाग करवा जोइए, अने एम करे ते स्वर्ग लोकमा जायछे, अने ए प्रमाणे वीभाग करवानी रीती देवभाग ऋषीए ठरावी ते मरी गया पछी कोइ देवे गीरजा ऋषीने बतावी तेनो अभ्यास करवो ते वीशे एवुं लख्युछे के —

१३ तत्स्वर्गाश्चलोकानाप्नुवंति

प्राणेषुचैवतत्स्वर्गेषुलोकेषु

प्रातितिष्ठंतोयीत०एतां

पशोर्विभक्तिंश्रौतऋषिर्देव

भागोविदांचकार०गिरिजा

यवाभ्रव्यायऽमनुष्यःप्रोवाच ७ पं० १ खं.

हरीश्चंद्र नामे एक राजा हतो तेने पुत्र हतो नहीं माटे वरुण देवनी आज्ञा थकी अजीगर्त ऋषीनो पुत्र शुनशेप वेचाथी लेइने तेने ,

मारीने यज्ञ करवानुं थयुं हतुं ते वीशे वीगतवार कथा वेदमा कहीछेः—

१४ हरिश्चंद्रोहवैधसऐक्ष्वाको

राजाऽपुत्रआस०७पं०खं०१३-१४-१५-१६

सदरहु ग्रंथमा जेटला यज्ञ लख्याछे ते बधायमा हींसा आवेछे. ए वीशे मच्छ पुराणमा कह्युंछे के.—

हिंसास्वभावोयज्ञस्य

आ प्रमाणे चारे वेदमा श्रेष्ट जे ऋगवेद तेनुं वर्णन थयुं. पछी कृष्ण यजुर्वेद जेने तैतीर्य कहेछे अने शुक्ल यजुर्वेद एटले जेने वाजसनीय कहेछे तेनो वीचार करीशुं. प्रथम तैतीरीय ब्राह्मण वाचता एम मालुम पडेछे के आ वेदमा यज्ञयागर्नो क्रीया बहुज वधारीछे. अने यज्ञ अनुष्टानमा चारे वेदनो खप पडेछे तेमा यजुर्वेदनो खप घणो अने यजुर्वेद भणेलो जे ब्राह्मण होय तेनेज अध्वर्यु नीमवामा आवेछे. तैतीरीय ब्राह्मणमा हेठळ लख्या प्रमाणे लख्युंछे केः—

१ दैव्याःशमितारउतमनुष्याआरभध्वं

३ कांड ६ अध्याय ६ अनुवाक

२ अध्रिगोशमीध्वम्सुशमीशमीध्वम्
शमिध्वमध्रीगो ३-६-६

सायनाचार्यभाष्य

३ क्रुरंकर्मेतिमत्वातदुपेक्षणंमाभू
दितिपुनःपुनर्वचनम् ॥

जे प्रमाणे ऋगवेद ब्राह्मणमा पशु मारवाने सारु आज्ञा लखीछे तेज प्रमाणे उपरना वेदवाक्यमां लखीछे. तेनो मतलब के आ नीर्दयपणानुं काम छे तोपण अवश्य करवुं. बीजां वाक्यो नीचे लख्या प्रमाणे मळेछेः—

४ द्यावापृथिव्यांधेनुमालभन्ते
वायव्यंवत्समालभन्ते

१ कांड २ अध्याय ५ अनुवाक.

५ एषगोसवः २---७---५

६ प्रजापतिपशूनसृजत । एतेनवैदेवाजत्वानि
जित्वा । यंकाममकामयन्तमान्पुवन् २-७-१४

७ प्राजापत्योवाअश्वः । यस्याएवदेवतायाः
आलभ्यते । तयैवेन ँसमर्धयति ३-८-३

८ यदेनूएकादशिनाःपशवाआलभ्यंते ३-९-२

९ नानादेवत्याःपशवोभवंति । आरण्यान्
लोकादशीनआलभ्यन्ते । अस्मैवैलोकाय
ग्राम्यापशवआलभ्यन्ते ॥ ३-९-३

१० ग्राम्याँश्चारण्याँश्चउभयान्पशुनालभते ३-९-३

११ तेजसावाएषब्रह्मवर्चसेव्यृध्यते।
योअश्वमेधेनयजते ।

१२ यदजावयश्चारण्याश्चएतेवैसर्वे
पशवः ।यद्गव्याइति । गव्यान्पशु
नुतमेहन्नालभते ।। ३-९-९

१३ शुनःश्वतुरक्षस्यमहन्ति ।
सैध्रकमुसलभवति ।,३-८-४

१४ पशुभिर्वाएषव्यृध्यते । योअश्वमेधेन
यजते। छगलंकल्मापंकिकिदिवं
विदिगयमिति । त्वाष्ट्रान्पशूनालभते । ३-९-९

१५ तानैवोभयानूप्रीणाति ३-९-१०

१६ ब्राह्मणेब्राह्मणमालभते ३-४-१

१७ यदष्टादाशिनआलभ्यंत्ते ३-९-१

अर्थ—द्यावा पृथ्वी देवताने वास्ते धेनु एटले गायनो यज्ञ थाय छे. वायु देवताने वास्ते वाछडानो यज्ञ थायछे. आ प्रमाणे गायनो यज्ञ थायछे. प्रजापती देवे पशुने उत्पन्न कर्या ते पशु लेइने बीजा देवे यज्ञ कर्या तेथी तेमनी मनकामना पूर्ण थई छे. प्रजापती देवताने घोडो योग्य पशु छे माटे ए देवताने सारु घोडानो वध थाय छे ए तेम करवाथी समृद्धी मळेछे. एकादश एटले अगीआर पशुनो पण यज्ञ थायछे. अनेक प्रकारना देवछे तेमने अनेक प्रकारना पशु यज्ञमां अपायछे. अरण्य पशु दश पण थायछे. ग्राम्य पशु पण यज्ञमां आवेछे. गाममां तथा वगडामां बन्ने ठेकाणे रहेनारा पशु यज्ञने

सारू वध करवा योग्यछे. अश्वमेध यज्ञ जे करेछे तेनुं तेज वधेछे, वगडाना पशु लेइने यज्ञ करवो ते करता गाय वीशेश योग्यछे माटे सारो दिवश होय ते दिवशे गायज लेवी. कुतरू लाकडीथी मारीने अश्वना पग तळे नाखवुं जे अश्वमेध यज्ञ करेछे तेना घरमा पशुनी वृद्धी थायछे. बकरानुं बच्चुं, तीतर पक्षी, धोळो बगलो, अने काळा टपका वाळा घेटा, ए सघळा लष्टा देवताने सारू यज्ञमा लेवायछे, तेणे करीने आ लोकमा तथा परलोकमा सुख मळेछे. ब्रह्म देवताने सारू ब्राह्मणनो पण यज्ञ थायछे. अराढ पशुनो पण यज्ञ थायछे. यजुर्वेदना ब्राह्मणनी अनुक्रमणिका जोता नाना प्रकारना यज्ञवीधी मालुम पडेछे तेमाथी केटलाएक प्रकरण नीचे दाखल कर्याछे.

संस्कृत नाम.	अर्थ.
१ सौत्रामणी.	१ मद्यनो यज्ञ.
२ सुराग्रहण मंत्र.	२ मद्य पीवानो मंत्र.
३ ऐंद्रपशु.	३ इंद्र देवताने वास्ते बकरानो वध करवो.
४ गोसव.	४ गायनो यज्ञ
५ अत्पुर्याम.	५ एक प्रकारना यज्ञनु नाम छे.
६ वायवीयश्वेतपशु	६ वायु देवताने सारू बकरानो वध.
७ काम्यपशु	७ मनोरथ पूर्ण थवाने सारू पशु यज्ञ.
८ वत्सोपाकरणं.	८ वाछडानो वध करवानो.
९ पौर्णमासेष्टि.	९ पुनमने दिवशे करवानो यज्ञ
१० नक्षत्रेष्टि.	१० नक्षत्रदेवताने वास्ते करवानो यज्ञ.
११ पुरुषयज्ञ.	११ मनुष्य यज्ञ

११ वैष्णवपशु.	११ वीष्णु देवताने सारु बकरानो यज्ञ.
१३ ऐंद्राग्न पशु.	१३ इद्राग्नी देवतानेसारु बकरानो वध.
१४ सावित्रपशु.	१४ सूर्य देवने सारु बकरानो वध.
१५ अश्वमेध.	१५ घोडानो यज्ञ.
१६ रोहितादिपश्वालंभन.	१६ लाल बकरा वीगेरे पशु यज्ञ.
१७ अष्टादशपशुविधानं.	१७ अराढ पशुनो यज्ञ.
१८ चातुर्मास पशु	१८चातुरमासनामना यज्ञमा बकरानोवध.
१९ एकादशीन पशु विधान.	१९ अगीआर पशुनो यज्ञ.
२० ग्राम्यारण्य पशु प्रशंसा.	२० वगडानो तथा गामना पशुनो यज्ञ.
२१ उपाकरण मंत्र.	२१ पशुनो संस्कार.
२२ गव्यपशु विधान	२२ गायनो यज्ञ.
२३ सत्र.	२३ बहु दिवश सुधी चालवानो यज्ञ.
२४ ऋषभालंभविधानं.	२४ बळद मारवानो वीधी.
२५ अश्वालंभ मंत्र.	२५ घोडो मारवानो मंत्र.
२६ अश्वसंज्ञपनं.	२६ घोडो मारवानी वीधी.
२७ अश्व मनुष्य अजा गो पशु प्रशंसा.	२७ घोडो, मनुष्य, बकरो, गाय, आ वधानो यज्ञ वीधी.
२८ आदित्य देवताक पशु.	२८ सूर्य देवताने सारु पशु.
२९ सोमसत्र.	२९ सोम देवताने सारु यज्ञ.
३० ब्रहस्पति सव.	३० ब्रहस्पती देवतानो यज्ञ.

उपर प्रमाणे अनेक यज्ञ याग, ईष्टी, मख, क्रतु, उत्तरक्रतु, सव. ईत्यादी अनेक प्रकारना याग वेदमा दर्शाव्याछे ते बधायमा पशुनी हींसा अने मांस भक्षण प्राप्त थायछे कोई कहेछे एम के हींसानो भाग जूदो

कहाडीशुं अने अ हींसानो भाग जूदो कहाडीशुं, तो हींसानो भाग कहाडेथी बीजुं काइज रहेवानु नथी; कारण जेमा हींसा नथी एवो बीलकुल कोइ भाग छेज नहीं. पशुने मारवाने ठेकाणे वेदमा पाच शब्द वपरायछे:—

आलभन करण उपाकरण शमन संज्ञपन

सुरतना यज्ञेश्वर शास्त्रीए आर्य वीद्या सुधाकर नामनो ग्रंथ छापा थोडा दिवश उपर प्रसिद्ध कर्यो छे तेमा अनेक प्रकारना यज्ञवीधी, पशुयाग, अंगछेदन, ईत्यादि वेदमा लख्या मुजब बताव्युं छे तेमा आलभन शब्दनो अर्थ लख्योछे ते नीचे प्रमाणे:—

उपाकरणंनामदेवकर्मोपयोगी
स्वसंपादकः पशोःसंस्कारविशेषः
एतदादीसंज्ञपनपर्यंतःक्रीयाक
लापआलभनशब्देनाभिधीयते२ प्रकाश८१पृष्ट

अर्थ—देवताने अर्थे पशुनो सस्कार करीने वध करता सुधी जे जे क्रीया थायछे ते सर्वेने आलभन कहेछे:—

नरमेधनु कर्म ज्या वेदमा लख्युंछे तेमा अनेक प्रकारना, अनेक जातीना, अनेक स्वरूपना, अनेक धंधाना बसे दश माणस (२१०) लख्याछे, ते बद्धा युप एटले खीले बंधायछे अने तेमनुं प्रोक्षण पुरुष सुक्त मंत्रथी करवानुं लख्युंछे. केटलेक ठेकाणे पशु बाधीने छोडी देवो के जेने उत्सर्ग कहेछे, तेम पण लखेलुंछे. परंतु ए गौण पक्ष छे, मुख्य पक्ष नथी. केटलेक ठेकाणे वीकल्पे करीने लखेलुंछे पण मूळवेदना मंत्रमा "आलभन" एज शब्दनो प्रयोगछे तेथी मुख्य प-

क्षहिंसा जणायछे. ए प्रमाणे यजुर्वेदांतर गत तैतीर्य शाखाना ब्राह्मण जेमां संहिताना मंत्रनो विनियोग लख्योछे ते तपासतां सदरहु मुजब मालुम पडेछे. हवे एज शाखानो आरंण्यक दस अध्यायछे तेनां नाम जूदां जूदांछे. पांच उपनीशद गणायछे अने पांच कर्मोपनीशद गणायछे. तमांनो छठो अध्याय पित्रमेध वीशेछे, तेमां ब्राह्मण क्षत्री अने वैश मरी जाय त्यारे शी रीते बाळवो तेनो वीधी लख्योछे.ते उपर भारद्वाज तथा बौधायन सुत्रछे तेमां एअध्यायमां जे जे मंत्रछे तेनो उपयोग बतावेलोछे. तेमां वळी एम लख्युंछे के प्रेतनी जोडे एक गाय मारीने तेनां अंग प्रेतना अंग उपर मुकवां अने पछी चीता सळगाववी. अने प्रेत गाडामां घालीने अथवा शुद्रने खभे उचकावीने लेई जवुं अने ए मरनार पुरुषनी बायडी पण स्मशान सुधी लेइ जवी अने तेने एम कहेवुं के तारो धणी मरी गयो माटे तारे पुनर्विवाह करवानी मरजी होय तो सुखेथी करजे ए प्रमाणे उपदेश करी पाछी लाववी एम लख्युंछे. आ ग्रंथ उपर शायनाचार्यए भाष्य कर्युंछे. तेमां तपसीलवार वेदना सुत्र मेळवीने अर्थ करेलोछे. माणस मरी गयापछी तेना बारमाने दिवशे जव तथा बकराना मांसनुं भक्षण मनुष्योना संबंधीने करवानुं लख्युंछे. आ पुस्तक वेदनां बधां पुस्तक करतां वधारे पवीत्र गणायछे. ब्रह्मीओने काने एनो एक पण शब्द पडवा देवामां आवतो नथी अने कोइ एकांत स्थळमां जंगलमां भणवामां आवेछे. ब्रह्मीओ तेमज शुद्रने काने पण पडवा देता नथी. सभामां ब्राह्मणो ज्यारे भेगा थायछे त्यारे संहीता भणेछे परंतु आरंण्यक भणाय नहीं. पीत्रमेधना अध्यायमां जे गाय बाळवानी लखीछे तेनुं नाम नीचे मुजबछे:—

राजगवी. अनुस्तरणी. सयावरी.

आ अध्यायमाना केटलाक मंत्र भाष्यसहीत नीचे दाखल कर्याछे —

१ परेयुवांसंप्रवतो. ।। ६ प्र० तै. आ.

भाष्य.

पितृमेधस्यमंत्रास्तुदृश्यंते ऽस्मिन्प्रपाठके पितृमेध मंत्राणांविनियोगोभरद्वाजकल्पेबौधायनकल्पेचाभिहितः

२ अपैतद्रूहयदिहाविभःपुरा ।।

भाष्य

कल्प. दासाःप्रवयसोवहेयुःअथैनंअनसावहंति स्येकेषां ।।

३ इमौयुनज्मितेवन्हिअसुनीथायवोढवे ।।

भाष्य

इमौवलिवर्दौशकटेयोजयामि.

४ पुरुषस्यसयावरीवितेप्राणमसिस्रसां ।।

कल्प. अथास्याःप्राणान्विस्रंसमानाननुमंत्रयतेहेपुरुषस्य सयावरी-राजगवीतवप्राणांशिथीलकृतवानस्मि-पितृनूउपेहिअस्मिन्लोकेप्रजयापुत्रादिकयासह क्षेमंप्रापय.

कल्प. अत्रराजगवीउपाकरोति-भुवनस्यपतेइतिजरवीं

मुख्यां,तज्जघन्यांकृष्णांकृष्णाक्षींकृष्णबालां,कृष्ण खुरामपि,वा,अजां,बालखुर,मेवकृष्ण,एवंस्यादिति।

पाठस्तु । तस्यांनिहन्यमानायांसव्यानिजानून्यनु निघ्नंतः।

५ उदीर्ष्वनार्यभिजीवलोकं ।

भाष्य-हेनारीत्वउत्तिष्ठ.त्वंदिधिषो.पुनर्विवाहेछोपत्युःजनित्वंजायात्वंसम्यक्प्रान्युहि ॥

६ अपश्यामयुवतिमाचरन्तीं ॥६ प्र० १२ अनुवाक

राजगव्याहननमुत्सर्गश्चेतिद्वौपक्षौ-तत्रहननपक्षेमंत्राःपुर्वमेवोक्ता : अथोत्सर्गपक्षेमंत्राउच्यंते

७ अजोसि० द्रूपांसी

८ यवोसि० द्रूपांसी.

सदरहु पुस्तक तपाश्या पछी माध्यदिनी शाखानी संहिता चाळीस अध्यायनीछे तेनी जोडे चौद अध्यायनु शतपथ ब्राह्मण छे. ते तपासीये एम कहेवायछे के व्यासजीए बधा वेदना मंत्र भेगा करीने तेमना त्रण ग्रंथ बाध्या. एकनु नाम ऋगवेद संहीता. ते सुमंतु ऋषीने आपी. बीजानु नाम यजुर्वेदनी संहीता ते वैशंपायन ऋषीने आपी तेमनी पासे एक याज्ञवल्क्य नामनो शीष्य हतो ते बधा सदरहु ऋषी लढ्या तेथी याज्ञवल्क्ये सुर्यनी उपासना करीने

नवो वेद रच्यो तेनुं नाम शुक्ल यजुर्वेद शतपथ ब्राह्मणमा छेलु वाक्य नीचे प्रमाणे छेः—

१ आदित्यानीमानिशुक्लानियजूंषिवाजसनेयेनयाज्ञवल्कीयेनाख्यायंते । श० ब्राह्मणे १४ अ०

आ वेदनी संहितामा चाळीस अध्याय छे तेनी अनुक्रमणिका.

दर्शपौर्णमास	१-२	शतरुद्रियमंत्र	१६
आधान	३	चितिवसोर्धारा	१७-१८
अग्नीष्टोम	४	सौत्रामणी	१९-२०-२१
आतिथ्येष्टि	५-६	अश्वमेध	२२
उपांशु ग्रहमंत्र	७	आश्लीलभाषण	२३
आदित्यग्रहमंत्र	८	पशु प्रकरण	२४
वाजपेययज्ञ / राजसूययज्ञ	९	अश्वमेध	२५-२६-२७ २८-२९
सौत्रामणीयज्ञ	१०	पुरुषमेध	३०-३१
चयन	११	सर्वमेध	३२-३३
चिति	१२-१३-१४-१५	पितृमेध	३४-३५
		शांतिपाठ	३६
		प्रायश्चित	३७-३८-३९
		ज्ञानकांड	४०

आ ग्रंथ उपर चार भाष्य थया छे एक महीधर--बीजुं उव्हट—त्रीजुं सायन—चोथु कर्क. आ शिवाय द्विवेदाग अने देवयाज्ञिक ए बे बीजा छे एम कहेवायछे. आ ग्रंथमाथी केटलाक वाक्यो नीचे लख्याछे.

१ ऋतस्यत्वादेवहविः पाशेनप्रतिमुंचामिधर्षामानुषः

६ अध्याये

हेदेवहविः देवानांहविरूपयज्ञस्यपाशेनत्वांप्रतिमुंचामि। एवंपशुसंबोध्यशामित्रेसमर्पयति । व्यामद्वयपरिमिताया कुशकृतयारज्वानागपाशंकृत्वाशृंगयोरंतरालेपशुंछागं बध्नातिपाशंप्रतिमुंचेदितिसूत्रार्थः ॥ महीधरवेददीपे

२ देवस्यत्वासवितुः० ६ अ०

युपेपशुंबध्नातिइतिसुत्रार्थः

३ अग्नीषोमाभ्यांजुष्टंनियुनज्मि ।। अग्निषोमदेवताभ्यां जुष्टंमाभिरूचितंपशुंनियुनज्मिनिबध्नामि

४ अद्भ्योस्त्वौपधीभ्योऽनुत्वामाता०पशुंप्रोक्षणीभिःप्रो क्षतीति । मेध्यंकरोति

५ वाचंतेशुंधामि । प्राणंतेशुंधामि०पत्निमृतस्यपशोः प्राणान्मुखादीन्यष्टौप्राणायतनानिप्रतिमंत्रंशुंभाति । अद्भिः स्पृशति

६ घृतेनद्यावापृथिवी०

वपामुत्खिद-द्यावापृथिवीऽइति । पशूदरावतूवपांनिष्का ऽयआछादयेत् ।

७ ताउभौचतुरःपदःसम्प्रसारयाव०॥२३अ०२०मंत्र एवंसंवेशनप्रकारः। अधिवासेनप्रछादयतिअश्वमहिष्यौ। अध्वर्युर्वदति। हेअश्वमहिष्यौयुवांस्वर्गेलोकेअस्याग्रज्ञभूमौआछादयतम्अश्वशिस्नमुपस्थेकुरुतेवृषावाजिति। म हिषिस्वयमेवाश्वशिश्नमाकृष्यस्वयोनौस्थापयति

८ उत्सक्थ्याअवगुदं०

९ यकासकौशकुंन्ति०

१० माताचतेपिताचतेग्रं०॥ २३अ०

इत्यादिआश्लीलभाषणं

११ अश्वस्तुपरोगोमृगस्तेप्राजापत्याः॥ २४अ०

अश्वमेधिकानांपशूनांदेवतासंम्बन्धविधायिनोऽध्यायेनोच्यन्ते।तत्राश्वमेधेएकविंशतियूपाः सन्ति-तत्रमध्यमायूपोसप्तदशपशवोनियोजनीयाः। शतत्रयसंख्याकानांपशूनांमध्येपंचदशपंचदशपशूनेकैकस्मिन्यूपेयुनक्ति।

१२ रोहितोधूम्ररोहितःकर्कन्धुरोहितस्ते

रोहितःसर्वरक्तः। धुम्रवर्णःइत्यादिपशुवर्णनं

१३ शुद्धवालःसर्वशुद्धवालो०

शुभ्रवालःमणिवर्णकेशःइत्यादि -

१४ पृश्निस्तिरश्चीन०

विचित्रवर्णा ।

१५ कृष्णग्रीवाआग्नेयाः

कृष्णग्रीवाःइत्यादिआग्नेयाः

१६ उन्नतऋषभोवामनस्त०

उच्चऋषभःत्रयऐंद्रावैष्णवाः

१७ कृष्णभौमा०

१८ धूम्रान्वसंतायालभते०

१९ अग्नयेऽनिकवतेप्रथमजालभते०

२० धूम्रावभ्रुनिकाशाःपितॄणां०

इत्यादिपशवः

२१ वसंतायकपिंजलानालभते०

अथारण्याःपशवउच्यन्ते. कपिंजलादिस्त्रयोदश

२२ सोमायहंसानालभते०

२३ अग्नयेकुटरूनालभते

२४ सोमायलवानालभते०

२५ भूम्याऽआखुनालभते०

२६ वसुभ्यऋश्यानालभते०

२७ ईशानायपरस्वतआलभते०

२८ प्रजापतयेपुरुषान्हस्तिनालभते०

२९ ऐण्यन्होमण्डूको

३० श्वित्रआदित्यानामुष्ट्रो

३१ खड्गोवैश्वदेवः

एवंषष्ट्यधिकंशतद्वयमारण्याःसर्वेमिलित्वाषट्शतानिनवाधिकानिपशवोभवन्ति. तेष्वारण्याःसर्वेउत्स्रष्टव्यानतुहिंस्याः॥

३२ देवःसवितःप्रसुवः ३० अ०

इतउत्तरंपुरुषमेधःचैत्रशुक्लदशम्यारंभःअत्रयूपैकादशिनिभवति। एकादशाग्निषोमियाःपशवोभवन्ति।

तान्नियुक्तांपुरुषांसहस्त्रशीर्षापुरुषइतिआलंभनंक्रमेण यथादेवतंप्रोक्षणादिपर्यग्निकरणानंतरइदंब्रह्मणेइत्येवंसर्वेषांयथास्वस्वदेवतोद्देशेनत्यागःततःसर्वान्यूपेभ्योविमुच्योत्सृजति। ततःएकादशिनैःपशुभिःसंज्ञपनादिप्रधानयागांतंकृत्वा।सन्यसेत्॥ अथवागृहंव्रजेत्। महीधर

३३ वहंवपाजातवेदः ३५ अ० २० मंत्र

मध्यमाष्टकागोपशुनाकार्यातस्याधेनोर्वपांजुहोति-वहंवपामंत्रेण.

अर्थ—उपर लखेला पेहेला मंत्रमा पशुने डाभनी दोरीथी थांभले बांधवो, अने पछी शामीत्रने सोंपवो. पशु छे ते देवनुं भक्षण छे एम कहेलुंछे. बीजा मंत्रमा सदरहु मुजब जतावेलुंछे. त्रीजा मंत्रमा अग्नी षोमदेवताने पशु बहु भावे छे एम लखेलु छे. चोथा मंत्रमां पशु उपर पाणी छांटी प्रोक्षण करवानुं लख्युंछे—पांचमा मंत्रमा पशु मरी गया पछी यज्ञ करनारनी स्त्रीने हाथे मार्जन करवानु लखेलुं छे. छठा मंत्रमा पशुनी वपा एटले काळजु कहाडी ते उपर घी चोपडी तेनो होम करवानुं लख्युं छे. सातमा मंत्रमां अश्वमेध यज्ञमां वध थयेलो घोडा तथा राणी बंनेने वस्त्र ओराडी ढाकवानुं लख्युं छे. आठ, नव, दशमा मंत्रमा राणी तथा गोरनी वचे मश्करी तरीके भाषण लख्युं छे. ते तथा तातमा मंत्रमां जे प्रकार लख्यो छे. ते बहु बीभीत्छ छे तेनो अर्थ लखवा योग्य नथी माटे जेने मीकोच्छा होय तेणे वेदना मंत्र तथा ते उपरनुं भाष्य कहाडीने जोवुं. अगीयारमाथी, ते एकतरीसमा मंत्र सुधी, (६०९) छसो नव अश्वमेधमा बीजा पशु जोइए. तेना नाम लख्या छे तेमा अनेक रंगना बकरां अने बळद. तरेह तरेहना पक्षी तथा बीजा नाहाना जीव, उंदरडा तथा देडका, उंट, तथा गेंडा ईत्यादी सर्व जातना पशुनो वध करवानुं लख्युं छे. ते मैकी—२०७—जगडाना जीव छे ते छोडी देवा, एवुं भाष्यकार महीधर पंडीते लख्युं छे. बत्रीसमा मंत्रमा नरमेध यज्ञ शुध १० थी करवानो लख्यो छे. तेमा पशु बांधवानां अगीआर थांभलो रोपवा ने तेणे अगीआर बकरां तथां बसो माणस बांधीने तेनुं प्रोक्षण, त्याग, नैविद्दन करीने जे माणस बांधा होय तेमने छोडी देवा, अने अगीआर बकरा जे रह्या तेमनो वध करीने तेनो होम करवो एम एज भाष्यकार लखे छे. तेत्रीसमा मंत्रमा माणसने बांधवानी तत्ते गा-

पनी वपा एटले काळजानो होम करवानुं लख्युं छे. आ अनुष्ठाननु नाम पित्रमेधः—

जे ठेकाणे पशु शब्द आवे छे ते ठेकाणे तेनो अर्थ बकरो करवो. एवुं यज्ञेश्वर शास्त्रीए आर्यविद्या सुधाकर ग्रंथमां बताव्युं छेः—

यत्रपशुसामान्योक्तिस्तत्र
छागःपशुर्ग्राह्योभवति पृ० ८९.

यज्ञनुं पुण्य बहु मोटुं छे एवुं बधा शास्त्र तथा पुराणमां वर्णन कर्युं छे. जे ठेकाणे कंइ पण पुण्य कर्मनुं वर्णन करवुं होय ते ठेकाणे यज्ञनी तुलना लखी छे. जेमके अनाथप्रेत संस्कार करे तेने अनेक यज्ञनुं फळ मळेछे. सो यज्ञ करे तेने इंद्रनुं राज्य मळे छे. तेथी इंद्रनुं नाम शतक्रतु पडयुं छे. यज्ञ करता अश्वमेधनुं फळ बहु मोटुं छे. गंगानी जात्राए जाय तेने डगले डगले अश्वमेधनुं पुण्य लख्युं छे.

पदेपदेयज्ञफलमनुपूर्व्यालभंतिते । पाराशर ३-४०.

पूर्वे भरतराजा थइ गया तेना नामथी आ देशने भरतखंड कहे छे. तेणे पचाश ने पांच अश्वमेध यज्ञ कर्या एवी वात, ऋगवेदना ऐतरेय ब्राह्मणमां लखि छेः—

भरतोदौष्यंतिर्यमनामनुगंगायावृत्रघ्नेऽबध्नात्पंचपचाशतंहयान् । महाकर्मभरतस्यनपुर्वेनापरेजनाः।-पं०२३खं८

शिवाय रामचंद्रजीए ब्रह्महत्यानुं पाप कहाडवा सारू अश्वमेध कर्यो तेज प्रमाणे पान्डवोए अश्वमेध यज्ञ कर्यो तेनो इतिहास रामाश्वमेध तथा जैमिनी अश्वमेध ए बेमां लख्यो छे. आवी कथाओ अनेक ठेकाणे पुराणोमां मालम पडे छेः—

यजुर्वेदनुं शतपत ब्राह्मण छे अने ते ऊपर कात्यायनी सुत्र छे ए बे ग्रंथ बहु मोटा माहाभारत जेवा छे. तेमा तमाम यज्ञक्रीया बतावेली छे. तेनुं तारण कहाडता पार आवे एवो नथी तेमांना एक बे वाक्य नीचे लख्या छेः—

१ पंचचित्तयःस्तद्यपशुशीर्षाण्युपधाय
२ श्चितिःश्चिनोत्येतैरेवतछिर्षभिरेतानिकुसिन्धानिसंदधाति । ६ अध्याय १-४-११
३ यदैकादशिनान्पशूनालभते-१३ अ १-१४-२
४ शतमालभते- १३ अ० १-१४-४
५ गव्याउत्तमेहन्नालभत १३ अ २-७-३

एज प्रमाणे सामवेदनी संहिता अने तेने जोडेला आठ ब्राह्मणमां यज्ञ क्रीया लखेली छे. माटे ए वीशे वशेष लखवानी जरुर नथीः—

चोथो वेद अथर्वण अने तेने जोडेलुं ब्राह्मण गोपथ ब्राह्मण आ बे ग्रंथमां एवोज वीषय छे. अने घणुं करीने एक वेदना मंत्र बीजा वेदमा ए मुजब सेळभेळ थयेलुं छे; ते बतावावाने वास्ते गोपथ ब्राह्मणमांथी बे वाक्य नीचे लख्या छे.—

१ अथातःसवनीयस्यपशोर्विभागंवक्ष्यामः
३प्र०१८खडं.
२ अथातोयज्ञक्रमाःअग्न्याधियमग्नाधीयात्पूर्णाहुति। पूर्णाहुतेरग्निहोत्रमग्निहोत्राद्दर्शपौर्णमासौ ।दर्शपौर्ण

मासाभ्यामाग्रयणं। आग्रयणाश्चातुर्मास्यानि। चातुरमासेभ्य:पशुबन्ध:। पशुबधाग्निष्टोमौ। अग्निष्टोमाद्राजसूयो। राजसूयाद्वाजपेय। वाजपेयादश्वमेध:। अश्वमेधात्पुरुषमेध:। पुरुषमेधात्सर्वमेध:। सर्वमेधादक्षिणावन्तो। दक्षिणावद्भ्योदक्षिणाअदक्षिणा। सहस्रदक्षिणेमत्यातिष्ठंस्तेवाएतेयज्ञक्रम:॥

५ प्र० ७ खं०

उपर लख्या प्रमाणे यज्ञनो वीस्तार बतावेलो छे ते घणुंकरीने एकना एक प्रमाणे चारे वेदमा छे शाखानो भेद कींवा वेदना भेदथी कर्ममा थोडो फरक परचुरण बाबतमां पडे छे ते एवो के एक कहेछे के घीनुं वासण जमणी बाजु मुकवुं ने बीजा कहेछे के घीनुं वासण डाभी बाजु मुकवुं ने एक कहेछे के उभो रहीने मंत्र भणवो ने बीजो कहे छे के बेसीने भणवुं आवी परचुरण बाबतोमां ब्राह्मणोनो घणो आग्रह असलथी पडेलो छे माटे एक शाखाना ब्राह्मण जेने चरण केहेछे ते बीजी शाखानुं कर्म करता नथी असलमां शाखा एक एक प्रदेशमा हती पण दुषकाल, अवर्षण, राजक्रांती, परचक्र, युद्ध, दंगा, अने परदेशमां पेट भरवाने वास्ते जवानी इछा ईत्यादी कारणोनी एक एक ठेकाणे अनेक शाखाना लोक भेगा थई गयाछे ब्राह्मण सीवाय बीजा कोईने वेद भणवानो अधीकार नथी.

स्त्रीशूद्रद्विजबधूनांत्रयीनश्रुतिगोचर:॥ भागवत

मूळ वेदना मंत्र अनेक ऋषी पासे हता ते बधान्यासमीए भे-

गा करीने चार वेदनी सन्हीता बांधी अने पोताना जे शीष्य हता ते चार जणाने अकेको वेंचो आपी तेना नाम.

१ पैल	वैशंपायन	जैमिनि	सुमतु
२ ऋगवेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्ववेद
३ ऐतरेय	तैतिर्य	ताडय	गोपथब्राह्मण
८ भेद	८६ भेद	१००० भेद	९ भेद

ते एक एक आचार्यना पेटामा अनेक भेद उपर बताव्या प्रमाणे थया तेनी संख्या प्राचीन ग्रथमा लखी छे, ते प्रमाणे हाल जोवामा आवता नथी पण हाल जे शाखा मळे छे तेना नाम

१ ऋग्वेद	१ सांख्यायनि	२ शाकल	३ बाष्कल
	४ आश्वलायनि	५ माडुक.	
२ यजुर्वेद कृष्ण तैतीर्य	१ आपस्तंब ४ सत्याषाढ	२ हिरण्यकेशी ५ बौधायनी	३ मैत्राणी
२ यजुर्वेद शुक्ल वाजसनेयी	१ कण्व	२ माध्यंदिनी	३ कात्यायनी
३ सामवेद	१ कौथुमी	२ राणायणी	३ गोभिल
४ अथर्ववेद	१ पिपलाद	२ शौनकी	

एक एक शाखाना जे आचार्य थई गया तेमने पोतानी शाखाने वास्ते एक एक सूत्र बांध्युछे ते प्रमाणे ते शाखाना ब्राह्मण कर्म करे छे तेथी हरेक ब्राह्मणने नाम थाय छे तेनी तपसील.

१ नाम	२ उपनाम	३ गोत्र	४ प्रवर	५ सूत्र	६ वेद	७ शाखा
दामोदर	पंड्या	कपि	आंगीरस आमहीयव ऊरुक्षयस	साख्यायन	ऋग्	सांख्यायन

८ मत   ९ कुलदेव १० ज्ञाति,
स्मार्त   शिव   नागर

आ दश सीवाय न्याती भेदथी ब्राह्मण वर्णना पेटामा ज्ञातीनुं नाम, नागर, अवदीच, चीतपावन, गौड, द्राविड, इत्यादि थायछे.

वैशंमपायन ऋषी अने याज्ञवल्क्य ऋषी लढ्या तेथी यजुर्वेदमा शुक्ल यजुर्वेद उत्पन्न थयो तेमा १७ शाखाओ छे तेमनु नाम वाजसनीय पड्युं छे तेमांना पंदरनुं ठेकाणु नथी अने बे हाल चाले छे तेनुं नाम कण्व अने माध्यंदिनी.

वेदना ग्रंथ हेठळ लख्या प्रमाणे छे.

१. संहिता. २ ब्राह्मण. ३ अरण. ४ उपनिषद. ५ परिशिष्ट

एमां चार अने पाच प्रकारना ग्रंथमां भेळ बहु थई छे जेने वेदनो आधार जोइतो हतो तेणे आ ग्रंथ नवा बनाव्या छे एनो दाखलो अलोपनिषद. ए अकबर बादशाहाए करावेलुं छे.

ऋग्वेदसंहिता

अ० २ अ० ३ वर्ग ७।८।९।१।०।१।१।१-२।१३

अश्वमेध।दीर्घतमाऔचथ्यः। त्रिष्टुप्।
एषछागपुरोअश्वेनवाजिनापूष्णोभागोनीयतेविश्वदेव्यः॥
यदश्वस्यक्रविषोमक्षिकाशयद्वास्वरौस्वधितौरिप्तम
स्ति॥ यद्धस्तयोःशमितुर्यन्नखेषुसर्वाताते अपिदेवेष्वस्तु॥
यदूवध्यमुदरस्यापवातियआमस्यक्रविषोगंधोअस्ति॥सु
कृतातछमितारःकृण्वंतुतमेधंशतपाकंपचंत॥

चतुःस्त्रिंशद्वाजिनोदेवबंधोर्वंक्रीरश्वस्यस्वाधितिःसमेति ॥अछिद्रागात्रावयुनाकृणोतपरुष्यरुरनुंघुष्याविशस्त॥
सुगव्यंनोवाजीस्वश्व्यंपुंसःपुत्रांउतविश्वापुषंरायिं ॥
अनागास्त्वंनोअदितिःकृणोतुक्षत्रंनोअश्वोवनतांहविष्मान्॥
अजःपुरोनीयतेनाभिरस्यानुपश्चात्कवयोयंतिरेभाः॥
उपप्रागात्परमंयत्सधस्थमर्वांअछापितरंमातरंच ॥
अद्यादेवाञ्जुष्टतमोहिगम्याअथाशास्तेदाशुषेवार्याणि ॥

अर्थ—घोडाना आगळ आ बकरो पुषा. अने बीजा देवोने वास्ते लाव्योछे. आ घोडानुं जे कंइ मांस माखीओ खाशे अने जे कंइ छराने वळगी रेहेशे अने जे कंइ अश्वने मारनारना नखमां रेहेशे ते अश्वने साथे स्वर्गमां जशे.

आ घोडाना पेटमाथी जे कंइ घास काचु नीकळशे, अने जे कंइ काचु मास ते स्वच्छ करीने सारी पेठे राधवुं घोडाना अंगमां चोत्रीस पासळीओछे तेमा छरो युक्तिथी फेरवीने कोइ भाग न बगडता अंग जूदा जूदा करहाडवा आ अश्वमेध कर्याथी अमने घणी दोलत मळशे अने गायो अने घोडा अने आरोग्य अने संतान अमने प्राप्त थशे. घोडाना आगळ बकरो बांधवो अने तेने पछवाडे मत्र भणनारा ब्राह्मणो उभा रेहेवा. आ घोडाने हण्याथी तेना ज्याहा मा अने बापछे एवो जे देवोनुं स्थानक त्या ए घोडो जशे अने होम करनारने अनेक लाभ आपशे.

ब्रह्मोवधंवेदनिंदाकौटसाक्ष्यंसुहृद्वधः॥गार्हितानाद्य

योजग्धिः सुरापानसमानषट् ॥ पद्मपुराण

अर्थ—ब्रह्म हत्या, वेद निंदा, खोटी साक्ष, मित्र वध; सुरापान असत्य ए छे अधर्म समान छे.

वेदप्रणिहितोधर्मोह्यधर्मःस्तद्विपर्यय॥वेदोनारायणः साक्षात्इतिमेनिश्चितामतिः ॥ व्यास

नकेचिद्वेदकर्तारोवेदस्मर्ताचतुर्मुखः॥ तथैवधर्मस्मरतिमनुःकल्पांतरेऽवापि ॥

अर्थ—वेदमां जे लख्युं छे एनुं नाम धर्म तेना विरुद्ध चाले तेनुं नाम अधर्म. वेद ए साक्षात् नारायण छे ए निःसंशय जाणवुं एवुं मारु मतछे एवुं व्यासजी कहे छे.

वेद कोईए बनावेलो नथी चतुर्मुख जो ब्रह्मा तेणे पूर्व कल्पमां जे वेद चालतो हतो तेनी सरत राखीने आ कल्पमां प्रकाश कर्यो तार पछी ब्रह्माना जे पुत्र मनु तेमणे तेज धर्म आगळ चलाव्यो.

त्रिधाबद्धोवृषभोरोरवीति मंत्रब्राह्मणकल्पैश्च ॥ वेदतुल्यइतियास्काचार्येणोक्तः

अर्थ—यज्ञ रूपी धर्म मंत्र, ब्राह्मण, अने कल्प, ए त्रण पुस्तकथी थायछे माटे कल्प छे ते वेद तुल्य छे एवुं यास्काचार्ये लख्युं छे.

स्वामिनारायणनि शिक्षापत्रिमा सूत्र प्रमाणे कर्म करवानुं लख्युंछे.

संस्काराश्चान्हिकंश्राद्धंयथाकालंयथाधनं॥स्वस्वगृह्यानुसारेणकर्तव्यंच द्विजन्मभिः ९१

अर्थ —संस्कार अने नित्य कर्म अने श्राद्ध जे काळे प्राप्त थाय ते आपणा वैभव प्रमाणे ब्राह्मण, क्षत्री, वाणीयाए पोत पोतानु गृह्यसूत्र प्रमाणे करवुं गृह्यसूत्र एटले कल्प.

आश्वलायनसूत्र

दरएक शाखानु सुत्रछे तेमा बे भाग होयछे १ श्रौत, २ गृह्य, पैकीश्रौतमा यज्ञ क्रीया लखेली होयछे, अने गृह्यमां ग्रहस्थना धर्म लखेला होयछे. आ ग्रंथ स्मृतिमा गणाय छे पण बीजा ग्रंथ करता सूत्रनी योग्यता मोटी छे सुत्र वेद तुल्य गणाय छे. अनेक शाखाना अनेक सूत्रो छे ते बधायनो वीषय एक रीतनो छे माटे आ ग्रंथमांना एक बेनो तपास करीए प्रथम आश्वलायन शाखानो श्रौत सूत्र लईने तेना वाक्यो हेठळ लख्या छे.

१ दैव्याशमितारआरभध्वं० । ३ अध्याय ३ कं

२ दैवतेनपशुनांनात्वं । ३ अ० ७ कं

३ षाण्मास्यःसांवत्सरोवा ॥ ३ अ ८ कं

सोऽयंनिरूढपशुःषट्सुषट्सुमासेषुकर्तव्यः । संवत्सरे संवत्सरेवा । —नारायणवृत्ति

४ सौत्रामण्यां । ३—९

५ आश्विनसारस्वतैंद्राःपशवःबार्हस्पत्योवाचतुर्थः । ऐंद्रसावित्रवारुणाःपशुपुरोडाशाः ३-९

६ दर्शपौर्णमासाभ्यामिष्टिपशुचातुर्मास्यैरथसोमेन

७ अथसवनीयेनपशुनाचरन्ति ५ अ० ३

८ अग्निष्टोमोऽत्यग्निष्णोमउक्थःषोडशीवाजपेयोऽति

रात्रोऽप्तोर्यामइतिसंस्थाः ६--११

९ आग्नेयैन्द्राग्नैकादशिनाःपशवः उत्तरषड्क ३-२

१० वायव्यपशुः उ ३--२

११ सन्नामश्वंपल्योधून्वंति० उ० ४-८

१२ तस्यविभागंवक्ष्यामः उ० ६-९

अर्थ.

१ पशुने मारो.

२ देवने जूदा जूदा प्रकारना पशु जोइए.

३ छ महीने के वरसे वरसे निरुढ पशु करवो.

४ सैत्रामणिनुं वीधान.

५ आश्वीन—सारस्वत—इंद्र ए त्रणे देवताने पशु आपवा अने बहस्पतीने चोथो पशु आपवो—इंद्र—सवीता तथा वरूण ए देवताओने पण पशु जोइए:—

६ पुनम तथा अमासने दिवसे अने चातुर्मास अनुष्टानमा पशु मारवो:—

७ सवनीं अनुष्टानमां पशु वध करवो.

८ सात यज्ञने संस्था कहेछे.—तेमना नाम.

१ अग्निष्टोम. २ अत्यग्निष्टोम ३ उक्थ.
४ शोडशी ५ वाजपेय. ६ अतीरात्र.

७ अप्तोर्याम.

९ अग्नि तथा इंद्राग्नि आ देवोने अगीयार पशु जोइए

१० वायु देवताने एक पशु जोइए.

११ मरी गएला अश्व तथा यज्ञकरनारनी, स्त्रीए बेनेने वस्त्र नीचे ढाकवा.

१२ वध करेला पशुना कटका करीने यज्ञ करावनार ब्राह्मणोमा शी रीते वहेंचवा तेनो प्रकार.:—

आश्वालायन श्रौत सूत्रना बारे अध्यायछे तेमांना छमा पुर्व क्रतु लख्याछे, अने बीजा छमां उत्तर क्रतु लख्याछे, तेमना नाम.

१ राजसुय	२ गवामयन.
३ गोसव.	४ अश्वमेध.
५ आगिरस क्रतु.	६ साक्रमेध.
७ पंचशारदीय	८ वीश्वजीत.
९ पौंडरीक.	१० भर्त द्वादशाह
११ सवछर सत्र.	१२ माहाव्रत.
१३ रात्रीसत्र.	१४ शतरात्र
१५ सोम.	१६ द्वादश संवत्सर.
१७ सुहस्त्र सवत्सर.	

आ शीवाय चार अध्याय गृह्य सूत्रनाछे, तेमां ग्रहस्तना धर्म लख्याछे गृह्यमा तथा श्रौतमा तफावत एटलोछे के जे ब्राह्मण एक अग्निनो कुन्ड के जेनु नाम स्मर्तामि जे राखेछे तेनु नाम ग्रहस्थ — ए अग्नि लग्नने दिवसे उत्पन्न थायछे, अने जे ग्रहस्थ त्रण अग्नि उत्पन्न करीने अग्निहोत्र लेछे तेने श्रौतामि कहेछे, तेना नाम —

दक्षिणाग्नी गार्हस्पत्य आहवनी।

आवा अग्निहोत्रीने यज्ञ करवानो अधीकार यायछे. ते अग्नीहोत्रीनां कर्म श्रौत सुत्रमां वर्णन करेलाछे. अने ग्रहस्थाश्रमीना धर्म गृह्य सुत्रमां छे. घणांक ग्रहस्थ हाल अग्निउपासना करवासारू राखता नथी पण ते बाबतनुं प्रायश्चित करेछे. त्रणदिवस सुधी जे ग्रहस्थ अग्नि राखे नहीं ते शुद्र थाय छे एम धर्मशास्त्रमां कहेलुं छे. ग्रहस्थाश्रम लग्नथी शरू थायछे. अने लग्न थया पछी प्रजा उत्पन्न थायछे. ते प्रजाने ब्राह्मण करवा सारू सोळ संस्कार लख्याछे. गृह्य सुत्रमा आ संस्कार लखेलाछे. तेमनां नाम.

गर्भादान पुंसवन जात कर्म अन्नप्राशन चूडा उपनयन विवाह अंत्येष्टी० इत्यादि०

असलना वखतमा राजा लोको अग्निहोत्र लेता हता अने राजसूय अश्वमेध वीगरे यज्ञ करता हता. सुत्रने कल्प–धर्मसुत्र–समयचारीक सुत्र–एवा नाम कहेछे. अश्वलायनाचार्यनुं सुत्र केवळ ऋगवेदनो सारछे एम कहेवायछे. तेनो श्रौत भाग बीजो उपर लख्युंछे; अने अग्निहोत्री शीवायना गृहस्थना धर्म गृह्य सुत्रमा केवी रीतना वर्णन करेलाछे ते नीचे लख्युंछे.

१ अथपशुकल्पः १ अ ११–१

२ उत्तरतो अग्नेःशामित्रस्यायतनंकृत्वा । पशुमाप्लाव्य । सपलाशयार्द्रशाखयापश्चादुपस्पृशेत् । त्वाजुष्टउपाकरोमिति । १–११–२

३ व्रीहीयवमतीभिरद्भिःपुरस्तात्प्रोक्षतिअमुष्मैत्वाजु
ष्टंप्रोक्षामि । १-११-३

४ आवृतैवपर्यग्निकृत्वोदश्चंनयन्ति । १-११-५

५ तस्यपुरस्तादुल्मुकंहरन्ति । १-११-६

६ शामित्रएषभवति

७ वपाश्रपणीभ्यांकर्तापशुमन्वारभते । १-११-८

८ पश्चाच्छामित्रस्यप्राक्शिरसंप्रत्यक्शिरसंवोदक्
पादंसंज्ञप्यपुरानाभेस्तृणमतधीयवपामुत्खिद्य ।
१-११-१०

नारायणवृत्ति

शामित्रस्यपश्चिमेदेशेबर्हिरुपस्तृणातिकर्ता । "तंय
त्रनिहनिष्यन्तोभवंतितदध्वर्युर्बर्हिरधस्तादुपास्यति" इति
श्रुतेः ततस्तस्मिन्बर्हिषिप्राक्शिरसंवोदक्पादंपशुंशमय,
तिशमितावपास्थानज्ञात्वातिर्यक्छित्वावपांउद्धरेत् । शा
मित्रेप्रताप्यतांवपांमभिघार्यजुहुयात् ।

अर्थ.

१ गृह्य सूत्रना प्रथमाध्यायमांनी अगीयारमी कंडीकाना प्रथम सु-
त्रमां पशु यागनु वीधान लखेछे।—

२ अग्निना उत्तरमां पशु वध करवानी जगा ठराववी, अने पशुने न्हवराववो, अने खाखरानी लीली डाळीथी तेने स्पर्श करवो अने बोलवुं के तुं देवनुं भक्षछे माटे तने भक्षण योग्य करूं छुं.

३ डागर तथा जव पाणीमा नाखी ते पाणी पशु उपर छाटवुं.

४ बळता डाभ लईने पशुनी प्रदक्षणा करवी.

५ तेज बळता डाभ लईने पशुना आगळ चालवुं—

६ पशुने वध करवाने ठेकाणे लई जवुं:—

७ वपा यागनो मंत्र भणवो:—

८ वध करीने पशुनी नाभीने ठेकाणे वपा होय छे ते ते ठेकाणे छेदीने ते वपा कहाडवी:—

नारायण वृत्तिः—

वध स्थळमां डाभ पाथरवा ने ते उपर पशुने मारवो:— एवी वेद आज्ञाछे माटे ते मुजब करीने पछी पेट छेदन करीने वपा कहाडवी, अने वध स्थळना नजीक अग्नि उपर तपाववी तार पछी ते उपर घी रेडवुं ने तारबाद अग्निमा होम करवो.—

बीजा अध्यायमा छोकरानो अनप्राशन संस्कार लख्यो छे तेना सुत्र नीचे लख्या प्रमाणे.

१ षष्ठेमास्यन्नप्राशनं १अ० १६ कं १ सु०

२ आजमन्नाद्यकामः १-१६-२

३ तैत्तिरंब्रह्मवर्चसकामः १-१६-३

अर्थ.

१ जन्मथी छटा मासमा अन्न प्राशन संस्कार करवो

२ बकरानु मास ए सस्कारमा खवरावीए तो धन धान्यनी वृद्धि करे छे.

३ तीतर पक्षीनु मास खवराववामा आवे तो, ब्राह्मणमा ब्रह्म तेजनी वृद्धि थाय छे.

गृह्य सुत्रना प्रथमाध्यायनी चोवीसमी कंडीकामा मधुपर्क वीधी लख्यो छे तेना सूत्र नीचे लख्या प्रमाणे:-

१ ऋत्विजोवृत्वामधुपर्कमाहरेत् । १-२४-१

२ स्नातकायोपस्थिताय । १-२४-२

३ राज्ञेच । ३

४ आचार्यश्वशुरपितृव्यमातुलानांच ४

५ आचान्तोदकायगांवेदयन्ते २३

६ हतोमेपाप्मापाप्मा मेहत । इतिजपित्वौंकुरुतेति कारयिष्यन् २४

नारायणवृत्ति.

इमंमंत्रंजपित्वाओंमकुरुतेतिब्रुयात्यदिकारयिष्यन्मारयिष्यन्भवतितदाचदाताआलभेत् ।

७ नामांसोमधुपर्कोभवतिभवति २६

नारायणवृत्ति

मधुपर्काङ भोजनंअमांसंनभवतीत्यर्थः पशुकरण पक्षेतन्मांसेनभोजनं । उत्सर्जनपक्षेमांसान्तरेण ।

अर्थ.

१ यज्ञ करवा सारू ऋत्विज नीमती वखत तेने मधुपर्क आपवो जोइये तेज प्रमाणे लग्न थवा वास्ते जे वर घरमां आवे अने राजा घरमां आवे अथवा.

४ आचार्य एटले गुरु घरमा आवे अथवा ससरो घरमां आवे अगर काको अगर मामो आवे तो तेमने मधुपर्क आपवो जोइये.

५ मोहो साफ करवा सारू पाणी आपीने तेमना मोह आगळ गाय मुकवी.

६ सुत्रमा लखेला मंत्र भणीने ओम् कहीने घरना मालेके गायनो वध करवो.

७ मधुपर्कने अंगे जे जमणवार थायछे ते मास वीना थती नथी माटे पशुनो वध पुर्वक मधुपर्क कर्यो होय ते तेज पशुनु मांस जमणवारमा काममां आवे अने पशुने छोडी दीधो होय तो बीजी रीते मास मेळवीने भोजन कराववुं

द्वतीया अध्यायमानी चोथी कंडीकामा अष्टका वीधान लख्यूं छे तेमा पशुनो वध करवानुं लखेलुंछे. तेनु सुत्र नीचे मुजब.

पशुकल्पेनपशुंसंज्ञप्यप्रोक्षणोपाकरणवर्जंवपामुत्खिद्य जुहुयात् । २-४-१३

अर्थ.

पाछला अध्यायमां पशु वधनु वीधान बतावेलुं छे. तेज प्रमाणे पशु एटले बकरो मारी तेनुं काळजुं काहाडी तेनो होम करवो.

वळी बीजा अध्यायनी पाचमी कंडीकामाना पेहेला सुत्रमा अन्वष्टका अनुष्टान लख्युंछे तेमां नीचे प्रमाणे लखेलुंछे.

१ अपरेद्युरन्वष्टक्यं   २-५-१

२ तस्यैवमांसस्यप्रकल्प्य २-५-२

नारायणवृत्ति.

अपरस्मिन्नहनिनवम्यांमन्वष्टक्यंनामकर्मकार्यमित्यर्थः।
योअष्टम्यांपशुःकृतःतस्यैवमांसंब्राह्मणभोजनार्थंप्रक
ल्प्यसकृत्येत्यर्थः।

अर्थ

१ नोमने दिवसे अन्वष्टका कर्म करवुं

२ जे पशुनो वध कर्यो होय तेनुं मास ब्राह्मणने जमाडवुं.

वळी चोथा अध्यायनी प्रथम कंडीकामां अग्निहोत्री ब्राह्मण मरे तो तेने बाळवानो वीधी लख्यो छे, ते सुत्र नीचे मुजब.

१ आहिताग्निश्चेदुपतपेत्प्राच्यामुदिच्यामपराजितायां
वादिश्युदवस्येत्-अ-१-१

२ अगदःसोमेनपशुनेष्टेष्ट्वावस्येत् ॥४-१-४

३ अनिष्ट्वा   ४-१-५

४ पिठचक्रेणगोयुक्तेनेत्येके ४-२-३

५ अनुस्तरणीं   ४

६ गां   ५

७ अजांवैकवर्णाम्   ६

८ कृष्णामेके ७

९ सव्येबाहुवक्ष्वानुसंङाळयन्ति. ८

१० अनुस्तरण्यांवपामुत्खिद्यशिरोमुखंप्रछादयेत् ४-३-१९

११ वृकाउधृत्यपाण्यारादध्यात् २०

१२ हृदयेहृदयं २१

१३ सर्वांयथाडंविनिक्षिप्यचर्मणाप्रछाद्ये २४

१४ तांउत्थापयेद्देवरः। उदीर्ष्वनार्यभि० ४-२-१८

१५ सएवंविदादह्यमानःसहैवधूमेनस्वर्गलोकंमेतीतिहवि ज्ञायते ४-४-७

अर्थ.

१ श्रोत्री ब्राह्मण आजारी पडे तो तेने अग्नि सहीत गाम बहार कोई ठेकाणे लई जई राखवो:—

२ जो सारो थाय तो एक पशुनी इष्टि करीने घेर आणवो:—

३ कदी मरी जाय तो:—

४ गाडामां घाली स्मशानमां लई जवो:—

५ अनुस्तरणी एटले एक जनावर साथे लेवुं:—

६ ए जनावर गाय जोइयेः—

७ अथवा एक रंगनी बकरी जोईयेः—

८ अने ते बकरी काळी जोईयेः—

९ ते जनावरने गळे दोरी बाधी मडदाने जमणे हाथे ते दोरीनो बीजो छेडो बाधवो ने तेने मडदानी साथे चलाववुं —

१० अनुस्तरणीनो वध करी तेनी वपा कहाडी ते वतो प्रेतनु माथु ढाकवुं —

११ तेना यकृत कहाडी प्रेतना हाथमां मुकवु —

१२ हृदय ते प्रेतना हृदय उपरज मुकवुं —

१३ ए मुजब सर्व अंग प्रेतना अंग उपर मुकी अनुस्तरणीना चामडा वते ते प्रेतनु बधु अंग ढाकी देवुं —

१४ प्रेतनी पत्नीने पुनर्विवाह करवानो उपदेश करी खश्रोडवी —

१५ आ प्रमाणे जेनु प्रेत बाळ्वामा आवेछे. ते माणस स्वर्गमा जायछे.

१६ गृह्य सुत्रना चोथा अध्यायनी नवमी कडीकामा शुलगवनामक यज्ञ लख्योछे तेना सुत्रो नीचे लख्या प्रमाणेछे।

१ अथशूलगवः ।४-९-१

२ शरदिवसन्तेवार्द्रया २

३ श्रेष्ठंस्वस्ययूथस्य ३

४ अकुष्टिपृपत् ४

५ कल्माषमित्येके ५

६ कामंकृष्णमालोहवांश्चेत् ६

७ व्रीहियवमतीभिरद्भिराभिषेच्य ७

८ शिरस्तआभसत्त ८

९ रुद्रायमहादेवायजुष्टोवर्धस्वेति ९

१० प्रोक्षणादिसमानंपशुनाविशेषान्वक्ष्यामः। १५

११ पात्र्यापलाशेनवावपांजुहुयात्इतिहविज्ञायते १६

१२ हरायमृडायशर्वायशिवायभवायमहादेवायोग्राय
भीमायपशुपतयेरुद्रायशंकरायेशानायस्वाहे
ति. १७

१३ सएषशूलगवोधन्योलोक्यःपुण्यःपुत्र्यःपशव्य
आयुष्योयशस्यः ३६

१४ इष्ट्वान्यमुत्सृजेत् ३७

अर्थ —

१ शुलगव अनुष्टान ए प्रमाणे करवुं —

२ शरदऋतु एटले आसो तथा कारतक तथा वसतऋतु एटले चैतर तथा वैशाक मासोमा अथवा जे दिवशे आर्द्रानक्षत्र होय ते दिवशे शुलगव यज्ञ करवो —

३ जोरावर बळवान आखलो होय ते लेवो —

४ ते आखलो रोगी होवो नही जोइये —

५ वळी ते आखलो काबरा रंगनो जोइये —

६ काळा जांबु रंगनो होय तो चाले —

७ डांगेर तथा जवनुं पाणी करीने ते वते आखला उपर अभीशेक करवो —

८ माथाथी ते पुछडा सुधी —

९ माहादेवने गृहण करवा योग्य थाव आ मंत्र भणवो —

१० बीजा,पशुनुं प्रोक्षण तथा वध बीजे ठेकाणे कहेलुं छे तेज मुजब करवुं.—

११ खाखराना लाकडाना वासणमा तेनी वपा एटले काळजु मुकी तेनो होम करवो:—

१२ होम करवो ते शर्वना चार नाम देईने करवो.—

१३ ए प्रमाणे शुलगव नामनो यज्ञ करे तेने धान्य-कीर्ति-पुण्य-पुत्र-पशु समृद्धि-आयुष्य वृद्धि-तथा यश प्राप्त थाय छे.—

१४ सदरहु प्रमाणे यज्ञ करीने फरीथी यज्ञ करवा वास्ते बीजो आखलो नीमीने छोडी देवो.—

सदरहु प्रमाणे ऋगवेदी आश्वलायन ब्राह्मणनुं धर्म सूत्रनो अर्थ उपर लख्यो छे. पुराणमा बहु ठेकाणे ऋषी राजा वीगेरे आव्याथी मधुपर्क सहीत पुजा करीने सत्कार कर्यो एवा दाखला मळी आवे छ. तेथी ते वेळा मधुपर्कनी रीत बहु हती एम मालुम पडे छे. केटलाएक ब्राह्मण आपस्तंब शाखाना केहेवायछे. तैलंग अने माहाराष्टदेशमा ए शाखाना ब्राह्मणो घणा छे तेमनु आपस्तंबीय धर्म सुत्रनामक शास्त्र छे ते उपर हरदत्त वृत्ति करीने टीका छे, ते सुत्र हाल मुंबईमा सरकार तरफथी छपाई बाहार पडेलुं छे तेमाथी थोडाक सुत्रो नीचे दाखल कर्या छे.

प्रश्न पटल-सू०

१ धेन्वनडुहोर्भक्ष्यम् १-५-३०

२ बयाकभोज्यमितिहिब्राह्मणम् २८

३ मेध्यमानडुहमितिवाजसनेयकम् ३१

४ गोमधुपर्कार्होवेदाध्यायः २-४-१

५ आचार्यऋत्विक्स्नातकोराजावाधर्मयुक्तः। २-४६

६ आचार्यायर्त्विजेश्वशुरायराज्ञइतिपरिसंव
त्सराटुपतिष्ठद्भ्योगोर्मधुपर्कश्च। २-४-७

७ धर्मज्ञसमयःप्रमाणंवेदाश्च १-१-२

अर्थ—

१ गाय तथा बळद भक्षण करवा योग्य छे:—

२ पक्षी भक्षणने लायक छे एम ब्राह्मण ग्रंथमा कह्युं छे:—

३ बळद यज्ञ पशु छे एम वाजसनीय कहे छे—

४ गायनो वध करीने मधुपर्क करवो एवी वेदाज्ञा छे:—

५ आचार्य-ऋत्विज-वर-तथा राजा एमने मधुपर्क आपवो जोइये:—

६ ससरो-इत्यादी एकेक वरसने अंतरे घेर आवे तो ते मधुपर्क करवा योग्य छे—

७ धर्म जाणवानी जेनी इच्छा होय तेणे वेदनुं प्रमाण राखवुं—

कात्यायनकल्पसूत्र

मधुपर्क

पडर्घ्याभवंति।आचर्यऋत्विग्वैवाह्योराजाप्रियस्नातक इति।। गौरितित्रिःप्राह ।। आलभेत्

अन्नप्रशान

भारद्वाजमांसेनवाक्यंसारिकामछकपिंजलमांसेनान्ना .

द्यकामस्यमत्स्यैर्जवनकामस्यकृकरवावाऽआयुःकामस्य।

शूलगवःस्वर्गपशव्यः

रौद्रंपशुमालभेत्

नवकंडिकाश्राद्धसूत्र

अथतृप्तिःछागोमेषानालभ्यनस्वयंमृतानाहृत्यपचेन्मांस
द्वयंतुमत्स्यैर्मासत्रयंहारिणेनचतुरःऔरभ्रेणपंचशाकु
नेनषट्छागेनसप्तकौर्मेणाष्टौवाराहेणनवमेषमांसेनदशमा
हिषेणैकादशापार्षतेनसंवत्सरंतुवाध्रीनमांसेनद्वादशवर्षाणि
खड्गमांसंकालशाकंलोहछागमासंमधुमहाशल्कोअक्ष
यतृप्तिः॥

अर्थ—माध्यंधिनी शाखाना जे ब्राह्मण छे ते कात्यायन सूत्रनो उपयोग करेछे तेमा मधुपर्क, अन्नप्राशन, शुलगव,श्राद्ध, ए चारे अनुष्टानमा हिंसानु प्रतिपादन कर्यु छे ते आश्वलायन सुत्र प्रमाणे छे माटे तपशीलवार विस्तार कर्यो नथी जेने विस्तार जाणवानी इछा हशे ते उपर लखेला सस्कृत वाक्यो वाचे तो तेना ध्यानमा आवशे

ब्राह्मणोनी जेटली शाखाओ छे एटलां सुत्रछे ते बधा तपासता पार आवे तेवो नथी माटे धर्म सुत्रना ग्रथ मुकी स्मृतियोनो तपास करीये स्मृति ग्रथ एकदर पचास साठ छे ते दरेक ऋषिना नामथी ओळखाय छे तेना नाम

१ मनु २ याज्ञवल्क्य ३ विष्णु ४ हारित ५ उशना

६ अंगिरा ७ यम ८ आपस्तंब ९ संवर्त १० कात्यायन ११ बृहस्पति १२ व्यास १३ शंखलिखित १४ दक्ष १५ गौतम १६ शातातप १७ वसिष्ठ इत्यादि.

आ उपर बताव्या ते तथा बीजा घणा छे ए सर्व ग्रंथोने धर्म शास्त्र कहेवाय छे तेमां मनु तथा याज्ञवल्क्य ए बे श्रेष्ट गणाय छे अने ए बे जणना बनावेला ग्रंथ पण मोटा छे, अने तेमना ग्रंथना आचार—व्यवहार—तथा प्रायश्चीत एवी रीतना त्रण भाग करेला छे.मनुस्मृती उपर कुलुकभटनी टीका छे ते प्रसीद्ध छे ते शिवाय मेधातीथी वीगरेनी टीकाओ छे. मनुनु वचन प्रमाण छे एम वेदमा पण कहेलुं छे. याज्ञवल्क्य संहीता उपर मीताक्षरा नामनी टिका छे ते वीज्ञानेश्वर नामनो पंडीत थइ गयो छे तेणे करेलीछे. ए बे ग्रंथमाथी प्रथम स्वायंभु मनुनुं के जे ब्रह्म देवनो छोकरो हतो एवुं ते पोतानी स्मृतीमां लखे छे तेनुं धर्म शास्त्र तपासता नीचे लख्या प्रमाणे वचनो मळी आवे छेः—आ ग्रंथनो गुजराती तरजुमो जव्हेरीलाल उमीयाशंकर याज्ञीके प्रसिद्ध कर्यो छे तेना आधार साथे अर्थ लखवामा आवशेः—

मनुस्मृति

		अ	श्लो
१	इदंशास्त्रंतुकृत्वासौमामेवस्वयमादितः	१	५८
२	ब्राह्मणोजायमानोहिपृथिव्यामधिजायते, ईश्वरःसर्वभुतानांधर्मकोशस्यगुप्तये	१	९९

३ सर्वस्वंब्राह्मणस्येदंयत्किंचिज्जगतीगतं
श्रैष्ठ्येनाभिजनेनेदंसर्वंवैब्राह्मणोर्हति १ १००

४ वेदाभ्यासोहिविप्राणांतपःपरमिहोच्यते. २-१६६

५ श्रुतिस्मृत्युदितंधर्ममनुतिष्ठतिमानवः
इहकीर्तिमवाप्नोतिप्रेत्यचानुत्तमंसुखं २-९

६ धर्मंजिज्ञासमानानांप्रमाणंपरमंश्रुतिः २-१३

७ अग्निवायुरविभ्यस्तुत्रयंब्रह्मसनातनं ।
दुदोहयज्ञसिद्ध्यर्थमृग्यजुःसामलक्षणं ॥ १-२३

८ तिलैर्व्रीहियवैर्माषैरद्भिर्मूलफलेनवा
दत्तेनमासंतृप्यंतिविधिवत्पितरोनृणाम् ३-२६७

९ द्वौमासौमत्स्यमांसेनत्रीन्मासान्हारिणेनतु ३-२६८

१० षण्मासंछागमांसेनपार्षतेनचसप्तवै ३-२६९

११ दशमासांस्तुतृप्यन्तिवराहमहिषामिषैः
शशकूर्मयोस्तुमांसेनमासानेकादशैवतु ३-२७०

१२ वार्ध्रीणसस्यमांसेनतृप्तिर्द्वादशवार्षिकी ३-२७१

१३ कालशाकंमहाशल्काःखड्गलोहामिषंमधु ॥
आनंत्यायैवकल्प्यंन्तेमुन्यन्नानिचसर्वशः ३-२७२

१४ प्रोक्षितंभक्षयेन्मांसंब्राह्मणानांचकाम्यया ।

यथाविधिनियुक्तस्तुप्राणानामेवचात्ययी। ५-२७

१५ प्राणस्यान्नमिदंसर्वंप्रजापतिरकल्पयत् ॥
स्थावरंजंगमंश्चैवंसर्वंप्राणस्यभोजनं ५-२८

१६ वभुवुर्हिपुरोडाशाभक्ष्याणांमृगपक्षिणां।
पुराणेष्वपियज्ञेपुब्रह्मक्षत्रसवेपुच ॥ ६-२३

१७ देवान्पितृंश्चार्चयित्वाखादंमांसंनदुष्यति ।६-३२

१८ यज्ञार्थंपशवःसृष्टास्वयमेवस्वयंभुवा ॥
यज्ञस्यभूत्यैसर्वस्यतस्माद्यज्ञेवधोवधः ५-३९

१९ औषध्यःपशवोवृक्षास्तिर्यःश्चपक्षिणःस्तथा ॥
यज्ञार्थंनिधनंप्राप्ताःप्राप्नुवंत्युसृतिःपुनः ५-४०

२० मधुपर्केचयज्ञेचपितृदैवतकर्मणी
अत्रैवपशवोहिंस्यानान्यत्रेत्यब्रवीन्मनुः५-४१

२१ एष्वर्थेपुपशून्हिंसन्वेदतत्वार्थविद्द्विजः॥
आत्मानश्चपशुश्चैवगमयत्युत्तमांगतिम् ५-४२

२२ वृथापशुघ्नःप्राप्नोतिप्रेत्यजन्मनिजन्मनि। ५-३८

२३ नावेदविहितांहिंसामापद्यपिसमाचरेत् ५-४३

२४ यावेदविहिताहिंसानियतास्मिन्चराचरे॥
अहिंसामेवतांविद्याद्वेदाद्धर्मोहिनिर्बभौ ॥५-४४

२५ पाठीनरोहितावाद्यौनियुक्तौहव्यकव्ययोः ५-१६

२६ नकृत्वाप्राणिनांहिंसामांसमुत्पद्यतेक्वाचित् ।
नचप्राणिवधःस्वर्ग्यतस्मान्मांसविवर्जयेत् ५-४८

२७ नियुक्तस्तुयथान्यायंयोमांसंनातिमानवः॥
सप्रेत्यपशुतांयातिसंभवानेकविंशतीम् ५-३५

२८ श्वमांसमिछन्नर्तोत्तुधर्माधर्मविचक्षणः॥
प्राणानांपरिरक्षार्थवामदेवोनलिप्तवान् १०-१०६

२९ क्षुधार्तश्चात्तुमभ्यागाद्विश्वामित्रःश्वजाघनीम् ॥
चाण्डालहस्तादादायधर्माधर्मविचक्षणः॥१०-१०८

अर्थ.

१ आ शास्त्र रचीने ब्रह्माये मने वीधी पुर्वक भणाव्युं:—

२ ब्राह्मण जन्मे छे त्यारथीज ते पृथ्वी उपर श्रेष्ट गणाय छे, अने सर्व प्राणीनो उपरी छे. धर्म रुपी भंडारनुं रक्षण करवानुं काम एने सोंपेलुं छे.—

३ जे कोई वस्तु संसारमा छे ते सर्व ब्राह्मणनी पोतानीज होय एम छे. केमके ए प्रथम ब्रह्माना मुखथी उत्पन्न थयेलो छे. अने सर्वथी श्रेष्ट छे. तेथी सर्व वस्तुओनो स्वामी ब्राह्मण थई सके छे.—

४ वेदाभ्यास छे ते ब्राह्मणनु परम तप कहेलुं छे.—

५ श्रुति तथा स्मृतिमा कहेला धर्म प्रमाणे चालनारा मनुष्यो आ लोकनी कीर्तिने तथा परलोकना उत्तम सुखने पामे छे —

६ धर्म जाणवानी इच्छा राखनाराओनुं परम प्रमाण श्रुति छेः—

७ अग्नि-वायु-तथा सुर्यमांथी अनुक्रमे ऋग्वेद यजुर्वेद-अने सामवेद ए त्रणे वेद यज्ञ सीद्धीने सारु दोही कहाड्या होय तेवी रीते उत्पंन कर्याः—

८ तल-डांगेर-जव-अडद अथवा मूळ-फुल एओमांथी कोई एक वस्तु शास्त्रनी रीते आप्याथी एक मास सुधी पित्रियो तृप्त थाय छेः—

९ माछलाना मासथी बेमास तृप्त रहेछे. अने हरणना मासथी त्रण मास रहेछेः—

१० वाछडाना मांसथी छमास सुधी तृप्त रहेछे. अने चीत्र मृगना मांसथी सातमास सुधी तृप्त रहेछेः—

११ भुंड तथा भेंशना मासथी दशमास सुधी तृप्त रहेछे. अने ससला तथा काचबाना मांसथी अगीयारमास सुधी पित्रि तृप्त रहेछेः-

१२ लाबा कानवाळा धोळा बकराना मासथी बार वर्ष सुधी पित्रि तृप्त रहेछेः—

१३ "काळशाक" नामनुं शाक, "माहाशल्क" नामना मत्स्य अथवा गेंडा, लाल बकरु,एमाना कोइ एकनुं मास आप्याथी, मधथी अने सर्व प्रकारना ऋषी धान्य अने वनवगडामां जे थाय छे ते आप्याथी अनंत वर्ष सुधी पित्रि तृप्त थाय छे.—

१४ यज्ञने अर्थे जे मासनुं वेद मंत्रथी प्रोक्षण थयुं होय अने ब्राह्मण तेनुं भक्षण करवानी आज्ञा करे अगर प्राण जवानी धास्ती लागती होयतो तेनु भक्षण करवुंः—

१५ ब्रह्माये प्राणना रक्षण सारु सृष्टि सरजीछे. माटे स्थावर जंगम सर्व पदार्थ प्राणना उपभोगने अर्थे छे.—

१६ अगाउना काळमा ब्राह्मण तथा क्षत्रीयना यज्ञमां भक्षणने योग्य एवा जनावर तथा पक्षीना मासनुं देवताने नैवेद करवामां आवतुं हतुं:—

१७ देवनी तथा पित्रिनी पुजा करी रह्या पछी मासनुं भक्षण करतो तेने दोष नथी:—

१८ स्वयंभुए पोते पशुने यज्ञने अर्थे सरज्या छे. अने यज्ञ आ सर्व जगतनी वृद्धि सारु ठरावयामा आव्यो छे. माटे यज्ञ सारु पशुनी हिंसा करनार हिंसक नथी:—

१९ औषधी-पशु-वृक्ष-जनावर-अने पक्षीओनो यज्ञने अर्थे नाश थाय तो ते परलोकमां उत्तम जन्म पामे छे:—

२० मधुपर्कने समये-यज्ञमा-अने पीत्री कर्ममा तथा देवना कर्ममा एटलेज प्रसंगे पशु हिंसा मनुए कहेली छे:—

२१ उपर कहेले प्रसंगे वेदना अर्थ तथा तत्व जाणनारो द्विजाती वर्णवाळो पुरुष पशु हिंसा करे तो ते पोते तथा पशु उत्तम गतीने पामेछे:—

२२ मास भक्षणनी ईच्छा पूरी करवा सारु पशु हिंसा करनार पुरुषने ते पशुना शरीर उपर जेटला वाळछे तेटला मृत्यु तेणे जन्मो जन्म परलोकमा थाय छे:—

२३ वेदनी आज्ञा वीना आपत्तिकाळमा पण पोताना अगर गुरुना घरमा अथवा अरण्यमा पशु हिंसा करवी नहीं:—

२४ वेद विहित हिंसा स्थावर जंगम जगतमा करवामा आवेछे तेने हिंसा गणवी नही कारण के वेदमांथी धर्म निष्पन थयो छे:—

२५ पाठीन तथा रोहितनुं मास हव्य कव्यमा आव्युं होय तो ते परोणाने खवराववुं:—

२६ पशु हिंसा विना काई मास मळी सकत् नथी पण प्राणीनी हिंसा करवाथी स्वर्ग प्राप्ती नथी माटे मास भक्षण तदन वर्ज्य करवुं जरूरनु छे —

२७ धर्म शास्त्र प्रमाणे धर्म कार्यमा लागेलो पुरुष जो मासनु भक्षण न करे तो ते मुवा पछी एकवीस जन्म सुधी पशु अवतरे छे —

२८ धर्म अधर्म समजवामा विचिक्षण एवो वामदेव पण घणी भुखथी पीडायो हतो त्यारे प्राणनु रक्षण करवा सारु कुतरानु मास खावानी तेनी इच्छा थई परंतु तेथी काई तेने दोष लाग्यो नही -

२९ तेमज धर्म अधर्म समजवामा जेनी बरोबरी कोईथी थई न शके एवो विचक्षण ऋषि विश्वामित्र तेणे पण ज्यारे क्षुधाथी मरवानी तैयारीमा हतो त्यारे कुतरानु मास चडाळना हाथथी लेई खावानो नीश्चय कीधो —

सदरहु प्रमाणे मनुना धर्मशास्त्रमाथी वचनो लख्या छे, हवे याज्ञवल्क्य स्मृतिमा आचार अध्याय छे तेमाना केटलाएक वचनो नीचे लख्या छे —

ग्रहस्थधर्मप्रकरणं

महोक्षंवामहोजंवाश्रोत्रियायोपकल्पयेत् ॥ १०८

यज्ञेश्वरशास्त्री

पान ७५

प्रतिसंवत्सरंत्वर्घ्यास्नातकाचार्यपार्थिवाः॥

प्रियोविवाह्यश्चतथायज्ञंप्रत्यृत्विजःपुनः १०९

अर्थ—श्रोत्रीय एटले अग्निहोत्री ब्राह्मण आपणे घेर आव्या

होय तो मोटो बळद अथवा मोटो बकरो तेमने भक्षणार्थ आपवो; ए उपर टीकाकार एम लखे छे के.

॥ अस्वर्ग्यंलोकविद्विष्टंधर्ममप्याचरेन्नत्विति । निषेधाच्च ।

स्नातक, आचार्य, राजा, मित्र, जमाई, एओने मधुपर्क पूजा प्रतिवर्षे करवी तथा ऋत्विज्नी प्रत्येक यज्ञमा करवी एम लखीने आश्वलायन सूत्रनुं वचन दाखल कर्युं छे.

मनुमा 'कल्पयेत्' आ शब्दनो अर्थ एवो लख्यो छे.

॥ प्राणस्यान्नमिदंसर्वंप्रजापतिरकल्पयत ॥ ५-२८२

आ उपरथी 'कल्पयेत्' आ शब्दनो अर्थ भक्षणनो जणाय छे. पण टीकाकार ते वात उडावी दीधी छे. बीजुं एम लखे छे के.

॥ अर्घशब्दोमधुपर्कंलक्षयति ॥

आ प्रमाणे मोटो माणस घेर आवे तो तेने अतिथि, के अभ्यागत कहेवाय छे अने तेनो सत्कार करवाने वास्ते मधुपर्क छेः—

अने दक्षणमा जमीनदार लोक अने वरनी मा, राजा, ईत्यादिकने भेट बकरानी कींमत आपवानी आजे वहीवट चालेछे. ईराणदेशमां मोटो माणस आवे तेने वास्ते बळद के गाय मारी नाखवानो वहीवट चालेछे ते मोडुं मान गणाय छे ए प्रमाणे ईराणना ईतिहास उपरथी जणाय छे. हवे भक्ष्या भक्ष प्रकरणमा लखे छे के

॥ भक्ष्याःपंचनखाःसेधागोधाकच्छपशल्लकाः ॥
॥ शशश्चमत्स्येष्वपिहीसिंहतुंडकरोहिताः ॥ १७६ ॥
॥ तथापाठीनराजीवसशल्काश्चद्विजातिभिः ॥

।। अतःशृणुध्वंमांसस्याविधिंभक्षणवर्जने ।। १७७ ।।
।। प्राणात्ययेतथाश्राद्धेप्रोक्षितंद्विजकाम्यया ।।
।। देवान्पितॄन्समभ्यर्च्यखादन्मांसंनदोषभाक् ।।१७८।।
।। वसेत्सनरकेघोरेदिनानिपशुरोमभिः ।।
।। सामितानिदुराचारोयोहंत्याविधिना पशून् ।।१७९।।
।। सर्वान्कामानवाप्नोतिहयमेधफलंतथा ।।
।। गृहेपिनिवसन्विप्रोमुनिर्मांसविवर्जनात् ।। १८० ।।

अर्थ.

१ पाच नखवाळा प्राणीमाथी शाहुडी, पाटलागो, काचबो, शल्क, ससलुं, गेंडो, ए प्राणी भक्षण करवामालेवाय अने पाठीन अने राजीव ए बे जातना माछला द्विजने भक्ष्य छे.

२ मासना भक्षणनो तथा परित्यागनो विधि साभळो.

३ प्राणसंकटमा तथा श्राद्धमां मास भक्षण करवुं. प्रोक्षित मास तथा ब्राह्मण भोजनने सारु अथवा देव पितृ कार्यने सारु सिद्ध करेलुं मास देव पितरनी पुजा कर्या पछी बाकी रह्युं होय ते भक्षण करे तो दोष नथी. 'प्रोक्षितं' एटले प्रोक्षण नामनो संस्कार करीने यज्ञ कर्या पछी बाकी रहे ते प्रोक्षित मांस कहेवाय छे. तेनुं अवश्य भक्षण करवुं कारण न करे तो यागनी समाप्ति न थाय.

४ जे माणस विधि विना पशुनो जीव ले ते नरकमा जाय —

५ जे मास त्यागी छे तेने अश्वमेध यज्ञनु फळ मळे छे अने ते गृहस्थ छता मुनी जाणवो. आ वचन टीकाकार लखे छे के, अ-

वस्तु भक्षण करवुं जोइए तेवु प्रोक्षितादी मासना परित्यागने माटे नथी.

॥ श्लोक ॥

१॥ हविष्यान्नेनवैमासंपायसेनतुवत्सरम् ॥
॥ मात्स्यहारिणकौरभ्रशाकुनच्छागपार्षतैः॥ २५७॥
२ ॥ऐणरौरववाराहशाशैर्मासैर्यथाक्रमम् ॥
॥ मासवृद्ध्याभितृप्यंतिदत्तैरिहपितामहाः॥ २५८ ॥
३॥ खड्गामिषंमहाशल्कंमधुमुन्यन्नमेवच ॥
॥ लोहामिषमहाशाकंमांसंवार्द्धिणसस्यच ॥ २५९ ॥

अर्थ

१ अन्नवडे एक मास, दूधपाकवडे एकवर्ष मत्स्य, हरण, घेटो, पक्षी बकरो, काळो हरण, सावर, भुंड, ससलु ए प्राणीओनुं मास पीतृ गणने आप्याथी एक मास अधिक तृप्ति थाय छे

३ गेंडानुं मास, महाशल्क करीने एक मस्यनी जात तेनुं मास, मध अने वनमा थयेला धान्य, लाल रंगनो बकरो तेनु मास, कालशाक अने वार्धीणस एटले धोळो बकरो तेनु मास आप्याथी अनन्त फळ दायक छे

विनायक शांतिमा वचन छे ते नीचे प्रमाणे

॥ श्लोक ॥

१॥ मत्स्यान्पक्वास्तथैवामान्मांसमेतावदेवतु ॥ ॥२८६॥
२॥ पुष्पंचित्रंसुगंधंचसुरांचत्रिविधामपि ॥ ॥ २९७ ॥

अर्थ — काचा पाका मत्स्य अने तेनुं मास पुष्प, सुगंधि पदार्थ अने त्रण प्रकारनो दारु एटले गोळ, मदुडो, तथा लोटनो ए पदार्थनो विनायक अने तेनी माता अंबिकाने निवेद करवो.

मह यज्ञ करवानी विधिमा लखे छे के —

१ ॥ गुडौदनंपायसंचहविष्यंक्षीरषाष्टिकम् ॥
॥ दध्योदनंहविश्चूर्णमांसचित्रान्नमेवच ॥ ३०३ ॥
२॥दद्याद्ग्रहक्रमादेवद्विजेभ्योभोजनंद्विजः ॥
॥ शक्तितोवायथालाभंसत्कृत्यविधिपूर्वकम् ॥ ३०४

अर्थ

१ गोळ, दुधपाक, कांधिधान्य, क्षीर, दहीं भात, घी भात चटणी, मांस, केशरी भात इत्यादि ग्रह तृप्ति करवा वास्ते ब्राह्मणोने ए पदार्थो वडे जमाडवा

सदरहु प्रमाणे स्मृतीयोनो विचार थयो हवे पुराणनो तपास करीये. प्रथम मच्छ पुराणना १७मा अध्यायमा श्राध्धकल्प लख्यो छे तेनो श्लोक

अन्नंतुसदधिक्षीरंगोघृतंशर्करान्वितम् ॥ मांसंप्रीणातिवैसर्वान्पितृन्नित्याहकेशव, २० श्लोक. अध्या १७
द्वौमासौमत्स्यमांसेनत्रिन्मासान्हारिणेनतु ।
औरभ्रेणायचतुरःशाकुनेनाथपंचवै ॥ ३१
षण्मासंछागमांसेनतृप्यंतिपितरस्तथा
सप्तपार्षतमांसेनतथाष्टावेणजेनतु ३२

दशमासास्तुनृप्यंतिवराहमहिषामिषैः
शशकुर्मजमांसेनमासानैकादशैवतु २३
सवत्सरंतुगव्येनपयसापायसेनतु
व्याघ्र्याःसिंहस्यमांसेनतृप्तिर्द्वादशवार्षिकी २४
कालशाखेनचानंताखड्गमांसेनचैवही ।
यत्किंचिन्मधुसंमिश्रंगोक्षिरंघृतपायसं ॥ २५
दत्तमक्षयमित्याहुःपितरःपूर्वदेवताः ॥ २६

उपर लखेला श्लोकनो अर्थ, उपर स्मृतियोनो अर्थ लख्यो छे तेमा जणावेलो छे, माटे फरी लखवानुं कारण नथी. हवे मारकंड ऋषीनुं पुराण छे तेमाना १३मा अध्यायमां देवीनुं महात्म छे तेमे चंडी पाठ कहे छे ते लोक घणा वाचे छे अने ते उपरथी जप होम पूजा इत्यादि अनुष्टान करे छे तेमा हेठे लख्या प्रमाणे श्लोक मळे छे.

बलिप्रदानेपुजायामग्निकार्येमहोत्सवे अ० १२-१०
पशुपुष्पार्घधूपैश्चगंधदीपैस्तथोत्तमैः अ० १२-१०
रुधिरोक्तेनबलिनामांसेनसुरयानृप ॥
रहस्य अ० १५ श्लोक १८

अर्थ.—देवीनी पूजामा बलिप्रदान करवुं अने गंध पुष्प तथा जनावर पण आपवा अने लोही युक्त मास अने मद्यदेवीने अर्पण करवुं

हवे भारत ए मोटो इतिहासनो ग्रंथ छे तेमा पण जे जे राजा बहु शीकार करता अने बहु जनावरो मारता तेमनी कीर्त्ति व्यासजीए बह वर्णन करी छे; ते विशे थोडा वचनो नीचे लख्या छे.

१ ॥ ततस्तेयौगपद्येन ययुःसर्वेंचतुर्दिशम्।
॥ मृगयांपुरुषव्याघ्राब्राह्मणार्थेपरंतपाः ॥ ४ ॥
भारते द्रौपदीप्रमाथे प्रथमसर्गे ॥

२ ॥ ततोदिशःसंप्रविहत्यपार्थामृगान्वराहान्महिषांश्च हत्वा ॥
॥ धनुर्धराःश्रेष्ठतमाःपृथिव्यां, पृथक्चरन्तः सहितावभूवुः ॥ १ ॥
द्रौपदीप्रमाथेपष्ठमसर्गे-

३ ॥ ततोमृगसहस्राणिहत्वासबलवाहनः ॥
॥ राजामृगप्रसङ्गेन वनमन्यद्विवेशह ॥ १ ॥
शकुन्त. तृतीयसर्गः, प्रथमश्लोकः--

अर्थ.

१ ब्राह्मणोने वास्ते बहु हरण मारी लाव्याः—

२ धनुर्धर, श्रेष्ट राजाए बहु हरण तथा डुक्कर तथा वगडानी भेंशो मारीने आणी—

३ ए बलवान राजाये हजारो मृग मारीने बीजा मारवा साद वनमा चाल्योः—

* एज भारतना भीष्मपर्वमा भगवत गीताना मकग्रंथ प्रसिद्ध छे ते वेदांती तथा भक्तिमार्गवाळा बने वाचे छे. तेमां नीचेना वचन मळी आवे छे.

सहयज्ञाप्रजासृष्ट्वापुरोवाचःप्रजापतिः
अनेनप्रसविष्यध्वमेषवोस्त्विष्टकामधुक् १० अ० ३
यज्ञशिष्टाशनःसंतोमुच्यंतेसर्वकिल्बिषैः ॥
यज्ञाद्भवतिपर्जन्योयज्ञःकर्मसमुद्भवः १४
३ यज्ञोदानंतपश्चैवपावनानिमनीषिणाम्
यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यंकार्यमेवतत् अ० १८ श्लो.५

अर्थ.

१ ब्रह्माये सृष्टी उत्पन्न करी तेज वखत यज्ञ करवानी आज्ञा करीने कह्युं के यज्ञ करो एटले देवताओ प्रसंन थई तमारा मननी कामनाओ पुरी करशे:—

२ यज्ञ करीने बाकी जे रेहे ते खाय तेनुं सर्व पाप बळी जशे. यज्ञ करतोजः वरसाद पडशे अने यज्ञ ब्रह्मदेवनी आज्ञा प्रमाणे छे:—

३ यज्ञ दान-तथा तप मनुष्यने पवित्र करे छे माटे ते कर्मनो त्याग कोईए करवो नहीं. ते अवश्य करवा.—

: रामायण नामनो काव्य ग्रंथ छे ते मुल वाल्मीक ऋषिनुं करेलुं-छे. अने ते उपरथी पुराणमां अनेक रामायण लखाया छे तेमानुं मुख्य अध्यात्म रामायण छे तेमाना उत्तरकान्डमा रामचंद्रजी रावणने जीती सीताने लेई ज्यारे अयोध्यामा आव्या त्यारे विश्वामीत्र-भृगु-अंगीरा-वामदेव- अगस्ती इत्यादी ऋषी रामचंद्रजीने आशीरवादने साटु आव्या ते वखत, मधुपर्क पुजा करी रामचंद्रजीए ऋषीओने मान आप्युं. ते विशे श्लोकः—

दृष्ट्वारामोमुनीन्शीघ्रंप्रत्युत्थायकृतांजलिः
पाद्यार्घ्यादिभिरापुज्यगांनिवेद्ययथाविधि
उत्तरकांडे अ० १ श्लोक १३

टिका.

गांमधुपर्कार्थंवृषभंच । महोक्षंवामहो
जंवाश्रोत्रियोपकल्पयेदितिस्मरणात्

अर्थः—रामचंद्रजीए मुनीयोना देखताज उभा थइ हाथ जोडी पग धोवानुं पाणी अने अर्घ्य इत्यादि पुजा करीने वीधी प्रमाणे गायो-नोवेदन करी ए उपर टीकाकार लखे छे के मधुपर्क पुजा करवाने सारु गाय अथवा बळद आपवो जोइए एवी वीधी स्मृतिमां कहेली छे.

स्मृति पुराण-इतीहास तथा काव्य आ ग्रंथो ऋषि लोकोये करे-ला तेथी आर्ष कहेवाय छे त्यार पछी लोकोए एवुं मान्युं के हवे दु-नीयामा ऋषि नथी परंतु जे रह्या छे ते मनुष्य छे अने ते मनुष्ये करे-ला ग्रंथ तेने पौरुष ग्रंथ कहेवाय छे अने तेवीज जातना ग्रथने नि-बंध पण कहेवाय छे आवा निबंध संस्कृत भाषामा घणा छे अने माधव-हेमाद्री-कमलाकर इत्यादि निबंधकार घणा थइ गया छे केट लाकोए व्याकर्ण शास्त्र उपर पोताना नीबंध लख्या छे तेमज केट-लाकोए धर्मशास्त्र, वैदक इत्यादि उपर लखेला छे अने तेमणे पोताना नीबंध रचवामा आर्ष ग्रंथनो आधार लीधेलो छे आवा निबंध करनारा मानो कौस्तुभकार वीवाह प्रकरणमा छापेला ग्रथने पाने २१७ मे नीचे मुजब लखेलुं छे —

अत्रजयंतः। गौःप्रतिनिधित्वेनछागआलभ्यते ।

उत्सर्जनपक्षेपिछागएवनिवेदनीय इति ।
गौगौरितिगविमनसिधृतायांद्वात्रिंशत्पणात्मकनिष्क्रय।
छागेमनसिधृतेपणात्मकोनिष्क्रयोदेयः ।
नामांसोमधुपर्कोभवति । इतिसूत्रात् ।
उत्सर्जनपक्षेपिअन्येनमांसेनभोजनदानमिति ।
वृत्तिकृज्जयंतादिभिरभिधानाच्च ॥

अर्थः—गायने ठेकाणे बकरू मारवुं जोइये. गाय छोडी मुकवानो पक्ष लीधो होय तोपण बकरो नीवेदन करवो. ने गायने बदले तेनी कीमत आपवी होय तो तेना रु.३२) आपवा. बकराने बदले रु१) आपवो. मास वीना मधुपर्क थतु नथी एवुं आश्वलायन आचार्य पोताना धर्म सुत्रमां लखे छे माटे उत्सर्जन पक्ष लीधो होय तोपण बीजा प्रकारथी मास लावीने भोजन आपवुं एवुं जयंतादीक वृत्तिकारनो अभीप्राय छेः—

श्रध्धविवेकमा

अथमांसानि ॥ गंडकमांसंविपाणसमयानुत्थितशृंगछाग मांसंसर्वलोहितछागमांसंहरिणविचित्रहरिणकृष्णहरिण शंबरमृगमेषशशककूर्माऽरण्यवराहमांसानितित्तिरिला वकवर्तकोशलकीककरएपांपक्षिणांमांसानिकरकरःकरा तद्दातिप्रसिद्ध'वाधिणसमांसंत्रिपिबंस्त्विन्द्रियक्षिणंश्वेतंवृद्धअ जापतिंवाध्रिणसंतुतंप्राहुर्याज्ञिकाःपितृकर्मणिकृष्णग्रीवो

रक्तशिराः श्वेतपक्षोविहंगमः सर्वेवाध्रिणसः प्रोक्तइत्येपानै गमीश्रुतिः छागपक्षिणोवाध्रिणसौतयोर्मांसंमंत्रसंस्कृतमांसं यदाछागादिकंपशुमालभ्यमांसमुपादीयतेतदाप्रथमंमंत्रे णपशुप्रोक्षणंकर्तव्यम् ।। मंत्रश्च ।। ओंम् पितृभ्यस्त्वा जुष्टंप्रोक्षामि ।। एकोद्दिष्टेतुपित्रेत्वाजुष्टंप्रोक्षामित्यादिरूपः अनालंभपक्षेसिंह्वादिहतमांसादिपुनमंत्रसंस्कारापेक्षेतिसिं ह्व्याघ्रहतहरिणंमांसंलब्धक्रीतछागादिमांसमूमस्थराद्य भिघातछागादिमांसं ।। अथमत्स्याः ।। महाशल्करोहित राजीवपाठिनश्वेतशल्काअन्येपि ।।

काशिमां छापेलि प्रतनुं पान१६

अर्थ—श्राद्ध विवेक करीनें एक ग्रंथ छे तेमा मावापना श्राद्धना विधि अनेक प्रकारना लख्या छे तेमा श्राद्धमां अनेक जनावरना मास भक्षण करवा विशे लख्युं छे, तेनी विगत, जंगलीभेंस, बकरो, हरण, रोझ, घेटा, ससलु, काचबा, जंगलीभुंड, अने तेतर, लावक, इत्यादिक पक्षि, अने जनावरो, मंत्रथी पवित्र करीने पाणी छाटीने, अने एवो मंत्र भणवो के, मारा पित्रीने वास्ते योग्य करवा सारु पवित्र करुंछुं, एवुं भणीने तेनुं मास लेवुं, अथवा पशु हिंसा करवाने अनुकुळ न होयतो, व्याघ्र के सिंहे मारेला जनावरनुं मास लेवुं, अने एवुं जनावर मळे तो मंत्र भणवानी जरुर नथी, अथवा वेचाथी लाववुं, एज प्रमाणे, महाशल्क, लाल माछला, राजीव, तथा पाठिण, इत्यादि श्राद्धमा योग्य छे

भवभुती कवी जे भोजराजाना वखतमां थयो तेणे उत्तरराम चरित्र नाटक लख्युं छे ते प्रसीद्ध छे अने नीशाळोमां पण चालेछे तेना चोथा अंकमां वशीष्टना शीष्य सौधातक अने भान्डायन ए बंनेनो संवाद लख्यो छे तेमां प्रसंग एवो छे के राजा दशरथ वशीष्ट मुनीने घेर आव्या त्यारे एक वाछडु मधुपर्कने सारु मार्यु. त्यार पछी जनक राजा आव्यो त्यारे मधुपर्क कर्यो नही कारण ए राजा नीवृत्तिमार्गनो हतो माटे मधुपर्कनी जरुर नथी ते वीशे नीचे मुजब संवाद छेः—

सौधातक--मयापुनज्ञातंव्याघ्रोवा
वृकोवाएपइति ।

भांडायण--आःकिमुक्तंभवति--

सौ० तेनसावत्सतरीभाक्षिता ।

भा० समांसमधुपर्कइत्माम्नायंबहुमन्यमानाः
श्रोत्रियायाभ्यागतायवत्सतरीं ।
महोक्षंवामहाजंवानिर्वपति । गृहमेधिनः ।
तंहिधर्मसूत्रकाराःसमामनंति

सौ० येनआगतेपुवसिष्ठमिश्रेपुवत्सतरींविशासिता ।
अद्यैवप्रत्यागतस्यराजर्पेजनकस्यभगवतावाल्मी
किनापिदधिमधुभिरेवनिवर्तितोमधुपर्कः

भा० अनिवृत्तमांसानामेवकल्पंमृषयोमन्यंते
निवृत्तमांसस्तुतत्रभवान्जनकः ॥

पद्मपुराणना पाताळखंडमां रामाश्वमेधनी कथा छे तेना साठम ध्याय छे तेमांना सातमा अध्यायमां एवुं लख्युं छे के रामचंद्रजीने अयोध्यामां आव्या पछी बहु पश्चाताप थयो के युद्धमां पोताना हाथथी बहु ब्राह्मण रावणादीक मरीगया तेनुं पाप केम जशे एवो प्रश्न पुछाथी ऋषीए जवाब आप्यो के ए सर्व पाप नाश थवा सारु अश्वमेध यज्ञ करवो ते शीवाय बीजो ऊपाय नथी अने आगळ जे मोहोटा मोहोटा राजाओ थई गया छे तेमणे अश्वमेध करीने स्वर्गवास कर्यो तेज मुजब तुं कर एटले तारुं सर्वे पाप वळी जशे ते वीशे नीचे लख्या मुजबनां वचन छेः—

रामउ० ब्राह्मणास्तुपूजार्हादानसन्मानभोजनैः ॥
तेमयानिहताविप्राःशरसंघातसंहितैः ॥
कुर्वंतोबुद्धिपुर्वमेब्रह्महत्यासुनिंदिताम् ॥
इत्युक्तवंततंरामंजयादस्ततपोनिधिः

शेषउ० शृणुराममहावीरलोकानुग्रहकारक ।
विप्रहत्यापनोदायतवयद्वचनंब्रुवे ।
सर्वंसपापंतरतियोश्वमेधंयजेतवै ॥
तस्मात्त्वयजविश्वात्मन्वाजिमेधेनशोभिना
सवाजिमेधोविप्राणांहत्यातापापनोदनः
कृतवान्यंमहाराजोदिलिपस्तवपूर्वजः ॥
मनुश्चसगरोराजामरुत्तोनहपात्मजः ॥

एतेतेपुत्रंजाःसर्वेयज्ञान्कल्पापदंगताः॥३५अ.७॥

उपर मुजबनां सघळां शास्त्रोना ग्रंथ तपासतां मालुम पडे छे के बधा संस्कृत ग्रथना त्रण भाग करेला छेः—

१ छांदस २ आर्ष ३ पौरुष

छादस एटले परमेश्वरे करेला ग्रंथ-आर्ष एटले ऋषीओए करेला ग्रंथ. पौरुष एटले मनुष्योए करेला ग्रंथ. तेमा छादस ग्रंथ एटले वेद. तेमा मंत्र तथा ब्राह्मण. मंत्र एटले कर्मनी प्रवृति करनार वचनः—

मंत्रराशिर्वेदइत्युच्यंते

कर्मप्रवर्तकामंत्राः

ए मंत्र जुदा जुदा ऋषीयोये भणावाथी शाखा भेद पड्यो तेनुं नाम "चरण" पण छेः—

अध्ययनभेदाछाखाभेदोअनादिः

चरणशब्दःशाखाविशेषाध्यापन

परैकतापन्नजनसंघवाची ॥

आश्वलायन शौनक ऋषीनो शीष्य हतो. शौनके पण वेद उपर ऋग्विधान. सर्वानुक्रम. इत्यादी ग्रंथ कर्या छे. अने आश्वलायने धर्म सूत्रकर्यु छे.

शौनकस्यतुशिष्योऽभूत्भगवान्आश्वलायनः ॥

कल्पसूत्रचकाराद्यंमहर्षिगणपूजितः ॥

ए प्रमाणे अनेक शाखाना अनेक आचार्य थयाछे, धर्म शास्त्रमां सूत्र ग्रंथ वेदना बरोबर मानेला छे कारण ए ग्रंथो वेदने घणा मळ-

ता छे अने वेदार्थ लेईनेज रचेला छे. अने सुत्र उपरथी श्लोक बंध स्मृतीयो थयेलीयो छे. वेद जोता मास खावाने के हिंसा करवाने कांई नीषेध जणातो नथी. स्मृतिना काळमा एटले कळीयुगना आरंभमा वैदीक धर्म उपर एक मोहोटु बंड उभु थयु ते ऊभु करनार बुध नामनो मगध एटले गयानो राजा हतो तेणे ब्राह्मणोनी बहुज नींदा करी अने वेदनो धीकार कर्यो ते वीशे जय देव स्वामी पोताना गीत गोवींद काव्य ग्रंथमा पेहेली अष्टपदीमा दशावतारनं वर्णन कर्युं छे तेमा बुद्ध वीशे लखे छे के —

निंदसियज्ञविधेरहह श्रुतिजातं
सदयहृदयदर्शितपशुघातं ॥
केशवधृतबुद्धशरीरं ॥ गीतगोविंद.

अर्थ —भगवान वीष्णुये बुध रुप लेइने वेदमा कहेला यज्ञ वीधीनी नींदा करी कारण के ए वीधीमा जे पशु मरता हता तेमनी भगवानने दया आवी. एज ग्रंथमा एक श्लोकमा दशावतारनु वर्णन कर्युं छे. तेमा बुध विशे लख्युं छे के —

कारुण्यमातन्वते

अर्थ—बुधे दया धर्म प्रगट कर्यो —

ए पंथना आचार्य अने पडीत देशोमा फरी फरी उपदेश करता उत्तरमा चीन देश ब्रह्मदेश सुधी बौध धर्म स्थापन कर्यो दक्षाणमा लंकामा पण ए धर्म चाले छे हिंदुस्थानना ब्राह्मण एम बोलवा लाग्या के कळी उत्पन्न थयाथी वेदीक धर्म डुबी गयो कळी एटले टंटो. ए टंटो शरु थयो त्यारथीज जुग जुदो मानेलो छे. बुधना तकरार

चालता बीजो एक तकरार एवी उत्पन्न थइ के केटलाक लोक सांख्य शास्त्रनो अभ्यास करीने एवुं कहेवा लाग्या के ब्राह्मण लोको अग्नी, वायु, सुर्य इत्यादी अनेक देवोनी उपासना करे छे, अने तेमना नामथी यज्ञ याग करे छे; पण ए देव शाना. एतो पदार्थ छे, अने आ जगतनुं आदी कारण तो एक ब्रह्म छे माटे कर्म कान्ड तमाम खोटुं छे. आत्मज्ञान एज मुख्य छे ए लोकोए उपनिषेदनो आधार लीधो. आवा बंने तरफथी वैदीक मार्गवाळा ब्राह्मणोनी बहुज नींदा थवा लागी अने तेमना उपर लोकोनो बहुज धीकार थयो, तेथी वेदना पुस्तक ढाकी मुकवानी जरुर पडी, अने केटलीक तरेहनो वीधीनो त्याग कर्यो, अने पुराण वीगेरे ग्रंथमा कळीमा फलाणी चीज करवी नही एवा वचनो पण दाखल कर्या, अने बोद्ध धर्मने मळतुं आवे एवो घाट रच्यो. अने केटलीएक युक्तियो कहाडी ते एवी के आगळना ऋषी जे यज्ञ करता ते जनावरो मारी पाछा जीवंत करता ते मोटा सामर्थ्यवाळा हता. केटलाक कहे छे के मंत्रनुं सामर्थ्य तेओनी साथे गयुं पण ए विषे शास्त्रमां कोइ दाखलो मळतो नथी एवो दाखलो मळे छे के जनावर मारीने होमता, अने खाता, अने ते वखत जे वेद हता तेज वेद आज पण छे, परंतु ते मुजब आज कोइ करे तो तेनी फजेती थाय.

मधुपर्क, अनुस्तरणी, शूलगव, अश्वमेधमां संवेशन प्रकार, आश्लीलभाषण, इत्यादी कर्म आज कोइ करे तो तेनी सोबत कोइ लोक करशे नही, अने तेनी साथे वेहेवार राखशे नही अने ए कर्म जोता ढेड वाघरी पण करे नही तेवा छे गर्भाधान संस्कारमां मंत्र भणे छे ते.

तांपुषंशिवतमामेरयस्वयस्यांबीजं

मनुष्यास्वपंति ॥ यानउमिंशतिवि

अयातियस्यामुशंतःप्रहरामशेपं ॥

ऋगवेद० अ० ८

आवा मंत्रनो अर्थ बतावे तो बहु अ मर्यादा थाय माटे छानु छे तेज सारु छे. कर्म कान्डना जे अनुष्ठानो हता ते उपनीषद भागमा अपरा वीद्यामा वर्णन करेला छे अने अध्यात्म विद्या श्रेष्ट ठरावी छे.

तत्रापराऋग्वेदोयजुर्वेदःसामवेदोऽथर्ववेदः
शिक्षाकल्पोव्याकरणंनिरुक्तंछंदोज्योतिपमिति ॥
अथपरायथातदक्षरमधिगम्यते ॥ मुंडकोपनिषत्
अध्यात्मविद्याविद्यानां ॥ गीता.

एज उपनीपदमा कर्म कान्डनी निंदा करी छे ते नीचे प्रमाणे

अविद्यायामन्तरेवर्तमानाःस्वयंधीराःपण्डितंमन्यमाना ॥
जघन्यमानाःपरियन्तिमुढाअन्धेनैवनीयमानाः
यथान्धाः ॥ ८
अविद्यायांबहुधावर्तमानावयंकृतार्थाइत्यभिमन्यन्ति
बालाः ॥ यत्कर्मिणोनप्रवेदयन्तिरागातेनातुराः
क्षिणलोकाःच्यवंन्ते ॥ ९ ॥
इष्टापूर्तंमन्यमानावरिष्ठंनान्यच्छ्रेयोवेदयंन्तेप्रमुढाः ॥
नाकस्यपृष्टेतेसुकृतेऽनुभूत्वेमंलोकंहीनतरश्चविशंन्ति॥१०
मुंडकोपनिषत्

त्रैगुण्यविषयावेदानिस्त्रैगुण्योभवार्जुन ॥

यामिमांपुष्पितांवाचंप्रवदंत्यविपश्चितः ॥ गीता.

आ प्रमाणे निंदा करीने एवुं ठराव्युं के जे अनेक देवने भजे छे ते, नीचे गतीने पामे छे. अने जे एक ईश्वरने भजे छे ते अक्षधामने पामे छे.

यांतिदेवव्रतादेवान्पितॄन्यांतिपितृव्रताः

भूतानियांतिभुतेज्यायांतिमद्याजिनोपिमाम् ॥

गीता अ० ९-२५

अनन्याश्चिंतयंतोमां ॥ २२

ततःपदंतत्परिमार्गितव्यंयस्मिन्गतानानिवर्ततिभूयः

अ० १५-४ गीता

आ प्रमाणे नीर्णय थयो ने ते उपरथी केटलाएक लोक बोलेछे के अमे कर्म कान्डी नथी. नीवृत्ति मार्गमा छीए. अने एक परब्रह्मनी उपासना करीये छीये पण कर्म कान्डना केटलाक कर्म तेमना कर- वामा आवे छे. अने यज्ञ कर्म करवानो अधीकार धारण करवानुं जे यज्ञो पवीत ते धारण करे छे ए रीती मुकी देता नथी. फकत-जे सन्यासी थाय छे तेज मात्र यज्ञो पवीत धारण करता नथी. त्यारे जे गृहस्थ कर्म कान्डने मानता नथी तेमने यज्ञो पवीत शुं करवा राखवुं जोईए ए पण एक सवाल छे अने यज्ञो पवीत यज्ञ संध्यर्थ छे ते वीशे वेदमां नीचे मुजब लख्युं छेः—

यमृतोहवैयज्ञोपवितिनोयज्ञोप्रसृतोनुपवीतिनोयत्किंचब्रा

णोयज्ञोपवीत्यधीतेयजतएवतत् । तस्माद्यज्ञोपवीत्येवाधी
यीतयाजयेत्यजेतवायज्ञस्यप्रसृत्या

तै० अरण्यक अ० २ अनुवाक १

सेटेजानंद स्वामीए शीक्षापत्री लखी छे तेमा केटलाएक ग्रंथो सत्शास्त्र ठराव्या छे ते नीचे लख्या मुजब —

वेदाश्चव्याससूत्राणिश्रीमद्भागवताभिधम् ॥
पुराणंभारतेतुश्रीविष्णोर्नामसहस्रकं ९३
धर्मशास्त्रांतर्गताचयाज्ञवल्क्यऋषेःस्मृतिः ॥
एतान्यष्टममेष्टानिसच्छास्त्राणिभवंतिहि ॥ ९५ ॥

शीक्षापत्रि

अर्थ—वेद याज्ञवल्कीय स्मृती ए सत् शास्त्र छे एथी एम जणाय छे के एक ईश्वरवादी अने भक्तीवादी एमणे वेदनो आधार मुक्यो नथी शंकरवीजयनामनो ग्रंथ आनंद गीरी कृत छे तेना छवीसमा अध्यायमा जईन आचार्य अने शंकरस्वामीनो संवाद थएलो ते वीशे लखेलु छे तेमा शंकरस्वामी बोल्या छे के वेदमा हिंसा लखी छे ते हींसा नथी ए तो धर्म छे ते भाषण नीचे लख्यु छे —

इदंआह । सर्वप्राण्यहिंसापरमोधर्मः।परमगुरुभिरिदमुच्यते ॥ रेरेसौगतनीचतरकिंकिंजल्पसि । अहिंसाकथंधर्मोभवितुमर्हति । यागीयहिंसाय । धर्मरूपत्वात्तथाहिअग्निष्टोमादिक्रतुः

छागादिपशुमान्यागस्यपरमधर्मत्वात् । सर्वदेवतृप्तिमूलकत्वाच्च । तद्वारास्वर्गादिफलदर्शनाच्च । पशुहिंसाश्रुत्याचारतत्परैरङ्गिकरणीयातद्व्यतिरिक्तस्यैवपाषण्डत्वान्तदाचाररतानरकमेवयान्ति ।

वेदनिन्दापरायेतुतद्राचारविवर्जिताः ।।
तेसर्वेनरकंयान्तियद्यपिब्रह्मबीजजाः ।।

इतिमनुवचनात् ।। हिंसाकर्तव्येत्यत्रवेदाःसहस्रंप्रमाणंवर्तते। ब्रह्मक्षत्रवैश्यशूद्राणांवेदेतिहासपुराणाचारःप्रमाणमेव । तदन्यःपतितोनरकगामीचेति

सम्यगुपदिष्टःसौगतःपरमगुरुंनत्वानिरस्तसमस्ताभिमानःपद्मपादादिगुरुशिष्याणांपादरक्षधारणाधिकारकुशलःसततंतदुच्छिष्टान्नभक्षणपुष्टतनुरभवत् ।। इत्यनंतानंदगिरिकृतोपाड्विंशप्रकरणं ।।

उपर मुजबनु शंकरस्वामीनु वचन साभळी ए जैनाचार्य ए स्वामीनो नोकर थई रह्यो एवुं एमा लख्युं छे. सदरहु शंकरस्वामी शाक्तमार्गी हता एवु लोको कहेछे कारण जाहा जाहा एमना मठ छे तहा-तहा शक्तीनी उपासना वीशेष चाले छे अने द्वारीकामा एमनो शारदा मठ छे त्याहा "श्रीचक्र" स्थापन पथरा उपर कोरीने कर्युं छे. वळे घणा धरमे हंस कौलीक अघोरी-वाममार्गी सरभंगी ईत्यादी ब-

क्ष मार्गि केहेवाय छे पण मद्य मांस पीयेछे खायछे श्रीचक्र वाममार्गि नुं पुजा करवानु दैवत छे ते शंकराचार्य स्वामीए ठरावेलु छे. ए वीशे शकरवीजयना चोसठ तथा पासठमा अध्यायमा नीचे मुजब वचनो छे -

यादेवीसर्वभूतेषुज्ञानरूपेणसंस्थिताइतिमार्कंडेयवचनात् परादेवताकामाक्षिति । अ० ६४

एवमेतस्मिन्नर्थेनिष्पन्नेपरशक्तित्वस्याभिव्यंजकंश्रीचक्र निर्माणंक्रियतेभवद्भिराचार्यैःतत्रश्लोकम् ।

बिंदुत्रिकोणवसुकोणदशारयुग्ममन्नस्त्रनागदलसंयुतषोडशारम्॥ वृत्तत्रयश्चधरणिसदनत्रयश्चश्रीचक्रमेतदुदितंपरदेवतायाः॥

श्रीचक्रंशिवयोर्वपुः॥

इत्यादिवचनैःश्रीचक्रस्यशिवशक्त्यैक्यरूपत्वात् । मुक्तिकांक्षिभिःसर्वैःश्रीचक्रपूजाकर्तव्येतिसर्वेषांमोक्ष फलप्राप्त्येदर्शनादेवश्रीचक्रआचार्यैर्निर्मितमिति ॥

पंचषष्टिप्रकरणं ॥

पछी शंकराचार्यने राजा लोकोनी घणी मदद मळी अने बुद्ध धर्मना लोको साथे लढाइ करी अने ए धर्मना घणा लोकोने मारी नाख्या ए वीशे माधवाचार्ये बीजो शंकरवीजय लख्यो तेमा नीचे मुजबनो वचन मळी आवेछे —

आसेतुरातुषाद्रिंबौद्धानंवृद्धबालकं

नाहंतियासहंतव्योभृत्यंइत्यब्रसंनृपाः ॥
नावदेत्यवनींभापांप्राणैःकंठगतैरपि ।
हस्तिनाताडयमानोपिनगछेजैनमंदिरं ॥

त्यार पछी बुद्ध धर्मनु खंडण थयुं ने वैदीक मत चाल्यु परंतु ते पण लोकोने पसंद नहीं आव्याथी भक्तीमार्ग चाल्यो अने यज्ञने ठेकाणे पुजा शेवा करवानो प्रथा पड्यो अने ब्राह्मणो कर्म काण्डमा ज्यां दर्भ वापरता हता ते जगोए आ भक्तीमार्गवाळाओए तुळशी वापरी अने पुरो डाश एटले यज्ञनो शेष भागने बदले प्रसाद दाखल थयो. अने अग्निने ठेकाणे मुर्तियो थई अने माहाक्रतुने ठेकाणे छपन भोग ईत्यादि मोहोछव करवानु शरु थयु अने वेद पठनने ठेकाणे माळा फेरववानु आव्यु अने प्रायश्चीतने ठेकाणे नाम स्मरण आव्यु अने अनुष्टाननी जगो उपर भजन आव्यु मधुपर्कने ठेकाणे अर्घ्य एटले पाणीनो लोटो भरी आपवो, तोपण भक्तीमार्ग नीची पदवीनी उपासना गणाय छे ते वीशे कह्यु छे के —

अग्नौक्रियावतांदेवेदिविदेवमनीषिणां
प्रतिमास्वल्पबुध्धिनांसर्वत्रसमदर्शनः ॥
कृतेपापेनुतापोवैयस्यपुंसःप्रजायते
प्रायश्चितंतुतस्यैकंहरिसंस्मरणंपरं ॥
मनसापिस्मरेद्यस्तुवासुदेवंहरिपरं ॥
चांद्रायणशतंसाग्रलभतेनात्रसंशयः
अश्वमेधाद्दशगुणंप्रवदंतिमनीषिणः

पौंडरीकस्ययज्ञस्यफलंप्राप्नोतिमानवः
अकामोवासकामोवायेस्मरंतिचमाधवः
हरेःसंकीर्तनंचैवसर्वपापप्रणाशनं
येनरानाभिजानंतिवंचितास्तेनसंशयः
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनहरेर्नामानुकीर्तनंः

शंकराचार्यना मतमां आत्मा एज ब्रह्मछे बीजा बधा देव नीचा छे. ब्रह्मचींतनिका–तथा ज्ञान भास्कर ग्रंथ छे तेमां नीचे लखेलां वचन मळी आवेछेः—

अहमेवपरंब्रह्मवासुदेवाख्यमव्ययं
इतिस्यान्निश्चितोमुक्तोबध्धएवंन्यथाभवेत् ॥
आत्मानंसततंब्रह्मसंभाव्यविरहंतिये ।
तन्महापातकंहंतितमःसूर्योदयोयथा ॥
अहंविष्णुरहंविष्णुरहंविष्णुरहंहरिः ॥
आनंदोहंमशेषोहंअजोहंममृतोस्म्यहं ॥
अच्युतोहंमनंतोहंगोविंदोहंमहंहरिः ॥
नित्योहंनिर्विकल्पोहंनिराकारोहमव्ययं ॥
सच्चिदानंदरूपोहंपंचकोशातिगोस्म्यहं ।
आदिमध्यांतमुक्तोहंनबध्धोहंकदाचन ॥
ब्रह्मैवाहंनसंसारीमुक्तोहमितिभावयेत् ॥
आनंदःसत्यबोधोहमितिब्रह्मानुचिंतनं ॥

अयंप्रपंचोमिथ्यैवसत्यंब्रह्माहमद्वयं ॥
नाहंदेहोनमेदेहिकेवलोहंसनातनः ॥
एकमेवाद्वितीयंब्रह्मनेहनानास्तिकिंचन ॥

सदरहु मतने अद्वैत मत कहेछे अने भक्तीमार्गने द्वैत मत कहे छे. पण आ बंने मत कर्मकान्डने खंडन करनारा छे. तेज प्रमाणे बौध मत पण खंडन करनार छे. ते उपरथी ब्राह्मणनो अधिकार घणुं करीने जवा लाग्यो ने तेथी ब्राह्मणो पोकार करवा लाग्या के कळीयुग आव्युं अने धर्म डुबवा लाग्यो ते वीशे एवुं लख्युंछे के:—

धर्मःप्रव्रजितःतपःप्रचलितःसत्यंचदुरंगतः ॥
पृथ्विमंदफलानृपाकपटिनोलोल्यंगताब्राह्मणः ॥
नारीयौवनगर्वितापररतापुत्रापिदुद्वेषिणा ॥
साधुःसीदातिदुर्जनःप्रभवतिप्रायःप्रविष्टेकलौ ॥ १ ॥

कर्मकान्डनी नींदा करनार वधायदेशमां उत्पन्न थया. दक्षणमां तुकाराम कवी थयो ते लखेछे के —

मुखबांधुनिमेंढामारा। ह्मणतिसोमयागकरा।
ह्मणतिसजीवतुळसीतोडा। पुजानिर्जिवदगडा ॥
करतिबेलातोडातोडि। शिवालाखोलिरोकाडि ॥
नागपूजायालाजाति। सापदेखुनडांगाघेति।
कोणजाणेखरेखोटे। भजनचाललेउफराटे।
तुकाह्मणेभक्तिभाव ॥ तेणेभक्तापावेदेव ॥

कमळाकर भट निर्णय सिंधुमा तृतिय परीछेदना प्रथम प्रकरणने अंते अनेक पुराणमां कळीयुगमां जे करवु नहीं तेनुं वर्णन करेलुं छे ते बधु आ जगाये एकठु करेलुं छे. तेमांना वचन नीचे मुजबः-

१ समुद्रयातुःस्वीकारःकमंडलुविधारणं ॥
द्विजानामसवर्णासाकन्यापयमःस्तथा ॥
देवराच्चसुतोत्पातिमधुपर्केपशोर्वधः
मांसदानंतथाश्राद्धेवानप्रस्थाश्रमस्तथा ॥
दत्ताक्षतायाःकन्यायाःपुनर्दानंपरस्यच
दीर्घकालंब्रह्मचर्यंनरमेधाश्वमेधकौ ॥
महाप्रस्थानगमनंगोमेधश्चतथामखः
इमान्धर्मान्कालियुगेवर्ज्यानाहुर्मनिषिणः
बृहन्नारदपुराणे

२ उढायाःपुनरुद्वाहंज्येष्ठांशंगोवधःस्तथा ॥
कलौपंचनकुर्वितभातृजायाकमंडलुं ॥ हेमाद्रि

३ गोत्रान्मातृःसपिंडाच्चविवाहोगोवधःस्तथा ।
नराश्वमेधौमद्यंचकलौवर्ज्यद्विजातिभिः ॥ ब्राह्मे.

४ विधवायांप्रजोत्पतौदेवरस्यानियोजनं
बालायाःक्षतयोन्यासुवरेणान्येनसंस्कृतिः
कन्यानामसर्णानांविवाहश्चद्विजन्मभिः

आततायिद्विजाग्र्याणांधर्मयुद्धेनहिंसनम् ॥
द्विजस्याब्धौतुनौयातुःशोधितस्याप्यसंग्रहम् ॥
सत्रदिक्षाचसर्वेषांकमंडलुविधारणं ॥
महाप्रस्थानगमनंगोसंज्ञप्तिश्चगोसवे ॥
सौत्रामण्यामपिसुराग्रहणस्यचसंग्रहः
अग्नीहोत्रहवन्याश्चलेहोलीढापरिग्रहः
वृत्तस्वाध्यायसापेक्ष्यमघसंकोचनंतथा
प्रायश्चित्तविधानंचाविप्राणांमरणान्तिकं ॥
संसर्गदोषास्तेयान्यमहापातकनिष्कृतिः

आदित्यपुराणे

५ वरातिथिपितृभ्यश्चपशूपाकरणक्रिया
दत्तौरसेतरेषांतुपुत्रत्वेनपरिग्रहः
शामित्रंचैववविप्राणांसोमविक्रयणंतथा ॥
कलौकर्तैवलिप्यते ॥ इतिव्यासोक्तेः॥
महापापेरहस्यकृतेप्रायश्चित्तंनेत्यर्थः
६ अग्निहोत्रंगवालंभंसन्यासंपलपैतृकं॥
देवराच्चसुतोत्पतिःकलौपंचविवर्जयेत् ॥
सन्यासश्चनकर्तव्योब्राह्मणेनविजानतः ॥

यावद्वर्णविभागोस्तियावद्वेदःप्रवर्तते ॥
सन्यासंचाग्निहोत्रंचतावत्कुर्यात्कलौयुगे ॥
एतेनचत्वार्यब्दसहस्त्राणिचत्वार्यब्दशतानिच
कलेर्यदागमिष्यंतितदात्रेतापरिग्रहः ॥

स्मृतिचंद्रिकायां

अर्थ

१ एक जगोए नीचे मुजबना धर्म कळीयुगमा नहीं करवा विषे वीचारवंत माणसे एवुं कहेलुं छे —

१ समुद्रमा जवुं
२ संन्यास लेवो
३ नीची जातनी कन्या परणवी
४ दीयरवटु करवुं
५ मधुपर्कमा जनावर मारवा
६ श्राधमा मास खवराववुं.
७ वानप्रस्थाश्रम लेवो
८ परणेली कन्यानो पुन विवाह करवो.
९ बहु वर्ष सुधी ब्रह्मचर्य राखवु
१० मनुष्य यज्ञ करवो.
११ घोडानो यज्ञ करवो
१२ जन्म सुधी यात्रा करवा फरवुं
१३ गायनो यज्ञ करवो

२ वळी बीजे ठेकाणे नीचे मुजब नही करवा विषे लख्युं छे —

१ वीधवानो पुनर्विवाह
२ मोटा भाइने मोटो भाग आपवो
३ संन्यास लेवो
४ भाइनी वीधवा साथे परणवु
५ गोवध करवो.

३ बीजे ठेकाणे नीचे मुजब करवा मना करेली छे.

१ मामानी दीकरी साथे लग्न करवु
२ गोवध करवो.

निवर्तितानिविद्वाद्भिर्व्यवस्थापूर्वकंबुधैः ॥

परीछेद ३ प्रकरण १ निर्णय०

ब्राह्मणोने उपनयन, विवाह, मरण कार्य इत्यादिक संस्कार, गृह्यसुत्र थकी थाय छे. बीजो आधार जणातो नथी एम छता अर्धु खरु अर्धु खोटुं एम शी रीते थाय अने पुराणना वचन लेइए तो एक पुराणमा चार श्लोक वधारे अने बीजी प्रतमा ओछा एटले तेमा कीया श्लोको नवा बनावटना मुकायेला छे ते तपाशी शकातु नथी. अने जेम जेम गरज पडती गइ तेम तेम पुराणमा नवा श्लोक घलाय छे, श्लोक बद्ध स्मृतीओमा पण एवी गरबड थइ छे अने हाल गोसाइ, वेरागी, साधु, बावा, इत्यादीक चारे वर्णना लोक एकत्र जमे छे अने अनेक जातीना साधु थया छे जेवाके नाभाजी भक्तमाळनो ग्रंथ करनारए जातनो धेड हतो. अने कबीर मुसलमान हतो, तेथी एम जणाय छे के परमार्थमा वर्णाश्रम धर्म रह्योज नथी. फक्त व्यवहारमा मात्र रह्यो छे. हालनो धर्म एक रीत उपर नथी पण पंचमुख छे एटले केटला एक वेद विधी, केटला वेदात, केटला एक भक्तीमार्गी केटला एक बौध मार्ग, अने केटला एक रुढी, एवा पाचने आधारे चाले छे मूळ चार वेद अने चार उपवेद तेमा आयु. धनु, शिल्प, गाधर्व आ छे, अने छ अग एमा व्याकरण वेदनुं मुख कहेवाय छे. अने सुत्र हस्त कहेवाय छे, जोतीष नेत्र कहेवाय छे. शिक्षा नाक गणाय छे, छंद पग कहेवाय छे, नीरुक्त कान कहेवाय छे. ए प्रमाणे वेद रुपी जे पुरुष तेना शरीरना ए भाग कहेवाय छे. जे चौद विद्या कहेवाय छे ते आनुं नाम छे वेदने लगता ग्रंथ आटलाज छे. एमा देवता वगेरे आजना जेवा नही बिजा प्रकारना छे. जेमके अग्नी, म-

रुत, इंद्र, वरुण, सुर्य प्रजापती, धुरीलोचन धनुर्धर, नान्दीमुख, पुरुवांद्रेव इत्यादीक अने तेनी भक्ती यज्ञ अने होम द्वाराए थाय छे. शौनक रुषीए ज्यारे वेदनो सर्वानुक्रम लख्यो त्यारे एणे एवो ठराव कर्यो के मंत्रमा जे पदार्थनुं वर्णन आवे ते तेनी देवता ठराववी तेथी केटला एक मंत्रनी देवता घासने ठरावी छे केटला एकनी देवता देडका थया छे. तेथी देवतानी संख्या पण वधी छे पण वेदमा मुख्य देवता तो पंच तत्व छे. अने बोध अने ब्राह्मण वचे ज्यारे तकरार पडी ते वखत वेदना मंत्र परमेश्वरथी थयेला छे एम पूर्वमिमासा वाळाए ठराव्युं पण ए मत घणुं प्राचीन नथी. घणे ठेकाणे वेद छे ते रुषी वाक्य छे एवुं लख्युं छे.

शौनकोक्तसर्वानुक्रमपरिशीष्ट-परीभाषाखंडमां

यस्यवाक्यंसऋपिः । यातेनोच्यतेसादेवता ॥

यदक्षरपरिमाणंतछंदं ॥

नमोवाचस्पतयेनमऋषिभ्योमंत्रकृद्भ्योमंत्रपतिभ्योमामामृषयोमंत्रकृतोमंत्रपतयःपरादुर्मा ॥

तैत्तिरीये अरण्यके ४ प्रपाठक १ अनुवाक १

ऋगवेद संहितामा घणे ठेकाणे एवुं लख्युं छे के रुषिओए मंत्र उत्पन्न कर्या तेमानुं एक वचन नीचे लख्युंछे.

ऋषेमंत्रकृतास्तोमैःकश्यपोद्वर्धयन्गिरः ॥

वेद ब्रह्मदेवे निर्माण कर्या एवुं जे कहेछे तेनु कारण एमछे के ब्राह्मण ए ब्रह्मानुं मूख छे माटे जे ब्राह्मणे कर्युं ते ब्रह्माएज कर्युं एमज

३ नरमेध करवो.　　　　४ अश्वमेध करवो.

५ दारु पीवो.

४ वळी चोथे ठेकाणे नीचे मुजब कळीयुगमा नही करवा लखेलुं छे.

१ दीयरवटु.　　　　२ पुनर्विवाह.

३ नीची जातनी कन्या परणवी.　　　　४ युधमा ब्राह्मणने मारवो.

५ समुद्र यात्रा करवी.　　　　६ सत्र नामनो यज्ञ करवो.

७ संन्यास लेवो.　　　　८ जन्म सुधी यात्रार्थ फरवुं.

९ गोसव नामना यज्ञमां गोवध करवो.　　　　१० सौत्रामणी नामना यज्ञमां दारु पीवो.

११ अग्निहोत्र.　　　　१२ मरण प्रायश्चीत.

१३ संसर्गदोश.　　　　१४ दत्त अने औरस शीवाय बीजा पुत्र करवा.

१५ शामीत्र एटले पशुने यज्ञार्थ मारवानुं काम.　　　　१६ सोम विक्रय.

५ वळी बीजे ठेकाणे नीचे मुजब नही करवा लख्यु छे.

१ अग्निहोत्र.　　　　२ गोवध.　　　　३ संन्यास.

४ श्राद्धमां मांस भक्षण.　　　　५ दीयरवटु.

आ मुजब कर्म करवा नही ने संसर्गनो दोश नथी अने छानु पाप थाय ते गणवुं नही. संन्यास तथा अग्निहोत्र, वेद तथा वर्ण ज्यां सुधी चालतुं होय त्यांसुधी करवुं:—

उपर लखेला कर्ममाथी केटला एक चाले छे ने केटलाएक नथी चालता. चाले छे ते; १मामानी कन्या परणे छे, २मोटा भाइने मोटो

भाग अपाय छे २बहुकाल ब्रह्मचारी रहेछे. ४संन्यास ले छे ५अग्निहोत्री ब्राह्मण छे ६ दरीआमा नावमा बेसीने लोक जाय छे ७ संसर्ग दोष पण गणाय छे. अने ८महा प्रस्थान एटले जन्म सुधी जात्रा करवाने अर्थे फरवुं ते पण लोक करे छे. ९मास भक्षण पण गौडब्राह्मण, सारस्वत, कान्यकुब्ज, मैथील अने केटला एक उत्कलपण करे छे. अने १०पंच द्रावीडमा यज्ञ यागादीक कर्ममा भक्षण करे छे. ११कळीयुगमा अश्वमेध करानो नीषेध छे. पण सवाइ जेशींग राजाए जयपुरमां कराव्यो हतो एम संभळाय छे अने १२सोम विक्रय अने १३शामित्र ए केटलेक ठेकाणे थाय छे. वळी बीजुं एम छे के ज्या कळीगमा फलाणुं काम न करवुं एवु ज्या लख्युं छे. त्या ते बाबत उपर दोष मुकेलो नथी पण फकत भलामण तरीके लखेलु छे. के विचारवंत माणसे न करवुं. जे गोसाइ बेरागी विगरे लोको देशोदेश फरे छे, तेओ बधा महा प्रस्थानमा गणाय छे.

आ शिवाय कळीना धर्म, हाल चलाववा के नही चलाववा ए विशे संशय छे. कारण के केटला एक कहे छे के छत्रीस हजार वर्ष सुधी कळीयुग गणवो नही, केमके तेटली मुदत सुधी, पूर्व युग प्रमाणे वर्तवुं, केटला एक कहे छे, चार हजार, केटला एक कहे छे दश हजार. एम कहे छे. आ सिवाय बीजो एवो संशय छे के, वेदना वचन अने सुत्रना वचन एनुं खंडन पुराण वचनथी शी रीते थाय तेथी युगने माटे विषेष शास्त्रार्थ जे लख्यो छे ते अडचण लागयाथी लख्यो हशे अने एनु प्रमाण निर्णयसींधुमा एम लख्युं छे के लोकना संरक्षणने माटे रूषीओए ठराव कर्यो.

एतानिलोकगुप्त्यर्थंकलेरादौमहात्मभिः ॥

समजवुं जोईए गीतामा कह्यु छे के

ऋषिभिर्बहुधागीतंछंदोभिर्विविधैः पृथक् ॥ गीतायां

अर्थ—अनेक छंद ऋषिओए गायन कर्या अने ऋषिओ ईश्वरना मुख हता ए विशे भारथमा लख्युछे के

ब्रह्मवक्त्रंभुजौक्षत्रंकृत्स्नमुरुदरंविशः ॥

पादौयस्याश्रिताःशुद्रास्तस्मैवर्णात्मनेनमः ॥

भीष्मस्तवराज ६८

अने जे ऋषि मंत्र कर्ता गणाता तेमने द्रष्टा ठराव्या, एनु कारण एके ए पुस्तकनी विरुद्ध कोई तकरार न करे तेने माटे एम करेलु जणाय छे पछी वेद धर्म चालता चालतां लोकोने कंटाळो आव्यो अने हजारो देव अने हजारो अनुष्टान अने हींसा ए ठीक लाग्यु नहीं तेथी ब्रह्मजीज्ञासा उत्पन्न थई अने ते बाबत उपनीषदमा एवां वाक्य जणायछ

अधीहीभगवोब्रह्मेति

नकर्मणानप्रजयाधनेनत्यागेनैकेअमृतत्वमाशुः ॥

ब्रह्मविदाप्नोतिपरम्

तद्दीजिज्ञासस्व. यतोवाईमानिभुतानिजायंते ॥

अथातोब्रह्मजिज्ञासा.

कर्म उपरथी श्रधा उठी अने ब्रह्मउपर आवी एवु उपरना वाक्योथी जणाय छे अने वैदीक पुस्तकोमा जे देवता अने तेमनी प्रार्थना

जे मलेछ तेनो नमुनो बतावबाने वास्ते गृह्यसुत्रना त्रितीया ध्यायना चोथी कंडीकाना पेहेला सुत्रमा तर्पण करवानी देवतानी याद लखी छे तेमा देवता निचे प्रमाणे.

१ प्रजापती. २ ब्रह्मा. ३ वेद. ४ देव ५ ऋषी. ६ सर्वाणी छंन्दासी. ७ ॐकार. ८ वषट्कार. ९ व्याह्रतया १० सावित्री ११ यज्ञ. १२ द्यावाप्रथीवि. १३ अंतरिक्ष. १४ अहोरात्र. १५संख्या १६ सिद्धा. १७ समुद्रा. १८ नद्या. १९ गिरय. २० क्षेत्रोषधीवनस्पतिगंधर्वान्सिरसा. २१ नागा. २२ वयासी. २३ गावा. २४ साध्या. २५ विप्रा. २६ यक्षा. २७ रक्षांसि.

आजना लोक आ देवता विषे तो केटलोक वाधो काढे. अने नाग डुंगर दरीयो, नदी, वनस्पति, संध्या व्याह्रती, वषट्कार, यज्ञ. ईत्यादिने देव केहेवाने आचको खाय

प्रार्थना करवामा शतरुद्रीय के जेने रुद्रि केहेछे. ए महामन्त्र गणाय छे तेमा शिवनुं वर्णन छे तेना थोडा वाक्य नीचे लख्या छे

नमोस्तुनीलग्रीवाय-सहस्राक्षायमीढुषे-विज्यंधनुःकपार्दिनो-नमोहिरण्यबाहवे-वनानांपतये-निषंगीणेस्तेनानांपतये-वंचतेपरिवंचते-तस्कराणांपतये-नक्तंचरद्भ्यः-गिरिचराय-तक्षभ्यः- ॥

असौयः ताम्रो- अरुणः- ॥

अहींश्चसर्वाजंभयं ॥

रथकारेभ्यः-कुलालेभ्यःकर्मारेभ्यःश्वभ्यः-श्वपतिभ्यः-

शितिकंठःकवचिने-आरात्तेगोघ्नउतपूरुपघ्ने-अग्रेवधाय
दुरेवधाय-कुल्याय-शष्यायचपर्णाय-सिकताय-त्रजाय-
इपुकृद्भ्यःधन्वकृद्भ्यः-गव्हरेष्ठाय-धन्वकृद्भ्यःपशुनांमाभे
र्मा-मारीरिषा-मानस्तोकेमानभि-भेषधि-विशिखासः-अ
संख्यातानिसहस्राणियेरुद्राः-येपथांपथिरक्षय-येतीर्थानि
प्रचरंतियेअन्नेपुविविध्यंति-दशप्राचीर्दशदक्षिणादशप्रती
चीर्दशोदिचीदशोर्ध्वायश्वनोद्विष्टितंमेपांजंभेदधामि.

वाजश्वमेक्रतुश्वमे-यज्ञेनकल्पेताम्-ओजश्वमे-शं
चमे-रयिश्वमे-व्रीह्यश्वमे-अश्माचमे-अग्नीश्वमेआग्रयण
श्वमे-स्रुचःश्वमआयुर्यज्ञेनकल्पतां ॥ सद्रि
देवायद्यज्ञंतन्वानाअवभ्रंपुरुषंपशुं ॥ नारायण सूक्त

अर्थ—नमस्कार करु छु तारो कंठ काळोछे. तने हजार आख्यो छे वळी तु जळनी वृष्टि करनार छे. तारुं धनुष तैयार छे. तु जटावाळोछे तारो खाधे सुवर्णना अलकार छे. तु वगडानो राजा छे. तु खडगधारी छे, ने गुप्त चोरोनो उपरी छे तु दगाबाजी करनारो अने तु चोरनो धणी छे. रात्रे फरनार, डुंगरमा फरनार अने सुतार पण तु छे. वळी तु लाल अने भगवो पण छे. सर्व ठेकाणेना सर्प मारनार तुं छे. गाडी करनार तु छे. कुंभार तु छे लुहार पण तु छे तु कुतरु छे अने कुतरानो पाळनार पण तु छे धोळा गळावाळो छे. ने बकतर पेहेरेलो छे वळी तु गायोने मारनार अने पुरुषोने मारनार. सामो

आवे तेने मारनार अने दुर होय तेने मारनार. झाडमा रेहेनार अने घासमा रेहेनार तुं छे. वळी पादडामा रेहेनार रेतीमा रेहेनार, ढोरा ना टोळामा रेहेनार तीर करनार, धनुष करनार, जंगलमा रेहेनार, जनावरोने बीवडावशो नहीं. मारशो नहीं. अमारा छोकराने॰ न मारशो. तुं वेदछे तारे शिखा नथी छे तारी मुर्ती गणती नहीं एटली छे. तु रस्ता वचे बेसेछे केटला एक तीर्थमा रहो छो केटला एक रसोइमा वीघ्न करो छो पूर्व दीशामा तमे दश, दक्षणमा, दश पश्चीममा दश, उत्तरमा दश, अने आकाशमा पण तमे दश छो. जे अमारो शत्रु होय तेने तु दाढमा घालीने चावी जा. अन्न आप. यज्ञ करवानी शक्ति आप. यज्ञ करवाने उपयोगी कर तेज आप कल्याण आप द्रव्य आप डागर आप तु पथरा आप अग्नी आप आग्रयण नामनो यज्ञ करवा सामर्थ आप यज्ञना पात्रो ते आप. आयुष आप ते यज्ञना काममा उपयोग अवे एवु कर.

रुद्रिमा रुद्रदेवनी प्रार्थना छे तेमां यज्ञ करवाने सर्व प्रकारनी सामग्री मने आप्य अने ते सामग्री विगतवार लखी छे ते नीचे प्रमाणे.

इध्मःश्चमेवर्हिश्चमेवेदिश्चमेधिष्णियाश्चमे॰ शतरुद्रिय

उपर मंत्रनुं मूळ बताव्युं छे पण मंत्र तो बे त्रण वर्ग सुधी लांबा छे तेमा विगतवार यज्ञना लवाजमा वास्ते महादेवनी प्रार्थना करी छे ते उपरथी एम मालम पडे छे के यज्ञ करवानु लोकोने बहु गमतुं हतु अने माध्यंदीनी शाखामा यज्ञ विधि बहु बताव्यो छे माटे ए शाखाना ब्राह्मण हिंदुस्तानमा, गुजरातमां, ने दक्षणमां घणा छे महाराष्ट्र देशमा अश्वलायन ब्राह्मण घणा अने तेलंगदेशमा आपस्तंब शाखाना ब्राह्मण घणा बंगाळामां सामवेदना ब्राह्मण घणा पुणाबादामां अ

यर्वेदी ब्राह्मण घणा छे पण माध्यंदीनी शाखाना विस्तारने कोई पो होंचे नहीं बौध धर्मवाळाए एम विचार कर्यो के चारवेदमां यज्ञ सिवाय बीजो कोई सात्विक धर्म नथी अने यज्ञमां हिंसा आवे छे माटे ए चारे वेदनो आपणे त्याग करवो एम समजीने फक्त बुद्धीनो आधार लेईने दया धर्म चलाव्यो.

नारायण सुक्तमां लख्युं छे के देवोए यज्ञोनी वृद्धि करीने पुरुष पशुने बांध्यो.

अने गीतामां अनेक यज्ञ ब्रह्माना मुखथी उत्पंन थया. तेनो शेष जे भक्षण करे छे. तेने मुक्ति मळे छे एवुं लख्युं छे.

एवंबहुविधायज्ञाविततात्रह्मणोमुखे॥ गीता. अ०४-३२

यज्ञशिष्टांमृतभुजोयांतिब्रह्मसनातनम् ॥ ४-३१ गीता

ब्रह्मानुं मुख ते ब्राह्मण, ब्राह्मणना मुखथी जे विधि निकळ्या ते ब्रह्माना मुखथी कहेवाय.अने आशाएज मुख छे वेदना ऋषी केटला एक शुद्र छे केटला एक क्षत्री छे. ऐतरेय ब्राह्मणमां एक कथा छे तेमां कवष ऐलुष ए दासी पुत्र छता ऋषी पद पाम्यो तेज प्रमाणे कक्षिवत राजा क्षत्री छता वेदनो ऋषी थयो विश्वामीत्र पण एज प्रकारनो छे. पुराणोमां नहुष,वेण, सहस्त्रार्जुन आ त्रण जणा ब्राह्मणो साथे लड्या अने परशुरामे क्षत्रीओ साथे युद्ध कर्युं बौध पण क्षत्री हतो. वेद पछी अनेक पंथ नीकळ्या. ते महीमनस्तोत्रमां एक ठेकाणे वर्णन कर्यां छे

त्रयीसांख्यंयोगंपशुमतंवैष्णवामिति ॥

अर्थ.—वेद, असल त्रण हता चोथो पाछळथी थएलो होय एम जणाय छे कारण के घणे ठेकाणे वेद त्रयी एवुं आवे छे

असलना वखतमां वेद त्रण हता कारण घणेक ठेकाणे वेदत्रयी

एम लखाय छे अने वेदमा घणे ठेकाणे त्रणेज लख्या छे

ऋक्‌चमेसामचमेस्तोमचमेयजुश्चमे

कृष्णयजुःसंहिताशतरुद्रियसूक्त

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋचःसामानिजज्ञिरे ॥

छंदांसिजज्ञिरेतस्माद्यजुःस्तस्मादजायत ॥

ऋग्वेदसंहितापुरुषसूक्त

अर्थः—ऋगवेद अने सामवेद अने यजुरवेद ए त्रणे मने आप ए प्रमाणे भक्त, रुद्र देवताने प्रार्थना करे छे.

पुरुष यज्ञ करीने ऋगवेद अने सामवेद अने यजुरवेद ब्रह्माए निर्माण कर्या.

ब्रह्मवक्त्रंभुजौक्षत्रंकृत्स्नमुरुदरंविशः ॥

पादौचस्यास्थिताःशुद्रास्तस्मैवर्णात्मनेनमः ॥

भारत

अर्थ—ब्राह्मण इश्वरनुं मुख छे क्षत्री ए इश्वरना खभा छे वाणीया ए इश्वरना साथळ छे शूद्र ए इश्वरना पग छे.

ऋग्यजुःसामएवच ॥

त्रयिविद्यामांसोमपाः ॥ गीता

ब्रह्मवल्लि उपनीषदमा अथर्ववेदने पुछ कह्युं छे.

तस्यपुरुषविधतां। तस्तय जुरेवशिरः। ऋग्दक्षिणःपक्षः

सामोत्तरःपक्षः।आदेशआत्मा |अथर्वांगिरसःपुछंप्रतिष्टा

चौथे वेद उपर दोष मुकयो छे. के वेद वाक्यमा पुनरुक्ति अने विरुद्ध आवे छे अने अनृत आवे छे.

अनृतव्याघातपुनरुक्तिदोषेभ्यः

उपर जे वेदनो नमुनो बताव्यो छे ते उपरथी मालुम पडशे बीजा दाखला

नमोस्तुसर्पेभ्योयेकेचपृथ्वीमनुः ।

येअंतरिक्षेयेदिवितेभ्यःसर्पेभ्योनमः

होतायक्षदश्विनौछागस्यवपायामेदसोजुषेतांँहविहोतयज

होतायक्षसरस्वतीमेषस्यवपायामे०

होतायक्षदिन्द्रमृषभस्यवपायांमे० २१-४१

याऽअस्मभ्यमरातीयाद्यश्चनोद्वेषतेजनः

निद्रायोअस्मान्धिप्साच्चसर्वंतंभस्मसाकुरु॥अ०११-८०

येजनेपुमलिम्लवस्तेनासस्तस्करावने ।।

यकक्षेष्वघायनस्तांस्तेदधामिजंभयोः ।। अ०११-७९

शुक्लयजु संहिता.

उपला मंत्रोमा पहेला मंत्रमा सर्पनी स्तुती छे बीजामा वपायाग छे. त्रीजामा शत्रु नाशनो मंत्र छे अने चोथामा चोर नाशनो मंत्र छे चौथे ने धरम चलाव्यो तेमा वेद, तीर्थी, वर्ण, आ नण वाना काढी नाख्या ने दयाधर्म सत्य, तप इत्यादीक प्रगट कर्यां तेवोज धर्ममा तप

एटले स्वाध्यायएटले भणवुं एनेज तप कहेता बीजुं देह दंडनुं तप हतुं नहीं, बौध पछी जे बीजा पंथ नीकळ्या ते बधा ए वेदने माने छे एटले तेओ वेद विरुद्ध बोलता नथी पण तेमनो धर्म वेदथी घणो वेगळो छे. त्यार पछी ज्यारे लोकोनी वेदमा कहेला धर्म उपरथी आस्था उठी गइ त्यारे एक इश्वर कोण छे तेनो तपास करवाने षड् शास्त्र बांध्या तेना नाम.

कर्ता	नाम
गौतम.	न्याय.
कणाद.	वैशेषिक.
पतंजली.	योग.
कपील.	सांख्य.
जयमिनी	पूर्वमीमांसा
व्यास.	वेदांत.

आ ग्रंथ उपरथी एक इश्वर छे अने अनेक देव नथी ए नकी थइ गयुं अने कर्मकान्डनुं वजन ओछुं थयुं अने शम, दम, उपरती, तीतीक्षा समाधी, श्रद्धा, नीत्यानीत्य वस्तु विवेक इत्यादिक साधन उपर नीष्टा बेठी फकत एओ ज्ञानने मानता हता तीर्थादिकने मानता नहोता वेदांत शास्त्रमा कह्युं छे के.

तनुंत्यजतिवाकाश्यांश्वपचस्यगृहेथवा ।
ज्ञानसंप्राप्तसमयेमुक्तोसौविगताशयः ।।
नकर्मणामनुष्टानैर्लभ्यतेतपसापिवा ।।
कैवल्पंलभतेमर्त्यःकिंतुज्ञानेनकेवलं ॥ शीवगीता

कुटस्थानिर्हीकर्माणीकोटिजन्मार्जितानपि ॥
ज्ञानेननुविनश्यंतिनतुकर्मायुतैरपि ॥ शी० अ० १३
तीर्थेचांडालगेहेवास्मशानेवासुरालये ॥
परित्यजन्देहमिदंज्ञानादेवविमुच्यते ॥
कुरुतेयत्रकुत्रापिभक्ष्यंवाभक्ष्यमेवच ॥
शेतेस्वेछालयगतोज्ञानात्मापरिमुच्यते ॥ शी०
कर्मणावध्यतेजंतुर्विद्ययाचाविमुच्यते ॥
तस्मात्कुर्मनकर्वतियतयःपारदर्शिनः॥उपनिषद्भाष्य.

सदरहु विषे प्राकृत, कवी तुकारामे कह्युं छे के.

तुह्मिनकाकरुगर्व ॥ नीचयातिह्मणुनीसर्व ॥
शुक्रशोणिताचिखाणि-तुह्माआह्मायेकचयोनि ॥
रक्तमांसचर्मंहाडे ॥ सर्वांठाईसमपाडें ॥
अन्नउदकघरोघरी ॥ निष्ठानाहीहादुसरी ॥
तुकाह्मणेहेचिखरे ॥ नाहिदेवाशीदुसरें ॥१॥
शुनिचैवश्वपाकेचपंडिताःसमदर्शनः ॥ गीता
स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेपियांतिपरांगतिं ॥ गीता ॥
आदौकृतयुगेवर्णोनृणांहंसइतिस्मृतः ॥
कृतकृत्याप्रजाजात्यातस्मात्कृतयुगंविदुः ॥

सदरहु प्रमाणे ज्ञानमार्गी लोकोए वर्णाश्रमने कर्मनो उपहास कर्यो केटलाएक वरस सुधी आ प्रमाणे ज्ञानमार्ग चाल्यो त्यार पछी उपासना मार्ग उत्पंन थयो अढार पुराण अने उपपुराण एओ उपासना मार्गनुं प्रतीपादन करे छे तेनी अंदर शैव अने वैष्णव आ बे संप्रदाय बहु वधेला छे तेमा शैवमार्ग पुरातन छे. अने वैष्णवमार्ग त्यार पछी थएलो छे. वैष्णवना मुख्यचार संप्रदाय १ रामानुज, २नींबार्क, ३मध्व, ४विष्णुस्वामी, ए चारे जणाए शंकराचार्ये स्थापेलो अद्वैतमत खंडन करी द्वैत मत चलाव्यो. एमने आधार घणु करीने पुराणनो, अने श्रुतीनो आधार लेवाने वास्ते केटलाएक नवा उपनीषद बनाव्यां. रामतापीनी, गोपाल तापीनी, नृसींहतापीनी इत्यादिक—पण वेदनां मंत्र भागमा उपासना विषे कंइ जणातुं नथी. तेमां जे उपासना छे ते अग्नीद्वारा, अने पंचमहाभूतादिकनी छे. पण पुराणमां अवतारादीकनी छे. आ उपासना पुराणो थया, त्यारथी ते आ संप्रदाय नीकळ्या त्या सुधी उपासनाना विषय घणा नीकळ्या. जेवा के—कोई शीवमार्गी, कोइ विष्णु, कोइ गणपती, कोइ राधाकृष्ण कोइ बाळकृष्ण कोइ हनुमान, अने पोतपोताना उपासक देवने परब्रह्म कहे छे. केटला एक एकबीजाने उंचा नीचा गणे छे. कह्युं छे के.

गणेशंपूजयेद्यस्तुविघ्नंस्तस्यनबाध्यते ॥
आरोग्यार्थेचयेसूर्यंधर्ममोक्षायमाधवं ॥
शिवंधमार्थमोक्षायचतुर्वर्गायचंडिका ॥

पछी अकेक संप्रदाय वाळाए पोतपोताना संप्रदायना चिन्ह ठराव्या. शीवमार्गीए भस्म, रुद्राक्ष, बाणलींग इत्यादीक वैष्णवे, तप्तमुद्रा

तुलसी, गोपीचंदन, शाळीग्राम इत्यादीक नीशानीओ ठरावी तेओ चंदन विष्णुपादाकृती करे छे. कोइ श्रीनुं चीन्ह धारण करे छे आ मुख्य बे मार्गोनी तकरार वध्याथी एकना विरुद्ध बीजाए बहु शास्त्र लख्यां छे. तेमां एक बीजानी नींदा करी छे. ए वाक्यो क्षेपक अथवा कल्पीत के असलनां हशे तेनो नीर्णय करवानुं मुश्केल छे. पुराण अने ऋषी उपर पण ए लोकोए दोष मुकेलो छे. केटलां एक पुराणो सात्वीक ठराव्यां छे. केटलां एक तामसी पुराणो ठराव्यां छे.

सत्यंपाराशरंवाक्यंसत्यंवाल्मिकमेवच ॥
व्यासवाक्यंक्वचित्सत्यंअसत्यंजैमिनीवचः॥
सात्विकामोक्षदाप्रोक्ताराजसास्वर्गदाशुभा ॥
तथैवतामसादेवीनीरयप्राप्तिहेतवे ॥
वैष्णवंनारदीयंचतथाभागवतःशुभं ॥
गारुडंचतथापाद्मंवाराहोराजसस्मृतः ॥ इत्यादी.

अने एक बीजा उपर दोश मुक्यां छे ते निचे प्रमाणे.

वैष्णवमतमां.

ब्राह्मणःकुलजोविद्वान्भस्मधारीभवेद्यदी ॥
वर्जयेतादृशंदेवमिथ्योछिष्टंघटंयथा ॥ १ ॥

वेदांताचिंतामणी

त्रिपुंड्रंशुद्रकल्पानांशूद्राणांचाविधीयते ॥
त्रिपुंड्रधारणात्विप्रःपतितस्यान्नसंशयः ॥ २ ॥

योददातिद्विजातिभ्यःश्चंदनंगोपिमर्दितं ॥
अपिसर्षपमात्रेणपुनात्यासप्तमंकुलं ॥ ३ ॥
उर्ध्वपुंड्रविहीनस्यस्मशानसदृशंमुखं ॥
अवलोक्यमुखंतेषामादित्यमवलोकयेत् ॥ ४ ॥
यज्ञोदानतपश्चैवस्वाध्यायपितृतर्पणं ॥
व्यर्थभवतितत्सर्वंऊर्ध्वपुंड्रविनाकृतं ॥ ५ ॥
शालग्रामोद्भवंदेवंदेवेद्वारावतीभवः ॥
उभयोसंगमोयत्रतत्रमुक्तिर्नसंशयः ॥ ६ ॥
शालग्रामोद्भवंदेवंशैलंचक्रांकमंडितं ॥
यत्रापिनियतेतत्रवाराणस्यांशताधिकं ॥ ७ ॥
म्लैंछदेशेशुचौवापिचक्रांकोयत्रतिष्ठति ॥
वाराणस्यांयवाधिक्यसमंताद्योजनत्रयम् ॥ ८ ॥
यन्मुलेसर्वतीर्थानीयन्मध्येसर्वदेवताः ॥
यदग्रेसर्ववेदाश्चतुलसीतांनमाम्यहं ॥९॥
पुष्करादयानितीर्थानीगंगाद्यासरीतस्तथा ॥
वासुदेवादयोदेवावसंतितुलसीदले ॥ १० ॥
तुलसीकाष्टमालांतुप्रेतराजस्यदूतकाः॥
दृष्ट्वानश्यंतिदुरेणवातोधूतंयथारजाः ॥ ११ ॥

तुलसिमालिकांधृत्वायोभुंक्तेगारिनंदिनी ॥
सिक्थेसिक्थेसलभतेवाजपेयफलंशुभं ॥ १२ ॥
तुलसीकाष्टमालांयोधृत्वास्नानंसमाचरेत् ॥
पुष्करेचप्रयागेचस्नातंतेनमुनेश्वर ॥ १३ ॥
आलोक्यसर्वशास्त्राणिविचार्यचपुनःपुनः ॥
इदमेकंसुनिष्पंनंध्येयोनारायणःसदा ॥ १४ ॥
चक्रलांछनहीनस्यविप्रस्याविफलंभवेत् ॥
क्रीयमाणंचयत्कर्मवैष्णवानांविशेषतः ॥ १५ ॥
कृष्णमंत्रविहीनस्यपापिष्टस्यदुरात्मनः ॥
श्वानविष्टासमंचान्नंजलंचमदिरासमं ॥ १६ ॥

शैवमतमां.

विनाभस्मत्रिपुंड्रेणविनारुद्राक्षमालया ॥
पूजितोपिमहादेवनतस्यफलदोभवेत् ॥ १ ॥
महापातकयुक्तोवायुक्तोवाचोपपातकैः ॥
भस्मस्नानेनतत्सर्वंदहत्यग्निरिवेंधनं ॥ २ ॥
पृथिव्यांयानितीर्थानेपुण्यान्यायतनायच ॥
शिवलिंगेवसंत्येवतानिसर्वाणिनारद ॥ ३ ॥
महेशाराधनादन्यंनास्तिसर्वार्थदायकं ॥

अतःसदासावधानंपूजनीयोमहेश्वरः ॥ ४ ॥
अमितान्यपिपापानिनश्यंतिशिवपूजया ॥
तावत्पापानितिष्ठंतिनयावच्छिवपूजनं ॥ ५ ॥
लिंगार्चनविहीनस्यसमस्तानिष्फलाक्रिया: ॥
ततःसर्वार्थसिध्यर्थंलिंगपूजाविधीयते ॥ ६ ॥
सर्ववर्णाश्रमाणांचकलौपार्थिवमेवहि ॥
लिंगमहीजंसंपूज्यशिवसायुज्यमाप्नुयात् ॥ ७ ॥
दर्शनाद्बिल्ववृक्षस्यस्पर्शनाद्वंदनादपि ॥
अहोरात्रकृतंपापंनश्यतीनात्रसंशयः ॥ ८ ॥
अरुद्राक्षधरोभूत्वायात्किंचित्कर्मवैदिकं ॥
कुर्वन्विप्रस्तुमोहेननरकेपततिध्रुवं ॥ ९ ॥
देवाधिदेवःसर्वेषांत्र्यंबकःस्त्रिपुरांतकः ॥
तस्यैवानुचराःसर्वेब्रह्मविष्ण्वादयःसुरः ॥ १० ॥
विहायसांबमीशानंयजंतेदेवतांतरं ॥
तेमहाघोरसंसारेपततिपरिमोहिताः ॥ ११ ॥
तेधन्याःशिवपादपूजनपराःअन्योनधन्योजनाः ॥
सत्यंसत्यमिहोच्यतेमुनिवरासत्यंपुनःसर्वशा. ॥ १२ ॥
शंखचक्रेतापपिलायस्यदेहप्रदह्यते ॥

सजीवःकृपणःस्त्याजःसर्वधर्मबहिष्कृताः ॥ १३ ॥
यस्तुसंतप्तमुद्राभिःलिंगांकिततनुर्नराः ॥
ससर्वयातनाभोगीचांडालोजन्मकोटिषु ॥ १४ ॥
भक्त्यापंचाक्षरेणैवयःशिवसकृदर्चयेत् ॥
सोपिगच्छेच्छिवस्थानंशिवमंत्रस्यगौरवात् ॥ १५ ॥
पंचाक्षरेणमंत्रेणबिल्वपत्रैःशिवार्चनं ॥
करोतिश्रद्धयायुक्तोसगच्छेदैश्वरंपदं ॥ १६ ॥

आवां वचनो हजारोज नहीं पण लक्षा वधी मोटा मोटा ग्रंथमां मळी आवे छे तेथी लोकोने व्यामोह बहु थाय छे के आटला मार्गमां खरो कीयो आ वचन मानवुं के पेलु मानवु. देव पण घणा थया छे. पुराणना देवतो जुदा, गाम गामना ते जुदा, देश देशना जुदा अने प्रत्येकनुं प्रस्थान जुदुं अने एक बीजामां अपवाद घणा. धर्म शास्त्रनी व्यवस्था पण आवीज छे पण घणा मत थयाथी फलाणुं मत खरू छे एम कहेवातु नथी धर्म शास्त्र कामधेनुं जेवुं थयुं छे. जे वातनी इछा करो ते तेमां मळी आवे पुनर्विवाह बाबतमां स्मृत्यर्थ सार ग्रंथमां एक वचन लख्युं छे तेथी शी रीते मत भेद पड्यो छे ते जणाशे.

मृतेन्यस्मैप्रदातव्यामृतेसप्तपदात्पुरा ॥
पुरापुरूपसंयोगान्मृतेदेयेतिकेचन ॥
ऋतावदृष्टकंन्यैवपुनर्देयेतिकेचन ॥
आगर्भधारणात्कन्यांपुनर्देयेतिचापरे ॥

प्राचिन काळमां ब्राह्मण लोक पोतानो धर्म अने विद्यानो आभिमान राखता अने जे वाद करवा अवि तेनो पराभव करवाने वास्ते बहु महेनत लेता ते उपरथी केटला एक लोकोए दीग्वीजय कर्यो. आजना ब्राह्मणोए ए शरम मुकी दीधी छे. एज प्रमाणे क्षत्री पण जे युद्ध करवा आवे तेमने ना पाडता नहोता पण आज तो बधाए लोक तेजहीन थया छे.कोइ कोइने जवाब देतो नथी के पुछतो नथी विद्या बहु घटी गइ छे. शिवागितामां लख्युं छे के.

शक्तिवादरताःसांख्याःबुध्याबौध्यात्मवादिनः॥
इश्वरात्मेतिवैशेष्यामीमांसाकर्मवादिनः॥
सर्वनास्तितिचार्वाकविदांताब्रह्मवादिनः॥
एवंभ्रमतिवैसर्वेशास्त्रमोहसमन्विताः॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनशास्त्राभ्यासंत्यजेद्बुधः ॥

आ सर्व विचार उपरथी धर्मनी सुधारणा अवश्य छे के नहीं आ प्रश्न उत्पन्न थशेः—हाल जे ब्रह्मसमाज बंगाळी पंडीतोए नवो संप्रदाय चलाव्यो छे तेमा वेदांतमांथी एकेश्वरमत ले छे अने द्वैतमांथी उपासना ले छे अने कर्मकांड थोडु राखे छे.ए संप्रदाय सांप्रतकाळनी स्थीतीनी अनुकुळ छे के नहीं ए पण विचार गहन छे एनो निर्णय थयाी माणस न करे तो काळ करशे एमा संशय नथी. आद्य धर्म जे हतो ते आज चाले एवो नथी. ए सिद्ध थयुंछे. अने अनेक देवोनी उपासना हाल चाले छे ते पण नभशे एवुं लागतुं नथी माटे आ बधो विचार विचारवंत लोकोए ध्यानमां राखवालायक छे एज विनंती.

वेदादिक शास्त्रमा जे हिंसा करवानी लखी छे तेनुं बयान करी

बताव्यु छे हवे हिंसा करवानी शास्त्र विना जे रुढी छे ते वीशे विचार करीये छीये, हिंसानु मुळ एज छे के लोकोए नाना प्रकारना देवताओ छे एम मान्युं अने ते देवता शान्त तथा सत्व गुणी छे, एवु मानेलुं नहो, बधा देवता एवा मानेला छे के ते लोकोने पीडा करी सके छे अने जुदा जुदा प्रकारना विघ्नो उत्पन्न करे छे, वृष्टीने हरकत करे छे ने तेथी मनुष्य तथा पशु बाळक तथा स्त्री ए सघळाने दुख दे छे अने देव माहाक्रुर तथा निर्दय छे अने तेमने मद्य मास अने आव्या विना तेमनी तृप्ति थाय नही एवुं मुळथी धारेलु तेथी तेमनी तृप्तीने वास्ते अने पोतानी पीडा मटवाने सारु हिंसा करीने देवताओने भक्ष आपवानी चाल पडी वेदमा जे देवोनु वर्णन करेलुं छे ते एजं प्रकारनुं छे तंत्रमा जे वर्णन करेलु छे ते पण एज प्रकारनुं छे मंत्र शास्त्रमां अने रुढीमां जे देवताओ मानेला ते पण आवाज प्रकारथी ब्राह्मणनी सध्यामां पिशाचोने नसाडवा सारु भैरव, अने चामुन्डा आ बे देवोनी प्रार्थना छे ते बंने श्लोक नीचे मुजब —.

उर्ध्वकेशीविरूपाक्षीमांसशोणितभोजनी ॥
तिष्ठदेवीशिखावद्धेचामुंडेह्यपराजिते ॥१॥
तिक्ष्णदंष्ट्रमहाकायकल्पांतदहनोपम ॥
भैरवायनमस्तुभ्यंअनुज्ञांदातुमर्हसी ॥२॥
अपक्रामंतुभूतानिपिशाचाःसर्वतोदिशं ॥
सर्वेषामविरोधेनब्रह्मकर्मसमारभे ॥३॥

रमेश्वरने बळीदान आपे छे अने ते ईद जीलहेज महीनामा आवे छे. जीलहेज एटले मुसलमानोनी जात्रानु ठेकाणुं जे मक्का ताहां जवानो महीनो. जे माणस मक्के जई आवे छे तेने हज करी आव्यो केहे छे. जे जात्राए जाय छे ते ताहा जात्रामा बळीदान आपे छे अने नही गयो होय ते पोताना घरमाज आपे छे अने पशुनो वध करवो ते "नीयत" एटले बिस्मीलहा कहीने करवो. "भीस्मीलाह ए शब्दनो अर्थ फक्त परमेश्वर दयाळु छे एटलोज छे. उपर मुजब "नीयत" भण्या शिवाय वध जनावरनो थाय छे तेने ते लोको हराम केहे छे एटले तेवा पशुनु भक्षण करवुं ते अपवीत्र गणाय छे अने "नीयत" भणी जेनो वध थयेलो तेवा पशुनु भक्षण करवुं ते हलाल एटले पवीत्र गणे छे. एज मुजब ब्रह्माण लोकोमा जाहा वैदीक कर्म थाय छे ताहा "आप्यायन संस्कार," "प्रोक्षण,संस्कार" "उपाकरण संस्कार."जे पशुने थयो होय तेनु मांस हव्य तथा कव्य समजीने भक्षण करवानो निषेध राखता नहता. उपर मुजबनी ब्राह्मणनी व्यवस्था हती. हवे शुद्रादीक लोको शास्त्रनो आधार बलिकुल राखता नथी तथा कोई जातनो संस्कार पण करता नथी परतु बळीदान घणा करे छे. दसराने दीवशे घोडानी पायगामा, हाथीखानामा, रथखानामा, इत्यादी अराढे कारखानामां बकरा मारे छे. तोपो आगळ पण एज प्रमाणे करे छे. अने शमीनु पुजन करवा ज्यारी जाय छे ताहा पण पाडानो वध करे छे अने हाळीमा केटलाक गामोमा अने रजवाडामा जीवतु बकरुं होमेछे. काशी पासे विंध्यावासनी देवी छे त्या बारे मास आवी तरेहना बकराना बळी चालु रहे छे. एज मुजब पुनानी पासे कोन्डनपुर छे त्यापण उपर मुजब चाल छे. तेथी पोस मासमा ज्यारे जात्रा ए कुंड-

नपुरमा भराय छे त्यारे आखो ए मास त्या लहुनी नेहेर चाले छे. पुनानीज पासे वळी बीजु जेजोरी गाम छे त्या खंडोबा नामना देवनुं देवळ छे. आ खंडोबाने हजारो ब्राह्मण पोतानो इष्ट देव माने छे त्या पण बळीदान आपवानी रीत छे. पण त्या आवा काममा ब्राह्मणो सामेल थता नथी कारण के ए रुढी मार्ग गणे छे शास्त्र मार्ग छे नही एम ब्राह्मणो कहे छे. परंतु बंगाळामा एवाज स्थानको छे त्याहा आवी रीतना कर्म करवामा ब्राह्मणो सामेल थाय छे अने श्रौत यज्ञ ज्यां थाय छे तेमा बधा देशना ब्राह्मणो सामेल थाय छे. अग्निहोत्री शीवाय बीजो कोइ यज्ञ करतुं नथी. पशु यज्ञ. अग्निहोत्र. संन्यास आ गुजरात प्रांतमा तथा मारवाडमा विशेष चालता नथी तेनुं कारण आ प्रांतोमा श्रावक, वैष्णवनी वस्ती घणी छे माटे ब्राह्मण पोते धारे ते प्रमाणे करी शकता नथी पण द्रावीड, तेलंग, कर्नाटक, माहाराष्ट्र, हिंदुस्थान, काशी प्रयाग सुधी प्रांतोमा यज्ञ थाय छे. वैष्णवी मार्गना ब्राह्मणो छे ते लोटनो पशु करे छे पण शंकराचार्यना पंथना जे स्मार्त ब्राह्मण छे ते तेमनी नींदा करे छे ते विशे केटलाक पीष्ट पशु मीमांसा इत्यादिक ग्रंथ लखाया छे. वीनायकराव पेशवा स्मार्त छता पीष्ट पशुनो यज्ञ कर्यो माटे काशीना तमाम ब्राह्मणोए एने न्यात बहार मुक्यो हतो. सवाइ जेइसींधराजा जयपुरमा एक कळीयुगमा अश्वमेध कर्यो तेथी ते यज्ञ करावनारा ब्राह्मणो हजु सुधी नात बहार छे., दक्षणमा "वारकरी" एटले वीठावानो पंथ थोडा वरसथी एक नवो नीकळ्यो छे ते लोक बीजा वैष्णव पंथना लोको प्रमाणे बनतो महेनत करी हींसा बंध करे छे पण हींसानो पंथ प्राचीन काळथी मोटो चाल्यो आव्यो ते मुजब चालनारा लोको घणा छे. केटलाक लोक अज्ञानथी एम समजे छे के छोकराने ताव आव्यो के क्षय रोग थयो

नो ते देवनो एटले पोताना इष्ट देवनो कोप थयो माटे ते इष्ट देवमी जगो होय त्या जइ दस पाच रुपैया खरच करी बळीदान करे छे. आ मुजब लोको चाले ते उपरथी तेमने आपणे क्रुर विगेरे विशेषण लगाडी शकीये नहीं कारण के ते लोको मात्र पोतानी चालती आवेली रुढी मुजब चाले छे, ज्यारे तेओने सतधर्म तथा एक खरा इश्वरनुं ज्ञान थशे त्यारे तेओना मननी देवताओ भक्ष मागे छे विगेरे जे हाल कल्पनाओ छे ते पोतानी मेळेज मनमाथी नीकळी जशे. ब्राह्मणो समजे छे के यज्ञ कर्या शिवाय वरसाद थाय नहीं ते उपरथी एम वीचार करे छे के वरसाद थाय त्यारे हजारो जीवनुं कल्याण थाय तेमा दस पाच जीवनो कदी नाश थाय तो ते कांइ पाप ना कहेवाय. कारण आखा कुटंबनुं सरंक्षण थतुं होय तो तेमाना एकनो नाश थवानो होय तो थवा देवो एवुं शास्त्र मुजब छे. अने एक कुटंब नाशथी आखुं गाम बचतुं होय तो ते कुटंबनो नाश थवा देवो. अने गाम बचाववुं. एक आखा गामनो नाश थतो होय ने आखा देशनो बचाव थतो होय तो देशने बचाववो अने गामनो नाश थवा देवो एवी नीती छे. ते प्रमाणे देवता ज्यारे प्रसंन थाय छे अने वरसाद समृदी वीगेरे सघळी जोइती वस्तुओ आपी देशने आबाद करे छे त्यारे यज्ञ करी थोडा पशु बळीदानमा आपवा तेमा शी चिन्ता छे एवो विचार करी लोको बळीदान आपे छे हवे आ वात साची हशे तो बळी करवामा दोश नथी ए वात कबुल छे पण ए वात बाबत हाल आपणे शंशय नाहाडी शकीए छीए. परंतु जे वखतना लोकोए आ धर्म प्रगट करी चलाव्यो तेमने कशो संशय पड्यो होय एम मालम पडतुं नथी. तेमनो एवोज नीश्चय हसो के उपर मुजब यज्ञ विगेरे कर्याथी लोको तदन सुखी थाय छे तेमने ए अभ्यार्थ मालम पड्यो नहीं पण

यज्ञ करवा ते न्याय प्रमाणे छे एम समजता. ए विषे मोटी तकरार बौध्ये चलावी पण बौध्य अवतार थइने वेदीक धर्म डुबाव्यो एवां पण वचनो घणेक ठेकाणे लखेला मळी आवे छे. पण नोरुपाय होवाथी केटलाक ब्राह्मण दया धर्म मानवा लाग्या. पण वेद शास्त्र छे ते कायम छे तेथी वेद धर्म दया धर्मने वीरुद्ध छे के नथी ए समजवुं मुश्केल नथी. ज्यां सुधी ब्राह्मण वेदने माने छे त्यासुधी ए वेद धर्मिज कहेवाय पछी मतलबने वास्ते गमे तेम बोले तेनी फीकर नथी.

बुद्धरूपंसमास्थायसर्वरूपपरायणः
मोहयन्सर्वभूतानितस्मैमोहात्मनेनमः ८६

भीष्मस्तवराजभारते

जे माणस एम कहे छे के वेद मारु धर्म पुस्तक छे अने यज्ञ करावने वास्ते हुं यज्ञो पवित धारण करुं छुं तेणे दया धर्म प्रतिपादन करवानो अधिकार नथी. स्वामी शंकराचार्य पण एम बोल्या छे. हालना ब्राह्मण कोई अज्ञान पणाथी, प्रतिपादन करे तो एटलुंज केहेवाय के वेदशास्त्र अने यज्ञो पवितनो अर्थ जाणतो नथी, कींवा जाणीने स्वार्थने वास्ते कपट करे छे वेदनुं खंडन करीने जे करशे ते सत्यवादी जाणवो नहि तो शास्त्रमां एक, पेटमा एक मोहमा एक. एवुं जे चलावशे ते सत्यवादी केम थाय. ?



शुद्धि पत्र.

पृ.	पं.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२	६	अच्युतं	दच्युतं
९	१०	त्रिविध्या ·	त्रिविद्या
२९	६	छापा	छापि
३१	६	दशिणे	दक्षिणे
४३	१४	द्वतीया	द्वितीया
४४	१४	तू	तू
५७	२२	श्रोतीय	श्रोत्रिय
६५	२	रा	सं
६८	८	ज्ञा	ज्ञाँ
७२	२३	उ	उरू
७७	२०	पार्द्रि	परार्द्रि
९६	८	कुर्मनकुर्वंति	कर्मनकुर्वंति

निगम प्रकाश

ग्रंथनु परिशिष्ट.

हिंसा विशे वेदमां काशि तकरार छेज नहीं, जनावरोनी दया ए ग्रंथमां नथी. एटलुज नहीं पण मनुष्यने पण बळि करता. अने नरमेधना मोटा विधानो लखेलां छे. नरमेध थयेला तेनि कथा पण वेदमां ठेकाणे ठेकाणे छे. ऐतरेय ब्राह्मणमां शुनःशेपाख्यान छे ते एज प्रमाणे छे. भागवतमा जडभरतनी कथा एज प्रकारनी छे. वैदिककाळमा हिंसा विषे कोइना मनमां संशय हतोज नहीं. शाक भाजी कापवामां तथा समारवामां अने खावामां हाल कोइना मनमां संशय नथी. ते प्रमाणे ते काळमा जनावर विशे हतु, तेना प्रकार त्रण छे. देवकार्य अने पितृकार्यमां जनावर मारवा ए पुण्य गणता.केवल स्वर्गे जवानु साधन एनेज समजता. मनुष्य पोताने निर्वाह अर्थे खायतो विधि छे एमां पाप के पुण्य कांइ गणता नहोता. अने विना कारण कोइनो जीव लेवो ए पाप. ए प्रमाणे वेदनु अनुशासन छे. पछि बौध्य अवतार थयो अने कळि उत्पन्न थयो त्यारे हिंसा अहिंसानो मोटो टंटो उभो रह्यो. बौध्य मतनो सारी पेठे असर थयो ते वखत भारत पंथ थयो एम लागे छे. ब्राह्मण, क्षत्रि, वैश्य, एमणे पोतानां वेदनो अभिमान छेक मुक्यो नहंतो अने बौध्यनो उपदेश एमना मनमा सारी पेठे असर थई गयो हतो तेथी भारतमा हिंसा ए शुं! अहिंसा ए शुं! मांस खावूं के न खावूं! ए विषे घणी तकरारो अने प्रश्नोत्तर लखेला छे. ते सर्वनो इत्यर्थ एटले सारांश एम जणाय छे के वेद विहित

हिंसा करवी अन्यत्र अहिंसा पाळवी. ते वखत बे पंथ निकळ्या हता एक प्रवृत्ति अने बीजो निवृत्ति. प्रवृत्ति मार्गवाळा वेदने अनुसरीने चालता. अने ते वेदना अभिमानी हता. आजना अग्निहोत्रि, दिक्षीत, श्रौति, याज्ञिक,इत्यादि कर्मकांड चलावेछे तेवा ए प्रवृति मार्गवाळा हता. बीजा निवृतिवाळा तेमणे वेद मार्गनो त्याग कर्यो अने साधु सन्यासी थया हता तेमनो आग्रह एवो हतो के कोइ प्रकारथी हिंसा न करवी वेदमां मंजूर करी होयतो फिकर नहीं पण वैदिक कर्म न करवा.

केटलाएक वेदना अने श्रौत सूत्रना वचनो निगम प्रकाश पुरो थया केडे जोवामा आव्या, तेनो संग्रह आ परिशिष्टमा कर्यो .छे. तेज प्रमाणे भारतनो ग्रंथ मुंबईमा छाप्यो छे ते उपरथी श्लोक लख्या छे ते पण वाचवा लायक छे.

ताण्डय महाब्राह्मण.

आ ग्रंथ सामवेदना पेटामा छे, ते उपर शायना चार्यनु भाष्य छे तेमा एम लख्युंछे के.

यस्यनिःश्वसितंवेदायोवेदेभ्योखिलन्जगत् ॥
निर्ममेतमहंवन्देविद्यातीर्थमहेश्वरं ॥१॥
तत्कटाक्षेणतद्रूपंदधद्बुक्कमहीपतिः।
आदीशत्सायनांचार्यवेदार्थस्यप्रकाशने ॥२॥

अर्थ—वेद ए परमेश्वरनो शब्द छे वेदथी सर्व जगत् निर्माण थयुं छे माटे ते ईश्वरज बुकराजा उपर कृपा करी छे तेनी आज्ञाथी

वेदनो प्रकाश करवाने वास्ते भाष्य कर्युं छे. ॥ ए सायनाचार्य ५०० वरस पहेला विजयनगरीमा कर्णाटक प्रांतमा, बुक्कराजानो आश्रित हतो एने माधव पण कहे छे. अने संन्यासि थया पछि विद्यारण्य स्वामि पण कहेछे.

आ ग्रंथमा अनेक क्रतु विधानो लख्या छे तेना नाम.

१ अग्निष्ठोमादिसप्त क्रतु	१ राट् क्रतु
१ औपसद क्रतु	१ ज्योति क्रतु
१ चतुष्ठोम क्रतु	१ ऋषभाख्य क्रतु
१ उद्भाद्दलभित क्रतु	१ कुलायाख्य क्रतु
१ इंद्रस्तोम क्रतु	१ त्रिकद्रुक षड्रात्र
१ निधन क्रतु	१ प्रजापति सप्तरात्र
१ वसिष्ठ चतुरात्र	१ ऐंद्रसप्तरात्र
१ विश्वामित्रसंजय चतुरात्र	१ जनक सप्तरात्र
१ पंचशारदीय पंचरात्र	१ देव नवरात्र
१ विश्वजित् एकादशरात्र.	१ विंशतिरात्र
१ प्रक्षाख्य क्रतु	१ त्रय त्रिंशद्रात्र
१ चैत्ररथ क्रतु	१ चत्वारिंश द्रात्र
१ गर्ग क्रतु	१ एकषष्टिरात्र क्रतु.
अंगिरसामयन क्रतु	सहस्त्र संवत्सरसत्र
शतरात्र क्रतु	सर्प सत्र
द्वादश संवत्सरसत्र	विश्वसृजमयन क्रतु
षड्त्रिंश त्संवत्सरसत्र	आदित्यपृष्ठामयन क्रतु
सारस्वतसत्र	संवत्सरसत्र.

सर्व सूत्रमां ब्राह्मण क्षत्रि वैश आ त्रि वर्गनुं कर्म, उपनयन वि-वाह, अंत्येष्टि,इत्यादि थोडा फरकथी बतावेला छे यज्ञ करवानो पण ए त्रि वर्गने अधिकार छे.

ताण्डय ब्राह्मणना वचनो नीचे लख्या छे.

परिश्रौपशून्नियुंजन्ति। अध्याय १७ खंण्ड १३ मंत्र ४

वैश्यंयाजयेत् ॥ १८--४--५

एतद्वैवैश्यस्यसमृद्धंयत्पशवःपशुभिरेवैनं

समर्धयति ।। १८--४--६

ज्योतिर्वाएषो ऽग्निष्टोमोज्योतिष्मंतं पुण्यलोकंजयतियए वंविद्वानेतेनयजते १९--११--११

स्वाराज्यंगच्छतियएवंवेद ॥ १९--१३--२

परमेष्ठितांगच्छतियएवंवेद ॥ १९--१३--४

अथैषविघनः ॥ १९--१८--१

इंद्रोऽकामयतपाप्मानंभ्रातृव्यंविहन्यामिति.सएतंविघनम पश्यत् ॥ १९--१८--२

एकादशरशनाएकादशपशवःएकादशयूपाभवन्ति ।।

२०--२--४

तयासमुद्यतयाराज्यायंयंकामंकामयतेतंतमभ्यश्नुते यएवंवेद ॥ २०--२--५

अजोग्निपोमियः २१--१४--११
ऐन्द्रामारुताउक्षाणीमारुत्योवत्मतयैः २२--१४--१२
पशुकामोयजेत् २२---६---२
सौमपौंपपशुमुपालभ्यमालभेरन् २३--१६--४

एव एक ऋतु करवामा फल लख्यु छे कोइथी इंद्र पद, कोइथी ब्रह्मानुं पद, कोइथी प्रजा, पशु, अन्न, राज्य अधिकार, इत्यादि प्राप्त थाय छे ते विशे घणाएक अर्थ वादरूपे प्राचीन इतिहास लख्या छे. के प्रजापतिए वरसाद रोक्यो त्यारे फलाणो यज्ञ कर्यो तेथी सारो वर्साद पड्यो अने प्रजा सुखी थई जनावरो मरी जता हता ते वखत जनावरोनो स्वामिरुद्र पशुपति, तेने वास्ते यज्ञ कर्यो, त्यारे जनावर रह्या अने वृद्धि पाम्या एवी एवी कथा पण लखेली छे तेथी ते क र्मनु प्रयोजन बताव्यु छे विधान अने मंत्र विनियोग लख्यो छे ए प्रमाणे अनेक प्रकारना क्रतु लख्या छे चारे वेदमा अने सूत्रमा एज विषय छे

उपर लखेला वचनोनो अर्थ

यूप, न होयतो परिधिने जनावर बाधवु १७ १३--२
वाणियाए यज्ञ करवो १८-४-५
तेणे करीने वाणियानि लक्ष्मी वधेछे १८-४-६
अग्निष्टोम यज्ञ कर्याथी मनुष्य पुण्य लोकमा जाय छे १९-११-११
आ वात जे जाणेछे ते स्वर्गमा जाय छे १९-१३ २
ब्रह्मदेवना स्थानमा जाय छे १९ १३-२

विघन यज्ञ बतावुछुं १९--१८--१

पुर्वे इंद्रदेवे इछाकरी, के आपणा शत्रु शि रिते मरशे,
त्यारे तेणे आ यज्ञ विधी कर्यो १९--१८--२

अगीयार दोरडा वडे अगीयार थाभलाने अने अगीयार जनाव-
रो बाधवा. २० -२--४

आ यज्ञ कर्याथी जे मनमा धारे ते सिद्ध थाय छे. २०--२--५

अग्निषोम देवने बकरो आपवो २१--१४--११

इद्र अने मरुत देवने गाय आपवी अने मरुत देवने वा-
छडो आपवो. २१--१४--१२

जेने पशुनि वृद्धि जोइये तेणे यज्ञ करवो २३--६--२

सोम अने पुषा देवताने अर्थे पशु मारवो २३--१६- ४

गोपथ ब्राह्मण, द्वितीय प्रपाठक ॥

ॐ मा ऽ सीयंन्तिवाआहिताग्नेरग्नयःतएनमेवाग्नेऽ
भिध्यायन्तियजमानंयएतमैंद्राग्नंपशुषष्ठेषष्ठेमासेआलभते॥

आश्वलायन

श्रौतसूत्र,उत्तरपट्क, ६ ध्याये

सत्पमीकंण्डिका

वैश्वकर्मणमृपभंमहाव्रते १३

नारायणवृत्ति·

एतेसर्वेगोपशवः

अन्वहंवैकैकशएकादशिनाम् ८

नारायणवृत्ति

एकादशिनामेवएकैकमादितआरभ्यअहन्यहनीक्रमेणा लभेरन्

उत्तरषड्क २ ध्याये

सूर्यस्तुतायशस्काम :

गोसवविवधौपशुकाम :

वाजपेयेनाधिपत्यकाम :

४ अध्याये

ज्योतिर्ऋद्धिकामस्यनवसप्तदश:प्रजातिकामस्य

५ ध्याये

आङ्गिरसंस्वर्गकाम:चैत्ररथमन्नाद्यकाम:

अत्रैश्चतुर्वीरंवीरकाम:जामदग्नंपुष्टिकाम:

ऋतूनापडहंप्रतिष्ठाकाम:संभार्यमायुष्काम:

संवत्सरप्रवल्हंश्रीकाम:अथगवामयनंसर्वकाम:

अर्थ —प्रत्येक छ छ मासे ऐंद्राग्नि देव प्रीत्यर्थ पशुनो यज्ञ करवो गोपथ ब्राह्मणे

महा व्रत यज्ञमा ऋषभ एटले बळद आपवो आश्वलायन

पशु एकादशनीमां नित्य एक एक पशु मारवो	आश्वलायन
सूर्य स्तुता यज्ञ कर्याथी अन्न मळेछे	आ०
गोसव यज्ञ कर्याथी पशु प्राप्ति थायछे.	आ०
वाजपेय यज्ञ कर्याथी अधिकार मळेछे	आ०
ज्योति यज्ञ कर्याथी संमृद्धि थायछे.	आ०
नव सप्तदशथी प्रजा थायछे	आ०
आङ्गिरसथी स्वर्ग प्राप्ति थायछे	आ०
चैत्ररथथी धान्य वृद्धि थायछे	आ०
अत्रेश्चतुर्वीर कर्याथी धैर्य वृद्धि थायछे	आ०
जामदग्न्यथी प्रकृति सारी थायछे	आ०
षड्हथी प्रतिष्टा मळेछे	आ०
सभार्यथी आयुष्य प्राप्ति थायछे	आ०
सवत्सरप्रवत्हथी लक्ष्मी मळेछे	आ०
गवामयनथी सर्व कामना सिद्ध थायछे	आ०

लाट्यायनियश्रौतसूत्र

उक्षाचेदनूबंध्यऔक्षणोरन्ध्रे

प्रथमप्रपाठक.पष्टिकाण्डिका.सूत्र ४२

ऋषभआर्षभं.	१--६--४३
अजआजिगं.	१--५--४६
मेषऔर्णायवं.	१--६--४७

नइतिशाण्डिल्यायनः ८--२--१२

एतंमृतंयजमानहविर्भिःसहजीपेयज्ञपात्रेश्चाहव
नीयेप्रहृत्यप्रव्रजेयुरितिशाण्डिल्यः ८--८--६

आस्येहिरण्यमवधायानुस्तरणिवयागोमुखंव
पयाप्रछाद्यतत्राग्निहोत्रहवनीतिरश्चीम्. ८--८--२२

वैश्यंयंविशःस्वराजानःपुरस्कुर्वीरन्सगो
सवेनयजेत. ९--४--२२

विघ्नाभ्यांपशुकामोयजेताभिचरन्वा. ९--४--२३

राजाश्वमेधेनयजेत. ९--९--१

पंचशारदीयेपशुबन्धयजेत. ९--१२--१०

लाट्यायनसूत्र.

अर्थ.

बळदनो यज्ञ करता बळदनो मंत्र भणवो. १-६-४२

आखलानो यज्ञ करता आखलानो मंत्र भणवो. १-६-४३

बकरानो यज्ञ करता बकरानो मंत्र भणवो. १-६-४६

गाडरनो यज्ञ करता तेनो मंत्र भणवो. १-६-४७

काळजानो होम करता उपस्थान मंत्र भणवो. २-२-१०

यज्ञनी दीक्षा लीधा,पछी शुद्र साथे भाषण न करवुं. २-२-१६

गाय बांधवाने ठेकाणे यज्ञ करता जनावरोनी वृद्धि थाय छे. ३-५-२१

स्मशानमां कर्याथी शत्रु नाश थाय छे. ३-५-२३

जनावरना काळजानो होम कर्या पछी वर्तु करावबुं	४-४-१८
एक मास पछी पशु करवो.	४-८-१४
पशु उपर पाणि छाटवुं	५-३ १७
अग्नि षोम देवने काळजानो होम करति वखते पाणि छाटवुं	५ ९ १४
ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य ए त्रण सामान्य छे एवुं शांडिल्याचार्ये कह्यूं छे.	८-२ १०
सगा वहालां ए पण सामान्य छे एवुं धानजपाचार्ये कह्युं छे.	८-२ ११
स्वदेशीय जन समान्य छे एवुं शांडिल्य बोल्यो छे	८-२ १२
यज्ञकर्ता यजमान मरी जाय तो तेना उपर यज्ञना पात्र नाखवा	८-८-६
तेना मोंमा सुवर्ण घालीने गायनु काळजुं काढीने तेना मुख उपर मुकवु ए गायनु नाम अनुस्तरणी	८-८-१२
वाणियाए गोसव करवो	९-४ २३
विधन यज्ञथी पशु वृद्धि थाय छे.	९-४ २३
राजाए अश्व एटले घोडानो यज्ञ करवो	९-९-१
पचशारदीय यज्ञमा पशु मारवो	९-१२-१०

॥ भारत ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

गार्हस्थ्यस्यचधर्मस्ययोगधर्मस्यचोभयोः॥
अदुरसंप्रास्थितयोःकिंस्विच्छ्रेयःपितामह ॥१॥

भीष्मउवाच ॥

उभौधर्मौमहाभागावुभौपरमदुश्चरौ ॥
उभौमहाफलौतौतुसद्भिराचरितावुभौ ॥

कपिलउवाच ॥

नाहंवेदान्विनिंदामीनविवक्ष्यामिकर्हिचित्
पृथगाश्रमिणांकर्माण्येकार्थानीतिनःश्रुतं ॥

स्यूमरश्मिरुवाच ॥

स्वर्गकामोयजेतेतिसततंश्रूयतेश्रुतिः ॥
फलंप्रकल्पपूर्वंहिततोयज्ञःप्रतायते ॥१॥
अजश्चाश्वश्चमेषश्चगौश्चपक्षिगणाश्चये ॥
ग्राम्यारण्याश्चौषधयःप्राणस्यान्नमितिश्रुतिः ॥
तथैवान्नंह्यहरहःसायंप्रातर्निरूप्यते ॥
पशवश्चाथधान्यंचयज्ञस्यांगमितिश्रुतिः ॥
एतानिसहयज्ञेनप्रजापतिरकल्पयत् ॥
तेनप्रजापतिर्देवान्यज्ञेनायजतप्रभु. ॥
तदन्योन्यवराःसर्वेप्राणिनःसप्तसप्तधा ॥
यज्ञेषुपाकृतंविश्वंप्राहुरुत्तमसंज्ञितं ॥

एतच्चैवाभ्यनुज्ञातंपूर्वैःपूर्वतरैस्तथा ॥
कोजातुनविचिन्वीतविद्वान्स्वांशक्तिमात्मनः ॥
पशवश्चमनुष्याश्चद्रुमाश्चौषधिभिःसह ॥
स्वर्गमेवाभिकांक्षंतेनचस्वर्गस्ततोमखात् ॥
औषध्यःपशवोवृक्षावीरुदाज्यंपयोदधि ॥
हविर्भूमिर्दिशःश्रद्धाकालश्चैतानिद्वादश ॥
ऋचोयजूंपिसामानियजमानश्चषोडश ॥
अग्निर्ज्ञेयोगृहपतिःससप्तदशउच्यते ॥
अंगान्येतानियज्ञस्ययज्ञोमूलमितिश्रुतिः
यज्ञार्थानिहिसृष्टानियथार्थाश्रूयतेश्रुतिः
एवंपूर्वतराःसर्वेप्रवृताश्चैवमानवाः ॥
यज्ञांगान्यपिचैतानियज्ञोक्तान्यनुपूर्वशः ॥
विधिनाविधियुक्तानिधारयंतिपरस्परं ॥
नतस्यत्रिपुलोकेपुपरलोकभयंविदुः
इतिवेदावदंतिहसिद्धाचपरमर्पयः ॥
यजतःस्वर्गविधिनाप्रेत्यस्वर्गफलंलभेत् ॥
इतिश्रीमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेगोकापिलियेअष्टप
ञ्चयधिकद्विशततमोध्यायः ॥२६८॥

स्यूमरश्मिरुवाच ॥

यथामातर माश्रित्यसर्वे जीवंतिजंतवः ॥

एवंगार्हस्थ्यमाश्रित्यवर्ततइतराश्रमाः ॥

गृहस्थएवयजतेगृहस्थःस्तप्यतेतपः ॥

गार्हस्थ्यमस्यधर्मस्यमूलंयत्किंचिदेजते ॥

सर्वमेतन्मयाब्रह्मन्शास्त्रतःपरिकीर्तितं ॥

नह्यविज्ञायशास्त्रार्थंप्रवर्ततेप्रवृत्तयः ॥ अ० २६९

युधिष्ठरउवाच ॥

अहिंसापरमोधर्मःइत्युक्तंबहुशस्त्वया ॥

श्राद्धेषुचभवानाहपितॄनामिषकांक्षिणः ॥

मांसैर्बहुविधैःप्रोक्तंस्त्वयाश्राद्धविधिःपुरा ॥

अहत्वाचकुतोमांसमेवमेतद्विरुध्यते ॥

जातोनःसंशयोधर्मेमांसस्यपरिवर्जने ॥

दोषोभक्षयतःकःस्यात्कश्चाभक्षयतोगुणः ॥

भीष्मउवाच ॥

अप्रोक्षितंवृथामांसंविधिहीनंनभक्षयेत् ॥

प्रवृत्तिलक्षणोधर्मःप्रजार्थिभिरुदाहृतः ॥

यथोक्तंराजशार्दुलंनतुतन्मोक्षकांक्षिणां ॥

हविर्यत्संस्कृतंमंत्रैःप्रोक्षिताभ्युक्षितंशुचि ॥
वेदोक्तेनप्रमाणेनपितृणांप्रक्रियासुच ॥
अतोन्यथावृथामांसमभक्ष्यमनुरब्रवीत् ॥
एतत्तेकथितंराजन्मांसस्यपरिवर्जने ॥
प्रवृत्तौचनिवृत्तौचविधानमृषिनिर्मितं ॥
इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनपर्वणिदानधर्मेमांसभक्षणनि-
षेधेपंचदशाधिकशततमोध्यायः ॥११५॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

किंचाभक्ष्यमभक्ष्यंवासर्वमेतद्वदस्वमे ॥
दोषाभक्षयतोयेपितन्मेब्रूहीपितामह ॥

भीष्मउवाच ॥

एवमेतन्महाबाहोयथावदसिभारत ॥
नमांसात्परमंकिंचिद्रसतोविद्यतेभुवि ॥
सद्योवर्धयतिप्राणान्पुष्टिमग्र्यांदधातिच ॥
नभक्ष्योभ्यधिकःकश्चिन्मांसादस्तिपरंतप ॥
विवर्जितेतुबहवोगुणाःकौरवनंदन ॥
येभवंतिमनुष्याणांतान्मेनिगदतःशृणु॥
विधिनावेददृष्टेनतद्भुक्तेहनदुष्यति ॥

यज्ञार्थेपशवःसृष्टाइत्यपिश्रुयतेश्रुतिः ॥

अतोन्यथाप्रवृत्तानांराक्षसोविधिरुच्यते ॥

क्षत्रियाणांतुयोदृष्टोविधिस्तमपिमेशृणु ॥

वीर्येणोपार्जितंमांसयथाभुंजन्नदुष्यति ॥

आरण्याःसर्वदैवत्याःसर्वशःप्रोक्षितामृगाः ॥

अगस्त्येनपुराराजन्मृगयायेनपूजिते ॥

अतोराजर्षयःसर्वेमृगयांयांतिभारत ॥

नहिलिप्यंतिपापेननचैतत्पानकंविदुः ॥

पितृदैवतयज्ञेषुप्रोक्षितंहविरुच्यते ॥

प्राणदानात्परंदानंनभुतोनभविष्यति ॥

अनिष्टंसर्वभूतानांमरणंनामभारतं ॥

सर्वयज्ञेषुवादानंसर्वतीर्थेषुवाप्लुतं ॥

सर्वदानफलंवापिनैतत्तुल्यमहिंसया ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनपर्वणीआनुशासन०दानधर्मे अहिंसाफलकथनेषोडशाधिकशततमोध्यायः ११६

व्यासउवाच.

यज्ञेनतपसाचैवदानेनचनराधिप ॥

पूयतेनरशार्दुलनरादुष्कृतकारिणः ॥

राजसूयाश्वमेधौचसर्वमेधंचभारत ॥
नरमेधंचनृपतेत्वमाहरयुधिष्ठिर ॥
यजस्ववाजिमेधेनविधिवद्दक्षिणावता ॥
बहुकामान्नवित्तेनरामोदाशरथिर्यथा॥
इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणीतृतीयोध्यायः ॥
ततोयूपोछ्रयेप्राप्तेषड्बैल्वान्भरतर्षभ ॥
खादिरान्बिल्वसमितांस्तावतःसर्ववर्णितः ॥
देवदारुमयौद्वौतुयूपौकुरुपतेर्मखे ॥
श्लेष्मांतकमयंचेकंयाजकाःसमकल्पयन् ॥
इष्टकाःकांचनीश्चात्रचयनार्थंकृताभवन् ॥
शुशुभेचयनंतच्चदक्षस्येवप्रजापतेः ॥
ततोनियुक्ताःपशवोयथाशास्त्रंमनीषिभिः ॥
तंतंदेवंसमुद्दिश्यपक्षिणःपशवश्चये ॥
ऋषभाःशास्त्रपठितास्तथाजलचराश्चये ॥
यूपेषुनियताचासीत्पशूनांत्रिशतीतथा ॥
अश्वरत्नोत्तरायज्ञेकौंतेयस्यमहात्मनः ॥
सयज्ञःशुशुभेतस्यसाक्षाद्देवर्षिसंकुलः॥
सिद्धविप्रनिवासैश्चसमंतादभिसंवृतः ॥

तस्मिनसदसिनित्यास्तुव्यासशिष्याद्विजर्षभाः ॥
सर्वशास्त्रप्रणेतारःकुशलायज्ञसंस्तरे ॥
नारदश्चबभूवात्रतुंबुरुश्चमहाद्युतिः ॥
इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिअनुगीतापर्वणिअश्वमेधारंभेअष्टाशीतितमोध्यायः ॥८८॥

वैशंपायनउवाच ॥

श्रपयित्वापशूनन्यान्विधिवद्विजसत्तमाः ॥
ततुरंगंयथाशास्त्रमालभंतद्विजातयः ॥
ततःसंश्रप्यतुरगंविधिवद्याजकास्तदा ॥
उपसंवेशयन्राजंस्ततस्तांद्रुपदात्मजां ॥
उधृत्यतुवपांतस्ययथाशास्त्रंद्विजातयः ॥
उपाजिघ्रद्यथाशास्त्रंसर्वपापापहंतदा ॥
शिष्टान्यंगानियान्यासंस्तस्याश्वस्यनराधिप ॥
तान्यग्नौजुहुवुर्धीराःसमस्ताःषोडशर्त्विजः ॥
व्यासःसशिष्योभगवान्वर्धयामासतंनृपं ॥
ततोयुधिष्टिरःप्रादाद्ब्राह्मणेभ्योयथाविधि ॥
गोविंदंचमहात्मानंबलदेवंमहाबलं ॥
तथान्यान्वृष्णिवीरांश्चप्रद्युम्नाद्यान्सहस्रशः ॥

पूजयित्वामहाराजयथाविधिमहाद्युतिः॥
एवंबभूवयज्ञःसधर्मराजस्यधीमतः॥
बव्हन्नधनरत्नौघःसुरामैरेयसागरः ॥
सर्पिःपंकाह्रदायत्रबभुवुश्चान्नपर्वताः ॥
पशुनांवध्यतांचैवनांतंददशिरेजनाः ॥
विपाप्माभरतश्रेष्ठःकृतार्थःप्राविशत्पुरं ॥
तंमहोत्सवसंकाशंत्दृष्टपुष्टजनाकुलं ॥
इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिअनुगीतापर्वणि
अश्वमेधसमाप्तौऊननवतितमोऽध्यायः ॥८९॥

अर्थ.

युधिष्ठिर, धर्मराजा भीष्माचार्यने प्रश्न करे छे, के ग्रहस्थ अने साधु आ बेमांथी उत्तम धर्म कोनो ?

ते ऊपर भीष्माचार्ये जवाब दीधो के बे धर्म सारा छे.

पछि कपिलजी बोल्या के वेदनी निंदा हु करी शकतो नथी आश्रम प्रमाणे धर्म होय छे.

स्युमरश्मी ऋषी बोल्या के स्वर्गे जवाने यज्ञ करो एप्रमाणे हमेष वेद बोल्यो छे तेथी परंपराथी यज्ञ करता आव्या छे. बकरानो, अने घोडानो, अने गाडरनो, गायनो, अने पखि जनावरोनो, यज्ञ थायछे. गाममा अने सिममा जे जनावरो छे अने वनस्पति छे ते सर्वे भक्षण करवा एवुं वेदमा कह्युं छे अने जनावरो अने धान्य आ बेथी यज्ञ थाय

छे एम वेद कह्युं छे, ए प्रमाणे प्रजापति देवे ठराव करीने यज्ञ विधि, जनावरो, अने धान्य ए सर्व उत्पन्न कर्यो. ते प्रमाणे देव प्रजापतिना ठराव प्रमाणे यज्ञ करवा लाग्या, यज्ञने वास्ते जनावरनो उपयोग करवो ते ब्रह्मदेवनी आज्ञा प्रमाणे छे. अने ते प्रमाणे पुर्वापरथी करता आव्या छे. जनावर, मनुष्य, वनस्पति, ए सर्व स्वर्गे जवानी इच्छा करे छे. जनावर, धान्य, इत्यादि १२ प्रकारनी सामग्री यज्ञमा जोइए ते अने वेद मळी एकंदर १६ अने सत्तरमो अग्नि आ प्रमाणे यज्ञनी सामाग्रि वेदमा लखी छे. तेथी पूर्वेथी मनुष्यो यज्ञ करवा लाग्या. आ सर्व पदार्थ यज्ञार्थ कर्या छे. एम वेदमा लख्यूं छे. एज प्रमाणे सर्व वेद, सिद्ध पुरुष, महाऋषी ए सर्व जणनो एज पुकार छे. त्यारे एमा पातक शानुं होय ? यज्ञथी परभवमा सारूं थाय छे.

शांतिपर्वमा ए प्रमाणे कथा २६८मा अध्यायमा छे.

स्युमरश्मि ऋषी कहे छे के—सर्व जीव, माता आश्रयथी जीवे छे. ते प्रमाणे ग्रहस्थने आश्रये, सर्व साधु इत्यादिक जीवे छे गृहस्थथी यज्ञ थाय छे तप थाय छे माटे गृहस्थाश्रमी लोक धर्मनो टेको छे. आ बधि बाबत शास्त्र विचार करीने में कही छे.

आ प्रमाणे कथा २६९मा अध्यायमा छे.

धर्मराजा कहे छे हे आचार्य अहिंसा मोटो धर्म छे एम पण घणी वखत कह्यूं, अने तमेज श्राद्धमां अनेक प्रकारनुं मास खावानी छुट आपी छे. त्यारे हिंसा कर्या विना मांस शी रीते मळशे. मारो आ संशय जतो नथी. माटे एनो खुलासो करो. यज्ञ सिवाय, अने शास्त्रे छुट आपी छे ते सिवाय, मास

न खावूं. एनुं नाम प्रवृत्ति धर्म परंतु मोक्षनी इच्छा होय तेनो आ धर्म नथी. वेदना मंत्रथी पवित्र थएलुं, अने पाणी छांटीने प्रोक्षण करेलुं मांस पवित्र छे ते खावानी हरकत नथी, आ सिवाय मांस खावूं नहीं. प्रवृत्ति अने निवृत्ति ए बे धर्म ऋषी लोके कह्या छे.

अनुशासन पर्वमां ए कथा ११५मा अध्यायमां छे.

धर्मराजा पुछे छे के हे आचार्य शुं खावूं ने शुं न खावूं ए मने कहो. भीष्म जवाब दे छे के हे धर्मराजा, आ पृथ्वी उपर मांस जेवो उत्तम पदार्थ नथी, जीवने पुष्टि आपनार, शरिरने वृद्धि करनार, मांस जेवो बिजो पदार्थ छेज नहीं. तत्रापि तेमो त्याग करवामां पण बहु गुण छे. वेदाज्ञा प्रमाणे मांस खावामां दोष नथी, कारण यज्ञार्थ परमेश्वरे पशु जनावरो उत्पन्न कर्यां छे, एम वेदमां लख्युं छे. ते सिवाय मांस खावूं ए राक्षसी कर्म छे. क्षत्रि जातिनो धर्म छे, ते कहुं छुं. के तेमणे पोताना बळथी जनावरो मार्यां होय ते खावामां तेमणे दोष नथी. आगलि ऋषिने पण सर्व मृग, पशीनुं मांस आप्युं हतुं, सर्व राजर्षी शिकार करे छे. ते करवामां तेमने पाप नथी. श्राद्धमां यज्ञमां जे मांस खाय छे, ते देवोनुं उछिष्ट खाय छे प्राण सर्वने प्रीय छे माटे प्राण रक्षण करवो ए मोटुं दान छे. अहिंसा राखवाथी सर्व यज्ञ तप तिर्थनुं फळ मळे छे.

ए प्रमाणे कथा ११६ मा अध्यायमां छे.

व्यासजी कहे छे. पापी छे ते यज्ञ, तप, दानथी पवित्र थाय छे. राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ, नरमेध एवा अनेक प्रकारना यज्ञ छे, तेमांनो घोडानो यज्ञ तुं कर. पूर्वे रामचंद्रजीए ए यज्ञ कर्यो हतो.

छे एम वेद कह्युं छे. ए प्रमाणे प्रजापति देवे ठराव करीने यज्ञ विधि, जनावरो, अने धान्य ए सर्व उत्पन्न कर्यां. ते प्रमाणे देव प्रजापतिना ठराव प्रमाणे यज्ञ करवा लाग्या. यज्ञने वास्ते जनावरनो उपयोग करवो ते ब्रह्मदेवनी आज्ञा प्रमाणे छे. अने ते प्रमाणे पुर्वापरथी करता आव्या छे. जनावर, मनुष्य, वनस्पति, ए सर्व स्वर्ग जवानी इछा करे छे. जनावर, धान्य, इत्यादि १२ प्रकारनी सामग्री यज्ञमा जोइए ते अने वेद मळी एकंदर १६ अने सत्तरमो अग्नि आ प्रमाणे यज्ञनां सामाग्रि वेदमा लखी छे. तेथी पूर्वेथी मनुष्यो यज्ञ करवा लाग्या. आ सर्व पदार्थ यज्ञार्थ कर्या छे. एम वेदमा लख्युं छे. एज प्रमाणे सर्व वेद, सिद्ध पुरुष, महाऋषी ए सर्व जणनी एज पुकार छे. त्यारे एमा पातक शानुं होय? यज्ञथी परभवमा सारुं थाय छे.

शांतिपर्वमा ए प्रमाणे कथा २६८मा अध्यायमां छे.

स्युमरश्मि ऋषी कहे छे के—सर्व जीव, माना आश्रयथी जीवे छे. ते प्रमाणे ग्रहस्थने आश्रये, सर्व साधु इत्यादिक जीवे छे गृहस्थथी यज्ञ थाय छे तप थाय छे माटे गृहस्थाश्रमां लोक धर्मनो टेको छे. आ बधि बाबत शास्त्र विचार करीने में कही छे.

आ प्रमाणे कथा २६९मा अध्यायमा छे.

धर्मराजा कहे छे हे आचार्य अहिंसा मोटो धर्म छे एम पण घणी वखत कह्यूं, अने समेज श्राद्धमा अनेक प्रकारनुं मांस खावानी छुट आपी छे. त्यारे हिंसा कर्या विना मांस शी रीते मळशे. मारो आ संशय जतो नथी. माटे एनो खुलासो करो. यज्ञ सिवाय, अने शास्त्रे छुट आपी छे ते सिवाय, मांस

न खावूं एनुं नाम प्रवृत्ति धर्म परंतु मोक्षनी इछा होय तेनो आ धर्म नथी वेदना मंत्रथी पवित्र थएलुं, अने पाणी छाटीने प्रोक्षण करेलुं मांस पवित्र छे ते खावानी हरकत नथी, आ सिवाय मांस खावूं नहीं. प्रवृत्ति अने निवृत्ति ए बे धर्म ऋषी लोके कह्या छे.

अनुशासन पर्वमा ए कथा ११८मा अध्यायमा छे.

धर्मराजा पुछे छे के हे आचार्य शुं खावूं ने शुं न खावूं ए मने कहो भीष्म जवाब दे छे के हे धर्मराजा, आ पृथ्वी उपर मांस जेवो उत्तम पदार्थ नथी, जीवने पुष्टि आपनार, शरीरने वृद्धि करनार, मांस जेवो बिजो पदार्थ छेज नही, तत्रापि तेमो त्याग करवामां पण बहु गुण छे वेदाज्ञा प्रमाणे मांस खावामा दोष नथी, कारण यज्ञार्थ परमेश्वरे पशु जनावरो उत्पन्न कर्यां छे, एम वेदमा लख्युं छे ते सिवाय मांस खावूं ए राक्षसी कर्म छे क्षत्रि जातिनो धर्म छे, ते कहुं छुं के तेमणे पोताना बळथी जनावरो मार्यां होय ते खावामा तेमणे दोष नथी. आगस्ति ऋषिने पण सर्व मृग, पक्षीनुं मांस आप्युं हतुं, सर्व राजर्षी शिकार करे छे, ते करवामां तेमने पाप नथी, श्राद्धमा यज्ञमां जे मांस खाय छे, ते देवोनुं उछिष्ट खाय छे प्राण सर्वने प्रीय छे माटे प्राण रक्षण करवो ए मोटुं दान छे अहिंसा तत्परथी सर्व यज्ञ तप तिर्थनुं फळ मळे छे.

ए प्रमाणे कथा ११८ मा अध्यायमा छे.

व्यासजी कहे छे पापी छे ते यज्ञ, तप, दानथी पवित्र थाय छे. राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ, नरमेध एवा अनेक प्रकारना यज्ञ छे, तेमानो घोडानो यज्ञ लई कर पूर्वे रामचंद्रजीए ए यज्ञ कर्यो हतो

ए प्रमाणे अश्वमेध पर्वना ३ जा अध्यायमां ए कथा छे.
बिलिना, खेरना, देवदारुना अनेक खींटा यज्ञमां कर्या हता. इटो सुवर्णनी करी हति. चयन कुंड सुंदर रच्यो हतो. अने एक एक देव ने वास्ते पशु पक्षी बळद जलचर जनावरो एकंदर त्रणसे बांध्या हतां तेमां अश्व एटले घोडो बहु शोभिवंत देखातो हतो, सिद्ध अने ब्राह्मण, व्यासजी अने तेमना बहु शिष्य, सर्व कर्म जाणनारा अने नारदजी मोटा तेजस्वी अने तुंबरुऋषी, सभामां हता.

ए प्रमाणे कथा ८८ मा अध्यायमा छे.

वैशंपायन कहे छे. पछी ब्राह्मणोए सर्व जनावरोनु मांस राधीने तैयार कर्युं. अने शास्त्र प्रमाणे घोडानु मांस पण राध्यु राजा अने द्रौपदी राजपत्नीने उपसंवेशन संस्कार थयो. त्यार पछी घोडानु काळजु ब्राह्मणोए राजाना हाथमां आप्युं तेथी राजानु सर्व पाप गयुं. बीजा अंगनु मांसनो सोळ यात्विक मळीने हवन कर्यो ते सभामां श्रीकृष्णजी तेमनो भाइ बलदेवजी प्रद्युम्न वीगेरे हता त्यार पछी ब्राह्मणोनी पूजा अने दान कर्यां ए प्रमाणे धर्मराजाना घोडानो यज्ञ थयो. तेमा धन, धान्य, रत्न, अने दारु पीवानो पुष्कळ आप्यो हतो, अने घीनो कादव थयो हतो. अने अश्वना पर्वन थया हता जे जनावर केटला मार्या तेनी संख्या नहोती. ए प्रमाणे यज्ञ कर्याथी राजानु पाप गयुं, अने प्रजा तृप्त थइ.

ए प्रमाणे कथा ८९ मा अध्यायम, अश्वमेध पर्वमाछे.

निगमशास्त्रना ग्रंथ हजार भातना छे तेथी यक्ष प्रश्नमा युधिष्टिर राजाए पण एवो जवाब दीधो के

श्रुतिर्विभिन्नास्मृतयोपिभिन्ना ॥
नानाऋषीणांमतयोपिभिन्नाः ॥

त्यारे आपणो तो शो हिसाब. शास्त्र नवळु अने चाले नहिं एवुं थयुं त्यारे रूढी एना माथापर चढी बेठी. खरेखर विचार करता एवुं न थवुं जोइए; कारण के रूढीना कर्ता मुर्ख लोक होय छे, अने शास्त्रना कर्ता डाह्या होय छे पण घणा वरसथी शास्त्र लखवानुं के सुधारवानुं बंध पड्युं अने घणो काळ विती गयो. त्यारे शास्त्र काढीने जोइए तो सांप्रतकाळने कशुं मळतुं नथी. अनेक भातना शास्त्र उत्पन्न थया तेथी भ्रांतिनो डुंगर लोकोनी आगळ पड्यो, तेमांथी सार असार विचार करवानी शक्ति बद्दाप लोकोने क्याथी होय, धर्माध्यक्ष अने हिंदुराजा सर्व मुर्ख थया. शिक्षण पद्धति के परिषद रह्यूं नथी तेथी मन माने तेवा पंथ अने संप्रदाय निकळ्या. चंगी, भंगी लोको महंत थइ पड्या. हावे प्रसंगे धुतारा लोकोने सारी पेठे फाव्युं. आळसुं निरूपयोगी लोक खाय तेनु नाम पुण्य. अने मेहनतु खाय ते पाप. व्रत, तीर्थ, शांति, उद्यापन इत्यादि शांतिक पौष्टिकना ग्रंथ मोटा मोटा लखीने ब्राह्मण लोकोए पोतानो धंधो वधार्यो, तेथी भिख मागनारनी संख्या देशमां बहु वधी, पण उद्योग वध्यो नही. उद्योग अने विद्या तरफ कोईनु लक्ष नथी. अने ते काममा पैशो कोई आपतुं नथी तोफानी काममा देशनुं द्रव्य खर्चाय छे. माटे हावा काळमा जुना लोकोने कशुं सुझतुं नथी. तेमनी अक्कल काळना प्रखर प्रकाशथी गुम थई छे. नवा लोकोए आ काममां मन घालीने तपास करवो जोइए, अने सार शुं छे, असार शुं तेनो निर्णय करीने लोकोए कि

ये रहते चालवु अने भीख ओछी थाय अने उद्योग वधे एवी योजना करवी जोइए एज मनुष्य जन्मनुं सार्थक छे परमेश्वर कृपा करीने जे बुद्धि आपशे ते खरी.

कर्मकांड निरुपयोगी छे. आ सिद्धांत वेदमा एटले अरण्यक अने उपनिषदमां लख्यो छे, ज्यारे ब्राह्मण कर्मकांडनी निशानी, शिखा अने सूत्र तोडीने कर्म अने उपासना उपरथी हाथ उठावेछे, त्यारे आपण एम नथी केहेता के ए वटली गयो; पण तर्यो अने नारायण रूप थयो एम कहीये छीए त्यारे कर्मनो त्याग ए नर्कनुं साधन नथी ए वात सिद्धछे. पण व्यवहारमा ज्यां सुधी रहीये छीए त्यां सुधी एनी जरूर परमार्थ विषे कर्म उपयोगी नथी ए सिद्धांत जे दिवसथी सन्यास हिंदु लोकोना आचारमां पेठो ते दिवसथी कर्मनी केवळ निंदा थइ. आ प्रमाणे परस्पर निंदा थयाथी जेटला आधार रूप शास्त्र छे ते सर्वेनी निंदा थइ. निंदा वगर एक पण आधार रह्यो नाहिं. वेदांति कर्मनी निंदा करेछे. वैष्णव शैवनी करेछे, श्रोति वाममीनी करेछे. ए समजीने लोके शास्त्र मुकी दधुं अने रूढीने धर्म समजीने रूढीने वळगी रह्याछे. शास्त्र संबंधि वाद कोईने गमतो नथी; कारण तेमाथी काळुं निकळवानुं,अने वधारे फजेतीनुं कारण बनवानुं. तेथी कोई पण चर्चा करतुं नथी. ए वात आज थइ एम नथी, पण भारतमा पण एम कह्युं छे के.

धर्मस्यतत्वंनिहितंगुहायां
महाजनोयेनगतःसपंथाः ॥

रूढी उपर लोकोनी निष्ठा एवि मजबुत बेठी छे के जरा कोइ

रूढी विरुद्ध करे तो तेनी बुमो पडे छे, पण ते विशे शास्त्र शुं छे ए विचार करवाने कोई पण समर्थ नथी, अने इछा पण राखतुं नथी. लोक एम कहे छे के जुना पोथांमा गमे तेम हशे पण हाल चाले छे ते खरं.एम थवाथी सुधारो कोइकरी सकतुं नथी. मनु एम कहेछे के

"पक्वान्नंफलवत्त्याज्यं"

पण ए वातनो रूढी नथी तेथी ते शास्त्र रद थयुं. तेज प्रमाणे.

कार्पासंकटिनिर्मुक्तंकौशेयकृतभोजनं

एथी रूढी उलटी छे. पोतापाने जेटलु अशुचित्व अडके छे एटलुं यज्ञोपवीतने अडकतुं नथी. सर्व ब्राह्मण, शास्त्रमा समान छता जुदा थया छे, अने वर्णमा जाति, अने जातिमां ज्ञाति रूढीथी थइछे. आ रूढीनुं जोर अने शास्त्रनी नीर्बळता समजीने इंग्रेज सरकारे अदालतने सारू कायदो ठराव्यो तेमा पण शास्त्रथी रूढी वधारे बळवान ठरावी छे. त्यारे रूढीना अनुयायी लोक ते सुधाराना रस्ता उपर शी रीते आवशे ते मोटो विचार छे.

रूढीनुं जोर एवुं छे के वैष्णवी मंदिरमा यज्ञ न करवो एवो मत राखे छे, पण, वेदना पारायणथी मंदिर पवित्र थाय छे. तेमा यज्ञनो विधी, अश्वमेध, नरमेध, इत्यादि विधि बोल्या छे, ते साभळवामा घणुं पुण्य जाणे छे. साभळवूं, पण करवूं नाहिं. त्यारे न करवानो विधि श्रवण करवामा पुण्य छे के नहि? आ प्रश्ननो मोटो विचार उत्पन्न थाय छे यजुर्वेद संहितामा ६००, जनावर अश्वमेधमा मारवा तेना नाम विगतवार लख्या छे, तेज प्रमाणे आश्लील भाषण लख्या छे, ते

होळिमा नीच लोक बोले छे तेथी नठारा. तेज प्रमाणे मनुष्य यज्ञना नर्से नरजातिना नाम लख्या छे, ते साभळवामा पुण्य हशे खरुं? सर्व शास्त्र कहे छे के देह शुध्यर्थ कर्म छे.

गीता

यज्ञोदानंतपश्चैवपावनानिमनीपीणां ॥

ए प्रमाणे वेदांति पण बोले छे, त्यारे उपर लखेला कर्मथी देहनी अने चित्तनी शुद्धि थाय खरी. अनुस्तरणीथी मुवो माणस स्वर्ग जाय, ए पण मोटो संशय छे. रुढीथी ढेडने कोइ अडकतो नथी. तेनुं कारण एम कहे छे के ढेड जनावरो खाय छे.त्यारे मुसलमान विगेरे शुद्ध शाथी थया! ते घरमा आवे पण ढेड चामडियो न आवे तेनुं कारण कदापि ढेड हराम एटले मुवा जनावरो खाय छे, अने मुसलमान हलाल एटले मारीने खाय छे, माटे पवित्र थया हशे! आगगाडिमा, ढेड बेसे तो लोक पुकार करे छे, अने यवनादिक बेसे तो कोइ बोलतो नथी. एनुं कारण दरिद्र हशे, के बिजु हशे, ते कोण जाणे? त्यारे दरिद्री ते नीच एम केहता न फावे.उचवर्णना घणा दरिद्रि छे.

भारतमा भीष्माचार्ये केहेलो सिद्धांत साभळी ने धर्मराजाए भीष्मना निर्याण पछी अश्वमेध कर्यो अने त्रणसो जनावरो मारी ने पाप मुक्त थया. हवे भिस्माचार्यना सिद्धांतनो अर्थ कोइ बिजे प्रकारे करशे तारे प्रत्यक्ष युधिष्टीर राजा साभळनार हता अने भीष्माचार्य बहु वृद्ध अने धर्मज्ञ हता तेथी तेमना मरण समये धर्म व्याख्यान साभळवाने वास्ते मोटी ऋषीनी सभा भराइ हति. तेमा युधिष्टिर राजा मुख्य हता तेणे अश्वमेध केम कर्यो? तेना व्याख्यानमा भीष्माचा

र्मनो सिद्धांत नरो नर भाव्यो नहीं के केम?

वेद, पुराण, इतिहास, आसर्वां पुस्तको परमेश्वरे निर्माण करेलाछे, अने ए तेनि वाणी छे, ए प्रमाणे हिंदु लोक मानेछे, ए प्रमाणे न माने तेने नास्तिक कहेछे. तेमा वेकाण्ड छे, कर्मकांड अने ज्ञानकांण्ड. एक बीजाने विरुद्धछे. तारे ज्ञानि नास्तिक केम? जे ज्ञानकांण्डनी दीक्षा एटले संन्यास लेछे ते आस्तिक के नास्तिक कदापि ने जणा आस्तिक कहिये, तो कर्म करनारा दिक्षीत अग्निहोत्रि पण आस्तिक अने चोटली अने जनोइनो त्याग करनारा संन्यासि अने परमहंस पण आस्तिक छे, एम जणाय छे. तेमां कर्म कर्ताने पुनर्जन्म अने ज्ञानि ने मोक्ष एटलो फरकछे. तारे कर्मकांण्ड मा शु करवा पडवु? ए समजातु नथी. नीच मार्ग कर्मनो छे, तारे ज्ञानी केम न थवु? संसारमां पण ज्ञानी थइए तो हरकत नथी.

कृष्णभोगीशुकत्यागीराजाजनकराघवौ ॥
वसिष्ठकर्मकर्ताचपंचैतेसमज्ञानिनः ॥

ए प्रमाणे बद्धाय लोक कर्म मुकी देईने पोत पोताना धंधा करीने ज्ञानी थाय तो शि हरकत? पण लोक कहेशे के रुढी नथी माटे संन्यास लेवो जोइए. तारे कृष्ण, राम, जनक, एमणे संन्यास क्यारे लिधो हतो?

हाल रुढीनुं जोर एवुं छे के धर्मना आचार्य जो बावा होय तो तेने पगे लागे, तेमनो उपदेश ले, तेथि मोक्ष जाय. एम समजे, पण ज्ञातनो टंटो होय, अने आचार्य कहे तारे तेनुं वचन कोइ माने नहीं बावाने गुरु कहे पण तेनुं पाणी न पिये एक तरफथी एम स

मजे छे के हु पवित्र ज्ञात जातमां छुं, बावा अने साधु थदलेला छे. तेनुं पाणी पिवुं नहीं, अने बिजि तरफथी एम समजे छे के बावो मने मोक्षे मोकलशे, तारे एनो मेळ कशो नथी. रूढी प्रमाण.

एक ठेकाणे अन्नमां मेध्य आव्युं एम ऋग्वेदमां लख्युंछे,पण ते अन्ननी प्रशंसापर वाक्य छे. पण तेथि पशु हिंसा वर्ज थइ एम नथी. कारण हजारो वेद अने सूत्र प्रमाण छे. भिष्माचार्य अने शंकराचार्य एमज बोल्या छे, अने यज्ञनी वातो भारतादिकमां आवि छे, युधिष्टिरे अश्वमेध कर्यो, तेमां व्यास शिष्य सहवर्तमान हाजर हता अने त्रणसें पशु मार्या, तारे व्यासजीने मेध्य जनावरमां रह्युं नहीं ए वात मालुम पडि नहोति! अने हालना पंडितोने मात्र मालुम पडि, ए पण कहेवुं मुष्केल छे. जनावरोमांथी निकळीने मेध्य अंनमा पेठू, ए वाक्यनो अर्थ एटलोज छे के अन्न पण होमवा लायक छे. वैकुंठना भगवाननो अवतार अयोध्यामां थयो तारे वैकुंठ खालि पडयूं एम थतु नथी. तेज प्रमाणे जनावरमांथी मेध्य निकळीने अन्नमां आव्युं एनो अर्थ बे मेध्य छे. एम न कहिये तो हजारो वेद, अने यज्ञनी आख्यायिका हजारो छे, ते खोटि थशे. अने ते करनारा प्राचीन बर्हि, व्यास, युधिष्टिर, भरतादिक, सर्व मूर्ख ठरशे. कोइ पंडितोनो मत एवो छे के हिंसा करता तेनुं कारण अन्न मळतुं नहोतु, पण ए वात खोटी छे. ए प्रमाणे भारतना अश्वमेध पर्वना श्लोक दाखल कर्या छे, ते उपरथी समजाशे. लक्षा वधी लोकोने जमाडवा अन्न मळयूं. अने होमवाने डांगर केम न मळि? विगु अनुस्तरणीनो होम लख्यो छे ते खावाने वास्ते नथी फक्त प्रेत संस्कारमां जनावरने बाळवुं एटलुंज ल--

ल्यूं छे तारे अन्न कमतिनुं कारण बयां आव्युं. तारे आ तर्क पण मिथ्या छे. गुर्जर देशना लोके ए हिंसा वर्ज करेलिछे तेनु कारण एमने शास्त्रनो खरो अर्थ जड्यो अने प्राचीन व्यासादिक ऋषि अने शंकराचार्यादीक आचार्योए वेदनो अर्थ जाण्यो नथी एम नहीं, गुजरातना ब्राह्मणो शास्त्र धुरंधर मुळथी नथी गुजरातमा कोइ शास्त्र उपर ग्रंथ थयेलो नथी. दक्षणमा हेमाद्री माधवादिक प्रसिद्ध छे, बंगदेशमा गदाधर इत्यादि प्रसिद्ध छे, पण गुजरातमा कोइ काळमा ग्रंथ थयेलो नथी. फकत जैनधर्मना बळथी ब्राह्मण दबाया माटे यज्ञादिक विधि मुकी दिधो. तारपछि वैष्णव लोकोए पण अहिंसा प्रतिपादन करी तेथी ब्राह्मण तेमने मळता रह्या. ए खरु कारण कबूल करवाने तेमने शरम लागेछे, तेथी वेदनो अर्थ एम नथी एम कहेछे, पण ए वात जुठि छे. तेनुं प्रमाण आ ग्रंथमा पाने पाने मळशे. गुजरातमा दिक्षित नामना, याज्ञिक नामना, ब्राह्मण छे तारे तेमणे पूर्वे यज्ञयाग कर्या हशेज. पण हाल मुकी दिधु छे, तेनुं कारण फकत जैनधर्मनो फेलाव छे. वेदनो अर्थ हिंसापर छे एम घणा पुरावाथी साबित छे. प्रत्यक्ष वेदना मंत्रो. ते प्रमाणे पुर्वेना राजादिके कर्म करेला तेनो इतिहास. साप्रतनो काशी विगेरे ठेकाणे यज्ञ कर्म थायछे ए सर्व प्रमाण फकत गुजरातना हालना ब्राह्मणोथी मिथ्या केम थशे?

१ ए संशयनि निवृत्ति खरी रीते कोइ करशे एवी आशा छे. हजारो प्रमाणथी विरुद्ध बोलवामा शो माल?

मूर्तिनी उपासना तंत्र अने पुराणथी उत्पन्न थइ. पण वेदमा कोइ ठेकाणे नथी. संध्या ब्रह्म यज्ञ इत्यादिक ब्रह्म कर्ममां मुर्ति नथी मुर्ति-

नो मार्ग निकळ्यो तेथी लोकोने मोटी छूट माळि, पंथ पंथमां गामो-गाम अने वाडामां अनेक मूर्तियो थइ, एके एक करी, त्यारे बीजाए बीजी करी. कोइ च्यार हाथनी कोइ आठ अने दश हाथनी करी, कोइ चार मुखनी, कोइ, छ मुखनी, कोइ शांत रूपनी कोइ वीरनी, कोइ स्त्रिनी, कोइ जनावरोनी, कोइ अर्धु जनावर अने कोइ अर्धु माणस एवी, करी. पछी तेनुं भक्षण, तेनो पूजापो, तेनुं वाहन, पात्र, आयुध आभरण शृंगार, तेनुं कुटुंब. अने तेनो विस्तार, अने नोकर, चाकर, तेनी राणीयो, अने राखेली स्त्रीयो, अने तेनी रूची, अने तेनुं भक्तिनुं पटल, पद्धति, न्यास, मुद्रा, यंत्र, मंत्र, बीज, पंचाग, इत्यादि उभा कर्या. एथी हिंदु लोको महा भ्रम अने अंधःकारमां पड्या. एनो निर्णय काळ करशे ते खरो. आगममां, रजस्वला, भंगण इत्यादिक पण पूजा योग्य मूर्ति थइ छे, तेथी तेनो अंत पार रह्यो नथी, धर्ममां ए मोटुं तोफान उत्पन्न थयुं, एम लागे छे। ए विशे कोइ खुलासो करशे तो सारुं.

एम कहे छे के कृष्ण अवतार छे, अने कृष्णनुं वाक्य गीता इत्यादिक मानवा बुद्ध अवतार छे, पण बुद्धना वचन मानवा नहीं.

वल्लभाचार्य प्रमाण एटले खरां शास्त्र ठराव्यांछे ते ए प्रमाणे.

वेदाःश्रीकृष्णवाक्यानिव्याससूत्राणिचैवहि ॥
समाधिभाषाव्यासस्यप्रमाणंतच्चतुष्टयं ॥१॥

उत्तरतो बलवान्

अर्थ.

वेद, गीता, ब्रह्मसूत्र, अने भागवत ए चार एक करता एक व-धारे मानवा लायक तेज प्रमाणे शिवने ईश्वर कहेछे, पण शिवे र-चेला तंत्रो मानवा नहीं. एम केटलाएक पंडितोनो मत छे.तारे आ बद्धापनो सार एवो निकळे छे के, गमे ते देव, के ऋषि शास्त्रनो ल-खनार हशे पण तेनो लेख आपणा ध्यानमां उतरशे के बरोबर छे तारे ते मानवो. अने मनमां नठारो एम लागे तारे मानवो नहिं. त्यारे शास्त्रमां सारु कियुं अने नठारु कियुं ए जाणवाने वास्ते आपणुं मन प्रमाण छे, शास्त्र प्रमाण नथी. कारण शास्त्रो सारां अने नठारा अनेक भेळ शेळ थया. तारे बुद्धिथी निश्चय करवानो रह्यो.

कह्युं छे के.

श्रुतिस्मृतिविरोधेतुयुक्तिरेवबलीयसी ॥
युक्तिहीनेविचारेतुधर्महानिःप्रजायते ॥१॥

वेद पण प्रमाण नहीं. तेमां जेटलुं आपणे फावतुं आवे, तेटलुं खरु, बाकी खोटुं. ते खोटुं ठरावाने वास्ते ग्रंथनुं वाक्य ले-वु. भारतथी के पुराण वचनथी वेदने रद्द करीये, तेनी चिंता नहीं. तारे मन एज मोटुं शास्त्र छे. एम सिद्धांत ठरावीये तो अनेक प्रकार ना माणसना, अनेक प्रकारना मन छे. तारे किया माणसना मननो आधार करीये, ए पण मोटो संशय छे? जे गुरु पासे जइये तो ते-नि एक उपसना होयज, ते पोतानि उपासना बतावशे. वैष्णव हशे तो विष्णुनु बतावशे, कालिकानो उपासक हशे ते, ते बतावशे, वेदां ति.हशे तो सर्व कर्म काण्ड व्यर्थछे अने एक ब्रह्मनि उपासना क-

रवो एम बतावशे. तारे बिजा बद्धाय मार्ग खोटा अने मारो मत ख-
रो एम पण कहेवु विचारमा ठीक आवतु नथी. कदापि सर्व देवता
छे, ते एक इश्वरनु रुपज छे. नाम रुप लोके ए जुदु कल्प्यु, माटे
शि चिंताछे बद्धायने परमेश्वर कहिये एम केटालाएक मत धरावेछे,
अने कोइथी विरुद्ध चालता नथी तेमणे एक संकट मोटु पडेछे,
ते एज के नठारा अने सारा शास्त्र जे उपर बताव्याछे ते सर्वने मा-
न्य करवा पडेछे विवेक जायछे अने सुधारो करवानी बुद्धी क्षीण था-
यछे. आळसु, अविवेकी,ने ए मत गमशे पण, बद्धायने ए मत गम-
वानो नथी. हजारो तकरारो स्वामिनारायण विगरेनी चाले छे ते
उपरथी एम मालम पडेछे, तारे शास्त्र खरू क्रियु ए सार काढवानि घणी
जरूर छे. पण ए काम कोण करशे, ते हजी समजातु नथी विद्वान
लोके एम ठराव्यु छे केः—

अग्नौक्रियावतादेवेदिविदेवेमनीपिणां ॥
प्रतिमास्वल्पबुद्धिनांसर्वत्रसमदर्शिनां ॥

आगमवाळाए जेम, जंतर मंतर अने टुचका कल्पनाथी उत्पन्न
कऱ्या तेज प्रमाणे निगमवाळाए चारसे पाचसे व्रत ठराव्या छे, तेज
प्रमाणे दान ठराव्या छे व्रतार्क, चतुर्वर्ग चिंतामणी वीगेरे ग्रंथमा
बद्धाय भेगा कऱ्या छे प्रत्येकमा एक एक काहाणि लखी छे. तेनी
रिति एवी.

"एक ब्राह्मण हतो ते दरिद्रि थयो तेथी पीडा पाम्यो अने भ-
टकतो फरतो हतो तेनी एक दहाडे गंगाने काठे एक ऋषिनी मु
लाकात थई तेणे कह्यु के आज सोम छे आज जेको क्रिलापक्षी सो-

नानो करीने पूजा करशे, अने ब्राह्मणने दान देशे, तो तेनुं दरिद्र जशे. ते साभळीने ते प्रमाणे करताज बीजे दहाडे लक्ष्मी प्राप्त थइ. घरमा खोदता द्रव्य मळ्युं, अने ब्राह्मण सुखी थयो ए व्रतनी कथा रामचंद्रजीए लक्ष्मणजीने कही तेथी जगतमा प्रसिद्ध थइ. एवुं ए व्रत लक्ष्मी आपनार छे."

आवी कथा हजारो लखीछे.अने तेने आधारने सारुं जे मोटा पुरुषो थइ गया, तेमना नाम दाखल कर्या छे एटलुंज नहीं, पण स्थावर पदार्थना नामथी केटलीएक कथा लखी छे जेमके धरणी अने शेष-नो संवाद, सूर्य अने अरुणनो संवाद, सागर अने आकाश, चंद्र अने शनि, अग्नि अने कार्तिक स्वामी, हिमालय अने इंद्र, इत्यादि जड, स्थावर,कल्पित, पुरुषना नामथी कथा लखी छे. तेमा मोटी,मोटी क-रामतो, अद्भुत चमत्कार, सिद्धि, अनेक तरेहना रस,अने रंग,पण ते बधायनो मतलब एज के ब्राह्मणनुं महात्म वधारवूं अने तेमणे जेट-ली बने एटली मिलकत आपावी ए प्रमाणे सर्व कथानो सारछे. ब्राह्मण पहेला श्राप देता अने वर आपता, तेनी बहु कथाओ लखी छे कोइना श्रापथी राजा मरी गया, समुद्र सुकायो, यादवकुळनुं स-त्यानाश गयुं, मोटा देव, पर्वत, नदीयो, ए पण बिहिने चालता. अ-ने ए बोले तेम करता ए मतलबनी हजारो कथाओ लखीछे. संस्कृ त पुस्तकनो मोटो भाग ए मतलब उपरजछे. अने ब्राह्मणनी लायब्र रीमा सर्व पुस्तको एज प्रकारना होयछे जेणे आवा पुस्तको नाहा नपणथी वाच्या होय, तेना मनउपर असर तेज प्रकारनो, लागे संस्कृत भणेलो मोटो पंडित होय, तो ए विद्यामा बहु कुशल होयछे भूगोळ, यंत्रज्ञान के इतिहास, वगेरे सत्यविद्याथी ए बहु दूर होयछे.स-

अशुं अने अशसशुं, ते विषे एनो विचार नष्ट थायछे. बुदिमा-कुतर्क वृद्दि पामेछे. दही दुध, अने शेर्डिना रसनो समुद्रछे, सूर्यनो वंश पृथ्वी उपर राज करवा आव्यो, हिमालयनि दिकि ने शिवजी पर्ण्या, अने सूर्यनि कन्या तापिनदि, अने यमनी बेहेन यमुना, इत्यादि अद्भुत कल्पना विशे संस्कृत पंडितोना मनमा कशो संशय आवतो ज नथी, अने संशय आव्या विना शास्त्रनी वृद्दि के शोधन थतु नथी. माटे हिंदुस्थानमा विद्यानि वृद्दि बंध पडि, ने राजा अने विधवा ए बे जणा ब्राह्मणोना मोटा घराक थयाछे. आ हिंदुस्थानमां यसकांड कमति थयुं, एम समजीने शास्तिक पौष्टीक कर्मनी वृद्दि करी दानना विधि लख्याछे, तेमा प्रत्येकमा जुदा जुदा देवता तेमनि पूजा, होम, शृंगार, अने ते प्रमाणे करवाथी फल थायछे तेनुं वर्णन, लख्युछे. हेमाद्रि ग्रंथ उपरथी थोडा दान निचे लख्याछे.

उदककुंभदान	इछा भोजन दान	अश्वदान
गौदान	भूमी दान	ब्रह्मांडदान
कन्यादान	घंटा दान	महिषीदान
कदलिदान	घृतदान	रजतदान
कास्य पात्रदान	छत्रोपानहदान	सुवर्णदान
गजदान	दक्षिणा मूर्तिदान	वृषभदान
कृष्णाजीनदान	तिलदान	वस्त्रदान
पुस्तकदान	गोधूमदान	शयादान
गृहदान	तुलादान	यज्ञो पवीतदान
गोपालमूर्तिदान	दशमहादान	श्वेताश्वदान
गोसहस्त्रदान	धान्य पर्वतदान	कपिलादान

प्रपादान	दीपदान	अभयदान
मणीदान	वृक्षदान	सर्वस्वदान
लवण पर्वतदान		रत्नदान

इत्यादि जेटला उपयोगी पदार्थ तेटला दान छे अने ब्राह्मण शिवाय बीजाने आपवाना नहीं अने बीजाने जमाडवा नहीं, ए बाबत सखत नियम लख्या छे.ने एवा हजारो दान लख्या छे. तेजप्रमाणे व्रतार्क उपरथी थोडा निचे व्रतना नाम लख्या छे.

एकादशीव्रत	मुक्ताभरण	गोत्रिरात्र
सोमवारव्रत	रथसप्तमी	प्रदोष
हरितालिका	बुधाष्टमी	नृसिंहजयंति
हलगौरी	जन्माष्टमी	अनंतचतुर्दशी
परशुराम जयंति	महालक्ष्मी	वैकुंठचतुर्दशी
चतुर्थी	दुर्वाष्टमी	वटसाविंत्री
ऋषीपंचमी	रामनवमी	कोकिलाव्रत
उपागललिता	रुद्रवर्तिव्रत	सोमवति
कपिलाषष्टि	लक्षदीपव्रत	शिवामुष्टि
शीतलाव्रत	विजयादशमी	मंगलागौरी
लक्षनमस्कार	दशाहार	संक्राति
	लक्षप्रदक्षिणा	तुलसीविवाह

प्रत्येक कथामा एम लखे छे के—

शृणुराजन्प्रवक्ष्यामीव्रतानांउत्तमंव्रतं ॥

एनु फल बताव्युं ते ए प्रमाणे—

अश्वमेधसहस्राणीवाजपेयशतानिच ॥
वंध्यानांपुत्रजननंधनधान्यविवर्धनं ॥

प्रत्येक व्रत-कर्ममा एम लखे छे के

आचार्यंचसपत्नीकंवस्त्रालंकारचंदनैः
तोषयित्वाशुचींदांतंगांचदद्यात्पयस्विनीं ॥
ब्राह्मणांभोजयेत्पश्चादक्षिणाभिःप्रदापयेत् ॥

दरएक व्रतमा, नवा नवा देव आवे छे, केळनुं झाड कदली व्रतमा पुजाय छे तेनि प्रार्थना करेछे ते निचे प्रमाणे

आगछकदलिदेवीसौभाग्यफलदायिनी ॥
रूपंदेहीजयंदेहीयशोदेहीसुनिश्चितं ॥

एज प्रमाणे पिपळो, वड, इत्यादिकनी कोइ ब्रह्मा, कोइ विष्णु, कोइ रूद्र, एवा नामथी प्रार्थना पशु पक्षि झाड, धान्य, पाषाण, चामडुं, इत्यादिने परमेश्वर ठराव्या छे ए पुराण अने तंत्रनो धर्म वेदथी जुदो छे, अर्जुने बाण मारीने तीरनो ढगलो स्वर्ग सुधी कर्यो, ते रस्तेथी इंद्रनो हाथि लेइ आव्या ए कथा पण गजगौरी व्रतमा छे जेम जेम स्त्रियो उपर जुलम वधतो गयो, तेम तेम आवी कथा साभळवामा अने व्रतादिक करवामा वधारे सामिल थइ एमने वास्तेज ए धर्म ठराव्यो एम पण घणे ठेकाणे लख्युं छे. आ हिंदुस्थानमा विधवा जेवी दुर्दैवी अमंगळ अने कुरूप प्राणी नथी सामि मळे तो दु शुकन थाय, मंगळ काममां उभि रहे तो मर्यादा तुटि कहेवाय, बे वार जमे तो अधर्म, घर मांडे तो वटालि जाय, सारु लुगडु पहेरेतो लुचि कहेवाय, एवि बळतरा कोइ प्राणीने न होय

केटलाएक पुराणमां युगना वर्ष लख्यां छे तेनी विगत ३६० वर्षना १ दिव्य वर्ष थाय छे.

एवा दिव्य वर्ष,	मनुष्य वर्ष
कृतयुगमां ४८००	१७२८०००
त्रेतायुगमां ३६००	१२९६०००
द्वापरमां २४००	८६४०००
कलियुगमां १२००	४३२०००

प्रत्येक युगना आरंभे संधिकाल अने अंते संध्याकाळ आवे छे तेनुं कोष्टक.

संधि	मुख्यकाल	संध्यांश
४००	४०००	४००
३००	३०००	३००
२००	२०००	२००
१००	१०००	१००

तारे कलियुगनुं हाल ४९७५ मुं वर्ष चाले छे. अने सो दिव्य वर्ष एटले ३६००० छात्रिस हजार वर्ष सुधि कलिनी संधी चालशे ते मा पुर्व युगना धर्म चालवाना एम लख्यू छे, ते खरू के खोटु ? आ प्रश्नो जवाब कोण देशे?

एज प्रमाणे श्राद्ध विधीनो विस्तार थयो छे.

नित्यश्राद्ध	मासिक	दधिश्राद्ध
दर्शश्राद्ध	वार्षिक- सावत्सरी	घृतश्राद्ध
शण्णवतिश्राद्ध	घट	एकोदिष्ट
नांदिश्राद्ध	हिरण्यश्राद्ध	पार्वण
तीर्थश्राद्ध	आमान्यश्राद्ध	संपिडश्राद्ध

एक एक श्राद्दमा लाख रूपया खर्च थाय छे. राजा अने श्रीमान् ग्रहस्थो राडिराडो हजारो रूपैया पितृकार्यमा खर्च करे छे ए उपरथी, बारमु, जमवानी रीत, नात जमवानी रीत गुजरातमा पडी छे साठोद्रा नागर सात वखत नातो जमाडे छे. अने औदीच ब्राह्मण एक वार नात जमाडे छे. तेमां गरीब माणस होय तो घरबार वेचीने कर्ज करीने नात जमाडे छे. आ देशमा, गामोमा, अने शहेरमा कर्ज छे तेमानो घणो भाग एज कारणथी छे. ए कारणथी, भिखारी, विद्याहीन, ने निरूपयोगी लोक बहु थया.

अन्नदानात्परंनास्तिविद्यादानंततःपरं ॥
अन्नेनक्षणिकातृप्तियावज्जीवंतुविद्यता ॥

अन्नदानथी क्षणिक तृप्ति थाय छे विद्याथी आमरण तृप्ति छे. आमानो बीजो भाग जतो रह्यो. एवा अनेक कारणथि आ देशनी पडति थई छे.

वैदिक धर्ममा त्रण ऋण लख्या छे एक देव ऋण--पितृऋण अने ऋषिऋण. आ त्रणे, यज्ञथी श्राद्धथी अने स्वाध्यायथी अपायछे. यज्ञ एटले होम--मख-क्रतु-याग मेध-अध्वर इत्यादि नामथी प्रसिद्ध छे.

यद्यदग्नौजुहोतिसदेवयज्ञः

आश्व. सूत्र अ. ३ कं. १

शत यज्ञ करे तेनुं नाम शत क्रतु कहेवाय छे. एवा राजा पण थया छे, एना पेटामां, सप्तहविर्यज्ञ. सप्त पाक यज्ञ. सप्त सोम यज्ञ. श्रौत यज्ञ. उत्तर क्रतु इत्यादिक भेद छे. केटलाएक अन्नना, अने घीना, अने केटलाएक पशुना छे. पशु एटले सर्व प्रकारना जनावर, माणस, बळद, बकरा, घेटा, घोडा इत्यादि. ऋग्वेदनी बे ऋचा निचे लखी

छे ते आश्वलायन गृह्य सूत्रनो पहेला अध्यायनो प्रथम काण्डिकानो पांचमा सूत्रमा दाखल कर्यो छे.

विश्वमनाऋषि, इंद्रदेवता ॥

अगोरुधायगविषेद्युक्षायदस्म्यंवचः ॥

घृतात्स्वादियोमधुनश्ववोचते ॥

ऋ० अ० ६ अ० २ वर्ग २०

भारद्वाजऋषि. अग्निदेवता ॥

आतेअग्नऋचाहविहृदातष्टंभरामसी ॥

तेतेभवंतूक्षणऋषभासोवशाउत ॥

ऋग्वेद.

अ० ४ अ० ५ वर्ग १८ ऋ० ४७ आश्वलायन

नारायणवृत्ति

अस्यमंत्रस्यतात्पर्यंउक्षादिमांसेनतवयावति

प्रीतिस्तावतितवविद्ययापिभवतीत्यर्थः ॥

अर्थ.

हे इंद्र हे अग्नी तमारी बळद अने गायनो मास उपर प्रीति छे. ते प्रमाणे हमारी विद्या उपर प्रीति थाय. यज्ञने देव यज्ञ कहे छे. ग्रहस्थ लोक, राजा, श्रौति ब्राह्मण पासेथी पैसा आपीने यज्ञ करावे छे. वाममार्गी पासेथी पूजन करावे छे तेथी पोतानुं कल्याण जाणे छे.

श्राद्ध एटले पितृ यज्ञ एमा पण अनुस्तरणी इत्यादिक मासना विधी छे. एने पितृ मेध पण कहे छे. आश्वलायन सूत्रनो टीकाकार नारायण श्राद्धनी व्याख्या एम करे छे.

पितृनुद्दिश्ययद्दियते ब्राह्मणेभ्यःश्रद्धयाततश्राद्धं ॥
आ--४--७

अर्थः—वडिलोना नामथी ब्राह्मणने भक्तिथी आपवुं, एनुं नाम श्राद्ध.

स्वाध्याय एटले वेद पठण करवा. एने ब्रह्म यज्ञ पण कहे छे.

आ त्रण यज्ञ छे. वेदनो मुख्य भजन मार्ग एज छे. पौराणिक धर्म चाल्यो तेमा यज्ञने ठेकाणे पूजा स्थापन करी. तेमा बे भाग छे, दक्षण अने वाम. दक्षिण मार्गमां वैष्णव मत सौथी सात्विकछे, तेमा हिंसा नथी. अने वाममा बळिदान, मद्य मांसादिक अनेक प्रकारना दुराचरणो छे. सात्विक मार्गनो कर्त्ता बुध, ऋषभ देव अने तेनी परंपरामा वैष्णवाचार्य, नारद, पराशरादिक तेमनुं पण कहेवुं एवुं के पूजामा हिंसा नहि, पण वैदिक अने श्रौत कर्म करिये तो हिंसा कर्त्ता पण ते हिंसा छे एम कहेवुं नहीं. बीजा निरीश्वर वादी जैन अने श्रावक छे. बीजो वाममार्ग एनो चलावनार शिवजी अने तेमना परंपराना नाथादिक थया. ते. आ प्रमाणे हाल वैष्णव अने शैव बे मोटा प्रस्थान हिंदुस्थानमा छे.

यज्ञधर्म असलथी सर्व देशमा हतो एम इतिहासथी मालूम पडे छे, हाल जेम हिंदुस्थानमा भक्ति अने ज्ञान धर्मनो फेलाव थयाथी यज्ञ कर्म पाछु हठ्युं, ते प्रमाणे अन्य देशमा पण यज्ञ कर्म बंध पड्युं छे.

कबीर पंथी, रामस्नेही, माधवगीरी, नडियादनो संत रामबावा, ए पंथमा मूर्तिनो त्याग छे वेदांतिमा बे पक्ष प्राचिन अने अर्वाचिन छे. प्राचीनमा सगुण ब्रह्मनी द्वैत भावे उपासना करे छे प्रार्थना समाजनु मत एज छे अर्वाचीन मतनो स्थापन करनारा शंकराचार्य ते ब्रह्मने निर्गुण ठरावीने अद्वैत माने छे अने हुं ब्रह्म छुं एम समजे छे.

उपोद्घात.

शेनकराम रामनाथ शास्त्री शेहेर अमदावाद एमने निगमप्रकाश ग्रंथ तपासवा आप्यो हतो तेमने ते ग्रथनुं खडण लखी आप्यू छे ते आगळ छापनामा आव्यू छे

शास्त्रि सेवकराम रामनाथ रचित हिंसा प्रधान धर्म खंडननी चोपडी वेदाभिप्राय बोधनी.



श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ जगतनी सृष्टिने विषे देव मनुष्य असुर तथा उच्च नीच वर्ण तथा दरिद्री तथा धनवान तथा राजा रंकए जुदां जुदा करवा रूप जे विषम भाव ने निर्दयपणुं ते ईश्वरने ते नथी त्यारे ए देवादि विषम भाव शाथी छे तो सृष्टि वेळाये ईश्वर जे ते जीवनां पूर्व कर्म जोइने तेने अनुसरीने विषम सृष्टि करे छे माटे जीवना कर्म एज विषम भावनुं कारण छे. पाप करे छे ते पापि थाय छे सारुं करे छे ते सारो थाय छे. जीवने जीवना कर्मनो प्रवाह अनादीनो छे कोइ दिवस जीव कर्म वनातो नोतो एम नथी एम जो होय तो न करेलुं आवे ने करेलुं जाय.

॥ उक्तंचशारीरकमीमांसायाम् ॥

वैषम्यनैर्घृण्येनसापेक्षत्वात्तथाहिदर्शयतीति ॥

साधुकारीसाधुर्भवतिपापकारीपापोभवतीतिश्रुतिः ॥

नकर्माविभागाच्चेन्नानादित्वादुपपद्यतेचाप्युपलभ्यतेचेति॥

अन्यथाऽकृताभ्यागमकृतविप्रनाशप्रसंगात् ॥

प्रकृतिंपुरुषंचैवविद्ध्यनादीउभावपीतिस्मृतिः

वेदप्रणिहितोधर्मोह्यधर्मस्तद्विपर्ययः ॥

वेदोनारायणःसाक्षात्स्वयंभूरितिशुश्रुम ॥१॥

तथाचश्रुतिः॥ अस्यमहतोभूतस्यनिः

श्वसितमेतद्यदृग्वेदोयजुर्वेदोःसामवेदोऽथर्वेति

ते जीव सात्विक राजस तामस ए त्रण प्रकारना छे ते महा प्रलयमा माया मध्ये लीन थाय छे जेम सूर्यना तेजमा रात्री लीन थाय छे.

उक्तंचस्कांदे

सकार्यमूलप्रकृतिःसकालाक्षरतेजसि ॥
प्रकाशेर्कस्यरात्रीवतिरोभूतातदाऽभवत् ॥
तिरोभवंतिजीवेशायत्राव्यक्तेहरीच्छया ॥ १ ॥

अनादि जीव पोत पोताना कर्म सहित मायामा सुतेला छे ते अनुशायि जीव कहेवाय छे तेने सृष्टि वेळाये भगवान् जे ते बुद्धि इंद्रियोने मनने प्राण आले छे तथा देह आले छे शा वास्ते विषय भोगने अर्थे तथा जन्म प्रभृति कर्म करवाने अर्थे तथा लोकांतरमा जवाने अर्थे रेहेता ते ते लोकना भोगने अर्थे तथा मोक्षने अर्थे,

॥ उक्तंचश्रीमद्भागवते ॥

बुद्धीद्रियमनःप्राणाजनानामसृजत्प्रभुः ॥
मात्रार्थंचभवार्थंचह्यात्मनेकल्पनायच ॥ १ ॥

तेमा सात्विक जीव छे ते सच्छास्त्र सत्पुरुषना संगे करी मोक्ष मार्गमा प्रवर्ते छे राजस तामस जीव छे ते पामर छे ते सर्व जीव कशुं शास्त्र तथा विधि निषेध समजता नथी माटे सदा मांस भक्षण करे छे परदारा संग करे छे सुरापान करे छे तेने नियममां लाववा शास्त्र

भगवाने वेद रूप शास्त्र कर्युं छे ते सृष्टिकाळे वैराजना श्वासमा ॐकार रूपे आवी चतुर्मुख ब्रह्माना चार मुखमाथी अक्षरात्मक मंत्र गण रूपे उत्पन्न थाय छे

उक्तंचश्रीमद्भागवते

सएषजीवोविवरप्रसूतिःप्राणेनघोषेणगुहांप्रविष्टः
मनोमयंसूक्ष्ममुपेत्यरूपंमात्रास्वरोवर्णइतिस्थविष्ठः

तथाचश्रुतिः

चत्वारिवाक्यरिमितापदानितानिविदुर्ब्राह्मणायेमनीषिणः॥
गुहात्रीणिनिहितानेंगयंतितुरीयंवाचोमनुष्यावदंति ॥

श्रीमद्भागवतेच स्कं. अ० १२

ऋग्यजुःसामाथर्वाख्यान्वेदान्पूर्वादिभिर्मुखैः ॥
शस्त्रमिज्यांस्तुतिस्तोमंप्रायश्चित्तंव्यधात्क्रमात् ॥१॥
आयुर्वेदंधनुर्वेदंगांधर्ववेदमात्मनः ॥
स्थापत्यंचासृद्वेदंक्रमात्पूर्वादिभिर्मुखैः ॥ २ ॥
इतिहासपुराणानांपंचमंवेदमीश्वरः ॥
सर्वेभ्यएववक्त्रेभ्यःससृजेसर्वदर्शनः ॥ ३ ॥

वेदमा ने पुराणमा कशो भेद नथी वेदमा अस्पष्ट वार्त्ता छे ने पुराणमा स्पष्ट वार्त्ता छे एटलो भेद छे पुराण ने वेदनु उपबृंहकपणु कहे छ.

उक्तंचभाष्ये

यन्नदृष्टंहिवेदेषुतद्दृष्टंस्मृतिभिःकिल ॥
उभाभ्यांयन्नदृष्टंहितत्पुराणेपुगीयते ॥ १ ॥
इतिहासपुराणाभ्यांवेदंसमुपबृंहयेत् ॥
बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदोमामयंचालयेदिति ॥ २ ॥
मामयंनिहनिष्यतीतिक्वचित्पाठः ॥

ब्रह्माना मुखमाथी वेद उत्पन्न थया ते वेद मरीच्यादि पोताना पुत्र ब्रह्माये भणाव्या पण प्रथम युगमा एक ब्राह्मणनीज सृष्टि हती ते सर्वे सत्वगुणी पापे रहित हता ने ध्यान निष्ठ हता वास्ते उपासना तथा ज्ञान ए बे वेदना भाग प्रवर्त्त्या पण कर्म मार्ग न प्रवर्त्त्यो पछे सत्ययुग उतर्यो ने त्रेतायुग बेठो त्यारे कर्म मार्ग प्रवर्त्यो त्यार पहेले बहुधा प्रकारे केवल ॐकारात्मक वेद हतो.

उक्तंचश्रीमद्भागवते

नवमस्कंधेसप्तदशोऽध्याये ॥
वेदःप्रणवएवाग्रेधर्मोहिंवृषरूपधृत् ॥
उपासतेतपोनिष्ठाधर्ममांमुक्तकिल्बिषाः ॥ १ ॥
त्रेतायुगेमाहाभागप्राणान्मेहृदयात्त्रयी ॥
विद्याप्रादुरभूत्तस्याअहमासंत्रिवृन्मखः ॥ २ ॥
त्रेतायांसंप्रवृत्तायांमनसित्रय्यवर्त्तत ॥

स्थालीस्थानंगतोऽश्वत्थंशमीगर्भविलक्ष्यसः ॥ ३ ॥
तेनद्वेअरणीकृत्वाउर्वशीलोककाम्यया ॥
उर्वशींमंत्रतोध्यायन्नधरारणिमुत्तराम् ॥ ४ ॥
आत्मानंयत्तयोर्मध्येयत्तत्प्रजननंप्रभुः ॥
तस्यानिर्मथनाज्जातोजातवेदोविभावसुः ॥ ५ ॥
त्रय्यासविद्ययाराज्ञःपुत्रत्वेकल्पितास्त्रिवृत् ॥
तेनायजतयज्ञेशंभगवंतमधोक्षजम् ॥ ६ ॥
उर्वशीलोकमन्विच्छन्सर्वलोकमयंहरिम्
एकएवपुरावेदःप्रणवःसर्ववाङ्मयः ॥
देवोनारायणोनान्यएकोग्निर्वर्णएवच ॥ ७ ॥
पुरूरवसएवासीत्त्रयीत्रेतामुखेनृप ॥
अग्निनाप्रजयाराजालोकंगांधर्वमेयिवान् ॥ ८ ॥

ते यज्ञ पण भगवाने त्रण प्रकारना कर्या छे एक तो साक्षात्पशुये करिने बीजो पशु ते पिष्टनो करवो पण साक्षात्पशु नाहि तेने प्रकृति ने विकृति रूप केहे छे ते शास्त्रमा प्रसिद्ध छे ने ए बे थकी त्रिजो केवल अहिंसक यज्ञ त्रण वर्षनी डांगेरे करिने करवानों कह्यो छे पण

यागात्स्वर्गोभवति ॥ अक्षय्यंहवैसुकृतंचातुर्मास्ययाजिनोऽभवति

इत्यादि जे वेदमा फळ श्रुति लखिछे तेने जोइने हिंसामय यज्ञमा सकामिक राजस तामस जन घणा आसक्त थाय छे पण घटवत्स्वर्गादि विनश्यति इत्यादि ज्ञानमार्गनी श्रुतियोनो विचार नथी कर्ता ने हिंसामय यज्ञ करेछे ते वारंवार जन्म मरणने पामे छे के त्यां एमनुं कल्याण थतुं नथी.

॥ तथाचश्रुतिः ॥

प्लवाह्येतेअदृढायज्ञरूपाअष्टादशोक्तमवरंयेषुकर्मएतच्छ्रे
योयेऽभिनंदंतिमूढास्तेजरामृत्युपुनरेवापियंति ॥

अर्थः—आ यज्ञ रूपी प्लव जे नाव छे ते अदृढ केता दृढ नथी ने अष्टादश पुरोहित यजमानादिक जे तेमणे कर्युं एवुं जे कर्म हिंसा रूपी ते नीच छे ते हिंसामययज्ञना करनारा पुरुष वारंवार जन्म मरणने पामे छे एकनो एक वेद बे वार्त्ताओ केम कहे छे पामर जीवने विषयी करवा सारु यज्ञ कह्या हता पाछा ए जीव विषयमा आसक्त थया तेने छोडाववा वास्ते पोते ने पोते एनां निषेधनां वचन कह्यां छे त्यां दृष्टांत छे जेम पिता बाळकने खंडलडुकादिये करिने लोभावता सता औषध पाय छे एटले करी काय खंड लाडुनुं लाभनुं प्रयोजन नथी त्यारे शुं प्रयोजन छे शरीरे आरोग्य थाय ए प्रयोजन छे एम वेद पण कृपाळु छे ते कर्मने मुकावा सारु कर्म करावे छे,

उक्तंचश्रीमद्भागवते एका. तृ. ध्याये

परोक्षवादोवेदोयंबालानामनुशासनम् ॥
कर्ममोक्षायकर्माणिविधत्तेह्यगदंयथा ॥ १ ॥

अन्यच्चश्रीधरीटीकाया

पिवनिंबंप्रदास्यामिखलुतेखंडलड्डुकान् ॥
पित्रैवमुक्तःपिबतिनफलंतावदेवतु ॥ १ ॥

उक्तंचभागवते

नाचरेद्यस्तुवेदोक्तंस्वयमज्ञो जितेंद्रियः ॥
विकर्मणाह्यधर्मेणमृत्योर्मृत्युमुपैतिसः ॥ १ ॥
वेदोक्तमेवकुर्वाणोनिःसंगोऽर्पितमीश्वरे ॥
नैष्कर्म्यांलभतेसिद्धिंरोचनार्थाफलश्रुतिः ॥ २ ॥

अर्थः—जो कर्मनो मोक्ष ए पुरुषार्थ छे त्यारे वेद प्रथमज कर्मनो त्याग वयम करावतो नथी त्या कहे छे अजितेंद्रि छे वास्ते अज्ञानि छे पोते जो वेदोक्त कर्म नाचरे तो कर्मोना चरण लक्षण जे अधर्म तेणे करि मृत्यु थकी अनंतर मृत्युनेज पामे छे,

तथाचश्रुतिः

मृत्वापुनर्मृत्युमुपपद्यतेअद्यमानःस्वकर्मभिः ॥

हिसामय यज्ञनी निंदा कहि छे श्रुतिम।

काश्चिद्वुवाअस्माल्लोकात्प्रेत्यआत्मानंवेदअयमहयस्मीति
काश्चिद्स्वंलोकंनप्रतिजानातिअग्निमुग्धोहैवधूमतांतइति

अर्थ —कोइक पोताना लोक जे ब्रह्म धाम आत्म तत्त्वा तेने जाणतो नथी जे पुष्प जे अवातर फलमा परम फलनो माननारो ते

अग्नि साध्य कर्ममा आ सक्रिये करि लोपाइ गयो छे विवेक जेनो तेने अंते धूम मार्ग छे.

उक्तंचश्रीमद्भागवतैकादशेएकविंशतितमाध्यायेच

फलश्रुतिरियंनृणांनश्रेयोरोचनंपरम् ॥

श्रेयोविवक्षयाप्रोक्तंयथभैषज्यरोचनम् ॥ १ ॥

उत्पत्त्यैवहिकामेषुप्राणेषुस्वजनेषुच ॥

आसक्तमनसोमर्त्याआत्मनोऽनर्थहेतुषु ॥ २ ॥

नतानविदुषःस्वार्थंभ्राम्यतोवृजिनाध्वनि ॥

कथंयुंज्यात्पुनस्तेषुतांस्तमोविशतोबुधः ॥ ३ ॥

एवंव्यवसितंकेचिदविज्ञायकुबुद्धयः

फलश्रुतिंकुसुमितांनवेदज्ञावदंतिहि ॥ ४ ॥

कामिनःकृपणालुब्धाःपुष्पेषुफलबुद्धयः ॥

अग्निमुग्धाधूमतांताःस्वंलोकंनविदंतिते ॥५॥

नतेमामंगजानंनितिहृदिस्थंयइदंयतः ॥

उक्थशस्त्राह्यसुतृपोयथानीहारचक्षुषः ॥ ६ ॥

तेमेमतमविज्ञायपरोक्षंविषयात्मकाः ॥

हिंसायांयदिरागःस्याद्यज्ञएवनचोदना ॥ ७ ॥

हिंसाविहाराह्यालब्धैःपशुभिःस्वसुखेच्छया ॥

यजंतेदेवतायज्ञैःपितृभूतपतीन्खलाः ॥ ८ ॥
स्वप्नोपममसुंलोकमसंतंश्रवणप्रियम् ॥
आशिषोहृदिसंकल्प्यत्यजंत्यर्थान्यथावणिक् ॥ ९ ॥
रजःसत्वतमोनिष्ठारजःसत्वतमोजुषः ॥
उपासतेइंद्रमुख्यान्देवादीन्नतथैवमाम् ॥ १० ॥
इष्ट्वेहदेवतायज्ञैर्गत्वारंस्यामहेदिवि ॥
तस्यांतइहभूयास्ममहाशालामहाकुलाः ॥ ११ ॥
एवंपुष्पितयावाचाव्याक्षिप्तमनसांनृणाम् ॥
मानिनांचातिस्तब्धानांमद्वार्त्तापिनरोचते ॥ १२ ॥
वेदाब्रह्मात्मविषयात्रिकांडविषयाइमे ॥
परोक्षवादाऋषयःपरोक्षंममचप्रियम् ॥ १३ ॥
किंविधत्तेकिमाचष्टेकिमनूद्यविकल्पयेत् ॥
इत्यस्याहृदयंलोकेनान्योमद्वेदकश्चन ॥ १४ ॥
मांविधत्तेऽभिधत्तेमांविकल्प्यापोह्यतेह्यहम् ॥
एतावान्सर्ववेदार्थःशब्दआस्थायमांभिदा ॥ १५ ॥

एकादशमा छत्रीशमा अध्यायमां सर्व व्रतमां अहिंसाव्रत छे ते पोतानुं स्वरूप कहुं छे.

यज्ञानांजपयज्ञोहंव्रतानामविहिंसनम् ॥

एकादशना १७ अध्यायमां अहिंसा ए सर्व वर्णनो धर्म कह्यो छे वास्ते हिंसामय यज्ञ करवा अवश्य एवुं वेदनुं तात्पर्य नथी.

अहिंसासत्यमस्तेयमकामक्रोधलोभ्यता ॥
भूतप्रियहितेहाचधर्मोयंसार्ववर्णिकः ॥ १ ॥

श्री भारतना मोक्ष धर्ममां एकसोनेचोसठमा अध्यायमां कल्याणना मारगमां चाल्या जे वैष्णव तेने हिंसामय यज्ञ न करवा एम कह्युं छे, ते अध्यायना आदि नीलकंठे अवतारणिका लखि छे.

यदाभगवतोऽत्यर्थमित्यादिरध्यायो
वैष्णवानांहिंस्रयज्ञनिषेधार्थः ॥

युधिष्ठिरउवाच.

यदाभागवतोत्यर्थमासीद्राजामहान्वसुः ॥
किमर्थंसपरिभ्रष्टोविवेशाविवरंभुवः ॥ १ ॥
भीष्मउ–अत्राप्युदाहरंतीममितिहासंपुरातनम् ॥
ऋषीणांचैवसंवादंत्रिदशानांचभारत ॥ २ ॥
अजेनयष्टव्यमितिप्राहुर्देवाद्विजोत्तमान् ॥
सचछागोप्पजोज्ञेयोनान्यःपशुरितिस्थितिः ॥ ३ ॥
ऋषयउ–बीजैर्यज्ञेषुयष्टव्यमितिवैवैदिकीश्रुतिः ॥
अजसंज्ञानिबीजानिछागंनोहंतुमर्हथ ॥ ४ ॥
नैषधर्मःसतांदेवायत्रवध्येतवैपशुः ॥

इदंकृतयुगंश्रेष्ठंकथंवध्येतवैपशुः ॥ ५ ॥
भीष्मउ–तेषांसंवदतामेवऋषीणांविबुधैःसह ॥
मार्गागतोनृपश्रेष्ठस्तंदेशंप्राप्तवान्वसुः ॥ ६ ॥
अंतरिक्षचरःश्रीमान्समग्रबलवाहनः ॥
तंदृष्ट्वासहसायांतंवसुंतेत्वंतरिक्षगम् ॥ ७ ॥
ऊचुर्द्विजातयोदेवानेपन्छेस्यतिसंशयम् ॥
यज्वादानपतिःश्रेष्ठःसर्वभूतहितप्रियः ॥ ८ ॥
कथंस्विदन्यथाब्रूयादेषवाक्यंमहान्वसुः ॥
एवंतेसंविदंकृत्वाविबुधाऋषयस्तथा ॥ ९ ॥
अपृच्छन्सहसाभ्येत्यवसुंराजानमंतिकात् ॥
भोराजन्केनयष्टव्यमजेनाहोस्विदोषधैः ॥ १० ॥
एतंनःसंशयंछिंधिप्रमाणंनोभवान्मतः ॥
सतान्कृतांजलिर्भूत्वापरिपप्रच्छवैवसुः ॥ ११ ॥
कस्यचैकोमतःकामोब्रूतसत्यंद्विजोत्तमाः ॥
ऋषयउ–धान्यैर्यष्टव्यमित्येवपक्षोऽस्माकंनराधिप ॥
देवानांतुपशुःपक्षोमतोराजन्वदस्वनः ॥ १२ ॥
भीष्मउ––देवानांतुमतंज्ञात्वावसुनापक्षसंश्रयात् ॥
छागेनाजेनयष्टव्यमेवमुक्तंवचस्तदा ॥ १३ ॥

कुपितास्तेततःसर्वेमुनयःसूर्यवर्चसः ॥
ऊचुर्वसुंविमानस्थंदेवपक्षार्थवादिनम् ॥ २४ ॥
सुरपक्षोगृहीतस्तेयस्मात्तस्माद्दिवःपत ॥
अद्यप्रभृतितेराजन्नाकाशेविहतागतिः ॥ २५ ॥
अस्मच्छापाभिघातेनमहींभित्वाप्रवेक्ष्यसि ॥
ततस्तस्मिन्मुहूर्त्तेऽथराजोपरिचरस्तदा ॥ २६ ॥
अधोवैसंबभूवाशुभूमेर्विवरतोनृप ॥
स्मृतिस्त्वेवंनविजहौतदानारायणाज्ञया ॥ २७ ॥

इतिश्री भारते मोक्ष धर्मे शतोपरिचतुः षष्टितमेऽध्याये ॥

एम वार्त्ता वायु पुराणमा पण छे, स्कंद पुराणमा पण छे त्यांथी जोइ लेजो घणा विस्तारे छे.

यावेदविहिताहिंसानसाहिंसेतिकीर्त्यते ॥

ए स्मृति वाक्यमा कह्युं जे वेदमा कहि एवी जे हिंसा ते हिंसा न कहेवाय. यज्ञ विना अमथी हिंसा करवानुं कोइ ठेकाणे कह्युं नथी जे हिंसा निषेध करे एतो जे ठेकाणे हिंसाना निषेध छे ते वेद विहित हिंसानाज निषेध छे.

ऐतरब्राह्मणनीद्वितीयपंचिकामांपुरुषंवैदेवाःपशुमालभंत

ए पुरुष मेधना निषेध श्रीमद्भागवतना पंचम स्कंधना छेला अध्यायमा निषेध [illegible] यातना [illegible] छे.

• तथाहियोत्विहवैपुरुषाःपुरुषमेधेनयजंतेयाश्चस्त्रियोनृप शून्स्वादंतितांश्चताश्चतेपशवइहनिहतायमसदनेपात यंतोरक्षोगणाःसौनिकाइवस्वधितिनाविदार्यासृक्पिवंतिनृत्यंतिगायंतिचहृष्यमाणायथेहपुरुषादाः ॥१॥

सोमक राजा हता तेने एक पुत्र जंतु नामे हतो तेने एक दिन कीडिये चटको भर्यो त्यारे पुत्रे बकोर पाड्यो त्यारे राजाये मुख हलाव्युं ने कह्युं जे एक पुत्र ते पुत्रमा नहि तारे पासे उभा एवा जे पुरोहित तेणे कह्युं जे ए पुत्रने यज्ञ करि होमो तो घणा पुत्र थशे त्यारे राजाये कह्युं जे होमीशुं यज्ञ करो पछे ए गोर हता तेणे यज्ञ करिने पुत्रने होमाव्यो पछे राजाने पुत्र एकसोने एक थया पछे काळे करि गोर मरि गया त्यारे पुरुष मेध कर्यो तेना पापे करिने गोरने नरकमा नाख्या पछे राजा मरि गया त्यारे राजा पण नरकमा गया त्या गोरने देखिने यम राजाने राजाये कह्युं जे आ गोरने नरकमा शा सारु नाख्या त्यारे यमे कह्युं जे तमोने पुरुष मेध कराव्यो तेना पापे करिने तमारे नरक भोगवो छे ने गोरने पण भोगववानो छे ए वार्त्ता वन पर्वमा सविस्तर ते जोवि ए रीते वेदोक्त हिंसानुं फळ पण नरक प्राप्ति छे कळिमा तो सर्वथा हिंसामय यज्ञनो निषेधज लख्यो छे जो ए हिंसामय यज्ञनो सत्य पक्ष होय तो निषेध शु करवा करे.काळ निर्णय दीपिकामा निषेध लख्यो छे

वर्ज्यंगोनरवाजिमेधकरणंमद्यंविवाहः
पुनर्व्यूढायाश्चकलौकमंडलुधृतिर्ब्रह्मव्रतंनैष्ठिकम् ॥

ज्येष्टांशोदुरणंवरातिथिसुरसद्यर्थंपशोर्हिंसनंभ्रातु.

स्त्रीपुनियोगतःसुतजनिस्तद्वद्वनस्थाश्रमः ॥ १ ॥

आदित्यपुराणेच.

नराश्वमेधौमद्यंचकलौवर्ज्यंद्विजातिभिः ॥

ऊढायाःपुनरुद्वाहोज्येष्टांशोगोवधस्तथा ॥१॥

शास्त्रमा कर्म बे प्रकारना कह्या छे प्रवृत्त कर्म तथा निवृत्त कर्म तेमा अग्निहोत्रादि हिंसक कर्म छे ते अशांतिनुं करनार छे वारंवार जन्ममरणने आपे छे निवृत्त कर्म मोक्ष आपे छे.

उक्तंचश्रीमद्भागवतेसप्तमस्कंधे.

प्रवृत्तंचनिवृत्तंचद्विविधंकर्मवैदिकम् ॥

आवर्त्ततप्रवृत्तेननिवृत्तेनाश्नुतेऽमृतम् ॥ १ ॥

हिंस्रंद्रव्यमयंकाम्यमग्निहोत्राद्यशांतिदम् ॥

दर्शश्चपूर्णमासश्चचातुर्मास्यंपशुःसुतः ॥२॥सोमयागः

एतदिष्टंप्रवृत्ताख्यंहुतंप्रहुतमेवच ॥

पूर्त्तंसुरालयारामकूपाजीव्यादिलक्षणम् ॥३॥

द्रव्यसूक्ष्मविपाकश्चधूमोरात्रिरपक्षयः ॥

अयनंदक्षिणंसोमोदर्शओषधिवीरुधः ॥ ४ ॥

अन्नंरेतइतिक्ष्मेशपितृयानंपुनर्भवः ॥

एकैकश्येनानुपूर्वभूत्वाभूत्वेहजायते ॥ ५ ॥
निषेकादिश्मशानांतैःसंस्कारैःसंस्कृतोद्विजः ॥
इंद्रियेषुक्रियायज्ञान्ज्ञानदीपेषुजुह्वति ॥ ६ ॥ इत्यादि.

प्राचीनबर्हिष राजाये यज्ञ कारि बधु वसुधातल लेंदर्भे करि आस्तत कर्युं ए रीते कर्मने विषे आसक्त छे मन जेमुं एवा प्राचीन बर्हिषने जोइ कृपालु नारदजी बोध करता हवा हे राजन् क्रीया कर्मे करि दुखहानि सुखनी प्राप्ति छे राजाये कह्युं महाराज मने काइं समजण नथी पछे नारदजीये प्रत्यक्ष मार्या पशुने देखाड्या जे कुठार लइने राजाने मारवा उभा छे ते राजा जोई कंप्या ने हिंसीमय यज्ञ छोडीने निष्काम अहिंसक कर्म करि परमात्माने पाम्या

उक्तंचश्रीमद्भागवतेचतुर्थस्कंधे.

बर्हिषत्सुमहाभागोहाविर्धानिःप्रजापतिः ॥
क्रियाकांडेषुनिष्णातोयोगेषुचकुरूद्वह ॥ १ ॥
यस्येदंदेवयजनमनुयज्ञंवितन्वतः ॥
प्राचीनाग्रैःकुशैरासीदास्तृतंवसुधातलम् ॥ २ ॥
प्राचीनबर्हिषंराजन्कर्मस्वासक्तमानसम् ॥
नारदोऽध्यात्मतत्त्वज्ञः कृपालुःप्रत्यबोधयत् ॥ ३ ॥
श्रेयस्त्वंकतमद्राजन्कर्मणात्मनईहसे ॥
दुःखहानिःसुखावाप्तिःश्रेयस्तन्नेहचेष्यते ॥ ४ ॥

राजोवाच--नजानामिमहाबाहोपरंकर्मापविद्धधीः ॥

ब्रूहिमेविमलंज्ञानंयेनमुच्येयकर्मभिः ॥ ५ ॥

गृहेषुकूटधर्मेषुपुत्रदारधनार्थधीः ॥

नपरंविंदतेमूढोभ्राम्यन्संसारवर्त्मसु ॥ ६ ॥

श्रीनारदउवाच.

भोभोः प्रजापतेराजन्पशून्पश्यत्वयाध्वरे ॥

संज्ञापितान्जीवसंघान्निर्घृणेनसहस्रशः ॥ ७ ॥

एतेत्वांसंप्रतीक्षंतेस्मरंतोवैशसंतव ॥

संपरेतमयःकूटैश्छिंदंत्युत्थितमन्यवः ॥ ८ ॥

युधिष्ठिरवाक्यंप्रथमस्कंधे.

यथापंकेनपंकांभःसुरयावासुराकृतम् ॥

भूतहंस्यांतथैवैकांनयज्ञैर्मार्ष्टुमर्हति ॥ ९ ॥

वेदना त्रण कांडछे एकतो कर्मकांड बीजो उपासना कांड त्रीजो ज्ञानकांड थकी श्रीमद्भागवतने श्रेष्ठ पणु कह्युं छे श्रीधरस्वामीए धर्मःप्रोज्झित ए श्लोकनी टीकामां ॥

इदानींश्रोतृप्रवर्त्तनायश्रीमद्भागवतस्यकांड

त्रयविषयेभ्यःसर्वशास्त्रेभ्यश्रेष्ठंदर्शयतिधर्मइति ।

धर्मःप्रोज्झितकैतवोऽत्रपरमोनिर्मत्सराणां

सतांवेद्यंवास्तवमत्रवस्तुशिवदंतापत्रयोन्मूलनम् ॥
श्रीमद्भागवतेमहामुनिकृतेकिंवापरैरीश्वरः
सद्योहृद्यवरुध्यतेऽत्रकृतिभिःशुश्रूषुभिस्तत्क्षणात् ॥१॥
निगमकल्पतरोर्गलितंफलंशुकमुखादमृतद्रवसंयुतम् ॥
पिबतभागवतंरसमालयंमुहुरहोरसिकाभुविभावुकाः॥२।
श्रीधरस्वामिनःसर्वटीकाकाराग्रगण्याविदांविद्वारि
ष्ठाव्याचख्युः।
अत्रश्रीमतिसुंदरेभागवतेपरमोधर्मोनिरूप्यते ॥
परमत्वेहेतु.
प्रकर्षेणोज्झितंकैतवंफलाभिसंधिलक्षणंकपटंयस्मिन्सः॥
प्रशब्देनमोक्षाभिसंधिरपिनिरस्तः॥
केवलमीश्वराराधनलक्षणोधर्मोनिरूप्यतइति॥
अधिकारितोऽपिधर्मस्यपरमत्वमाहनिर्मत्सराणां
परोत्कर्षासहनंमत्सरस्तद्रहितानांसतांभूतानुकंपिनाम्
एवंकर्मकांडविषयेभ्यःशास्त्रेभ्यःश्रैष्ठ्यमुक्तम् ॥
ज्ञानकांडविषयेभ्योऽपिश्रैष्ठ्यमाहवेद्यमिति
वास्तवंपरमार्थभूतंवस्तुवेद्यम् ॥
नतुवैशेषिकाणामिवद्रव्यगुणादिरूपम् ॥

शिवदंपरमसुखदम्किंच ॥
आध्यात्मिकादितापत्रयोन्मूलनंच ॥
अनेनज्ञानकांडविषयेभ्यःश्रेष्ठचंदर्शितम् ॥
कर्तृतोपिश्रेष्ठ्यमाह
महामुनिःश्रीनारायणस्तेनप्रथमंसंक्षेपतःकृते ॥
देवताकांडगतंश्रैष्ठ्यमाहपरैःशास्त्रैस्तदुक्तसाधनैर्वा ॥
ईश्वरोहृदिकिंवासद्यएवावरुध्यतेस्थिरीक्रियते
वाशब्दःकटाक्षेकिंतुविलंबेनकथंचिदेव ॥
अत्रतुशुश्रूषुभिःश्रोतुमिच्छद्भिरेवतत्क्षणादेवावरुध्यते ॥
इदमेवतर्हिकिमितिसर्वेनशृण्वंतितत्राहकृतिभिरिति ॥
श्रवणेछानुपुण्यैर्विनानोत्पद्यतइत्यर्थः ॥
तस्मादत्रकांडत्रयार्थस्यापियथावत्प्रतिपादनादिदमेव
सर्वशास्त्रेभ्यःश्रेष्ठमतोनित्यमेतदेवश्रोतव्यमितिभावः ॥
इदानींतुनकेवलंसर्वशास्त्रेभ्यःश्रेष्ठत्वादस्यश्रवणं
विधीयतेअपितुसर्वशास्त्रफलरूपमिदमतःपरमाद
रेणसेव्यमित्याहनिगमेति ॥
चातुर्होत्रंकर्मशुद्धंप्रजानांवीक्ष्यवैदिकम् ॥
व्यदधाद्यज्ञसंतत्यैवेदमेकंचतुर्विधम् ॥ १९ ॥

ऋग्यजुःसामाथर्वाख्यावेदाश्चत्वारउद्धृताः॥
इतिहासपुराणानिपंचमोवेदउच्यते॥२॥
तत्रर्ग्वेदधरःपैलःसामगोजैमिनिःकविः॥
वैशंपायनएवैकोनिष्णातोयजुषामुत॥३॥
अथर्वांगिरसामासीत्सुमंतुर्दारुणोमुनिः॥
इतिहासपुराणानांपितामेरोमहर्षणः॥४॥
तएतऋषयोवेदंस्वंस्वंव्यस्यन्ननेकधा॥
शिष्यैःप्रशिष्यैस्तच्छिष्यैर्वेदास्तेशाखिनोभवन्॥५॥
तएववेदादुर्मेधैर्धार्यंतेपुरुषैर्यथा॥
एवंचकारभगवान्व्यासःकृपणवत्सलः॥६॥
स्त्रीशूद्रद्विजबंधूनांत्रयीनश्रुतिगोचरः॥
कर्मश्रेयसिमूढानांश्रेयएवंभवेदिह॥७॥
इतिभारतमाख्यानंकृपयामुनिनाकृतम्॥
एवंप्रवृत्तस्यसदाभूतानांश्रेयसिद्विजाः॥८॥
भारतव्यपदेशेनह्याम्नायार्थश्चदर्शितः॥
दृश्यतेयत्रधर्मादिस्त्रीशूद्रादिभिरप्युत॥९॥
मुमुक्षवोघोररूपान्हित्वाभूतपतीनथ॥
नारायणकलाःशांताभजंतिह्यनसूयवः॥१०॥

रजस्तमःप्रकृतयःसमशीलान्मजंतिवै ॥
पितृभूतप्रजेशादीन्श्रियैश्वर्यप्रजेप्सवः ॥ ११ ॥
वासुदेवपरावेदावासुदेवपरामखाः ॥
वासुदेवपरायोगावासुदेवपराःक्रियाः ॥ १२ ॥
वेदार्थभारतेन्यस्ताइतिच ॥
वेदान्व्यासयतिनिरूपयतिभारतादिष्वितिवेद
व्यासइतिनामनिरुक्तेः ॥
इतिहासपुराणानिपंचमंवेदमीश्वरइत्यादिवाक्यैः
पुराणानांवेदाभिन्नत्वनिश्चयः ॥
॥ महाभारतेमानवीयेच. ॥
इतिहासपुराणाभ्यांवेदंसमुपबृंहयेदित्युक्तम् ॥
तेनपुराणानांवेदोपबृंहकत्वान्नततोविजातीयत्वम् ॥
तस्मान्नपुराणोक्तवाक्येष्ववैदिकत्वशंकाकार्या ॥
॥ तथाचनारदीये. ॥
वेदार्थादधिकंमन्येपुराणार्थंवरानने ॥
वेदाःप्रतिष्ठितादेविपुराणेनात्रसंशयः ॥
पुराणमन्यथाज्ञात्वातिर्यग्योतिमवाप्नुयात् ॥
सुदांतोऽपिसुशांतोवानगतिंप्राप्नुयात्सतीम् ॥

वेदपुराणयोर्भिन्नत्वेत्वस्पष्टपरोक्षार्थत्वस्पष्टापरो
क्षार्थत्वेएवप्रयोजकेभवतोनत्वाधिक्यन्यूनत्वे ॥
उभयोरपिभगवन्मुखादेवाविर्भूतत्वात् ॥
तथाहिवेदेनित्योनित्यानांचेतनश्चेतनानामित्यादि
प्रथमांतनित्यचेतनशब्दाभिधेयोभगवान्नस्पष्टंप्रतीयते ॥
पुराणेतुकृष्णमेनमवेहित्वमात्मानमखिलात्मना
मितिस्पष्टंप्रतीयते ॥
तथावेदेसदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीय
मितिसामान्यतोऽस्पष्टमुच्यते ॥
पुराणेतुतत्रोद्वहत्पशुपवंशशिशुत्वनाट्यंब्रह्माद्वयं
परमनंतमगाधबोधम् ॥
वत्सान्सखीनिवपुरापरितोविचिन्वदेकंसपाणिकवलं
परमेष्ठ्यचष्टेतिस्पष्टमुच्यते ॥
तथावेदेयदूर्ध्वंगार्गिदिवोयदवाक्पृथिव्यायदंतरा
द्यावापृथिवीत्यादिनाभगवतोब्रह्मांडाश्रयत्वलक्षणं
माहात्म्यमुक्तंतच्चास्पष्टम् ॥
पुराणेतुक्वाहंतमोमहदहंखचराग्निवार्भू
संवेष्टितांडघटसप्तवितस्तिकायः ॥

केदग्विधाविगणितांडपराणुचर्यावाताध्वरोम

विवरस्यचतेमहित्वमितिस्पष्टमुक्तम् ॥

तथावेदेमायाचतमोरूपासदसदनिर्वचनी

येतिमायायादुर्ज्ञेयत्वमुक्तंतच्चास्पष्टम् ॥

पुराणेतुआत्मांशभूतांतांमायांभवानींभगवान्भवः

शंसतामृषिमुख्यानांप्रीत्याचष्टाथभारतेति

श्रीपार्वतीरूपामायेतिस्पष्टयुक्तम् ॥

मुंडकोपनिषदि

द्वेविद्येवेदितव्येइतिहास्मयद्ब्रह्मविदोवदंतिपराचैवाप-

राचतत्रापरास्ग्वेदोयजुर्वेदःसामवेदोब्रह्मवेदःशिक्षाक

ल्पोव्याकरणंनिरुक्तंछंदोज्योतिषमितीतिहासः पुराणं

न्यायोमीमांसाधर्मशास्त्राणीत्यथपराययातदक्षरमधिग

म्यतयत्तदद्दश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुःश्रोत्रंतदपाणि

पादंनित्यंविभुसर्वगतंसुसूक्ष्मंतदव्ययंयद्भूतयोनिंपरिपश्यं

तिधीराः ॥

ए श्रुतिमां कह्युं जे वेद पुराण ने इतिहास एकज छे एमां फेर नथी.

॥ तृतीयस्कंधे ॥

जीवाःश्रेष्टाह्यजीवानांततःप्राणभृतःशुभे ॥

ततःसचित्ताःप्रवरास्ततश्चेंद्रियवृतयः ॥ १ ॥
तत्रापिस्पर्शवेदिभ्यःप्रवरारसवेदिनः ॥
तेभ्योगंधविदःश्रेष्टास्ततःशब्दविदोवराः ॥ २ ॥
रूपभेदविदस्तत्रततश्चोभयतोदतः ॥
तेषांबहुपदःश्रेष्ठाश्चतुष्पादस्ततोद्विपात् ॥३॥
ततोवर्णाश्चचत्वारस्तेपांब्राह्मणउत्तमः ॥
ब्राह्मणेष्वपिवेदज्ञोह्यर्थज्ञोऽभ्याधिकस्ततः ॥ ४ ॥
अर्थज्ञात्संशयच्छेत्ताततःश्रेयान्स्वकर्मकृत् ॥
मुक्तसंगस्ततोभूयान्नदोग्धाधर्ममात्मनः ॥ ५ ॥
तस्मान्मय्यर्पिताशेषक्रियार्थात्मानिरंतरः ॥
मय्यर्पितात्मनःपुंसोमयिसंन्यस्तकर्मणः ॥ ६ ॥
नपश्यामिपरंभूतमकर्त्तुःसमदर्शनात् ॥ ७ ॥

हिंसामय यज्ञ करिने राजस तामस जीवने स्वर्गादिकनी प्राप्ति नि-विघ्ने करि यज्ञ करे ते मारू माय आराधन करे तो थाय छे पण एनु पुण्य थइ रहे त्यारे पाछो मर्त्य लोकमा पडे छे ते गीतामा भगवाने कह्युं छे

त्रैविद्याःसोमपाःपूतपापायज्ञैरिष्ट्वास्वर्गतिंप्रार्थयंते ॥
तेपुण्यमासाद्यसुरेंद्रलोकमश्नंतिदिव्यान्दिविदेवभोगान्॥

तेतंभुक्त्वास्वर्गलोकंविशालंक्षीणेपुण्येमर्त्यलोकं
विशंति ॥ १ ॥

एवंत्रयीधर्ममनुप्रपन्नागतागतंकामकामालभंते ॥

पण एम मोक्ष थतो नथी वास्ते जेने मोक्षनी इछा होय तेने क्यारेय पण हिंसामय यज्ञ न करवा निष्काम अहिंसक यज्ञ करवा ते कलिमा जे अश्वमेधादि यज्ञ करवानो निषेध कर्यो छे ते तो कदापि करवाज नाहिं.

उक्तंचश्रीमद्भागवते

कृतेयद्ध्यायतोविष्णुंत्रेतायांयजतोमखैः ॥
द्वापरेपरिचर्यायांकलौतद्धरिकीर्त्तनात् ॥ १ ॥

भारतना मोक्ष धर्ममा विशमा अध्यायमा हिंसामय यागादि कर्म निंद्यु छे.

लोष्टमर्दीतृणछेदीनखवादीतुयोनरः ॥
नित्योच्छिष्टःशंकुशुकोनेहायुर्विंदतेमहत् ॥ १ ॥
यजुषासंस्कृतंमांसंनिवृत्तोमांसभक्षणात् ॥
नभक्षयेद्वृथामांपृष्ठमांसंचवर्ज्जयेत् ॥ २ ॥

अस्यटीकायांनीलकंठः ॥

अमृतंब्राह्मणोच्छिष्टमित्यस्यप्रशंसार्थंहिंसामयं-
यागादिकर्मनिंद्यते

लोष्टेतिः--लोष्ठमर्दीयज्ञीयवेदिकरणार्थंतृणछेदी वर्हिराहरणार्थनखादिनखैच्छित्वायज्ञशेषंमांसं खादतीतितथा ॥

नित्योच्छिष्टंनित्यसोमपानंपितापितामहोवापिसोमं यस्यनपीतवान् सवैकब्राह्मणोनामेत्युक्तःतेनउच्छि ष्टः सोमपायीशंकुसुकःफलाभिष्वंगीमहदायुर्ब्रह्म नविंदते ॥१॥

यजुषायजुर्वेदविदाऽध्वर्युणामांसंयज्ञीयंयद्यपिनिवृत्तो नभक्षयेत् ॥

वृथामांसंअसंस्कृतमांसंपृष्ठमांसंचरममांसंश्राद्ध शेषमित्यर्थः ॥

पृष्ठंचरममात्रेस्यादितिविश्वः ॥

एतेनहिंसायुक्तोधर्मोनकर्त्तव्यइत्युक्तम् ॥ २ ॥

श्रीभारतना मोक्ष धर्ममा अध्याय ८८, ८९, ९०, ए त्रण अध्याय मा तुलाधार जाजलिनो संवाद आहिंसक धर्म युक्त छे.

यदाचायंनबिभेतियदाचास्मान्नबिभ्यति यदानेच्छातिनद्वेष्टिब्रह्मसंपद्यतेतदा ॥ १ ॥

यदानकुरुतेभावंसर्वभूतेषुपापकम् ॥

कर्मणामनसावाचाब्रह्मसंपद्यतेतदा ॥ २ ॥
नभूतोनभाविष्योऽस्तिनचधर्मोऽस्तिकश्चन ॥
योऽभयःसर्वभूतानांसप्राप्नोत्पभयंपदम् ॥ ३ ॥
यस्माद्दुद्विजतेलोकःसर्वेमृत्युमुखादिव ॥
वाक्क्रूराद्दंडपरूपात्संप्राप्नोतिमहद्भयम् ॥ ४ ॥
यथावद्वर्त्तमानानांवृद्धानांपुत्रपौत्रिणाम् ॥
अनुवृत्तामहेवृत्तंमहिंस्राणांमहात्मनाम् ॥ ५ ॥
अहिंस्राणामितिहिंसामयकुलाचारोप्यप्रमाण
मितिनीलकंठः ॥

वेद तथा भारत तथा सर्व पुराणनो अभिप्राय तो हिंसामय यज्ञ न करवो एज छे सकामिक पुरुषने हिंसा करवानुं सुझे छे काम्य एवुं जे हिंसामय कर्म तेनी निंदा करि छे.

सएवसुभगोभूत्वापुनर्भवतिदुर्भगः ॥
व्यापत्तिंकर्मणांदृष्ट्वाजुगुप्संतिजनाःसदा॥ १ ॥
अकारणोहिनैवास्तिधर्मःसूक्ष्मोहिजाजले ॥
भूतभव्यार्थमेवेहधर्मप्रवचनंकृतम् ॥ २ ॥
सूक्ष्मत्वान्नसविज्ञातुंशक्यतेबहुनिन्हवः ॥
उपलभ्यांतराचान्यानाचारानवबुध्यते ॥ ३ ॥

टीकाअस्यैवस्तुत्यर्थकाम्यंकर्मक्षविष्णुवैननिं
दातिसएवेति ॥

सुभगःस्वर्गोव्यापत्तिनाशंकर्मणांकर्मफलानां
स्वर्गादीनाम् ॥ १ ॥

अकारणःकारणमनुग्रानंप्रयोजकंफलंतद्वीनः
सूक्ष्मोऽभयदानात्मकः ॥

भूतंब्रह्मभव्यंस्वर्गादिउभयार्थमेवधर्माणांशमानीनां
यज्ञादीनांचप्रवचनमध्ययनंवेदेकृतंअतःस्थूलधर्मा
द्यज्ञादेरन्यःसूक्ष्मधर्मोऽस्तीतिभावः ॥ २ ॥

कुतःसूक्ष्मधर्मोदुर्ज्ञेयः ॥

यतःबहुनिन्हवःसप्तदशप्राजापत्यान्यशूनालतेसप्तदशो
वैप्रजापतिःप्रजापतेराप्त्याइत्यादिविधयःश्रेयः साधनत्वे
नहिंसामुपदिशंतःअहिंसाशास्त्रमुपद्रवंतीत्यर्थः ॥

तर्हितदप्रमाणमेवेत्याशंक्याहउपलभ्येति ॥

उक्षाणावावेहतेचाक्षदंते महोक्षंवामहाजंवाश्रोत्रियायोप
कल्पयोदितिश्रुतिस्मृतिविहितोमधुपर्कोगवालंबनएक
आचारःयागामनागामदितिवधिष्ठेतिमंत्रलिंगावगतोग
वोत्सर्गविधिस्ताद्विरुद्धोऽन्यआचारस्तत्रप्रमाणमितिवि

शोषणात्क्रत्वर्थहिंसाविधेरहिंसाविधिर्ज्यायानितिगम्यते
अनागस्त्वस्यप्राजापत्यपशुत्वपितुल्यत्वादित्यास्तांतावत्
तपोभिर्यज्ञदानैश्चवाक्यैःप्रज्ञाश्रितैस्तथा ॥
प्राप्नोत्यभयदानस्ययद्यत्फलमिहाश्नुते ॥ १ ॥
लोकेयःसर्वभूतेभ्योददात्यभयदक्षिणाम् ॥
ससर्वयज्ञैरीजानःप्राप्नोत्यभयदक्षिणाम् ॥ २ ॥
नभूतानामहिंसायाज्यायान्धर्मोऽस्तिकश्चन ॥
यस्मान्नोद्विजतेभूतंजातुकिंचित्कथंचन ॥ ३ ॥
सोऽभयंसर्वभूतेभ्यःसंप्राप्नोतिमहामुने ॥
यस्मादुद्विजतेलोकःसर्पाद्वेश्मगतादिव ॥
नसधर्ममवाप्नोतिइहलोकेपरत्रच ॥ ४ ॥
सर्वभूतात्मभूतस्यसम्यक्भूतानिपश्यतः ॥
देवापिमार्गेमुह्यंतिअपदस्यपदैषिणः ॥ ५ ॥
दानंभूताभयस्याहुःसर्वदानेभ्यउत्तमम् ॥
ब्रवीमितेसत्यमिदंश्रद्दधस्वचजाजले ॥ ६ ॥

अर्थः—आ श्लोकोनो अर्थ ए छे जे अहिंसाथी बीजो कोइ उत्तम धर्म नथी.

अघ्न्याइतिगवांनामकएताहंतुमर्हति ॥

महद्यकाराकुशलंवृषंगांवालभेत्तुयः ॥ १ ॥
अघ्यायध्वमघ्न्यादेवभागमितिश्रुतिप्रसिद्धंगवांनाम ॥
नहंतुंशक्याअघ्न्याइतियोगात्गवामवध्यत्वंश्रौतमित्यर्थः॥
चकारकृतवान्आलभेताहिंस्यात् ॥

अर्थ —वास्ते यज्ञमा वा अतिथिने अर्थे गायने तथा वृषभने मारे छे ए मोटुं अकुशल कर्म करे छे

तथाचापस्तंबः ॥ हृष्टोहृष्यतिदृप्तोधर्ममतिक्रामतिधर्मा
तिक्रमान्नश्यतीतिक्रुद्धोहन्यात्पित्रमपीति ॥
तस्मात्सर्वभूताभयप्रदानमेवमहान्धर्मइत्याशयः ॥

अर्थः—ते कारण माटे सर्व भूतने अभय दान आलवुं एज मोटो धर्म छे पण हिंसामय यज्ञ एतो मोटो धर्म नथी एतो नित्य हिंसा करेछे तेने मुकवाने अर्थे छे ने पामर जीवने विषयी करवा ने विषयीने मुमक्षुं करवाने अर्थे छे.

वक्ष्यामिजाजलेवृत्तिनास्मिब्राह्मणनास्तिकः ॥
नयज्ञंचविनिंदामियज्ञवित्तुसुदुर्लभः ॥ १ ॥

अर्थ —तुलाधार जाजलि ऋषिने कहे छे हे जाजलि हे ब्राह्मण हुं जे ते हिंसा रहित जीविका तेने कहु छुं यज्ञनी निंदा नथी करतो सु नास्तिक नथी.

यज्ञो । वैविष्णुरितिश्रुतेर्योयज्ञभोक्ता

यज्ञ ए विष्णु वाचक शब्द छे ते परमात्मा तेनो जाणनार दुर्लभ छे ते परमात्मानुं पुराडाशे करी यजन करवुं एज उत्तम यज्ञ छे पण पशु होमी यज्ञ तो केवल सकामिक तामसी पुरुषने ने पामरने विषयी करवा सारूज छे संकोचने अर्थे नियम छे परंतु विधि नथी.

नमोब्राह्मणयज्ञाययेचयज्ञविदोजनाः ॥

स्वयज्ञंब्राह्मणाहित्वाक्षत्रयज्ञमिहास्थिताः ॥ २ ॥

टीका.ब्राह्मणानांब्रह्मविदांयज्ञःब्रह्माग्नौजीवहवि षस्त्यागस्तस्मैयोगायेत्यर्थः ॥ स्वयज्ञंयागम् ॥ क्षत्रयज्ञंहिंसामयंज्योतिष्टोमादिम् ॥

अर्थः—ब्राह्मण जे ते पोतानो यज्ञ जे योग तेनो त्याग करि क्षत्रिनो यज्ञ जे हिंसामय ज्योतिष्टोमादिक तेने आश्रा छे.

क्षत्रयज्ञंविशिनष्टिलुब्धैरिति ॥

लुब्धैर्वृत्तिपरैर्ब्रह्मन्नास्तिकैःसंप्रवर्त्तितम् ॥

वेदवादानविज्ञायसत्याभासमिवानृतम् ॥ ३ ॥

टीका.हेब्रह्मन् ॥ आस्तिकैर्वेदप्रामाण्यवादिभिः ॥ वेदवादानर्थवादान्तेषांस्तुतिमात्रतात्पर्यमित्यविज्ञाय सत्यवदाभासमानंस्वरूपतःअनृतंआविद्यकब्राह्मण्या दाध्यासमूलत्वात्लुब्धैःप्रवर्त्तितम्तथाचश्रुतिः ॥ नीहारेणप्रावृताजल्प्याश्चासुतृपउक्थशासश्चरंतीति ॥

अज्ञानेनआवृताःजल्प्याअर्थवादगिरः ॥

असुतृपःप्राणपोषकाःउक्थशासकर्मानुशासनपराः ॥

आस्तिक जे तेमणे वेदमां जे अर्थ वाद छे तेने स्तुति मात्रने विषे तात्पर्य छे एम न जाणि सप्तमी पेठे भासतुं ने स्वरूपे करिने तो अ-नृतने लोभि पुरुषे हिंसामय पणुं प्रवर्ताव्युं छे.

एवंक्षत्रयज्ञांनिंदित्वाब्राह्मणस्वरूपमाहयदेवेति ॥

यदेवसुकृतंहव्यंतेनतुष्यंतिदेवताः ॥

नमस्कारेणहविषास्वाध्यायैरोषधैस्तथा ॥ ४ ॥

टीका. सुकृतंसुकृतार्जितंहव्यम् ॥

तदेवत्रिविधमाहनमइति ॥

नमस्कारात्मकेनहविषेतिसामानाधिकरण्यम् ॥

योनमसामध्वरइतियज्ञोवैनमइतिहिब्राह्मणं

भवतीतिश्रुतिस्मृतिभ्यांनमस्कारस्यैवयज्ञत्वावगतेः

तथास्वाध्यायैर्हविषेतिसंबंधः ॥

वयमग्नेअर्वतावासुवीर्यंब्रह्मणावाचितयेमजानीम

अनीतिवेदस्यापियज्ञत्वश्रुतेः ॥

अर्वताअश्वेनब्रह्मणावेदेनवाऽग्नेत्वांचिंतयेमजानीम ॥

तथाचाश्वमेधतुल्यत्वंयज्ञस्योक्तम् ॥

आश्वलायनगृह्योपि आते अन्नऋंचाहविर्हदात्तष्टंभग
मसितेतेभवंतूक्षणऋषभासोवशाउतेत्यतएवउक्षा
णश्चऋषभाश्चवशाश्चभवेतियइमंस्वाध्यायमधीयतइति॥
तथाउंषधैर्व्रीहियवादिभिःपशुभ्योवैमेधाउदक्रामंस्तौ
व्रीहिश्चैवयवश्चभूतामावजायेतांतस्मादाहुःपुरोडाशसत्र
लोक्यमितिचतयोर्हविष्ट्वावगमात्पुरुषाश्वगोजादीनां
पशुनाममेध्यत्वश्रुतिश्चातएवउक्तांतमेधाअमेध्याः
पशवइति ॥

तथाचैतैस्त्रिभिर्हविर्भिर्देवतापूजायज्ञाख्याकर्त्तव्येति
शास्त्रेवेदेनिदर्शनंप्रत्यायकवचमस्तितदप्युदाहृतमेव ॥
पूजास्याद्देवतानांहियथाशास्त्रनिदर्शनम् ॥
इदंपूर्वव्याख्यातम् ॥
इष्टापूर्त्तादसाधूनाविगुणाजायतेप्रजा ॥
टीका ननुइष्टान्भोगान्हिवोदेवादास्यंतेयज्ञभाविता
इतिभगवतायज्ञानांधनपुत्रस्वर्गादिप्रीत्यर्थत्वोक्तेः
किंतेमोक्षानुपयोगिभिरित्याशंक्याहइष्टेति ॥
इष्टंइष्टिपशुसोमादिआपूर्त्तंतटाकारामादि ॥
असाधुनांकामनावतांयज्ञाःतादृगेवलुब्धमपर्णंभवति॰

सर्गेभ्योरागद्वेषशून्येभ्यइष्टादिकर्तृभ्योनीप्सितापिता
दर्शीप्रजाजायतइत्यर्थः ॥

भारते मोक्षधर्मे अध्याय ९०

यत्रगत्वानशोचंतिनच्यवंतिव्यथंतिच ॥
तेतुतद्ब्रह्मणःस्थानंप्राप्नुवंतीहसात्विकाः ॥ १ ॥
नैवतेस्वर्गमिच्छंतिनयजंतियशोधनैः ॥
सतांवर्त्मानुवर्त्ततेयेयजंतेत्वहिंसया ॥ २ ॥
वनस्पतीनोषधीश्चफलंमूलंचतेविदुः
नचैतानृत्विजोलुब्धायाजयंतिफलार्थिनः ॥ ३ ॥

अर्थ—आ लोकने विषे जे सात्विक छे हिंसामय यज्ञ कर्त्ता नथी तेतो परमात्माना स्थानने पामे छे.

तेने विषे जइने शोक करता नथी तथा च्यवता नथी ने व्यथा पामता नथी

अर्थ—ते स्वर्गने पण इछता नथी

तस्पनाममहद्यशइतिश्रु । तेयशोब्रह्मधनैर्धनसाध्यैः

धन साध्य एवा कर्म करि यजता नथी सत्पुरुषनो मार्ग जे योग तेने अनु वर्त्ते छे जे अहिंसाये करिने यज्ञ करे छे ते पुरुष यज्ञ ज्ञाने करिने करे छे तो वनस्पति तथा ओषधि व्रीहियवादि तथा फल मूल तेनेज यज्ञमां होमवानी सामग्री जाणे छे पण पशुने नथी जाणता लोभीयाने धनथी एवा ऋत्विज जे ते एवा समजणा छे तेने यज्ञ करावता नथी

वेद ने हिंसाने विषे तात्पर्य नथी। किंतु राग प्राप्त हिंसा संकोचने अर्थे महा पत्काल निर्वाहने अर्थे अभ्य नुज्ञा मात्र छे

तथाचोक्तम्तीर्थेपुप्रतिदष्टेपुराज्ञामेध्यपशून्वने ॥
यावदर्थमलंलुब्धोहन्यादितिनियम्यते ॥ १ ॥
लोकेव्यवायामिपमद्यसेवानित्यास्तुजंतोर्नहितत्रनोदना॥
व्यवस्थितिस्तेपुविवाहयज्ञसुराग्रहैरासुनिवृत्तिरिष्टा ।२॥

टीका. श्रीधरः नहिमृगयाविधीयतेरागप्राप्तत्वात् ॥
किंतुनियम्यतेप्रवृत्तिःसंकोच्यते ॥
नियममेवषड्विधंदर्शयति ॥ यद्यलमत्यर्थलुब्धोरागी
सन्हन्यात्तर्हितीर्थेपुश्राद्धादिष्वेवतत्रापिप्रतिदष्टेपु
प्रख्यातेष्वेवननित्यश्राद्धादिपुतत्रापिराजैव
मेध्यानेवयावदुपयोगमेवअतोनावश्यकत्वमिति ॥
नित्यारागतएवनित्यप्राप्ताः ॥ जंतोःप्राणिमात्रस्य
तत्रतासुचोदनाविधिर्नास्ति ॥ ननुऋतावुपेयाद्धुतशे
पंभक्षयेदित्यादिविधिर्दर्शितःसत्यम् नत्वयमपूर्वविधिः
रागतःप्राप्तत्वात्किंतुनियमविधिरूपेणसकामानां
राजसतामसप्रकृतीनांहिंसारागिणांक्षत्रियाणामे
वाभ्यनुज्ञामात्रंक्रियतेनतुसात्विकानांमुमुक्षुणामिति ॥

भारते मोक्षधर्मे अ. ९०

तस्मात्तानृत्विजोलुब्धायाजयंत्यशुभान्नरान् ॥
प्रापयेयुःप्रजास्वर्गेस्वधर्माचरणेनवै ॥ १ ॥

ये कारण माटे सात्विक पुरुषने लोभीया ऋत्विजनथी यज्ञ करावता ते पण तेने नथी इछता ते कारण माटे मोक्षेछा रहित पुरुषने ते लोभीया ऋत्विज यज्ञ करावे छे. बीजा साधु जे तेतो स्वधर्मा चरणे करिने परने उपकार करे छे पण धर्म फलने नथी इछता सम बुद्धि छे माटे एम कहे छे प्रापयेयु एणे करीने

भारते मोक्षधर्मे अ. ९०

उतयज्ञाउतायज्ञामखंनार्हतितेकचित् ॥

अर्थ —जे दाभिक छे ते यज्ञ करे छे तोये पण श्रद्धा रहित छे माटे अ यज्ञ छे ते कोइ दिनमां व अथवा बायण यज्ञ करवा योग्य नथी

आज्येनपयसादध्नापूर्णाहुत्याविशेषतः
वालैःशृंगेणपादेनसंभरत्येवगौर्मखम्

अर्थ —श्रद्धा वाळा छे तेने तो एक यागे करिनेज बाह्य यज्ञनी सिद्धि छे एम कहे छे आज्येन ए श्लोके करिने घीये करी तथा दुधे करीने तथा दाधिये करि तथा घीनी पूर्णाहुतिये करिने यज्ञ थाय छे गाय जे ते वाले करित शृंगे करित. पादर जे यज्ञ पूर्ण करे छे

नीलकंठः

टिका एतेषांगोस्पर्शनादीनांचसद्यःपा

पनाशकत्वंपरलोकप्रदत्वंचस्मृत्युक्तंदर्शितम्

पशु हिंसाये रहित घृतादिये करिने साध्य एवा यज्ञनी वार्ता काहे मोक्ष धर्मना ९० मा अध्यायमा

पाछी हिंसा रहित यज्ञनी पुष्टिने अर्थे कहे छे

पत्नींचानेनविधिनाप्रकरोतिनियोजयन् ॥
इष्टंतुदैवतंकृत्वायथायज्ञमवाप्नुयात् ॥ १ ॥

टीका. ननुपत्न्यभावेविशेषवान्श्रौतोमखःकथंस्यादित्य तआहपत्नीमिति ॥ अनेन पशु हिंसारहितेनआज्या दिसाध्यक्रतुविधिनाआज्यादिद्रव्यंदेवतार्थेविनियोजयन् हेतौशतृप्रत्ययःविनियोगहेतो : पत्नीचमानसीमेवकरो ति ॥ श्रद्धामितिशेषःतस्मादपत्नीकोऽग्निहोत्रमाहरेत्त स्मादपत्नीकस्याधानंकुर्वतीत्युक्त्वाश्रद्धापत्नीसत्यंयजमा नइतिबह्वृचब्राह्मणेअपत्नीकस्याग्निहोत्राधानादौश्रद्धायाः पत्नीत्वदर्शनात् ॥ इष्टंभावेक्तः॥ यागमेवदैवतवदस्य तसेवनीयंकृत्वायथायथावद्यज्ञंविष्णुंप्राप्नुयात् ॥ तत्रयागविशेषंनियमयतिपुरोडाशोहीतिहिशब्देनतएत उत्क्रांतमेधाअमेध्याःपशवइतिपशूनाममेध्यत्वम् ॥ तस्मादाहुःपुरोडाशसत्रंलोक्यमिति ॥

पुरोडाशसत्रप्राशस्त्यंचश्रुतिप्रसिद्धंद्योत्यते।
मेधोयज्ञस्तदर्हःमेध्यःसर्वेषांवाएषपशूनांमेधेनयजतेयः
पुराडाशेनयजतइतिश्रुतेःमूलेपशुनामितिननिर्द्धारण
षष्ठीपशूनाममेध्यत्वात् । पुरोडाशस्यचापशुत्वात्तेन
पशुसंबधीयोमेधस्तदर्हःपुरोडाशइतिश्रुत्यनुसारेण
स्मृत्यर्थोवर्णनीयः ॥
पुरोडाशोहिसर्वेषांपशूनांमेध्यउच्यते ॥
इदंपूर्वार्द्धप्रथमंव्याख्यातम् ॥ सर्वानद्यः
सरस्वत्यःसर्वेपुण्याःशिलोच्चयाः ॥ १ ॥
एवंश्रद्धावतामविदुषांयज्ञमुक्तीविदुषांयसमाहसर्वाइति ॥

ए रीते ९० मा अध्यायमां श्रुतिनो विरोध न आवे ए रीते आहि सत्य धर्म प्रतिपादन कर्यो छे ने वेदमां हिंसामय यज्ञनुं जे वर्णन छे तेतो नित्य हिंसा कर्त्ता होय तेने संकरावी सर्वथा मुकावी ते कल्याण मार्गे चलावी ते मोक्ष करवाने अर्थे छे एज सर्व वेदनो सिद्धांत छे पण वेद हिंसा करवी एम कहेता नथी.

भारत मोक्ष धर्म अध्याय ९२
प्रजानामनुकंपार्थंगीतंराज्ञाविचख्नुना ॥ १ ॥
टीका---प्रजानांपुरूपादिपशूनाम्
अर्थ.—यज्ञमां होमतां एवा जे पुरूपादि पशु ते उपर दया कर-

वाने अर्थ विचख्यु राजाये कर्युं छे

अर्थ —ते विचख्यु नामे राजा जे ते गवालंभ यज्ञने विषे छेदा-युं छे शरीर जेनुं एवो वृष जे बळी बर्द तेने जोइने गायोनो अत्यंत विलाप तेने जोइने यज्ञ वाटमा रह्या एवा निर्दय ब्राह्मणने जोता सता बोलता हवा.

भारते मोक्ष धर्मे अध्याय ९२

स्वस्तिगोभ्योस्तुलोकेपुततोनिर्वचनंकृतम् ॥
हिंसायांहिप्रवृत्तायामाशीरेपाकाल्पिता ॥ ३ ॥
अव्यवस्थितमर्यादैर्विमूढैर्नास्तिकैर्नरैः ॥
संशयात्मभिरव्यक्तैर्हिंसासमनुवर्णिता ॥ ४ ॥

अर्थ —निर्वचन कर्युं ते कहे छे हिंसामय यज्ञ छे ते राजस ता मस क्षत्रिनो यज्ञ छे ते थकी क्षीरघृते करि करवो ए ब्राह्मणनो यज्ञ छे ए प्रकारनी मर्यादा छे नथी मर्यादा जेमने वास्ते विमूढ एवा वे नथी ब्रह्म ए प्रकारे कहेता.

आत्मादेहोऽन्योवाअन्योऽपिकर्त्ताऽकर्त्तावा
अकर्त्ताप्येकोऽनेकोवाएकोऽपिसंगवा नसंगोवा

इत्यादि रूपजे संशय ते वाळुं छे चित्त जेमनुं एवाने यज्ञा दि द्वाराये करि ख्यातिने इछता एवा पुरुष जे तेमणे हिंसा वर्णन करि छे के आ यज्ञमां पशु मारवो ए श्रेष्ट कह्युं छे

भारते मोक्ष धर्मे अध्याय ९२

सर्वकर्मस्वहिंसांहिधर्मात्मामनुरब्रवीत् ॥

कामकाराद्विहिंसंतिबहिर्वेद्यांपशून्नराः ॥

अर्थः—धर्मात्मा एवा मनु जे ते सर्व कर्मने विषे ज्योतिष्टोमादि यज्ञने विषे पण अहिंसानेज वखाणता हवा नर जे ते काम कारण थकीज बहिर्वेदी ने विषे पशुने मारे छे पण शास्त्र थकी नहि विशेष वार्ता ए श्लोकनी टीकामांथी जोवी टीकामा श्रुति लखी छे ते हिंसामय यज्ञने निंदे छे.

प्लवाह्येतेअदृढायज्ञरूपाअष्टादशोक्तमवरंयेषुकर्मएतच्छ्रे

योयेऽभिनंदंतिमूढाजरामृत्यूतेपुनरेवापियंतीति ॥

तस्मात्प्रमाणतःकार्योधर्मःसूक्ष्मोविजानता

अहिंसासर्वभूतेभ्योधर्मेभ्योज्यायसीयता ॥६॥

अर्थः—ते कारण माटे प्रमाणनु बळाबळ जाण तो पुरुष जे तेणे सूक्ष्म धर्म जे ते करवो ते कहे छे अहिंसा जे ते सर्व धर्म थकी मोटो छे.

गृहस्थस्यपंचसूनानामपरिहार्यत्वात्कथम

हिंसाकार्येत्यतआहोपोष्येति ॥

उपोष्यसंशितोभूत्वाहित्वावेदकृताःश्रुतीः ॥

आचारइत्यनाचारःकृपणाःफलहेतवः ७

टीका---उपसमीपेग्रामस्यवासंकृत्वाभिक्षार्थं

ग्रामंप्रविशेदितिविधेःसंन्यस्येत्यर्थः

संशितस्तीक्ष्णव्रतोभूत्वावेदेनकृताःश्रुतीःफलश्रुतीः

अक्षय्यंहवैचातुर्मास्ययाजिनःसुकृतंभवतीत्याद्याः
हित्वाआचारइतिबुध्याअनाचारः
गृहस्थाचारहीनःस्यात् पुरुषस्येदमेवश्रेयइति
बुद्ध्यानैष्कर्म्यंश्रेयोदित्यर्थःकृपणाक्षुद्राः
फलमेवकर्मणिप्रवृत्तौहेतुःकारणंयेषांतथाभूताः
यदियज्ञांश्चवृक्षांश्चयूपांश्चोदिश्यमानवाः ॥
वृथामांसानिखादंतिनैपधर्मःप्रशस्यते ॥८॥

अर्थ —यज्ञादिपर एवा मानव जे ते यज्ञादि ने उद्देशिने वृथा मांस खाय छे ए धर्म प्रशस्त नथी.

सुरांमस्यान्मधुमांसमासवंकृशरोदनम् ॥
धूर्त्तैःप्रवर्त्तितंह्येतन्नैतद्वेदेषुकल्पितम् ॥
मानान्मोहाच्चलोभाच्चलौल्यमेतत्प्रकल्पितम् ॥९॥

वैदिक कर्मनि निंदा करिने कामकार कृत जे कर्म तेने निंदे छे सुरामश्य मधु मास आसव केता मद्य कृशरोदन केता तिल मिश्रोदन एने खावानुं धूतारा पुरुषोये प्रवर्ताव्युंछे ए वेदने विषे नथी कल्प्यु मान मोह लोभ थकी ए ललुता पण कल्प्युछुं पण वेदनो अभिप्राय नथी ॥

विष्णुमेवाभिजानंतिसर्वयज्ञेषुब्राह्मणाः ॥
पायसैःसुमनोभिश्चतस्यापियजनंस्मृतम् ॥१०॥

अर्थ—ब्राह्मण जे ते सर्व यज्ञने विषे विष्णुने मुख्य जाणे छे ॥ ते विष्णुनुं यजन पायसे करिने तथा पुण्ये करिनेज कह्यु छे ॥

यज्ञियाश्चैवयेवृक्षावेदेषुपरिकल्पिताः ॥
पश्चापिकिंचित्कर्त्तव्यमन्यच्चोक्षैःसुसंस्कृतम् ॥
महद्र्यस्त्वैःशुद्धभावैःसर्वदेवार्हमेवत् ॥११॥

अर्थ—शुद्ध भावकरि शुद्ध पुरुषे शोधेलुं एवुं जे अन्न दुधथीते सर्वे विष्नु यजन करवुं ते योग्य छे ते पशुये करिने यजन करवुं एतो तामसी पामर एवा जे जीव जेने मोक्ष पामवानी इछा नथी गामगरास स्त्री उपर जेनुं चित्तछे तेमनुं कामछे पूर्वना अध्यायमा निष्काम धर्मने श्रेष्ट कह्यो ॥ ते हिंसा शुन्य एवोज निष्काम धर्म ते श्रेष्टछे एम कहेवाने हिंसामय यज्ञनि निंदाने अर्थे आ अध्याय आरंभ्योछे विदर्भदेशमा उंछ वृत्ति नामे ब्राह्मण हतो यज्ञ करवाने तत्पर थयो तारे मूल फले करि यज्ञ करवा माडयो तेनी स्त्री पुष्कर धारिणी ते पण स्वामिनी आज्ञाथी आवी एज प्रकारे करती हवी तारे वननी विषे समीप रह्यो एवो मृग जे ते बोलतो हवो जे तें आदुष्कृत कर्युं पशुवनानो यज्ञ मंत्रागही न करयो मने अग्निमा होमने स्वर्गमा जातो पण मान्यु नाहि तारे सवितृ मंडला धिष्टात्री देवताये आविने कह्यु तो पण मान्यु नाहि पछे वळी हरिणे आवीने कह्यु जे मने यज्ञमा होमी तु स्वर्गमा जाने मुने पण पमाडे पछे मृगने अग्निमा होम्यो पछे एणे मोटु तप कर्युं हतु ते नाश पाम्यु ने मोटुं दुःख पडयुं.

एतो धर्म हता ते कोइ कारणथी मृग थया हता तेमने पाछुं धर्म रुपे थै स्वर्गमा जवु हतुं ते ए रीते कपट करिने पोताना स्था

नमा गया पण पशु होमवो ए यज्ञनो विधि नथी ॥

तथा चोक्तम् ॥

सतुधर्मोमृगोभूत्वावहुवर्षोपितोवने ॥
तस्यनिष्कृतिमाधत्तनत्वसौयज्ञसंविधिः ॥ १ ॥

टीका--सत्विकेनचित्निमित्तेनमृगतांप्राप्तः
धर्मःतस्यनिमित्तस्यानिष्कृतिंप्रतीकारंम् ॥
स्वात्मानंमोचितवान्नत्वसौयज्ञस्यसमीचीनोविधिः॥
हिंसामयत्वात् ॥ तस्यतेनानुभावेनमृगहिंसात्मनस्तदा॥
तपोमहद्यमुच्छिन्नंतस्माद्धिंसानयज्ञिया ॥२॥

टीका--अनुभावेनपशुंहत्वास्वर्गंप्राप्स्यामीत्यभिप्रायेण ॥
यज्ञियायज्ञायहिता ॥

ततस्तंभगवान्धर्मोयज्ञंयाजयतस्वयम्
समाधानंचभार्यायालेभेसतपसापरम् ॥३॥
अहिंसासकलोधर्मोहिंसाधर्मस्तथाहितः ॥
सत्यंतेहंप्रवक्ष्यामियोधर्मःसत्यवादिनाम् ॥

टीका--तथातेनस्वर्गप्रदत्वेनरूपेणहितःसत्यवादिनां
ब्रह्मवादिनांतुअसौनोधर्मःयोधर्मइतिपाठे तेतुभ्यं
सत्यंवक्ष्यामिकिंतत्सत्यमृयःसत्यवादिनांधर्मः

यज्ञातिविधेयापेक्ष्यंपुंस्त्वम् ।। अत्राख्यायिकातात्पर्यम् ॥
पशुकार्येश्यामाकादिविकारान्चरुपुरोडाशादीन्
कुर्यादितिगम्यतेतथाचगृह्येअथश्वोभूतोष्टकाः
पशुनास्थालीपाकोविधीयतएवमन्यत्रपुरोडाशा
मीक्षादीनामपिपशुस्थानेविधानमवगंतव्यंतस्मान्न
हिंसायज्ञःश्रेयानिति ॥

नारद पंचरात्रेच

श्रुतिर्वेदतिविश्वस्यजननीवहितंसदा ॥
कस्यापिद्रोहजननंनवक्तिमभुतत्परा ॥१॥
नतच्छास्त्रंतुयच्छास्त्रंवक्तिहिंसामनर्थदाम् ॥
यतोभवतिसंसारःसर्वानर्थपरंपरः ॥२॥
अंतरंगंविजानातिभगवत्याःश्रुतिस्वयम् ॥
चराचरात्माभगवान्नापरःकोऽपितत्ववित् ॥
आत्मवत्सर्वभूतानिमान्यानीत्येवसन्नुवन् ॥
भगवान्कथमत्रेमांहिंसामुपादिशेत्कचिन् ॥
हिंसाविधिस्तुहिंसायानिवृत्यर्थोस्तिसर्वथा ॥
आत्मवत्सर्वभूतानिततःपश्येन्नान्यथेति ॥

वृद्धपराशरेणोक्तम्

शौचंचपात्रशुद्धिश्चश्रद्धाचपरमायदि ॥

अनंततृप्तिकच्छ्राद्धेएतदेवनचामिषम् ॥१॥

यस्तुप्राणिवधंकृत्वापित्दृन्मांसेनतर्पयेत् ॥

सोविद्वांश्चंदनंदग्ध्वाकुर्यादंगारलेपनम् ॥

सूक्ष्मजंतुनाद्रोहनुंफलपणअंधकूपाख्यनरकलख्योछे

श्रीमद्भागवतने विषे.

यस्त्विहवैभूतानामीश्वरकल्पितवृत्तीनामविविक्त

परव्यथानांस्वयंपुरुषोकल्पितवृत्तिर्विविक्तपरव्यथो

व्यथामाचरतिसपरत्रांधकूपेतदभिद्रोहेणानिपतति

तत्रहासौतैस्तैर्जंतुभिःपशुपक्षिमृगसरीसृपैर्मश

कयूकामत्कुणमक्षिकादिभिर्येकेचाभिद्रुग्धास्तैः

सर्वतोऽभिद्रुह्यमाणस्तमसिविहतनिद्रानिर्वृतिर

लब्धावस्थानःपरिक्रामतियथाकुशरीरेजीवः ॥

नत्रह्मदंडदग्धस्यनभूतभयदस्यच ॥

नारकाश्चानुगृह्णंतियांयांयोनिमसौगतः ॥

तस्मान्नकस्यचिद्रोहमाचरेद्द्यतथाविधः ॥

आत्मनःक्षेममन्विच्छन्द्रोग्धुर्वैपरतोभयम् ॥

भागवतेच

नदद्यादामिषंश्राद्धेनचाद्याद्धर्मतत्त्ववित् ॥
मुन्यन्नैःस्यात्परा प्रीतिर्यथानपशुहिंसया ॥१॥
नैतादृशःपरोधर्मोनृणांसधर्ममिच्छताम् ॥
न्यासोदंडस्यभूतेषुमनोवाक्कायजस्ययः ॥२॥

स्कंदपुराणेच.

नश्राद्धेक्वापिमांसंतुदद्यान्नाद्याच्चमानवः ॥
मुन्यन्नैःक्षीरसर्पिर्भ्यांतृप्यंतिपितरोभृशम् ॥
ईदशीमहिंसांचयोगशास्त्रेसाधनपादेमहाव्रत
त्वेनसूत्रयामासभगवान्पतंजलिः ॥
अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहायमाः ॥
जातिदेशकालसमयानवच्छिन्ना :
सार्वभौमीमहाव्रतमिति ॥ तत्राहिंसामहाव्रतं
व्याचख्यौभाष्यकारोभगवान्बादरायणः ॥
सर्वथासर्वदाभूतानामनभिद्रोहः
अहिंसासाचमत्स्येष्वेवाहिंसानान्यत्रेतिजात्यवच्छिन्नान
तीर्थेहनिष्यामीतिदेशावच्छिन्नानचतुर्दश्यांनपुण्येहनीति
सैवकालावच्छिन्नातथात्रिभिरुपरतस्यदेवब्राह्मणार्थेहनि

वृद्धपराशरेणोक्तम्

शौचंचपात्रशुद्धिश्चश्रद्धाचपरमायदि ॥

अनंततृप्तिकृच्छ्राद्धेएतदेवनचामिषम् ॥१॥

यस्तुप्राणिवधंकृत्वापित्र्यन्मांसेनतर्पयेत् ॥

सोविद्वांश्चंदनंदग्ध्वाकुर्यादंगारलेपनम् ॥

सूक्ष्मजंतुनाद्रोहनुंफलपणअंधकूपाख्यनरकलख्योछे

श्रीमद्भागवतने विषे.

यस्त्विहवैभूतानामीश्वरकल्पितवृत्तीनामविविक्त

परव्यथानांस्वयंपुरुषोकल्पितवृत्तिर्विविक्तपरव्यथो

व्यथामाचरतिसपरत्रांधकूपेतदभिद्रोहेणानिपतति

तत्रहासौतैस्तैर्जंतुभिःपशुपक्षिमृगसरीसृपैर्मश

कयूकामत्कुणमक्षिकादिभिर्येकेचाभिद्रुग्धास्तैः

सर्वतोऽभिद्रुह्यमाणस्तमसिविहतनिद्रानिर्वृतिर

लब्धावस्थानःपरिक्रामतियथाकुशरीरेजीवः ॥

नब्रह्मदंडदग्धस्यनभूतभयदस्यच ॥

नारकाश्चानुगृह्णंतियांयांयोनिमसौगतः ॥

तस्मान्नकस्यचिद्द्रोहमाचरेद्यतथाविधः ॥

आत्मनःक्षेममन्विच्छन्द्रोग्धुर्वैपरतोभयम् ॥

भागवतेच

नदद्यादामिषंश्राद्धेनचाद्याद्धर्मतत्त्ववित् ॥
मुन्यन्नैःस्यात्परा प्रीतिर्यथानपशुहिंसया ॥१॥
नैतादृशःपरोधर्मोनृणांसधर्ममिच्छताम् ॥
न्यासोदंडस्यभूतेषुमनोवाक्कायजस्ययः ॥२॥

स्कंदपुराणेच.

नश्राद्धेक्कापिमांसंनुदद्यान्नाद्याच्चमानवः ॥
मुन्यन्नैःक्षीरसर्पिर्भ्यांतृप्यंतिपितरोभृशम् ॥
ईदृशीमहिंसांचयोगशास्त्रेसाधनपादेमहाव्रत
त्वेनसूत्रयामासभगवान्पतंजलिः ॥
अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहायमाः ॥
जातिदेशकालसमयानवच्छिन्नाः
सार्वभौमीमहाव्रतमिति ॥ तत्राहिंसामहाव्रतं
व्याचख्यौभाष्यकारोभगवान्वादरायणः ॥
सर्वथासर्वदाभूतानामनभिद्रोहः
अहिंसासाचमत्स्येष्वेवाहिंसानान्यत्रेतिजात्यवच्छिन्नान
तीर्थेहनिष्यामीतिदेशावच्छिन्नानचतुर्दश्यांनपुण्येहनीति
सैवकालावच्छिन्नातथात्रिभिरुपरतस्यदेवब्राह्मणार्थेहनि

ष्यामिनान्यथेति समयावच्छिन्नायथाक्षत्रियाणांयुद्धएवहिं
सानान्यत्रेतिएभिर्जातिदेशकालसमयैरनवच्छिन्नाअहिं
सासर्वथैवपरिपालनीयासर्वभूमिषुसर्वभूविषयेषुसर्वथैवा
विदितव्यभिचारासार्वभौमीमहाव्रतमित्युच्यते ॥

मोक्षधर्मेद्वितीयेऽध्याये

नहिंसयतियोजंतून्मनोवाक्कायहेतुभिः
जीवितार्थापनयनैःप्राणिभिर्नसवध्यते ॥१॥

भागवते

नकर्मभिस्तांगतिमाप्नुवंति
विद्यातपोयोगसमाधिभाजाम् ॥१॥
तस्मात्सर्वात्मनाराजन्हरिःसर्वत्रसर्वदा ॥
श्रोतव्यःकीर्तितव्यश्चस्मर्तव्यश्चेच्छताऽभयम् ॥२॥
एवंनृणांक्रियायोगाःसर्वेसंसृतिहेतवः॥
तएवात्मविनाशायकल्पंतेकल्पिताःपरे ॥३॥
प्रायेणवेदतदिदंनमहाजनोयंदेव्याविमोहितमतिर्बत
मायया ऽलम्॥त्रय्यां जडीकृतमतिर्मधुपुष्पितायांवैता
निकेमहतिकर्मणियुज्यमानः ॥४॥

मनुस्मृतौ

अनुमंताविशसितानिंहताक्रयविक्रयी ॥
संस्कर्त्ताचोपहर्त्ताचखादकश्चेतिघातकाः ॥१॥
नकृत्वाप्राणिनांहिंसांमांसमुत्पद्यतेक्वचित् ॥
नचप्राणिवधःस्वर्ग्यस्तस्मान्मांसंनभक्षयेत् ॥२॥
मांसभक्षयितामुत्रयस्यमांसमिहाद्म्यहम् ॥
एतन्मांसस्यमांसत्वंप्रवदंतिमनीषिणः ॥

दानधर्मेपुभीष्मः

योयजेताश्वमेधेनमासिमासियतव्रतः ॥
वर्जयेन्मधुमांसंचसममेतद्युधिष्टिर ॥ १ ॥
सप्तर्षयोवालखिल्यास्तथैवचमरीचिपाः ॥
अमांसभक्षणंराजन्प्रशंसंतिमनीषिणः ॥२॥
पूर्वंतुमनसात्यक्कातथावाचाचकर्मणा ॥
नभक्षयतियोमांसंत्रिविधंसविमुच्यते ॥३॥
नहिमांसंतृणात्काष्ठादुपलाद्वापिजायते ॥
जंतुघाताद्भवेन्मांसंतस्माद्दोषोस्तिभक्षणे ॥४॥
ऋषिभिःसंशयंपृष्टोवसुश्चेदिपतिः पुरा ॥
अभक्ष्यमपिमांसंसप्राहभक्ष्यमितिप्रभो ॥५॥

आकाशात्पतितःसद्योभूमौसनृपतिस्तथा ॥
एतदेवपुनश्चोक्त्वाविवेशधरणीतलम् ॥६॥

भगवद्गीतायाम्

यज्ञशिष्टाशिनःसंतोमुच्यतेसर्वकिल्बिषैः ॥
भुंजतेतेत्वघंपापायेपचंत्यात्मकारणात् ॥

अर्थ —यज्ञमाथी शेष रहुं तेने जमे तो सर्व पापथी मुकाय ने जे पोताने अर्थे पाक करि जमे छे ते तो पाप जमे छे ते वाक्य पण मांस भक्षण विषय नथी त्यारे देवकृत वृष्टि निष्पन्न रंधितान्ननु वैश्वदेवानंतर भोजन विषय छे तेज प्रकारे श्री गीता भाष्य ने विषेत श्री धरेस्व टीकाने विषे व्याख्यान कर्युं छे.

तथाहिवैश्वदेवादिपंचमहायज्ञावशिष्टमन्नंयेऽश्नंति
तेपंचसूनाकृतैःसर्वैःकिल्बिषैर्विमुच्यंतेपंचसूनाश्च
स्मृतावुक्ताः ॥

कंडनीपेषणीचुल्लीउदकुंभीचमार्जनी
पंचसूनागृहस्थस्यताभिःस्वर्गंनविंदति ॥१॥
श्रीवैष्णवाचार्यास्तुयज्ञोवैविष्णुरितिश्रुतेः
श्रीवासुदेवनैवेद्यावशिष्टान्नभोजिनःसकल
किल्बिषमुक्ताभवंतीत्यस्यार्थमाहुरित्यलमत्रविस्तरः ॥

यज्ञ करीने यज्ञमांथी शेष मांस भक्षण करि ए मांस भक्षणनो.शु-

द्विने अर्थे चांद्रायण व्रत लख्यु छे स्मृत्यंतरने विषे जो हिंसामय यज्ञ अपूर्व विधि होय तो एनुं प्रायश्चित्त शु करवा लखे वास्ते वेदनुं तात्पर्य हिंसा मुकाववानुं छे.

तथाहिद्विजोयोभक्षयेन्मांसंयज्ञशेषमपिक्वचित् ॥
सतुचांद्रायणेनैवशुद्धिमाप्नोतिनान्यथा ॥१॥

तथाचमनुः

सुरावैमलमन्नांपाप्माचमलमुच्यते ॥
तस्माद्ब्राह्मणराजन्यौवैश्यश्चनसुरांपिबेत् ॥१॥
गौडीमाध्वीतथापैष्टीविज्ञेयात्रिविधासुरा
यथैवैकातथासर्वानपातव्याद्विजोत्तमैः ॥२॥

पुलस्त्यः

पानसंद्राक्षमाधूकंखर्जूरंतालमैक्षवम् ॥
माधूत्थंसैरमारिष्टंमैरेयंनालिकेरजम् ॥३॥
समानानिविजानीयान्मद्यान्येकादशैवतु ॥
द्वादशंतुसुरामद्यंसर्वेषामधमंस्मृतम् ॥४॥

प्रचेताः

सुरापगुरुतल्पगौचीरवल्कलवाससौ
द्वादशाब्दंब्रह्महत्याव्रतंचरेयाताम् ॥
सुरापीत्वाद्विजोमोहादग्निवर्णांसुरांपिबेत् ॥

सौत्रामण्यामपिसुराग्रहनिषेधः

भागवते

यद्घ्राणभक्षोविहितःसुरायास्तथापशोरालभनंनहिंसा ॥
एवंव्यवायःप्रजयानरत्याइमंविशुद्धंनविदुःस्वधर्मम् ॥१॥
इत्यादीनिवेदवेदोपबृंहकपुराणेतिहासादीनांहिंसामय
यज्ञनिषेधकानिमांसभक्षणनिषेधकानिचसहस्रशोवाक्या
निसंतिततःसर्वथासर्वदामुमुक्षुभिर्हिंसामययज्ञोमांसभ-
क्षणंचवर्जनीयमिति

भारतेआनुशासनपर्वणियःसर्वमांसानिनभक्षयीतपु
मान्सदाभावितोधर्मयुक्तः ॥
मातापित्रोरर्चिताधर्मयुक्तःशुश्रूषिताब्राह्मणानाम
निघ्नः ॥१॥
इदंगुणोमानवस्तंप्रयातिलोकंगवांशाश्वतंचाव्ययंच ॥
नपारदारीपठ्यतिलोकमेतंनवैकृतघ्नोनमृषासंप्रलापि ॥

योगीश्वरः

गुरूणामध्यधिक्षेपोवेदनिंदासुहृद्वधः ॥
ब्रह्महत्यासमंज्ञेयमधीतस्यचनाशनम् ॥१॥
ईश्वरमंतरावेदतात्पर्यंतुनकोपिजानातिवेदेपुहिंसामय

यज्ञवर्णनंराजसतामसजीवानांमुमुक्षुकरणार्थंनित्यमास
भक्षणादिसंकोचार्थंचेत्यवसेयम् ॥
अत्रायथाकिंचिल्लिखितंयदिप्रतिभातितद्वेषभावमुत्सृज्य
शोधनीयंपंडितैः ॥

भारते मोक्ष धर्मे अ. ९२

सुरामत्स्यान्मधुमांसमासवंकृशरौदनम्
धूर्त्तैःप्रवर्त्तितंह्येतन्नैतद्वेदेषुकल्पितम्
मानान्मोहाच्चलोभाच्चलौल्यमेतत्प्रकल्पितम्

सुरामत्स्यादिनुं भक्षण धूतारा ये प्रवर्त्ताव्युं ए वेदमां नथी मोहथी लोभथी ललुतापणाथी कल्प्युं छे

भारते वृहत्पराशरस्मृतौच

मत्स्यग्राहस्ययत्पापंषण्मासाभ्यंतरेभवेत् ॥
एकाहेनैवतत्पापमगालितंजलंपिबेत् ॥१॥

अर्थ — माछीने छमास माछला मारवानुं जे पाप ते पाप जे कोइ प्राणी एकदीन अगालित गाल्या विनानुं जल पीये तेने छे.



उपोद्घात.



निगमप्रकाश ग्रंथ भोळानाथ भगवान शास्त्री रायकरवाळ पासे तपासवा आप्यो हतो तेमणे तेनुं बीजुं खंडन लखी आप्युं छे ते आगळ जोवामा आवशे.



।।श्रीगणेशायनमः ।। विहितोपिधर्मःपूर्वैर्महद्भि राचरितएवान्यैरन्वाचर्यत इतिपरंपरा यज्ञादिपुपशुहन नात्मकोधर्मःपुरातनकालेकैराचरितःकिमर्थंचतैराचरि तइत्याकांक्षासमाधानपूर्वकयज्ञार्थपशुहननविषयानुज्ञामा हमनुर्मांसभक्षणप्रकरणोपक्रमकाले ।।

यज्ञार्थंब्राह्मणैर्वध्याः प्रशस्तामृगपक्षिणः
भृत्यानांचैववृत्यर्थमगस्त्योह्याचरत्पुरा १

यस्मात्पुरातनकालेऽवश्यंभरणीयानांजीवनार्थं म- गस्त्येनाचरितं तस्माद्यज्ञार्थं पशवोहन्तव्याइतिभावः क स्मिन्कालआचरितमित्याकांक्षायामाहसएव

बभूवुर्हिपुरोडाशा भक्ष्याणांमृगपक्षिणाम्
पुराणेष्वपियज्ञेपुब्रह्मक्षत्रसवेषुच २

यस्मिन्कालेब्रह्मक्षत्रसवेपुभक्ष्याणांमृगपक्षिणांमांसेनपु- रोडाशाआसन्स्तस्मिन्कालेहताइतिभावः श्रुत्यादिपुपुरो डाशाव्रीहियवयोरेवविहितास्तस्मिन्कालेतुव्रीहियवौनवभूव तुस्तस्मान्मांसपुरोडाशास्तेनकृताइतितात्पर्यम् एतावताऽ न्नाभावकालएवकेवलंस्वकीयानांजीवनार्थमेवागस्त्येनय- ज्ञादिपुपशवोहतास्तस्मादन्यैरप्यन्नाभावकालएनप्राणधा

रणार्थमेवहन्तव्याइतिमनोराशयः एतदेवाभिप्रेत्यपराश
रोपितथैवाह

सर्वथान्नंयदानस्यात्तदैवामिषमाश्रयेत्
ब्राह्मणश्चस्वयंनाद्यात्तच्चश्वादिहतंयदि ३

बृहस्पतिरपि

अभून्मांसपुरोडाशोभक्षणंमृगपक्षिणां
पुराणेष्वेवयज्ञेषुब्रह्मक्षत्रसवेषुच ४

यस्मिन्कालेपुरातनयज्ञेषुमांसपुरोडाशआसीत्तस्मिन्ने
वकालेमृगपक्षिणांभक्षणमभून्ननुव्रीहियवयोः पुरोडाश
काले अन्नाभावकालएवमांसभक्षणमितिपर्यवसितं तत्का
लेपिपूर्वंकेवलेनागस्त्येनतदनुसारिभिश्चवंगस्थैरेवायंक्रौर्य
विशिष्टोधर्मआचरितोनतुसर्वैरपिभिस्तस्मादन्नाभावकालेपि
तद्धर्माननुष्ठानेमहत्फलभाक्त्वमाहमनुः

योवंधनवधक्लेशान् प्राणिनान्नचिकीर्षति
ससर्वस्यहितप्रेप्सुःसुखमत्यंतमश्नुते ५
यद्ध्यायतियत्कुरुतेधृतिंबध्नातियत्रच
तदवाप्नोत्ययत्नेनयो हिनस्तिनकिंचन ६
नाकृत्वाप्राणिनांहिंसांमांसमुत्पद्यतेक्वचित्

नचप्राणिवधः स्वर्ग्यस्तस्मान्मांसंविवर्जयेत् ७
समुत्पत्तिचमांसस्य वधबंधौचदेहिनां प्रसमीक्ष्य
निवर्त्तेत सर्वमांसस्यभक्षणात् फलमूलाशनैर्मे
ध्यैर्मुन्यन्नानांचभोजनैः नतत्फलमवाप्नोतिय-
न्मांसपरिवर्जनात् ८
मांसभक्षयितामुत्रयस्यमांसमिहाम्यहं
एतन्मांसस्यमांसत्वंप्रवदंतिमनीषिणः ९
अनुमंताविशसितानिहंताक्रयविक्रयी
संस्कर्ताचोपहर्ताच खादकश्चेतिघातकाः १०
वर्षेवर्षेश्वमेधेनयोयजेतशतंसमाः
मांसंनखादयेद्यस्तुतयोःपुण्यंफलंसमं ११

याज्ञवल्क्योपि

सर्वान्कामानवाप्नोतिहयमेधफलंतथा
गृहेपिनिनसन्विप्रोमुनिर्मांसविवर्जनात्

यमः

सर्वेषामेवमांसानांमहान्दोषस्तुभक्षणे
निवर्त्तनेमहत्पुण्यमित्याहसप्रजापतिः १२

वृहस्पतिः

रोगार्त्तोभ्यर्थितोवापियोमांसंनात्त्यलोलुपः
फलंप्राप्नोत्ययत्नेनसोश्वमेधफलंतथा १३
किंचतत्कालेप्यगस्त्येनवक्ष्यमाणविधिनैवायंधर्मोऽनुष्ठित
स्तस्मादविधिनाचरणेदोषमाहमनुः
नाद्यादविधिनामांसंविधिज्ञोनापदिद्विजः
जग्ध्वाह्यविधिनामांसंप्रेत्यतैरद्यतेऽवशः १४
असंस्कृतान्पशून्मंत्रैर्नाद्याद्विप्रःकदाचन
मंत्रैस्तुसंस्कृतानद्याच्छाश्वतंविधिमास्थितः १५
नभक्षयतियोमांसंविधिंहित्वापिशाचवत्
सलोकेप्रियतांयातिव्याधिभिश्चनपीड्यते १६
स्वमांसंपरमांसेनयोवर्द्धयितुमिच्छति
अनभ्यर्च्यपितॄन्देवांस्ततोऽन्योनास्त्यपुण्यकृत् १७
याज्ञवल्क्योपि
वसेत्सनरकेघोरे वर्षाणिपशुरोमभिः
सम्मितानिदुराचारोयोहंत्यविधिनापशून् १८
विधिमाहमनु
मधुपर्केचयज्ञेचपितृदैवतकर्मणि
अत्रैवपशवोहिंस्यानान्यत्रेतिकदाचन १९

याज्ञवल्क्योपि

प्राणात्ययेतथाश्राद्धेप्रोक्षितेद्विजकाम्यया
देवान्पितॄन्समभ्यर्च्यखादन्मांसन्नदोषभाक् २०

विधेरपिदैवराक्षसभेदाभ्यांद्वैविध्यमाहमनुः
यज्ञायजग्धिर्मांसस्येत्येषदैवोविधिस्मृतः
अतोन्यथाप्रवृत्तिस्तुराक्षसोविधिरुच्यते २१

यज्ञेमांसभक्षणंदैवविधिस्तदतिरिक्तश्राद्धमधुपर्कदेवार्चनादिषुमांसभक्षणंराक्षसोविधिरित्यर्थः नचात्रयज्ञशब्देन श्राद्धदेवार्चनादीन्युपलक्ष्याणिमधुपर्केचयज्ञेचेत्यादिवाक्येषुमधुपर्कादिभ्योयज्ञशब्दस्यपृथक्करणात् नचायंयज्ञस्यैव प्रपंचइतिवाच्यंराक्षसोविधिरुच्यतइत्यत्रविधिशब्दोपादानेन तदुचितग्राह्यान्यविधेरदर्शनात् नचपिशाचवद्भक्षणं राक्षसोविधिरितिवाच्यंनभक्षयतियोमांसंविधिंहित्वापिशाचवदित्यादिवाक्येषुपिशाचवद्भक्षणस्याविधित्वप्रदर्शनात् ॥ नचायंराक्षसोविधिरनर्थकरःपठितइतिवाच्यंसर्वथान्नाभावकालेपिशाचवद्धिंसायांप्रवृत्तानांवंगस्थानांराक्षसविधेरन्यत्रहिंसानिवर्त्तकत्वेनतस्याप्यर्थकरत्वात् नचतत्रत्याना मपिवेदपाप्राग्राह्यस्तस्यरक्षःकर्मत्वात्अन्नाभावकालेपशूनां

दिभिः प्रतिपादितं. अन्यथातिमांसलानांगोजाश्वादीनामे
वभक्ष्यत्वंब्रूयात् अत्यल्पमांसानांकच्छपादीनांचभक्ष्यत्वन्नो
ब्रूयात् किंचागस्त्येनान्नाभावकालेकेवलमवश्यंभरणीयानां
प्राणधारणार्थमेवयज्ञादिषुपशवोहताननुशरीरपुष्ट्यर्थम् अ
न्यथागोजाश्वादीनेवस्वीकुर्यात् मन्वादीनामप्यगस्त्याचर
णानुसरणमेवाभिप्रेतम् अतएवतैरप्यगस्त्यस्वीकृताएवानुस्वी
कृताः किंचयज्ञार्थंपशवः सृष्टाः स्वयमेवस्वयंभूवेत्यादिवाक्यैः
पशूनांयज्ञार्थंसृष्टत्वेपितत्रमूलमगस्त्याचरणमेवनोचेद्यज्ञा,
र्थंपशवोवध्याः प्रशस्तामृगपक्षिणइतिवाक्येप्रशस्ताइतिप
दन्नोब्रूयात्बभुवुर्हिपुरोडाशाभक्ष्याणांमृगपक्षिणामितिवा
क्येचभक्ष्याणामितिपदंचनोब्रूयात् सर्वेपिपशवावध्याःसन्ति
कुतः प्रशस्तामृगपक्षिणोवध्याइत्युक्तंकुतश्चभक्ष्याणांमृगप
क्षिणांपुरोडाशाआसन्नित्युक्तंतत्रागस्त्याचरणस्यमूलत्वे
तुयेयेपशवस्तेनस्वीकृतास्तेषां यज्ञार्थसृष्टत्वं येचाऽस्वी
कृता स्तेषा मयाज्ञियत्वम् एव मप्रशस्ताना मभक्ष्याणां
व्यावृत्यर्थं प्रशस्तपदम भक्ष्याणा मितिपदंचतेन नि-
र्दिष्टंकिंचनमांस भक्षणेदोषोनमद्येनचमैथुनेप्रवृत्तिरेषाभू
तानांनिवृत्तिस्तुमहाफलेतिमनुनोपसंहारकालेप्रदर्शितंते

नमांसभक्षणेमद्यपानेमैथुनेचनदोषोऽयंतुप्रवृत्तिलक्षणोधर्म इतिकेषांचिद्विदुषांभ्रान्तिरुत्पद्यतेपरंतुनायमर्थोमनोर भिप्रेतःतथासतिवृथामांसभक्षणेप्रायश्चितविधेरविधिनामां सभक्षणेदोषप्रदर्शनस्यचवैयर्थ्यंस्यात्तथाचसुरांपिबाद्वि जोमोहादग्निवर्णांसुरांपिबेदित्यादिभिर्मद्यपानेऽतिदुष्कर प्रायश्चित्तविधानस्यनैरर्थ्यंस्यात्तथापरस्त्रीगमनेप्रायश्चित विधानस्यचनिष्फलत्वंस्यात्तदकरणेकुंभीपाकादिनरक पतनप्रदर्शनस्यचनिरर्थकत्वंस्यात्तस्मान्नायमर्थोमनोरभि प्रेतःकिंतुसर्वथान्नाभावकालएवयज्ञार्थंमांसभक्षणेनदोषः सौत्रामण्यांचमद्येनदोषःस्वभार्यायामृतौगमनेचनदोष इत्ययमेवार्थोमनोरभिप्रेतः

अतएवबृहस्पतिः

अभ्यन्मांसपुरोडाशे भक्षणंमृगपक्षिणां
पुराणेष्वेवयज्ञेपुब्रह्मक्षत्रसवेषुच २८
सौत्रामण्यांतथामद्यंश्रुतौभक्ष्यमुदाहृतम्
ऋतौचमैथुनंधर्म्यंपुत्रोत्पत्तिनिमित्ततः
स्वर्गंप्राप्नोतिनैवंतुप्रत्यवायेनदुष्यति २९

तथासत्यन्नसत्वेयज्ञकर्मणिगव्यक्षपशुःप्रदेयस्तेनोक्तस्त

त्रकिंकार्यमित्यपेक्षायामाहमनुः

कुर्याद्घृतपशुंसंगेकुर्यात्पिष्टपशुंस्तथा
नत्वेवतुवृथाहन्तुंपशुमिच्छेत्कदाचन ३०

अत्रमनुनोभयकार्यमभिप्रेत्यतन्त्रेणेयंस्मृतिःपठितातथाहि आसक्तिश्चेद्घृतपशुंस्तथापिष्टपशुंकृत्वाखादयेत् तथाच यज्ञादिप्रसंगेपुयत्रप्रत्यक्षपशु॥प्रदेयत्वेनोक्तस्तत्रापिष्टपशुंकुर्यात्अतएवात्रमनुनाकुर्यादिपदंसंगइतिपदंचनिर्दिष्टम्अन्यथासक्तिश्चेत्पिष्टपशुंकृत्वाखादयेदितिस्पष्टंब्रुयात् अत एवयवमयंमेपंमेपींचकृत्वावरुणदेवतामुद्दिश्यागनौनिर्वपन्तिनायंपिष्टपशु प्रत्यक्षपशोरभावेतत्प्रतिनिधिरितिवाच्यं वेदेपिष्टपशोरेवप्रत्यक्षपशुत्वप्रतिपादनात् तथाहिशतपथब्राह्मणे

हरिः ॐ वैश्वदेवेन वै प्रजापतिः । प्रजाः ससृजे ता अस्य प्रजाः सृष्टा वरुणस्य यवान्जक्षुर्वरुण्यो ह वाऽअग्रे यवस्तद्यन्नेववरुणस्य यवान्प्रादंस्तस्माद्वरुणप्रघासानाम ॥१॥ ता वरुणोजग्राह । ता वरुणगृहीताः परिदीर्णा अनत्यश्च प्राणत्यश्च शिश्यिरे च निपदुश्च प्राणोदानौ हैवाभ्यो नाप-

चक्रमतुरथान्याः सर्वा देवता अपचक्रमुस्तयो-
र्हैवास्य हेतोः प्रजा न पराबभूवुः ॥२॥ ता
एतेन हविषा प्रजापतिरभिपज्यत् । तद्याश्चैवा-
स्य प्रजा जाता आसन्याश्चाजातास्ता उभयीर्वरु
णपाशात्प्रामुञ्चत्ता अस्यानमीवा अकिल्बि-
षाः प्रजाः प्राजायत ॥३॥ अथ यदेष एतैश्च
तुर्थे मासि यजते । तन्नाह न्वेवैतस्य तथा प्रजा
वरुणो गृह्णातीति देवा अकुर्वन्निति न्वेवैष एत-
त्करोति याश्च न्वेवास्य प्रजा जाता याश्चाजा-
तास्ता उभयीर्वरुणपाशात्प्रमुञ्चति ता अस्या-
नमीवा अकिल्बिषाः प्रजाः प्रजायते तस्माद्वाऽ
एष एतैश्चतुर्थे मासि यजते ॥४॥ तद्वै द्वे वेदी
द्वावग्नी भवतः । तद्यद्द्वे वेदी द्वावग्नी भवतस्तदुभ-
यत एवैतद्वरुणपाशात्प्रजाःप्रमुञ्चतीतश्चोर्ध्वा इ
तश्चावाचीस्तस्माद्द्वे वेदी द्वावग्नी भवतः ॥५॥
स उत्तरस्यामेव वेदौ । उत्तरवेदिमुपकिरति न
दक्षिणस्यांक्षत्रं वै वरुणो विशो मरुतः क्षत्रमेवै-
तद्विश उत्तरं करोति तस्मादुपर्यासीनं क्षत्रीय-

मधस्तादिमाः प्रजा उपासते तस्मादुत्तरस्यामेव वेदाऽउत्तरवेदिमुपकिरति नदक्षिणस्याम् ॥६॥ अथैतान्येव पञ्च हवींषि भवन्ति । एतैर्वै हविर्भिः प्रजापतिः प्रजा असृजतैतैरुभयतो वरुण पाशात्प्रजाः प्रामुञ्चादितश्चोर्ध्वा इतश्चावाचीस्त स्माद्वाऽएतानि पञ्च हवींषि भवन्ति ॥७॥ अथैन्द्राग्नो द्वादशकपालः पुरोडाशो भवति । प्राणोदानौ वाऽइन्द्राग्नी तद्यथा पुण्यं चक्रुषे पुण्यं कुर्यादेवं तत्तयोर्हैवास्य हेतोः प्रजा न पराबभूवुस्तत्प्राणोदानाभ्यामेवैतत्प्रजा भिपद्यति प्राणोदानौ प्रजासु दधाति तस्मादैन्द्राग्नो द्वादशकपालः पुरोडाशो भवति ॥८॥ उभयत्रपयस्ये भवतः । पयसो वै प्रजाः सम्भवन्ति पयसः सम्भुतास्तद्यत एव सम्भुतायतः सम्भवन्ति तत एवैतदुभयतो वरुणपाशात्प्रजाःप्रमुञ्चतीतश्चोर्ध्वा इतश्चावाचीस्तस्मादुभयत्र पयस्ये भवतः ॥९॥ वारुण्युत्तरा भवति । वरुणो ह वाऽअस्यप्रजा अगृह्णात्तत्प्रत्यक्षं वरुणपाशात्प्रजाः प्रमुञ्चति मा

रुती दक्षिणाजामितायै न्वेव मारुती भवति जा-
मि ह कुर्याद्यदुभे वारुण्यौ स्यातामतो ह वाऽ
अस्य दक्षिणतो मरुतः प्रजा अजिघांसंस्ता-
नेतेन भागेनाशमयन्तस्मान्मारुती दक्षिणा ॥१०॥
तयोरुभयोरेव करीराण्यावपति । कं वै प्रजाप
तिः प्रजाभ्यः करीरैरकुरुत कमेवैप एतत्प्रजाभ्यः
कुरुते ॥११॥ तयोरुभयोरेव शमीपलाशान्या-
वपति । शं वै प्रजापतिः प्रजाभ्यः शमीपलाशै-
रकुरुत शमेवैप एतत्प्रजाभ्य कुरुते ॥१२॥
अथ काय एककपालः पुरोडाशो भवति । कं
वै प्रजापतिः प्रजाभ्यः कायेनैककपालेन पुरोडा
शेनाकुरुत कम्वेवैप एतत्प्रजाभ्यः कायेनैकक-
पालेन पुरोडाशेन कुरुते तस्मात्काय एककपा
लः पुरोडाशो भवति ॥१३॥ अथ पूर्वेद्युः ।
अन्वाहार्यपचनेऽनुपानिव यवान्कृत्वा तानीपदिवो
पतप्य तेषां करम्भपात्राणि कुर्वन्ति यावन्तोगृह्या
स्युस्तावन्त्येकेनातिरिक्तानि ॥१४॥ तत्रापि मेषं
च मेषीं च कुर्वन्ति । तयोर्मेषे च मेष्यां च य-

यनैडकीरूर्णा विन्देत्ताः प्रणिड्य निश्लेपयेद्यद्यु ऽ अनैडकीर्न विन्देदथोऽअपि कुशोर्णा एव स्युः ॥१५॥ तद्यन्मेषश्च मेषी च भवतः । एष वै-प्रत्यक्षं वरुणस्य पशुर्यन्मेषस्तत्प्रत्यक्षं वरुणपाशात्प्रजाः प्रमुञ्चति यवमयौ भवतो यवान्हि जक्षुपीर्वरुणोऽगृह्णान्मिथुनौ भवतो मिथुनादेवै-तद्वरुण पाशात्प्रजाः प्रमुञ्चति ॥१६॥ स उत्तरस्यामेव पयस्यायां मेषीमवदधाति । दक्षिणस्यां मेषमेवामिवही मिथुनं कृत्वमुत्तरतो हि स्त्री पुमांसमुपशेते ॥१७॥

एवंयत्रयत्रकर्मणिप्रत्यक्षपशुःप्रदेयत्वेनोक्तस्तत्रतत्र पिष्टपशुरेवाभिप्रेत्तोनतुसाक्षात्पशुःसाक्षात्पशवोहिहनन कालेशोचन्तितस्मात्तेयज्ञार्हानभवन्तिअतएवसृष्ट्यारंभक लेत्रसिसृक्षुणाप्रजापतिनादौस्वमनसःसकाशात्पुरुषोनि र्मितश्चचक्षुषोऽश्वःप्राणाद्गौःश्रोत्रादविर्वाचोजश्चनिर्मि तः एवंसृष्टैतेपशवोनिर्वपनकालेयदाअशोचन्तदर्थंतेषां शोकोपहतः लोकेपुपुरुषरूपोद्विपादपशुर्नहिंस्यस्तथाश्व रूपश्चतुष्पादपशुर्नहिंस्यः एवंगौरविरजश्चनहन्तव्याःकिंचै

तेपशव उत्क्रान्तमेधाअमेध्याअयज्ञियाःसन्तितस्मादेते पांमांसंनाशितव्गमित्याहश्तपथब्राह्मणे.

हरिः ॐ प्रजापतिर्वाऽइदमग्रऽआसीदेक एव सोऽका मयतान्नं सृजेय प्रजायेयेति स प्राणेभ्य एवाधि पशून्निरमिमीत मनसः पुरुषं चक्षुषोऽश्वं प्राणा द्गां श्रोत्रादविं वाचोऽजं तद्यदेनान्प्राणेभ्योऽधि निरमिमीत तस्मादाहुः प्राणाः पशव इति मनो वै प्राणानां प्रथमं तद्यन्मनसः पुरुषं निरमिमीत तस्मादाहुः पुरुषः प्रथमः पशूनां वीर्यवत्तमइनि मनो वै सर्वे प्राणा मनसि हि सर्वे प्राणाः प्रति ष्ठितास्तद्यन्मनसः पुरुषं निरमिमीत तस्मादाहुः पुरुषः सर्वे पशव इति पुरुषस्य ह्येवैते सर्वे भव न्ति ।।६।। तदेतदन्नं सृष्ट्वा

हरिः ॐ अथोत्सर्गैरुपतिष्ठत । एतद्वै यत्रैतान्प्रजा पतिः पशूनालिप्सत तऽआलिप्स्यमाना अशोचं स्तेषामेतैरुत्सर्गैः शुचं पाप्मानमपाहंस्तथैवैषामय मेतदेतैरुत्सर्गैः शुचं पाप्मानमपहन्ति ।।२८।। तद्धैके । यं-यमेव पशुमुपदधाति तस्य तस्य शु

यनैडकीरुणां विन्देत्ताः प्रणिड्य निश्लेपयेद्यद्युऽ
अनैडकीर्न विन्देदथोऽअपि कुशोणां एव स्युः
॥१५॥ तद्यन्मेपश्च मेपी च भवतः । एप वै-
प्रत्यक्षं वरुणस्य पशुर्यन्मेपस्तत्प्रत्यक्षं वरुणपा-
शात्प्रजाः प्रमुञ्चति यवमयौ भवतो यवान्हि
जक्षुपीर्वरुणोऽगृह्णान्मिथुनौ भवतो मिथुनादेवै-
तद्वरुण पाशात्प्रजाः प्रमुञ्चाति ॥१६॥ स उ
त्तरस्यामेव पयस्यायां मेपीमवदधाति । दक्षिणस्यां
मेपमेवमिवही मिथुनं कृत्स्नमुत्तरतो हि स्त्री पु-
मांसमुपशेते ॥१७॥

एवंयत्रयत्रकर्मणिप्रत्यक्षपशुःप्रदेयत्वेनोक्तस्तत्रतत्र पिष्टपशुरेवाभिप्रेत्तोनतुसाक्षात्पशुःसाक्षात्पशनोहिहनन कालेशोचन्तितस्मात्तेयज्ञार्हानभवन्तिअतएवसृष्ट्यारंभकालेन्नंसिसृक्षुणाप्रजापतिनादौस्वमनसःसकाशात्पुरुषोनिर्मितश्चचक्षुपोऽश्वःप्राणाद्गौःश्रोत्रादविर्वाचोजश्चैनिर्मितः एवंसृष्टैतेपशवोनिर्वपनकालेयदाअशोचन्तदर्थंतेषां शोकोपहतः लोकेपुपुरुषस्पोद्विपादपशुर्नहिंस्यस्तथाश्वरूपश्चतुष्पादपशुर्नहिंस्यः एवंगौरविरजश्चनहन्तव्याःकिंचे

तेपशव उत्क्रान्तमेधाअमेध्याअयज्ञियाःसन्तितस्मादेते पांमांसंनाशितव्यमित्याहशतपथब्राह्मणे.

हरिः ॐ प्रजापतिर्वा ऽइदमग्र ऽआसीदेक एव सो ऽकामयतान्नं सृजेय प्रजायेयेति स प्राणेभ्य एवाधि पशून्निरमिमीत मनसः पुरुषं चक्षुषो ऽश्वं प्राणाद्गां श्रोत्रादविं वाचो ऽजं तद्यदेनान्प्राणेभ्यो ऽधि निरमिमीत तस्मादाहुः प्राणाः पशव इति मनो वै प्राणानां प्रथमं तद्यन्मनसः पुरुषं निरमिमीत तस्मादाहुः पुरुषः प्रथमः पशूनां वीर्यवत्तमइति मनो वै सर्वे प्राणा मनसि हि सर्वे प्राणाः प्रतिष्ठितास्तद्यन्मनसः पुरुषं निरमिमीत तस्मादाहुः पुरुषः सर्वे पशव इति पुरुषस्य ह्येवैते सर्वे भवन्ति ।।६।। तदेतदन्नं सृष्ट्वा

हरिः ॐ अथोत्सर्गैरुपतिष्ठत । एतद्वै यत्रैतान्प्रजापतिः पशूनालिप्सत त ऽआलिप्स्यमाना अशोचं स्तेषामेतैरुत्सर्गैः शुचं पाप्मानमपाहंस्तथैवैषामयमेतदेतैरुत्सर्गैः शुचं पाप्मानमपहन्ति ।।२८।।

तद्धैके । यं-यमेव पशुमुपदधति तस्य तस्य शु

चमुत्सृजन्ति नेच्छुचं पाप्मानमभ्युपदधामहाऽइति ते ह ते शुचं पाप्मानमभ्युपदधति यां हिपूर्वस्य शुचमुत्सृजन्ति तामुत्तरेण सहोपदधति ॥२९॥ विपरिक्रामम हैकऽउपतिष्ठन्ते । ऊर्ध्वा शुचमुत्सृजाम इति ते ह ते शुचं पाप्मानमनूद्यन्त्यूर्ध्वों ह्येतेन कर्मणैत्यूर्ध्वामु शुचमुत्सृजन्ति ॥३०॥ वा ह्येनैवाग्निमुत्सृजेत् । इमे वै लोका एषोऽग्निरेभ्य स्तल्लोकेभ्यो वहिर्धा शुचं दधाति वहिर्वेदीयं वै वेदिरस्यै तद्वाहिर्धा शुचं दधात्युदङ् तिष्ठन्नेतस्यां ह दिश्येते पशवस्तद्यन्नैते पशवस्तदेवेष्वेतच्छुचं दधाति ॥३१॥ पुरुषस्य प्रथममुत्सृजति । तं हि प्रथममुपदधातीमं मा हिंसीर्द्विपादं पशुमिति द्विपाद्वाएप पशुर्यत्पुरुषस्तं मा हिंसीरित्येतत्सहस्राक्षो मेधाय चीयमान इति हिरण्यशकलैर्वाऽएप सहस्राक्षो मेधायेत्यन्नायेत्येतन्मयुं पशुं मेधमग्ने जुपस्वेति किम्पुरुषो वै मयुः किम्पुरुषमग्ने जुपस्वेत्येतत्तेन चिन्वानस्तन्वो निपीदेत्यात्मा वै तनूस्तेन चिन्वान आत्मानं संस्कुरुष्वेत्येतन्मयुं ते

शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छत्विति तन्मयौ च शुचं दधाति यं च द्वेष्टि तस्मिंश्च ॥३२॥ अथाश्वस्य । इमं मा हिंसीरेकशफं पशुमित्येकशफो वाऽएष पशुर्यदश्वस्तं माहिंसीरित्येतत्कनिक्रदं वाजिनं वाजिनेष्विति कनिक्रदो वाऽएष वाज्यु वाजिनेषु गौरमारण्यमनु ते दिशामीति तदस्मै गौरमारण्यमनुदिशति तेन चिन्वानस्तन्वो निषीदेति तेन चिन्वानआत्मानं संस्कुरुष्वेत्येतद्गौरं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छत्विति तद्गौरे च शुचं दधाति यं च द्वेष्टि तस्मिंश्च ॥३३॥ अथगोः । इमं साहस्रं शतधारमुत्समिति साहस्रो वाऽएष शतधार उत्सो यद्गौर्व्यच्यमानं सरिरस्य मध्यऽइतिमे वै लोकाः सरिरमुपजीव्यमानमेषु लोकेष्वित्येतद्घृतं दुहानामदितिं जनायेति घृतं वाऽएषादितिर्जनाय दुहेऽग्ने मा हिंसीःपरमे व्योमन्निती मे वै लोकाः परमं व्योमैषु लोकेष्वेनं मा हिंसीरित्येतद्गवयमारण्यमनु ते दिशामीति तदस्मै गवयमारण्यमनुदिशति तेन चिन्वानस्तनवो नि

पीदेति तेन चिन्वान आत्मानं संस्कुरुष्वेत्येतद्व
यं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छत्विति तद्वये
च शुचं दधाति यं च द्वेष्टि तस्मिंश्च ॥३४॥ अ
थावेः । इमसूर्णायुमित्यूर्णावलमित्येतद्वरुणस्य ना
भिमिति वारुणी ह्यविस्त्वचं पशूनां द्विपदां चतु
ष्पदामित्युभयेषां ह्येष पशूनां त्वग्द्विपदां च चतु
ष्पदां च त्वष्टुः प्रजानां प्रथमं जनित्रमित्येतद्ध
त्वष्टा प्रथमं रूपं विचकाराग्ने मा हिंसीः परमे
व्योमन्नितीमे वै लोकाः परमं व्योमेषु लोकेष्वेनं
मा हिंसीरित्येतदुष्ट्रमारण्यमनु ते दिशामीति त
दस्माऽउष्ट्रमारण्यमनुदिशाति तेन चिन्वानस्तन्वो
निषीदेति तेन चिन्वान आत्मानं संस्कुरुष्वेत्येत
दुष्ट्रं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छत्विति त
दुष्ट्रे च शुचं दधाति यं च द्वेष्टि तस्मिंश्च॥३५॥
अथाजस्य । अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकादिति य
द्वै प्रजापतेः शोकादजायत तदग्नेः शोकादजा
यत सोऽअपश्यज्जनितारमग्रऽइति प्रजापतिर्वै
जनिता सोऽपश्यत्प्रजापतिमग्रऽइत्येतत्तेन देवा दे

वतामग्र ऽआयन्निति वाग्वा ऽअजो वाचो वै देवा देवतामग्रमायंस्तेन रोहमायन्नुपमेध्यास इति स्वर्गो वै लोको रोहस्तेन स्वर्गं लोकमायन्नुप मेध्यास इत्येतच्छरभमारण्यमनु ते दिशामीति तदस्मै शरभमारण्यमनुदिशति तेन चिन्वानस्तन्वो निषीदेति तेन चिन्वान आत्मानं संस्कुरुष्वेत्येतच्छरभं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छत्विति तच्छरभे च शुचं दधाति यं च द्वेष्टि तस्मिंश्च॥३६॥

तदाहुः । यांवै तत्प्रजापतिरेतेषां पशूनां शुचं पाप्मानमपाहंस्त ऽएते पञ्च पशवोऽभवंस्त ऽएत ऽउत्क्रान्तमेधा अमेध्या अयज्ञियास्तेषां ब्राह्मणो नाश्नीयात्तानेतस्यां दिशि दधाति तस्मादेतस्यां दिशि पर्जन्यो न वर्षुको यत्रैते भवन्ति ॥३७॥

नह्यधुनाप्येतादृशाः के पि पशवो विद्यन्ते येषां हननकाले किमपि न शोचेयुस्ततः शोचतां साक्षात्पशूनां यज्ञाऽनर्हत्वा दुत्सृज्यत्वमेवास्ति न तु हननीयत्वमिति भावः नचैतेषां यज्ञानर्हत्वे केवलस्तच्छोक एव हेतुरिति वाच्यं तेषाममेध्यत्वस्यापि हेतुत्वात् कथममेध्यत्वमिति चेदुच्यते सर्वथाऽन्नाभावकाले देवाः

प्रथमंयज्ञियसारंमेधंपुरुपएवप्रददृशुः ततोयज्ञसिध्यर्थंप्रथमं पुरुपमालेभिरेतदानीमालब्धात्पुरुपान्मेधोऽपक्रम्याश्वंप्रवि ष्टःपुरुपस्तुकिंपुरुपोजातःपश्चात्पुरुपंपरित्यज्यप्रविष्टमेधत्वे नाश्वंमेध्यंप्रदृश्यमेधार्थमश्वमालभन्ततदालब्धादश्वादपिमे धउत्क्रम्यगांप्रविवेश अश्वश्चगौरमृगोबभूवततोऽश्वंत्यक्त्वा मेधार्थंप्रविष्टमेधत्वेनगांमेध्यंज्ञात्वातमालेभिरेतस्मादपिमेधो निःसृत्याविंप्राविशत्गौश्चगवयोऽभवत्तेगांपरित्यज्याऽविं मेध्यंप्रज्ञायमेधार्थंतमप्यालेभिरेततोऽपिमेधोऽपक्रम्याजंप्रवि ष्टःअविस्तूष्ट्रोऽभवत्अविंपरित्यज्याऽजोयदालब्धस्तदामेधः पृथिवींप्राविशत् अजश्चशरभोऽभवत्तदनंतरंदेवाःपृथिव्यां मेधमनुजग्मुस्तदामेधोव्रीहिरूपोभूत्वाबहिर्निसृतस्ततोव्रीहि भ्योऽभवत् एवंपूर्वोक्तरीत्यापुरुपस्यमेध्यत्वेप्युत्क्रान्तमेध त्वादमेध्यत्वंजातमश्वाद्यजपर्यन्तानांतुप्रविष्टमेधत्वेनमेध्य त्वेजातेप्यपक्रान्तमेधत्वादमेध्यत्वंनिष्पन्नम् अन्येषांपशूनां तुस्वभावतएवमेधवत्त्वाभावात्सर्वेपिपशवोऽमेध्याःसन्तिअ तःसर्वेषांपशूनाममेध्यत्वेनयज्ञानर्हत्वात्कदापितदर्थंनहन्त व्यास्तन्मांसादीनिचनाश्नीयात् किंचपूर्वोक्तमेधोयस्मात् व्रीहिरूपोभवत्यस्माच्चाश्वादिपशुप्राविशत्ताभ्यांहेतुभ्यां

व्रीहिनिर्मितपशुःकेवलोव्रीहिरेववातत्तत्पशुसंज्ञयासंक्रियमाणआलभ्यतेनतुसाक्षात्पशुः नचानेनकेवलेनहास्येन व्रीहिपशुनैवयष्टव्यंकिंतुपुरोडाशेनसहयष्टव्यं ततोयद्वैव स्यःपशुर्भवतितद्वैवत्यंपुरोडाशमनुनिर्वपन्ति नचास्यव्रीहेः पुरोडाशस्यचरोमत्वगादिमत्वाभावात्पशुत्वंनसंगच्छतइति वाच्यंतत्तुपपिष्टकिंशारुफलीकरणादिनांत्वगूमांसरोमासृगादित्वप्रतिपादनेनपशुत्वप्रतिपादनात् तथाचस्पष्टमृग्वेदान्तर्गतैतरेयब्राह्मणे

हरिः ॐ पुरुषं वै देवाःपशुमालभंत-तस्मादालब्धान्मेधउदक्रामत्सोऽश्वंप्राविशत्तस्मादश्वोमेध्योऽभवदथैनमुत्क्रांतमेधमत्यार्जंत, स किंपुरुषो भवत्तेऽश्वमालभंत. सोऽश्वादालब्धादुदक्रामत्स गां प्राविशत्तस्मात् गौर्मेध्यो भवदथैनमुत्क्रांतमेधमत्यार्जंत, स गौरमृगो भवत्ते गामालभंत. स गोरालब्धादुदक्रामत्सोऽविंप्राविशत्तस्मादविर्मेध्योभवदथैनमुत्क्रांतमेधमत्यार्जंत, सगवयोभवत्तेऽविमालभंत. सोऽवेरालब्धादुदक्रामत्सोऽजं प्राविशत्तस्मादजो मेध्योभवदथैनमुत्क्रांतमेधमत्यार्जंत,स

उष्ट्रो भवत्सोऽजे व्योत्क्रमामिवारमत. तस्मादे
प एतेषां पशूनां प्रयुक्ततमो यदजस्तेऽजमाल
भंत. सोऽजादालब्धादुदक्रामत्स इमां प्राविशत्त
स्मादियं मेध्या भवदथैनमुत्क्रांतमेधमत्यार्जंत,
स शरभोऽभवत्त एव उत्क्रांतमेधा अमेध्याः प
शवस्तस्मादेतेषां नाश्नीयात्तमस्यामन्वगच्छंत्सोऽ
नुगतो व्रीहिरभवत्तद्यत्पशौ पुरोळाशमनु निर्वपं-
ति, स मेधेन नःपशुनेष्टमसत् केवलेन नः पशु
नेष्टमसदिति. स मेधेन हास्य पशुनेष्टं भवति के
वलेन हास्य पशुनेष्टं भवति य एवं वेद ॥ ८॥

स वा एष पशुरेवालभ्यते यत्पुरोळाशस्तस्य
यानि किंशारूणितानि रोमाणि, ये तुषाःसा त्व
ग्ये फलीकरणास्तदसृग्यत्पिष्टं किक्नसास्तन्मां
सं; यत्किंचित्कंसारं तदस्थि. सर्वेषां वा एष प
शूनां मेधेन यजते य पुरोळाशेन यजते. तस्मा
दाहुः पुरोळाशसत्रं लोक्यमिति युवमेतानि दिवि
रोचनान्यग्निश्चसोम सक्रतू अधत्तं; युवं सिंधू०
रभिशस्तेरवद्यादग्नीषोमानमुंचतं गृभीतानिति न

पाये यजति. सर्वाभिर्वा एप देवताभिरालब्धो भ
वति यो दीक्षितो भवति. तस्मादाहुर्न दीक्षितस्या
श्नीयादिति स यदग्नीषोमावमुंचतं गृभीतानिति व
पाये यजति, सर्वाभ्य एव तद्देवताभ्यो यजमा
नं प्रमुंचति. तस्मादाहुरशितव्यं वपायां हुतायां
यजमानो हि स तर्हि भवति. आन्यं दिवो मात
रिश्वा जभारेति पुरोळाशस्य यजति. अमथ्ना
दन्यं परि श्येनो अद्रेरितीत इव च द्येप इत इव
च मेध समाहृतो भवति. स्वदस्व हव्या समिषो
दिदीहिति पुरोळाशस्विष्टकृतो यजति. हविरे
वास्मा एतत्स्वदयतिषमूर्जमात्मन् धत्त. इळामुप
ह्वयते. पशवो वाइळा पशूनेव तदुपह्वयते पशू
न्यजमाने दधाति ॥९॥

॥ तथैवयुजर्वेदांतर्गतशतपथब्राह्मणेपि ॥

हरिः ॐ पशुर्ह वाएप आलभ्यते यत्पुरोडाशः॥५॥
पुरुषं ह वै देवाः। अग्रे पशुमालेभिरे तस्याल
ब्धस्य मेधोऽपचक्राम सोऽश्वं प्रविवेश तेऽश्व
मालभन्त तस्यालब्धस्य मेधोऽपचक्राम स गां

प्रविवेश ते गामालभन्त तस्यालब्धस्य मेधोऽप
चक्राम सोऽविं प्रविवेश तेऽविमालभन्त तस्या
लब्धस्य मेधोऽपचक्राम सोऽजं प्रविवेश तेऽज
मालभन्त तस्यालब्धस्य मेधोऽपचक्राम ॥६॥
स इमां पृथिवीं प्रविवेश । तं खनन्तइवान्वीषु
स्तमन्वविन्दंस्ताविमौ व्रीहियवौ तस्मादप्येताविंत
र्हि खनन्त-इवैवानुविन्दन्ति स यावद्वीर्यवद्ध वा
ऽअस्यैते सर्वे पशव आलब्धाः स्युस्तावद्वीर्यव
द्धास्य हविरेव भवति य एवमेतद्वेदात्रो सा स
म्पद्यदाहुः पाङ्क्तः पशुरिति ॥७॥ यदा पिष्टान्य
थ लोमानि भवन्ति । यदाप आनयत्यथ त्वग्भ
वति यदा संयौत्यथ मांसं भवति संतत-इव हि
स तर्हि भवति संततमिव हि मांसं यदा शृतोऽ
थास्थि भवति दारुण-इव हि स तर्हि भवति दा
रुणमित्यस्यथ यदुद्वासयिष्यन्नभिघारयति तंम
ज्जानं दधात्येषो सा सम्पद्यदाहुः पाङ्क्तः पशुरि
ति ॥८॥ स यं पुरुषमालभन्त । स किम्पुरुषो
ऽभवद्यावश्वं च गां च तौ गौरश्च गयश्चाभव

तां यमविमालभन्त स उष्ट्रोऽभवद्यमजमालभन्त स शरभोऽभवत्तस्मादेतेषां पशूनां नाशितव्यम पक्रान्तमेधा ह्येते पशवः ॥९॥

अत्र पुरुषं वै देवाः पशुमालभन्तेति पुरुषस्य पशुत्वप्रदर्शनं व्रीहेः पुरोडाशस्य च पशुत्वदृढीकरणार्थमन्यथा पुरुषमालेभिर इत्येव ब्रूयात्पशुपदं नो ब्रूयात् यथा पुरुषस्य पशुत्वप्रदर्शनमनवद्यं तथैव व्रीहेः पुरोडाशस्य च पशुत्वं निरवद्यमिति भावः न चात्र परिसंख्याताश्वादीनामेव मांसाद्यशनं निषिध्यते किंतु सर्वेषां पशुत्वजातिविशिष्टानां निषिध्यते परिसंख्यातानां निषेधेऽमेध्यत्वस्य हेतुत्वेन प्रदर्शितत्वात् अत्रायं भावः येषां येषां पशूनाममेध्यत्वं तेषां तेषां पशूनां मांसाद्यशनं प्रतिषिध्यते तत्र परिसंख्यातानामश्वादीनां मेधोत्क्रमणात्पूर्वं पुरुषनिःसृतमेधप्रवेशेनैव हेतुना मेध्यत्वप्रतिपादनात् येषां येषां पशूनां प्रविष्टमेधत्वं तेषां तेषां पशूनामेव मेध्यत्वम् अतः परिसंख्याताश्वादिभ्यो तिरिक्तानां पशुत्वजातिविशिष्टानां सर्वेषामपि पशूनां प्रविष्टमेधत्वाभावादमेध्यत्वं निष्पन्नं परिसंख्यातानां त्वपक्रान्तमेधत्वादमेध्यत्वं प्रतिपादितमेव व्रीहेः पशुत्वेन तत्पिष्टादिनां मांसादित्वेपि तस्य मेध्यपशुत्वात्तदशनं

नप्रतिपिद्धंतथाचयत्रयंत्रमांसादिनांहवनीयत्वेनभक्षणी
यत्वेनचप्रदर्शनंतत्रसर्वत्रव्रीहिपिष्टादिकमेवाभिप्रेतमितिवो
ध्यंनोचेत्तत्पिष्टादिनांमांसादित्वप्रतिपादनस्यवैयर्थ्यंस्यात्स
वाएपपशुरेवालभ्यतइत्यत्रचावधारणार्थेनैवाव्ययेनसर्वे
प्यपांक्ताःपशवःपुनरपिव्यावृत्यन्तेउताहोकेवलेनपांक्तपशु
नापुरोडाशेनयजमानास्तन्त्रेणसर्वेपांपशूनांमेधेनयजन्तइति
महदलभपलाभोक्तिःकिंचसाक्षादश्वादीनामालभनेननह्य
श्वमेधादियज्ञसिद्धिःकुतइतिचेदुच्यते अश्वस्यमेधोयस्मि
न्नितिव्युत्पत्त्याश्वसंबंधीयज्ञियसारोमेधोमुख्योहवनीयोय-
स्मिन्यज्ञेसयज्ञोअश्वमेधशब्देनाभिधीयतेतथाचगोसंबंधी
मेधोमुख्यत्वेनहवनीयोयस्मिन्यज्ञेसगोमेधशब्देनोच्यतेपुरु
पसंबंधीमेधोमुख्यत्येनहवनीयोयस्मिन्सपुरुपमेधशब्देना-
ख्यायतेएवंसतिसाक्षादश्वादिष्वालब्धेपुतत्तत्संबंधीमेधोह
वनार्थनैवलभ्यतेतेपामपक्रान्तमेधत्वेनमेधवत्वाभावादतस्ते
पामालभनंवृथैवव्रीहिपशुनायजनेतुतस्यसर्वपशुमेधरूप
त्वादश्वादिसंबंधीमेधोहवनार्थंलभ्यतएवनचात्रमेधशब्द
स्याप्रशस्तमपियज्ञवाचकत्वमंगीकृत्याश्वमेधादिशब्देपुपष्ठी
तत्पुरुपःकार्यःतथासति पुरुपमेधयज्ञा ऽश्वमेधयज्ञादिशब्दे

पुयज्ञशब्दस्यपुनरुक्तत्वेनानर्थक्यापत्तिःस्यात्ततोबहुव्रीहि
रेवयुक्तः नचव्यधिकरणोबहुव्रीहिरन्याय्यइतिवाच्यंसंभ
वतिसमानाधिकरणएवव्यधिकरणस्यान्याय्यत्वात्सप्तमी
विशेषणेबहुव्रीहाविति सूत्रेसप्तमीग्रहणेनव्यधिकरणबहुव्री
हेरपिज्ञापितत्वाचयद्वाऽधुनाव्रीहिर्मेधरूपत्वादश्वसंज्ञकोमे
धोव्रीहिर्मुख्योहवनीयोयस्मिन्नितिसमानाधिकरणेबहुव्रीहा
वपिनकाप्यक्षतिः नाप्यत्रमेधशब्दस्ययज्ञियसाराऽतिरिक्तः
कश्चिदप्यन्योगौणोर्थःस्वीकार्यःमुख्यार्थंपरित्यज्यगौणार्थ
स्वीकारेगानाभावात्सायनाचार्यादिकृतभाष्येपुतस्ययज्ञिय
सारवाचकत्वप्रतिपादनात्सर्वेष्वप्यश्वमेधादियज्ञेष्वश्वादिमे
धएवमुख्योहूयतेतस्मादश्वमेधपुरुषमेधादिशब्देपुमेधशब्दउ
द्दिष्टःतदर्थत्यागेतत्स्वारस्यभंगापत्तिरपिस्यात्किंचवस्तुतः
साक्षादश्वाद्यालभनेमुख्यत्वेनालभनशब्दोपिनप्रवर्त्ततेआ
समन्तात्लभ्यतेअनेनेतिप्राप्त्यर्थकाल्लभ्धातोःसकाशात्
करणेल्युटिसत्यालभनशब्दःसिध्यति लभ्धातोश्चसकर्म
कत्वात्कर्मभूतोमेधआक्षिप्यतेतेनयत्संस्कारविशेषेणमेधः
प्राप्यतेससंस्कारविशेषआलभनशब्देनोच्यतेतथासतिनहि
साक्षात्पशुसंस्कारविशेषेणतन्मेधःप्राप्यतेसाक्षात्पशूनांमे

धवत्वाभावात्व्रीहिपशौतुसंस्कारविशेषेणाश्वादिनांमेधःप्राप्यतएव व्रीहेःसर्वमेधरूपत्वात् तस्माद्व्रीहिपशोःसंस्कारविशेषएवमुख्यत्वेनालभनशब्दःप्रवर्त्तते नचासमंतात्लभ्यतेअनेनेत्यत्रमांसादिनःकर्मत्वंवाच्यं तस्येप्सिततमत्वाभावात् यजमानानामालभनाख्यसंस्कारविशेषेणमेधएवेप्सिततमोनतुमांसादि यद्यपिमांसादिनोपीप्सितत्वंभवति तथापीप्सिततमत्वाभावान्नकर्मत्वं कर्त्तुरीप्सिततमंकर्मेति सूत्रेणेप्सिततमस्यैवकर्मत्वविधानात् एतावतासाक्षात्पश्वभावेप्रतिनिधिर्व्रीहिपशुरितिकेषांचित्कुतर्कःपरास्तः देवकृतपश्वालभनेनतुव्रीहियवात्मकोमेधःप्राप्तस्तस्मात्तत्रालभनशब्दोमुख्यत्वेनप्रवृत्तः व्रीहिपश्वालभनेनयजमानेप्सितंमांसादिकमपिपिष्टादिरूपंप्राप्यतएव इयंव्रीहियवयोरूपपत्तिर्देवकृतपश्वालभनस्यसृष्टचारम्भकालोद्भूतत्वमन्नाभावकालोद्भूतत्वंचज्ञापयति देवाल्लब्धाश्वादीनांमृगादिरूपैर्भवनंकेवलंदेवाचरणंज्ञात्वैवतद्वन्मनुष्यैर्नाचरणीयमितिध्वनयति एवंपूर्वोक्तरीत्याव्रीहियवौव्रीहियवसंज्ञाभ्यामपशुसंज्ञाभ्यांचानिगमादिपुसंव्यवह्रियेते तत्राश्वमेधेव्रीहिर्यवोवामुख्यत्वेनाश्वसंज्ञयापुरुषमेधेमुख्यत्वेनपुरुषपशुसंज्ञयागोमेधेगोसंज्ञया

ज्योतिष्टोमादिषुचछागादिसंज्ञाभिर्व्यवह्रियत इतिवेदसं
केतः नोचेत्यज्ञविषयकमंत्रब्राह्मणादिषुसर्वत्राश्वादीनांवि
शेषणतयोच्चारितस्यमेध्यपदस्यवैयर्थ्यंस्यात्व्यावर्त्याभावा
त्नहिलोकेषुमेध्यत्वामेध्यत्वभेदाभ्यामुभयविधाःसाक्षादश्वा
दयःप्रदृश्यन्तेतस्माद्व्यावर्त्यतावच्छेदकावच्छिन्नानाममेध्या
नामन्येषांसाक्षादश्वादीनामनुपलम्भात्तद्व्यावर्त्तकतावच्छे
दकावच्छिन्नस्यमेध्यपदस्यवैयर्थ्यंस्यात्नचात्रविशेषणस्यस्व
रूपज्ञापकत्वंमेध्यत्वस्यस्वरूपभावात्मेध्यत्वममेध्यत्वंचशा
स्त्रनिष्पन्नमेवनतुस्वरूपनिष्पन्नंशास्त्रेणचसाक्षादश्वादीनाम
मेध्यत्वंनिष्पादितंव्रीहियवयोश्चमेध्यत्वंनिष्पादितंतस्माद्व्या
वर्त्तकतावच्छेदकावच्छिन्नेनमेध्यपदेनव्यावर्त्यतावच्छेदका
वच्छिन्नाःसाक्षादश्वादयएवव्यावृत्यन्ते अतःसर्वेषांसाक्षाद
श्वादीनांमेध्यपदेनव्यावर्त्यत्वात्यज्ञविषयकमंत्रब्राह्मणादि
ष्वश्वादिशब्दैर्व्रीहियवावेवसंज्ञायेतेतत्संज्ञाकरणेकारणंतु
मेधस्याश्वादिषुप्रवेशएव देवकृतालभनकालेव्रीहिरूपोयं
साक्षान्मेधोश्वशरीरप्रवेशनेनाश्वत्वंप्राप्तस्तस्मादश्वमेधेमु
ख्यत्वेनाश्वसंज्ञयासंस्क्रियमाणःसन्नालभ्यतेगोप्रविष्टत्वेनगो
त्वंप्राप्तस्ततोगोमेधेगोसंज्ञयासंस्क्रियमाणःसन्नालभ्यते देव

कृतानलभनानूपूर्वंपुरुपस्थितत्वेनपुरुपत्वमासीन्तस्मात्पुरुप
मेधेपुरुपसंज्ञयासंस्कुर्वन्तश्च व्रीहिंयवमेववालभन्तेएवंसोयं
साक्षान्मेधोव्रीहिरूपोजातस्तस्माद्व्रीहिसंज्ञयापौर्णमासादि
सर्वयागेपुसंस्क्रियमाणःसन्पुरोडाशत्वंप्राप्नोतितंपुरोडाशं
पृथक्पृथक्कपालेपुसंस्कुर्वन्तःसन्तःपुरोडाशसंज्ञयानिर्व
पन्तिपशुयागेपुतूभयोःपशुपुरोडाशयोर्विहितत्वादेकत्रस्था
नेपशुसंज्ञया संस्क्रियते अन्यत्रच व्रीहिसंज्ञयासंस्क्रियतेत
दनन्तरं मांससंज्ञया संस्क्रियमाणपिष्टंपुरोडाशेनसहजु
ह्वति अतोयत्रयत्रमेध्यपदविशिष्टा अश्वादयोदृश्यन्ते त
त्रसर्वत्रव्रीहि पशुरेवाभिप्रेतइतिबोध्यं पूर्वकालेकवषपुत्रे
णतुरेणैन्द्रेणमहाभिषेकेणाभिषिक्तः परिक्षित्पुत्रोजनमेज
यः सर्वतः पृथ्वींजयन्सन्मेध्येनैवाश्वेनेजेनतुसाक्षादश्वे
न किंचधान्यभक्षकंरात्रिमणं हरितस्रजंसाक्षादश्वंलो
काचारमनुसृत्यसिंहासनसमीपेवबंध नतुयूपे नापिजघा
न तथैवभृगुपुत्रेणच्यवनेनमहाभिषेकेणाभिषिक्तः शार्यातो
मेध्येनैवाश्वेनेजेनतुसाक्षादश्वेन एवंवाजरत्नायनसोमशु
ष्मासत्राजित पुत्रंशतानीक मैन्द्रेणमहाभिषेकेणाभिषिषे
च तस्मात् शतानीकः सर्वतः पृथिवींजयन्परीयाय मे·

ध्येनैवाश्वेनेजेतथापर्वतनारदाभ्याममभिषिक्तआम्बाष्टयोमे
ध्येनैवाश्वेनेजेनथैवपर्वतनारदाभ्यामेवाभिषिक्तउग्रसेनपुत्रो
युधांश्रौष्टिर्मेध्येनैवाश्वेनेजेतथाचकश्यपेनाभिषिक्तोभुवन
पुत्रोविश्वकर्मामेध्येनैवाश्वेनेजेयस्मिन्यज्ञेविश्वकर्मणाकश्य
पायदत्तापृथिवीविश्वकर्माणंग्रसेतदब्रवीत्हेभूवनपुत्रविश्व
कर्मन्कश्चिदपिमर्त्योमांदातुंनार्हतिएवंसत्यपियस्मात्त्वया
दत्तातस्मादहंजलेनिमंक्ष्येतवप्रतिज्ञावृथैवेतितथावशिष्ठः
पिजवनपुत्रंसुदासंमहाभिषेकेणाभिषिषेचतस्मात्सुदाःसर्वं
पृथिवींजयन्परीयाय मेध्येनैवाश्वेनेजेतथैवांगिरसःपुत्रेण
संवर्तेनमहाभिषेकेणाभिषिक्तोऽविक्षितपुत्रोमरुत्तोमेध्येनैवा
श्वेनेजेतस्यचपूर्णकामस्यमरुत्तस्यगृहेवायवःपरिवेष्टारआ
सन्तथाचात्रिपुत्रेणोदमयेनाभिषिक्तोंगोमेध्ये नैवाश्वेनेजेत
थाचसप्तमृग्वेदान्तर्गतैतरेयब्राह्मणाष्टमपञ्चिकायाम् ॥

हरिः ॐ एतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण तुरः का
वषेयो जनमेजयं पारिक्षितमभिषिषेच. तस्मादु
जनमेजयः पारिक्षितः समंतं सर्वतः पृथिवीं ज
यन् परियायाश्वेनच मेध्येनेजे, तदेषाभियज्ञगा
था गीयते. आसंदीवति धान्यादं रुक्मिणं हरि

ण्येते श्लोका अभिगीताः याभिर्गोभिरुदमयं प्रैय मेधा अयाजयन् द्वे द्वे सहस्रे बद्वानामात्रेयो म ध्यतो ददात्. अष्टाशीती सहस्राणि श्वेतान्वैरो चनो हयान्; प्रष्टिं निश्चृत्य प्रायच्छद्यजमाने पुरो हिते. देशाद्देशात्समोळ्हानां सर्वासामाढ्यदुहितृ णां; दशाददात्सहस्राण्यात्रेयो निष्ककंठयः. द शनागसहस्राणि दत्वात्रेयो वचत्नुके; श्रांत पा रिकुटान्प्रेप्सद्दानेनांगस्य ब्राह्मणः शतं तुभ्यं श तं तुभ्यमिति स्मव प्रताम्यति; सहस्रं तुभ्यमित्यु क्त्वा प्राणान्त्स्म प्रतिपद्यत इति २२

एतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण दीर्घतमामाम तेयो भरतं दौष्यंतिमभिषिषेच. तस्मादु भरतो दौष्यंतिः समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन्परीयायाश्वै श्च मेध्यैरीजे तदप्येते श्लोका अभिगीताः हि रण्येन परीवृतान्कृष्णान् शुक्लदतो मृगान्; मष्णा रे भरतो ददाच्छतं बद्वानि सप्तच भरतस्यैष दौ ष्यंतेरग्निः साचिगुणे चितः; यस्मिन्त्सहस्रं ब्रा ह्मणा बद्वशो गावि भेजिरे. अष्टासप्तति भरतो

दौष्यंतिर्यमुनामनु; गंगायां वृत्रघ्ने ऽबध्नात्पंचपंचा
शतं हयान्. त्रयस्त्रिंशच्छतं राजाऽश्वान् बध्वा
य मेध्यान्;दौष्यंतिरत्यगाद्राज्ञो मायां मायावत्तरः
महा कर्म भरतस्य न पूर्वे नापरे जनाः; दिवं
मर्त्य इव हस्ताभ्यां नोदापुः पंच मानवा इत्ये
तं ह वा ऐंद्रं महाभिषेकं बृहदुक्थ ऋषिर्दुर्मुखा
य पांचालाय प्रोवाच. तस्मादु दुर्मुखः पांचालो
ऽराजा सन्विद्यया समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन्प
रीयायैतं ह वा ऐंद्रं महाभिषेकं वासिष्ठः सात्य
हव्योऽत्यरातये जानंतपये प्रोवाच. तस्मादृत्यरा
तिर्जानंतपिरराजा सन्विद्यया समंतं सर्वतः पृथि
वीं जयन्परीयाय. स होवाच वासिष्ठः सात्यह
व्यो जैपीर्वै समंतं सर्वतः पृथिवीं महन्मा गमये
ति स होवाचात्यरातिर्जानंतपिर्यदा ब्राह्मणोत्तर
कुरून् जयेयमथ त्वमु हैव पृथिव्यै राजा स्याः
सेनापतिरेव ते ऽहं स्यामिति स होवाच वासिष्ठः
सात्यहव्यो देवक्षेत्रं वै तन्नवैतन्मर्त्यो जेतुमहस
द्रक्षो वै म आ ऽतः इदं दद इति ततो हात्य

तस्मलं, अश्वं बवंध सारंगं देवेभ्यो जनमेजय इत्येतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण च्यवनो भा र्गवः शार्यातं मानवमभिषिषेच. तस्माद् शार्या तो मानवः समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन्परीयाया श्वेन च मेध्येनेजे. देवानां हापि सत्रे गृह्णानि रासैतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण सोमशुष्मा वाजरत्नायनः शतानीकं सात्राजितमभिषिषेच. तस्माद् शतानीकः सात्राजितः समंतं सर्वतः पृ थिवीं जयन्परीयायाश्वेन च मेध्येनेजे. एतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण पर्वतनारदावां बाष्ठ्यम भिषिषिचतुस्तस्माद्वांबाष्ठ्यः समंतं सर्वतः पृथि वीं जयन्परीयायाश्वेन च मेध्येनेजे एतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण पर्वतनारदौ युधांश्रौष्टिमौग्र सैन्यमभिषिषिचतुस्तस्माद् युधांश्रौष्टिरौग्रसैन्यःस मंतं सर्वतः पृथिवीं जयन् परियायाश्वेन • च मे ध्येनेजे. एतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण कश्य पो विश्वकर्माणं भौवनमभिषिषेच. तस्माद् विश्व कर्मा भौवनः समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन्परिया

थाऽश्वेन च मेध्येनेजे. भूमिर्ह जगाविस्युदाहरंति. न मा मर्त्यः कश्चन दातुमर्हति विश्वकर्मन् भौव न मां दिदासिथ; निमंक्ष्ये ऽहं सलिलस्य मध्ये मोघस्त एष कश्यपायास संगर इत्येतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण वसिष्ठः सुदासं पैजवनम भिषिषेच. तस्मादु सुदाः पैजवनः समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन्परीयायाश्वेन च मेध्येनेजे. एतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण संवर्त आंगिरसो मरुत्त माविक्षितमभिषिषेच. तस्मादु मरुत्त आविक्षितः समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन् परीयायाश्वेनच मे ध्येनेजे. तदप्येष श्लोको ऽभिगीतो, मरुतः परि वेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे आविक्षितस्य कामप्रे विश्वे देवाः सभासद इति २१

एतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषेकेणोदमय आत्रेयों गमभिषिषेच. तस्मादंगः समंतं सर्वतः पृथिवीं ज यन्परीयायाश्वेन च मेध्येनेजे. स होवाचालोपां गो दशनागसहस्राणि दशदासीसहस्राणि ददा मिते ब्राह्मणोप मा ऽस्मिन् यज्ञे व्हयस्वेति तद

राति जानंतपिमात्तवीर्यं निःशुक्रममित्रतपनः शु ष्मिणः शैब्यो राजा जघान. तस्मादेवंविदुषे ब्रा ह्मणायैवंचक्रुषे न क्षत्रियो द्रुह्येन्नेद्राष्ट्राद्व पद्येय न्नेद्रामप्राणो जहादिति जहादितिः २३

॥ तथाच शतपथब्राह्मणे ॥

हरिः ॐ एतेन हेन्द्रोतो दैवापः शौनकः। जनमेज- यं पारिक्षितं याजयां चकार तेनेष्ट्वा सर्वां पाप- कृत्यां सर्वां ब्रह्महत्यामपजघान सर्वां; ह वै पाप कृत्यां सर्वां ब्रह्महत्यामपहन्ति योऽश्वमेधेन यज ते ॥ १ ॥ तदेतद्गाथयाभिगितम्। आसन्दीवति धान्यादं रुक्मिणं हरितस्रजम् अवध्नादश्वं; सारंगं देवेभ्यो जनमेजय इति ॥ २ ॥ एतेऽ एव पूर्वेऽअहनी। ज्योतिरतिरात्रस्तेन भीमसेन- मेतेऽएव पूर्वेऽअहनी गौरतिरात्रस्तेनोग्रसेनमेतेऽए व पूर्वेऽअहनीऽआयुरतिरात्रस्तेन श्रुतसेनमित्येते पारिक्षितीयास्तदेतद्गाथयाभिगीतं पारिक्षिता य- जमाना अश्वमेधैः परोऽवरम् अजहुः कर्म पा- पकं पुण्याः पुण्येन कर्मणेति ॥ ३ ॥ एतेऽएव

पूर्वेऽअहनी । अभिजिदतिरात्रस्तेन ह पर आट्णार ईजे कौसल्यो राजा तदेतद्गाथयाभिगीतमट्णारस्य परः पुत्रोऽश्वं मेध्यमबन्धयत् हैरण्यनाभः कौसल्यो दिशः पूर्णा अमंहतेति ॥ ४ ॥ एतेऽएव पूर्वेऽअहनी । विश्वजिदतिरात्रस्तेन ह पुरुकुत्सो दौर्गहेणेजऽऐक्ष्वाको राजा तस्मादेतदृषिणाभ्यनूक्तमस्माकमत्र पितरस्तऽआसन्त्सप्तऽऋषयो दौर्गहे बध्यमानऽइति ॥ ५ ॥ एतेऽएव पूर्वेऽअहनी । महाव्रतमतिरात्रस्तेन ह मरुत आविक्षित ईजऽआयोगवो राजा तस्य ह ततो मरुतः परिवेष्टारोऽग्निः क्षत्ता विश्वे देवाः सभासदो बभूवुस्तदेतद्गाथयाभिगीतं मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे आविक्षितस्याग्निः क्षत्ता विश्वे देवाः सभासद इति मरुतो ह वै तस्य परिवेष्टारोऽग्निः क्षत्ता विश्वे देवाः सभासदो भवन्ति योऽश्वमेधेन यजते ॥ ६ ॥ एतेऽएव पूर्वेऽअहनी । अप्तोर्यामोऽतिरात्रस्तेन हैतेन क्रैव्य ईजे पाञ्चाल्यो राजा क्रिवय इति ह वै पुरा पञ्चा

लानाचक्षते तदेतद्गाथयाभिगीतम् अश्वं मेध्यमा-
लभत क्रिवीणामतिपूरुषः पाञ्चालः परिवक्रायां
सहस्रशतदक्षिणमिति ॥ ७ ॥ अथ द्वितीयया
। सहस्रमासंन्नयुता शता च पञ्चविंशतिः दि-
क्तो-दिक्तः पञ्चालानां ब्राह्मणा या विभेजिरऽइ
ति ॥ ८ ॥ त्रिवृदग्निष्टोमः । पञ्चदश उक्थ्यः
सप्तदशं तृतीयमहः सोक्थकमेकविंशः षोडशी
पञ्चदशी रात्रिस्त्रिवृत्संधिरित्येषोऽ नुष्टुप्सम्पन्न
स्तने हैतेन ध्वसा द्वैतवन ईजे मात्स्यो राजा य
त्रैतद्वैतवनं सरस्तदेतद्गाथयाभिगीतं चतुर्दश द्वैत
वनो राजा संग्रामजिद्धयान् इन्द्राय वृत्रघ्नेऽबध्ना-
त्तस्माद्वैतवनं सर इति ॥ ९ ॥ चतुर्विंशाः प-
वमानाः । त्रिवृदभ्यावर्तं चतुश्चत्वारिंशाः पवमा
ना एकविंशमभ्यावर्तमष्टाचत्वारिंशाः पवमानास्त्र
यस्त्रिंशमभ्यावर्तमाग्निष्टोमसामाद्वात्रिंशान्युक्थान्ये
कविंशः षोडशी पञ्चदशी रात्रिस्त्रिवृत्संधिरिति
॥ १० ॥ एतद्विष्णोः क्रान्तम् । तेन हैतेन भर
तो दौःष्यन्तिरीजे तेनेष्ट्वेमां व्यष्टिं व्यानशे

रतानां तदेतद्गाथयाभिगीतमष्टासप्ततिं भरतो दौः
ष्यन्तिर्यमुनामनु गङ्गायां वृत्रघ्नेऽबध्नात्पञ्चपञ्चा-
शतं हयानिति ॥ २१ ॥ अथ द्वितीयया । त्र-
यस्त्रिंशं शतं राजाश्वान्बद्ध्वाय मेध्यान् सौद्युम्नि
रत्यष्ठादन्यानमायान्मायवत्तर इति ॥ २२ ॥ अ
थ तृतियया । शकुन्तला नाडपित्यप्सरा भरतं द
धे परःसहस्रानिन्द्रायाश्वान्मेध्यान्य आहरद्विजि
त्य पृथिवीं सर्वामिति ॥ २३ ॥ अथ चतुर्थ्या ।
महदद्य भरतस्य न पूर्वे नापरे जनाः । दिवं म
र्त्य-इव बाहुभ्यां नोदापुः पञ्च मानवा इति ॥
२४ ॥ एकविंशस्तोमेन । ऋषभो याज्ञतुर ईजे
श्विक्नानां राजा तदेतद्गाथयाभिगीतंयाज्ञतुरे यज-
माने ब्रह्माण ऋषभेजनाः अश्वमेधे धनं लब्धा
विभजन्ते स्म दक्षिणा इति ॥ २५ ॥ त्रयस्त्रिं
शस्तोमेन । शोणः सात्रासाह ईजे पाञ्चालो
राजा तदेतद्गाथयाभिगीतं सात्रासहे यजमानेऽश्व
मेधेन तौर्वशाः उदिरते त्रयस्त्रिंशाःषट् सहस्रा
णि वर्मिणामिति ॥ २६ ॥ अथ द्वितियया । प

ट्पद् पद्वा सहस्राणि यज्ञे कोकपितुस्तव उदी रहे त्रयस्त्रिंशाः षट् सहस्राणि वर्मिणामिति ॥ १७ ॥ अथ तृतियया । सात्रासहे यजमाने पा ञ्चाले राज्ञि सुस्त्राजि अमाद्यदिन्द्रः सोमेनातृप्य न्ब्राह्मणा धनैरिति ॥ १८ ॥ गोविनतेन शता नीकः । सात्राजित ईजेकाश्यस्याश्वमादाय त तो हैतदर्वाक्काशयोऽग्नीनादधतऽआत्तसोमपीथाः स्म इति वदन्तः ॥ १९ ॥ तस्य विधा चतुर्विं शाः पवमानाः । त्रिवृदभ्यावर्तं चतुश्चत्वारिंशाः पवमाना एकविंशान्याज्यानि त्रिणवान्युक्थान्ये कविंशानि पृष्ठानि षट्त्रिंशाः पवमानास्त्रयस्त्रिंश मभ्यावर्तमाग्निष्टोमसामादेकविंशान्युक्थान्येकाविंशः षोडशी पञ्चदशी रात्रिस्त्रिवृत्संधिः ॥ २० ॥ तदेतद्गाथयाभिगीतं । शतानीकः समन्तासु मे ध्यं सात्राजितो हयम् आदत्त यज्ञं काशीनां भ रतः सत्वतामिवेति ॥ २१ ॥ अथ द्वितीयया । श्वेतं समन्तासु वशं चरन्तं शतानिको धृतराष्ट्र स्य मेध्यम् आदाय सह्वा दशमास्यमश्वं शतानी-

को गोविनतेन हेजऽइति ॥ २२ ॥ अथ चतु
र्थ्यां । महदद्य भरतानां न पूर्वे नापरे जनाः दिवं
मर्त्य-इव पक्षाभ्यां नादेपुः सप्त मानवा इति ॥
२३ ॥ अथातो दाक्षिणानाम् । मध्यं प्रति राष्ट्र
स्य यदन्यद्भूमेश्च पुरुषेभ्यश्च ब्राह्मणस्य च वित्ता
त्प्राची दिग्घोतुर्दक्षिणा ब्रह्मणः प्रतिच्यध्वर्योरुदी
च्युद्गातुस्तदेव होतृका अन्वाभक्ताः ॥ २४ ॥ उ
दयनीयायां संस्थितायाम् । एकविंशतिं वशा
अनूबन्ध्या आलभते मैत्रावरुणीर्वैश्वदेवीर्बार्हस्पत्या
एतासां देवतानामाप्त्यै तद्यद्बार्हस्पत्यान्त्सा भव
न्ति ब्रह्म वै बृहस्पतिस्तदु ब्रह्मण्येवान्ततः प्रति
तिष्ठति ॥ २५ ॥ अथ यदेकविंशतिर्भवन्ति ।
एकविंशो वाऽएष य एष तपति द्वादश मासाः
पञ्चऽर्तवस्त्रय इमे लोका असावादित्य एकविं
श एतामभिसम्पदम् ॥ २६ ॥ उदवसानीया
यां संस्थितायाम् । चतस्रश्च जायाः कुमारीं प
ञ्चमीं चत्वारि च शतान्यनुचरीणां यथासमु
दितं दक्षिणां ददाति ॥ २७ ॥ अथोत्तरं संवत्स

रमृतुपशुभिर्यजते । पड्भिराग्नेयैर्वसन्ते पड्भिरै न्द्रैर्ग्रीष्मे पड्भिः पार्जन्यैर्वा मारुतैर्वा वर्षासु पड् भिर्मैत्रावरुणैः शरदि पड्भिरैन्द्रावैष्णवैर्हेमन्ते प ड्भिरैन्द्राबार्हस्पत्यैः शिशिरे पड्ऋतवः संवत्सरः ऋतुष्वेव संवत्सरे प्रतितिष्ठति पट्त्रिंशदेते पशवो भवन्ति पट्त्रिंशदक्षरा बृहती बृहत्यामावि स्वर्गो लोकः प्रतिष्ठितस्तद्यन्ततो बृहत्यैव छन्दशा स्वर्गे लोके प्रतितिष्ठति ॥ २८ ॥

अत्रसर्वत्रव्यावर्तकतावच्छेदकविशिष्टेन मेध्यपदेन व्यावर्त्यतावच्छेदकयुक्तसाक्षादश्वव्यावृत्ति पूर्वकविशेष्य तावच्छेदकावच्छिन्नव्रीहिपशुरेवविशेष्यते आसन्दीवति धान्यादं रुक्मिणंहरितस्रजमश्वंबवन्धेत्यादिवाक्येषु पुनः पुनः साक्षादश्ववंधनोक्तिरपि साक्षादश्वहिंसनाभावंध्वन यति अन्यथाजघानेतिब्रूयात् अनेनेत्थंव्यवस्थेयं मेध्यश ब्दोद्विविधो मेधवद्वाचकःपवित्रवाचकश्चेति तत्रमेधवद् वाचकःपारिभाषिकयोगरूढः पवित्रवाचकस्तुरूढएव त त्रयोगरूढोमांसवपादियज्ञसंपदर्थदेवतृप्तिकारकोयोव्रीहि पशुः संस्क्रियतेतमेवज्ञापयतिसचपशुः यूपएवबध्यते न

त्वन्यत्र रूढस्तुविशेष्यवस्तुनः पवित्रत्वंज्ञापयतियथा मे ध्याआपइत्यादिपुतथासतिलोकव्यवहारमनुसृत्येन्द्रमुद्दिश्य योधान्यादःपवित्राऽश्वआनीयतेसस्रगादिभिःस्वलङ्कृतोय नकुत्रापिस्वेप्सितस्थलेवद्धःस्पृष्टःसन्नुत्सृज्यतेनतुनिहन्यते अतएवसिंहासनसमीपेगंगायांचवध्नन्त्वेतिनिर्दिष्टंनोचेद्यू पेवध्नन्त्वेतिब्रूयात् अतोवायव्यं श्वेतमालभेतेत्यादिवचनेषु श्वेतव्रीहिरेवाभिप्रेयते तथै वाग्नयेछागस्यहविषोवपायामे दसः प्रेष्यानुब्रूहिवेत्यादिषु छागादिशब्दैस्तत्तत्संज्ञाभिःसं स्क्रियमाणोव्रीहिरेववोध्यः मेदःप्रभृतिशब्दैश्च तत्तत्संज्ञा भिःसंस्कृताः किक्नसादयोव्रीहिरेवयवाएववोध्याःनचपशु शब्दस्य चतुष्पाज्जाति विशेषेरूढत्वात्व्रीहेःपशुत्वमयुक्त मितिमन्तव्यंश्रुतौद्विपदांपुरुषाणां पादाद्यवयव रहितानां पदार्थानांचपशुत्वप्रदर्शनात् तथाहि

हरि ॐ देवायद्य ज्ञतन्वाना अवध्नन्पुरुषंपशुम्

हरि ॐ उपा वाऽअश्वस्य मेध्यस्य शिरः । सूर्यश्चक्षु र्वातः प्राणो व्यात्तमग्निर्वैश्वानरः संवत्सर आ त्माश्वस्य मेध्यस्य द्यौष्पृष्ठमन्तरिक्षमुदरं पृथिवी पाजस्यं दिशः पार्श्वेऽअवान्तरदिशः पर्शव ऋ

तवोऽऽङ्गानि मासाश्चार्धमासाश्च पर्वाण्यहोरात्रा
णि प्रतिष्ठा नक्षत्राण्यस्थीनि नभो मांसान्यूवध्यं
सिकताः सिन्धवो गुदा यकृच्च क्लोमानश्च पर्व
ता ओषधयश्च वनस्पतयश्च लोमान्युद्यन्पूर्वार्धो
निम्लोचन्जघनार्धो यद्विजृम्भते तद्विद्योतते यद्वि
धूनुते तत्स्तनयति यन्मेहति तद्वर्षति वागेवास्य
वागहर्वाऽअश्वं पुरस्तान्महिमान्वजायत तस्य पूर्वे
समुद्रे योनी रात्रिरेन्यं पश्चान्महिमान्वजायत त
स्यापरे समुद्रे योनिरेतौ वाऽअश्वं महिमानाव
भितःसम्बभूवतुर्हयो भूत्वा देवानवहद्वाजी गन्धर्वा
नर्वासुरानश्वो मनुष्यान्त्समुद्र एवास्य बन्धुः स
मुद्रो योनिः ॥१॥

हरि ॐ तद्यदेतान्प्राणेभ्योऽधिनिरमिमीत तस्मादाहुः
प्राणाः पशवइति इत्यादि

एवंवेदेषुबहूनां पदार्थानां पशुत्वप्रदर्शनाच्चतुष्पाज्जा
तिविशेषपशुशब्दोरूढोनभवतिकिंतुपारिभाषिकोयोगरू-
ढएवतथाचस्पष्टंशतपथब्राह्मणे

हरि ॐ स एतान्पञ्चपशूनपश्यत् पुरुषमश्वं गामविम्

ॐ यदपश्यत्तस्मादेते पशवः ॥ २ ॥ स एतान्पञ्च पशून्प्राविशत् स एते पञ्चपशवोऽभवत्तमु वै प्रजापतिरन्ववैक्षत् ॥ ३ ॥ स एतान्पञ्च पशूनपश्यत् यदपश्यत्तस्मादेतेपशवस्ते ष्वेतमपश्यत्तस्माद्वैवैतेपशवः

एवंप्रजापतेः प्रेक्षितत्वमेव पशुशब्दस्य प्रवृत्तिनिमित्तं तस्माद्व्रीहावपि प्रजापतेः प्रेक्षितत्वस्यसंभवात् तत्र पशुत्वं युक्तमेवेतिदिक् नचपूर्वपरिसंख्या ताश्वादिव्यातिरिक्ताःकेचिदप्यन्ये पशवो मेध्याःसन्तीती शंकितव्यं सर्वेषामपिसाक्षात् पशूनामुत्क्रान्त मेधत्वादितिस्पष्टमैतरेय ब्राह्मणे शतपथब्राह्मणे च

हरिः ॐ सर्वेषां वा एष पशुनांमेधोयद् व्रीहियवा वित्यादि

एवं सर्वेपि साक्षात् पशवो यज्ञार्हानभवन्ति तेषां मांसादिकंचनाशितव्यमितिदिक् सर्वथा व्रीहियवाद्यन्नाभावकालेतुवंगस्थ प्रभृतयोऽमेध्यानपिसाक्षात् पशून्यज्ञश्राद्धाद्यर्थं मगस्त्याचरण मनुसृत्यहिंसन्तिगुर्जरस्थादयस्त्वन्नाभावकाले पिसाक्षात्पशून् नैवहिंसन्ति यद्यपिवेदे

नान्नसत्वे व्रीहिपशुहिंसाप्रदर्शिता सर्वथाऽन्नाभावकाले च साक्षात्पशु हिंसाप्रदर्शिता तथा पिशिष्टास्तूभयोः कालयो रुभयविधामपि हिंसांनैव कुर्वन्ति हिंसायां दोषश्रवणात् निवृत्तौ पुण्यश्रवणाच्च विहितहिंसाया अहिंसात्वेपि वेदेनहिंसाजन्य फलाश्रयत्वंसमूलं नैवप्रत्याख्यातं नोचेत्हिंसाश्रयाणां विद्योत्सर्जन शीलानां हिंसानुरूपधूमरात्र्यादिगमनेन चान्द्रगामिनां यज्ञजन्य पुण्येक्षीणेकथं पुनः पतनशीलत्वं प्रदर्शितं हिंसोत्सर्जन शीलानांविद्या श्रयाणां ब्रह्मलोकगामिनां कथंपुनर्नप्रत्या वर्त्तन शीलत्वं प्रदर्शितंपुण्यस्योभयत्रापिसमान शीलत्वादुभयोर्मार्गयोरपि समानशीलत्वे नैवभवितव्यंयुक्तम् अतोयज्ञकालेयज्ञजन्यफलेन यज्ञान्तर्गताहिंसाजन्यफलं प्रच्छाद्यतेनतुनिहन्यते तेनयज्ञजन्यफलेक्षीणे हिंसाजन्य फलं प्रकटीभवति तस्माद् हिंसाश्रयाणां चांद्रगामिनां हिंसाजन्यफलाश्रयत्वात् पुनः प्रत्यावर्त्तनशीलत्वं, विद्याश्रयाणांतु हिंसाया अभावान्नप्रत्यावर्तन शीलत्वमितिबोध्यम् एतदेवाभिप्रेत्य यावेदाविहिताहिंसानियता स्मिंश्चराचरे अहिंसामेवतांविद्याद्वेदाद्धर्मोहि निर्वभाविस्य वहिं

सात्वमतिपादकवाक्येपुपर्युदासःकृतःपर्युदासस्थहिसदृग्रा हित्वादहिंसाशब्देनहिंसाभिन्नोहिंसासदृक्कश्चित्पदार्थोगृह्य तेसदृक्त्वंतुतद्भिन्नत्वेसतितद्गतभूयोधर्मवत्वंतथाचाहिंसा भिन्नत्वेसतिहिंसागतभूयोधर्मःपातनधर्मः एवंवेदविहितहिं साया अहिंसात्वेपितादृगहिंसायाः पातनधर्मावच्छिन्नत्वात् तदवच्छिन्नानांचांद्रगामिनांपुनः पतनशीलत्वमितिसिद्धम् अतएवनिरुक्तेत्रयोदशाध्याये

हरि ॐ, अथये हिंसामाश्रित्य विद्यामुत्सृज्यमहत्तपस्ते पिरेचिरेणवेदोक्तानिवाकर्माणिकुर्वन्तितेधूममभिसं भवन्तिधूमाद्रात्रिंरात्रेरपक्षीयमाणपक्षमपक्षीयमाण पक्षाद्दक्षिणायनंदक्षिणायनात्पितृलोकंपितृलोकाच्चं द्रमसंचंद्रमसोवायुंवायोर्वृष्टिंवृष्टेरोषधयश्चैनद्भूत्वात स्यसंक्षयेपुनरेवेमंलोकंप्रतिपद्यन्ते ॥ २२ ॥

हरि ॐ अथयेहिंसामुत्सृज्यविद्यामाश्रित्यमहत्तपस्तेपिरे चिरेणज्ञानोक्तानिवाकर्माणिकुर्वन्तितेर्चिरभिसंभव न्त्यर्चिषोऽहरन्हआपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाणपक्षादुदग यनमुदगयेनाद्देवलोकंदेवलोकादादित्यमादित्याद्वै द्युतंवैद्युतादात्मानसंमानसःपुरुषोभूत्वाब्रह्मलोकमभि

संभवान्तितेनेपुनरावर्तन्तोशिष्टादंदशूकायतद्दंनजा नन्तितस्मादिदंवेदितव्यमथाप्याह ॥

॥ शतपथब्राह्मणेपि ॥

हरि ॐ ये चामीऽअरण्ये श्रद्धां सत्यमुपासते तेऽर्चिरभिसम्भवन्त्यर्चिषोऽहरन्ह आपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाणपक्षाद्यान्षण्मासानुदङ्ङादित्य एति मासेभ्यो देवलोकं देवलोकादादित्यमादित्याद्वैद्युतंतान्वैद्युतात्पुरुषो मानस एत्य ब्रह्मलोकान्गमयति ते तेषु ब्रह्मलोकेषु पराः परावतो वसन्ति तेषामिह न पुनरावृत्तिरस्ति ॥ १८ ॥ अथ ये यज्ञेन दानेन तपसा लोकं जयन्ति ते धूममभिसम्भवन्ति धूमांद्रात्रिं रात्रेरपक्षीयमाणपक्षमपक्षीयमाणपक्षाद्यान्षण्मासान्दक्षिणादित्य एति मासेभ्यः पितृलोकं पितृलोकाच्चन्द्रंते चन्द्रं प्राप्यान्नं भवन्ति तांस्तत्र देवा यथा सोमं राजानमाप्यायस्वापक्षीयस्वेत्येवमेनांस्तत्र भक्षयन्ति तेषां यदा तत्पर्यवैत्यथेममेवाकाशमभिनिष्पद्यन्तऽआकाशाद्वायुं वायोर्वृष्टिं वृष्टेः पृथिवीं ते पृथिवीं प्राप्यान्नं भवन्ति तऽएवमे

वानुपरिवर्तन्तेऽथ यऽएतौपन्थानौ न विदुस्ते कीटाः पतङ्गा यदिदं दन्दशूकम् ॥ १९ ॥

श्रूयतेच

वेदाहमेतंपुरुषंमहांतमादित्यवर्णंतमसःपरस्तात्तमेवविदित्वातिमृत्युमेतिनान्यःपंथाविद्यतेयनाय ॥

[illegible]

[illegible]

थंप्रकाशकभ्रामितचेतसांभ्रमनिवृत्यर्थम्

संभवन्तितेनपुनरावर्तन्तोशिष्टादंदशूकायतइदंनजा
नन्तितस्मादिदंवेदितव्यमथाप्याह ॥

॥ शतपथब्राह्मणेपि ॥

हरि ॐ ये चामीऽरण्ये श्रद्धां सत्यमुपासते तेऽर्चि
रभिसम्भवन्त्यर्चिषोऽहरन्हआपूर्यमाणपक्षमापूर्यमा
णपक्षाद्यान्षण्मासानुदङ्ङादित्य एति मासेभ्यो देव
लोकं देवलोकादादित्यमादित्याद्वैद्युतंतान्वैद्युतात्पु-
रुषो मानस एत्य ब्रह्मलोकान्गमयति ते तेषु ब्र
ह्मलोकेषु पराः परावतो वसन्ति तेषामिह न पु-
नरावृत्तिरस्ति ॥ १८ ॥ अथ ये यज्ञेन दानेन
तपसा लोकं जयन्ति ते धूममभिसम्भवन्ति धू
मांद्रात्रिं रात्रेरपक्षीयमाणपक्षमपक्षीयमाणपक्षाद्या
न्षण्मासान्दक्षिणादित्य एति मासेभ्यः पितृलो-
कं पितृलोकाच्चन्द्रंते चन्द्रं प्राप्यान्नं भवन्ति तां-
स्तत्र देवा यथा सोमं राजानमाप्यायस्वापक्षीयस्वे
त्येवमेनांस्तत्र भक्षयन्ति तेषां यदा तत्पर्यवैत्यथेम
मेवाकाशमभिनिष्पद्यन्तऽआकाशाद्वायुं वायोर्वृष्टिं
वृष्टेः पृथिवीं ते पृथिवीं प्राप्यान्नं भवन्ति तऽएवमे

ने तेने दुषित करेछे श्रुति स्मृतिमां जे जे कह्युंछे ते सघळुं दोष रहित अने प्रमाण सिद्धछे, प्रत्येक वेदना मंत्र, ब्राह्मण, अने उपनिषद् एवा त्रण भागछे, तेमा मंत्र करता ब्राह्मण तथा उपनिषद्मा हरेक विषय वधारे स्पष्टताथी समजाव्योछे. समग्र वेदना कर्मकाण्ड अने ज्ञान काण्ड एवा बे मुख्य भागछे. कर्मकाण्डमा वैश्वदेव, अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्श पौर्णमास, चातुर्मास्य इष्टिओ, ज्योतिष्टोम, अश्वमेध, गोमेध, अने नरमेध इत्यादि अनेक प्रकारना कर्म वरणवेला छे. तेमज ज्ञानकाण्डमा श्रवण, मनन, निदध्यास, ध्यान, धारणा, यम, नियम, समाधि, इत्यादि ब्रह्मज्ञानना उपायो, तथा ब्रह्मना स्वरूप, अने तटस्थ लक्षणो तथा कर्मकाण्डमा कहेला यज्ञोने ज्ञानमार्गथी करवानो प्रकार इत्यादि ज्ञान वर्णवेलु छे तेओमाथी जेने धर्म जिज्ञासा छे. ते कर्मकाण्डनो आश्रय करेछे; अने जेने ब्रह्मजिज्ञासा छे ते ज्ञान काण्डनो आश्रय करेछे. कर्मकाण्डनो आश्रय करनार धूम, त्यांथी रात्रि, कृष्णपक्ष, दक्षिणायन, पितृलोक, अने त्यांथी चंद्रलोकमां जाय छे; त्या तेनुं पुण्य क्षीण थयेथी ते देवताओनुं अन्न थायछे; अने देवो तेनुं भक्षण करेछे. पछी वायु, वृष्टि, अने औषधिद्वारे पुन. आ लोकमा आवी जन्म मरणादि पामेछे.

अने जे ज्ञानकाण्डनो आश्रय करेछे ते अर्चिष् त्यांथी दिवस, शुक्लपक्ष, त्यांथी उत्तरायन, देवलोक, सूर्यलोक, वैद्युत अने त्यांथी ब्रह्म लोकमा जायछे, त्यां समष्टयभिमानि पुरुषनुं सायुज्य (मोक्ष) पामेछे. ते पुन आ लोकमा आवतो नथि

तेमज कर्म काण्डना अन्तर्गत जे उपासना छे तेना आश्रय

करनारने पण ए धूम मार्गे करी चंद्र लोकनी प्राप्ति अने त्यांथी पुनः पतन थायछे. अने ज्ञान काण्डना अन्तर्गत जे उपासना रहेलीछे ते-नो आश्रय करनार आर्चिर् मार्ग करी ब्रह्म लोकमां जायछे त्यांथी पु-नःपतन थतुं नथि.

कर्मकाण्डना आश्रय करनारने अंधकार मार्गे जवुं, अने पुनः प-तन थवुं तेनो हेतु ए छे के तेने अज्ञान रूपी अंधकार अने हिंसा ए बेनो आश्रय करवो पडेछे,केवल प्राणिना घात करवानेज वेदमां हिंसा ग-णीछे एम नथि,वृक्ष वनस्पत्यादिना ध्वंस करवाने पण हिंसाज गणेलीछे. वेदमा जे जे ठेकाणे वनस्पत्यादिना स्तुत्यादिक करेलां छे ते ठेकाणे जेम प्राणिना करता होय तेमज करेलाछे, अेटलुज नाहि पण जगत्-ना पृथिव्यादि सघळा पदार्थोने प्राणिना रूपकमाज वर्णवेला छे. नोदि करवामां पृथ्वी उपर जे कोदाळिनो प्रहार थाय छे. तेने क्रौर्य कर्म गणी तन्निमित्तक वेदे प्रायश्चित्त कल्पेलुं छे. साराश के जगत्‌ना प-दार्थ मात्रने प्राणिना रूपकमा वर्णवेला छे. तेथी तेना ध्वंस विषय मा सघळे ठेकाणे हिंसा शब्दनो निर्देश करेलो छे.

सघळा यज्ञोमा समिधादिने अर्थे नानाप्रकारनी वनस्पतिओ अ-ने वृक्षादिनो ध्वंस करवो पडे छे. तेथी यज्ञोने हिंसामय यज्ञ केहेछे.

ए कर्म काण्डमां मेध्य अने अमेध्य एवा बे प्रकारना पदार्थो ग-णाय छे तेमाथी मेध्य पदार्थो यज्ञना काममा आवेछे. अने अमेध्य पदार्थो आवता नथि. हालमा जे साक्षात् पशुओ देखाए छीए तेने अमेध्य गणेलाछे तेथी ते यज्ञना काममा आवता नथि. व्रीहि तथा यव अे बे मेध्य पदार्थो गणेलाछे तेथी ते यज्ञना काममा आवेछे अे

बेउने मेध्य गणवानु कारण अेछेके देवोअे ज्यारे प्रथम पुरुषनुं आलभन (अेक जातनो संस्कार. स्पर्श) कर्युं त्यारे तेमाथी मेधे निकळीने अश्वमा प्रवेश कर्यो तेथी अश्वनुं आलभन कर्युं त्यारे अश्वमाथी पण मेधे उत्क्रमण करीने गोमा प्रवेश कर्यो तेथी तेमणे गोनुं आलभन कर्युं त्यारे तेमाथी पण निसरीने अविमा जतो रह्यो-तेथी तेमणे अविनुं आलभन कर्युं त्यारे तेमाथी निकळी अजमा गयो ते अजनु पण आलभन कर्युं त्यारे पृथ्वीमा गयो त्यारे देवो तेने पृथ्वीमा खोळवा लाग्या त्यारे व्रीहि तथा यव रूपे बहार उगी निकळ्यो, तेथी ते व्रीहि तथा यव मेध्य एटले यज्ञना उपयोगमा आवे एवा थया. उपर लखेला पाच प्राणीमा मेधे प्रवेश कर्यो तेथी ते पण पशु मेध्य थया खरा पण तेमाथी मेध निसरी गयो एटले ते अमेध्य गणाया एटले यज्ञना काममा आवता नथि, पण मेधे ए पाच पशुओमा प्रवेश कर्यो. अने पोते व्रीहि तथा यव रूपे उगी निकळ्यो ते बेउ कारणथी ते व्रीहि अथवा यवना उपर ते पशुओना नामथी संस्कार करवा पडे छे जेमके अश्वमेधमा मुख्य अश्वना नामथी पुरुष मेधमा पुरुषना नामथी इत्यादि(जेम श्राद्धमा दर्भ) तेजकारण लइने याज्ञिको पिष्टपशु करे छे वळी तेज हेतु लेइने ब्रह्माए पण ए पशुओनो उत्सर्ग करेलो छे तेणे सृष्टिना आरंभकालमा मन तथा चक्षुप्र प्रभृति पोतानी इंद्रियोथी ए पुरुषादि पांच पशुओ उत्पन्न करीने तेओने यज्ञना उपयोगमा लेवानी लिप्सा करी त्यारे ए पाच पशुओ शोक करवा लाग्या त्यारे ब्रह्माए कर्युं हे अग्नि ! पुरुष रूपी द्विपाद पशु तथा अश्वादि चतुष्पाद पशुओनी हिंसा करवी नहि कारण के ए पशुओ अमेध्य थयेला छे तेथी ते यज्ञना काममा आवता नथि अने

एनुं मास भक्षण करवुं नहि एमनो मेध व्रीहि तथा यव रूपे थयोछे तेने तुं सेव. तेमज आगळ जनमेजय प्रभृति जे जे राजाओए यज्ञ करेलाछे तेमणे पण ए मेध्य वस्तुथी करेलाछे लोकाचार प्रमाणे साक्षात् पशुने माला वस्त्रादिथी शणगारी सिंहासनादि पोताना इच्छित स्थलमां थापीने स्पर्श मात्र करेलो छे, एम वेदमां कहेलुं छे.

तेमज वरुणप्रघासा नामना कर्ममां वरुण देवताने प्रत्यक्ष पशु आपवाना कहेला छे. ते ठेकाणे पण यवना पिष्टना पशु करीने आपवा एम वेदमा कहेलुं छे. ए मेध्य पदार्थ उपर पशुना नामथी संस्कार थायछे तेथी तेना चोखा तथा छोतरा इत्यादि अवयवोने मास, त्वचा, रुधिर, इत्यादि गणेलाछे. अने ते उपर लखेला पाच प्राणी तथा बीजी सघळी जातिना प्राणि अमेध्य गणायछे तेथी तेनुं मास भक्षण करवुं नाहि एम वेदमा कहेलुछे साराश के सघळे ठेकाणे मास वपादि शब्दोए करीने ए व्रीहिना अवयवोज लेवायछे वेदमां व्रीहि तथा यवने पशु गणेछे एटलुंज नहि पण कोइ कोइ प्रसंगे जगत्‌ना सघळा पदार्थोने पशुना रूपकमां वर्णवेला छे. अने तेना विध्वंस करवाने वेदे हिंसा गणेलीछे, तेथी यज्ञमा पशु हिंसाछे एम कहेवायछे.

एम छता पण पुरातन काळमा अगस्त्य नामना कोइ एक ऋषिए पोताना वृद्ध माता पिता प्रभृतिना प्राण राखवाने अर्थे यथा विधि हिंसा करी हती,ते काल एवो हतो के यज्ञमापुरोडाश करवानेपण व्रीहि यवादि काइ पण अन्न हतु नहि; तेथी तेणे शास्त्रमां गोधा कच्छपादि जे प्राणीओ भक्ष्य गणेलाछे तेना मासना पुरोडाश कर्यां हता. माटे जे कालमां व्रीहि यवादि अन्न पुरोडाश करवा जेटलुं पण मळे नाहि तेवा

कालमां गोधा कच्छपादिना मांसनां पुरोडाश करवा, अने यज्ञ, श्राद्ध, देवार्चन, मधुपर्क, तथा अन्न प्राशनादि शास्त्रमां देखाडेलां स्थलमां ए भक्ष्य पशुनी हिंसा करवाथी दोष नथि एम कह्युंछे, ए उपर लखेलां ठेकाणामांथी मात्र यज्ञने अर्थे जे हिंसा करवीं तेने दैव विधि एटले देवने करवा योग्य विधि एम कहेलुंछे, अने बाकीनां श्राद्ध, मधुपर्क, देवार्चनादिमां पशु हिंसा करवी ते आसुर विधि एटले राक्षसने करवानो विधि एम कहेलुंछे, सारांश के सर्व प्रकारे अन्न न मळवाथी मांसना पुरोडाश करवा पडे ते कालमां मात्र यज्ञने अर्थेज हिंसा करे तो तेमो दोष गणातो नथि. एवा कालमां पण अविधिथी करे तो जेटलां पशुना शरीर उपर रूआं होय तेटलां वर्ष पर्यंत ते नरक भोगवे एम स्मृतिओमां कहेलुंछे. व्रीहि यवादि अन्न छतां मांस भक्षण करवुं तेने वृथा मांस भक्षण कहेछे ने ते करनारने पारधी करतां पण अधिक पापी गणेलोछे. एवा आपत्ति कालमां पण जे माणस मांस भक्षण तथा हिंसा करतो नथि तो तेने सो अश्वमेध करवा जेटलुं फल थायछे.

उपर जे अगस्त्यनुं दृष्टांत आपी अन्नाभावकालमां पशु हिंसा तथा मांस भक्षणनो विधि देखाड्यो ते विधिने केवल अन्नाभावकालमां बंगदेशना लोकोज अनुसरेला छे अने गुर्जरादि देशना लोको कोइ काले अनुसरेला नथि तेथी ए विधि गुर्जरादिना लोकोने उपयोगी नथी कारण के धर्म शास्त्रमां घणे ठेकाणे पोताना देशाचार तथा कुलाचार प्रमाणेज चालवुं एवुं कहेलुं छे. आ चतुर्युगनो साधारण धर्म लखेलो छे. कलियुगमां जे विशेष निषेध करेला छे ते पोतानी मेळे वांची लेवा.